तेरापन्थ-आचार्य चरितावलि

खण्ड १

सम्पादक :

श्रीचन्द् रामपुरिया, बी० कॉम० बी० एल०

तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन
में प्रकाशित

प्रकाशक
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१

प्रथमावृत्ति :
सन् १९६१
सं० २०१८

प्रति संख्या :
१५ ०

पृष्ठांक :
२६८

मूल्य
छह रुपये

मुद्रक :
रेफिल आर्ट प्रेस
कलकत्ता—७

प्रकाशकीय

तेरापन्थ सम्प्रदाय के वर्तमान अधिनायक आचार्य श्री तुलसी गणि के धवल-समारोह का प्रथम चरण भाद्र शुक्ल नवमी के दिन पड़ता है। भाद्र शुक्ल त्रयोदशी का दिन आचार्य भिक्षु का पर्यवसान दिवस है। यह कृति इन दो अवसरों के संगम पर प्रकाशित होकर दोनों महापुरुषों के महान कृतित्व के प्रति अपनी सम्पूर्ण श्रद्धासपूत-श्रद्धांजलि उपस्थित करती है।

इस प्रकाशन के साथ आचार्य चरित माला का द्वितीय ग्रंथ पाठकों के हाथों में पहुँचता है। अब हम अदूरभविष्य में ही तीसरे खण्ड द्वारा अवशिष्ट आचार्यों के जीवन-चरित उपस्थित करने में समर्थ हो सकेंगे।

आचार्य भिक्षु अपने युग के ही नहीं पर सर्व युगों के महान युगपुरुष हैं। इस खण्ड द्वारा उनकी जीवन-विषयक विस्तृत सामग्री पाठकों को सुलभ होती है। आशा है इसके अध्ययन का परिणाम हिन्दी में स्वामीजी की सर्वाङ्गीण सुन्दर जीवनी के प्रकाशन के रूप में प्रकट होगा।

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक
तेरा० द्विशताब्दी साहित्य-विभाग

३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता—१
भाद्र शुक्ला १२ १८

भूमिका

'तेरापंथ आचार्य चरितावलि' के इस प्रथम खण्ड में तेरापंथी सम्प्रदाय के आदि आचार्य स्वामी भीखणजी के निम्नलिखित चार जीवन-चरित संग्रहीत हैं :

१—भीखु चरित (मुनि श्री हेमराजजी कृत)
२—भीखु चरित (मुनि श्री वेणीदासजी कृत)
३—भिक्खु जश रसायण (चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी कृत)
४—लघु भिक्खु जश रसायण (चतुर्थ आचार्य जीतमलजी स्वामी कृत)

हम नीचे क्रमशः उनका संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं :

१ भीखु चरित

(१) रचयिता का गृही जीवन

इस कृति के रचयिता मुनि हेमराजजी भीखणजी स्वामी के स्वहस्त-दीक्षित शिष्य थे । दीक्षा-क्रम में आपका स्थान पैंतीसवाँ है । आपका कुछ परिचय 'तेरापंथ आचार्य चरितावलि' के द्वितीय खण्ड की भूमिका में दिया जा चुका है[१] । लेखक की 'आचार्य संत भीखणजी' नामक पुस्तक में भी आपकी संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित है ।

चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी रचित 'हेम नवरसो' में आपका विस्तृत जीवन-चरित राजस्थानी भाषा में संगीत-बद्ध है । 'तेरापंथ आचार्य चरितावलि' के द्वितीय खण्ड में प्रकाशित आचार्य भारीमालजी आचार्य रायचन्दजी और आचार्य जीतमलजी के राजस्थानी पद्यात्मक बखाणों में आपके अनेक संस्मरण गुंफित हैं । इसी तरह 'भिक्खु दृष्टान्त' नामक पुस्तक में भी आपके कई संस्मरण प्राप्त हैं[२] । आचार्य जीतमलजी स्वामी कृत 'शासन विलास' में भी आपके विषय में महत्त्वपूर्ण उल्लेख है । प्रस्तुत खण्ड में प्रकाशित 'भिक्खु जश रसायण' नामक कृति में आपका गुणात्मक परिचय मिलता है । प्रसंगवश हम यहाँ आपका चरित कुछ विस्तार से दे रहे हैं :

(१) प्रव्रज्या से पूर्व का जीवन : आपका जन्म सं० १८२९ की माघ शुक्ला १३ शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र में आयुष्मान योग में सिरियारी में हुआ था[४] । आपके पिता का नाम आमरोजी आंगरेचा था और माता का नाम सोमाजी ।

१—देखिए भूमिका पृ० क से ड
२—देखिए पृ० ६६-७१
३—दृ० १४४ १६१ १७६ २७२ २७३
४—देखिए ढाल ९८ गा० १-२
५—आप गर्भ में आए उस समय जो कल्पना की उसके लिए देखिए हेमनवरसो १ १ ३ ; तथा आचार्य संत भीखणजी पृ० ६८

आपकी एकमात्र छोटी बहिन का नाम रत्तूजी था। भाई-बहिन दोनों में परस्पर बड़ा स्नेह था। हेमराजजी कैसे स्नेही भाई थे इसकी एक घटना 'भिक्खु दृष्टान्त' में इस प्रकार मिलती है : रत्तूजी को मामा ननिहाल ले गये। हेमराजजी का मन नहीं लगा। उन्होंने स्वामीजी से कहा— 'मन में होता है कि अभी सवार को भेज बहन को वापस बुला लूं।' स्वामीजी बोले— 'संसार के सुख ऐसे ही अस्थिर होते हैं। संयोग में वियोग होता है'।[1] हेमराजजी का मन शान्त हुआ।

आप जन्म से ही धर्म-संस्कार-सम्पन्न थे। आपकी वृत्तियाँ सहज शान्त और वैराग्य युक्त थीं। बचपन से ही बड़े दृढ़धर्मी थे। रोज सामायिक करते। साधु-संतों के प्रति बहुमान की भावना रखते। आपका तात्त्विक ज्ञान बड़ा गंभीर था। आप बड़े निर्भीक धर्मवादी थे। जहाँ जाते लोगों को धर्मबोध देते। आपमें ये गुण अति प्रचुर मात्रा में विद्यमान थे। आपके गृहस्थ-जीवन का चित्रण निम्न रूप में प्राप्त है :

धर्म ध्यान आपरे बधिया थी कांई सखिया पद लड़ा हुवा किया परनारी रा पचखाण।
सन्त सत्यां री सेवा थी नितनेम सामायक करे, बहु पाप तणो भय जाण॥
सौम्य मुद्रा हद प्यारी थी सुखकारी हेम मुनीश्वर॥
तत्त्वविद्या बुद्धि भारी थी सिरदारी हेम तणी भणी कांई धर्मवादी जाण।
कंठकला अधिकारी थी समझावे नर नारी भणी कांई बांचे सरस बखाण॥
विनय करणें जाव थी पाली मिलावे पाटि दे, कांई त्यां पिण दे उपदेश।
चरचा करनें समझाव थी मधरावे घट श्रावक तणा भावे वाल दया री रेस॥
करे भेषधारयां सूं चरचा थी कांई बालक नहिं आवनें विविध न्याय री जोम।
इम पावंचा में हटाव थी सुण जाव न पावे टेहरनें ते सुणिया पचरस हेम॥
सुवनीतपणे सुखदाई थी नरमाई हेम तणी भणी कांई भिक्षु सूं बहु प्रेम।
त्यांरो विरहो खमणो अति दोरो थी नहीं सोरी संघ वधु बाड़को कांई हिये निरमला हेम[2]॥

(२) प्रतिबोध और प्रव्रज्या पन्द्रह वर्ष की अवस्था में आपने आजीवन पर-स्त्री-त्याग व्रत ग्रहण किया। आपका हृदय वैराग्यमय भावनाओं से स्निग्ध था। प्रव्रज्या ग्रहण करने की भावना भी रखते थे। इसे और भी मजबूती करने की इच्छा से सं० १८५१ में स्वामीजी ने पाली में चातुर्मास न कर सिरियारी में किया पर हेमराजजी ने अपना निश्चित अभिमत व्यक्त नहीं किया। केवल विचार ही विचार में तीन वर्ष व्यतीत कर दिये। सं० १८५३ में आपने स्वामीजी से प्रतिबोध पा यावज्जीवन विवाह न करने का व्रत ग्रहण किया और साधु प्रतिक्रमण सीखने लगे[3]।

१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० २५८ पृ० ११
२—हेम नवरसो १।६।१
३—प्रतिबोध की घटना के लिए देखिए—'तेरापंथ आचार्य चरितावलि' (भि० च०) भूमिका पृ ७-८।

आपकी दीक्षा सं० १८५३ की माघ शुक्ला त्रयोदशी बृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र और आयुष्यमान योग में सिरियारी में सम्पन्न हुई। उस समय आप चौबीस वर्षीय नवयुवक थे। दीक्षा और उसके पूर्व जो घटनाएँ घटीं उनका वर्णन इस प्रकार है :

बरामी बगड़ो बध्यो सुखकारी रे, हेम हुआ हुंसियार हेम सुखकारी रे।
माहा सुद तेरस दिन भलो गु दीक्षा महोत्सव सार॥
बाबारो बेटो भाई रायचंद गु, बाय पुकारयो ताय।हेम०।
भिक्षु नें कहवायियो गु, भटी हरख्यो नगरी मांय।हेम ॥
गाम रा पंच भेला थई गु हेम भणी ले साथ।हेम०।
ठुकराणी पासे गया गु कही दीक्षा री बात॥हेम ॥
वस्त्र गहणा सहित देखी हेम ने आपण्या रे, ठकराणी बोली बाय के।मा ।
दौलतसिंघ री सूंस है मा मुं का मुं देस्यूं परणाम के।मा ॥
जब हेम जाब दीधो इसो मा थांरो परणवा रो पेम के।मा ।
पाम में कंवारा बणा मा० म्हारे परणवा को नेम के।मा ॥
इम कही हेम पाछा वली मा आय बैठा स्वामी पास के।मा ।
पाम में रहिवा री मागन्या मा पंच लेई आया तास के॥मा ॥
माघ सुद पुनम पछ मा० छःकाम हणवा रा त्याग के।मा ।
हेम ने नेम पहले हुंतो मा कीधो आज बैराग के।मा ।
त्यांतिला कही बहिन परनाय ने मा पछ लीज्यो संजम भार के।मा ।
घायो फागण वदी बीज रो मा दिन हेम न आणी भिमार के।मा ॥
पछ त्यांतिला हठ कीधो घणो मा जब हेम किय्यो अंगीकार के।मा ।
पूज भणी कह्यो आयनें मा स्वामी निषेध्यो तिवार के।मा ॥
रे भोला अणच करे मा दिवस न लंघणो एक के।मा ।
त्यांतिला पोतिसा मझे मा ए छन्द मांही म्हारे विशेष के।मा ॥
हेम समझ पाछा आयनें गु कही त्यांतिला में एम के।हेम ।
हूं कह्यो न मानूं थेहनो गु थ तो भंगायो नेम के॥हेम ॥
तेरस दिन उलंघूं नहीं मा थे म्हांने करो बकवास के।मा ।
लोक हंसी मे इम कही मा थांने भीखणजी दिया भरमाय के।मा ॥
इकवीस दिवस रे आसरे मा जिम्या बनोला ठाम के।मा ।
दीक्षा महोत्सव दीपतो मा मंडिया बहु मण्डाप के।मा ॥
हजारां लोक भेला हुआ मा बड़ तले दीक्षा विचार के।मा ।
स्वाम भिक्षु स्व हाथ सूं मा स्वमुख संयम भार के।मा ॥

संवत् अठारे तेपने मा० महा सुदि तेरस जाम के। मा०।
पूरुसउवार बलाणिये मा पुष्य नक्षत्र बखाण के। मा ॥
मानुभाव जोग आयो भलो मा हुइ दीक्षा मुनि हेम के। मा०।
जय २ जय धन उचरे मा पाम्या अधिको प्रेम के। मा० ॥
बारे वर्ष आसरे हुंता मा स्वाम भिक्खू रे शोध के। मा०।
हेम हुआ संत तेरमा मा यो पद कह्यो नहीं केम के[1]। मा ॥

(३) चातुर्मासों का ब्यौरा दीक्षा के बाद आप चार चातुर्मास में स्वामीजी के साथ थे। स्वामीजी की आज्ञा के अनुसार पाँचवां चातुर्मास मुनि वेणीरामजी के साथ किया। आपके गुणों को देखकर स्वामीजी ने सं १८५८ में आपको सिंघाड़पति बनाया।

गुण बुद्धि कंठकला भली भिक्खु देखी भारी हो।
कियो सिंघाड़ो हेम नो जाण्या महा उपगारी हो ॥

आपके साधु-जीवन के कुल ५१ चातुर्मासों का ब्यौरा इस प्रकार है :

१—खेरवे २ १८५४ (स्वामीजी के साथ) ६७
२—पाली ११ १८५५,६१ ६६,७१ ७५,८ ८५,८९,९२,९५,९८
३—श्रीजीद्वार ४ १८५६,८७ ९९ ० १९०३
४—पुर ४ १८५७ ५८ (मुनि वेणिरामजी के साथ) ८४ १९०१
५—पिसांगण १ १८६
६—कैंटालिया १ १८६२
७—कंटालिया २ १८६३ ७२
८—सिरियारी ४ १८५९,६५,७३ ९७
९—बालोतरे २ १८६८ ९१
१०—कृष्णगढ़ १ १८६९
११—इन्द्रगढ़ १ १८७०
१२—गोगुंदे ४ १८७४ ८२,८८,९९
१३—देवगढ़ २ १८६४ ७६
१४—उदयपुर २ १८७७ १९ २
१५—आमेट १ १८७८ ८३ १९ ४
१६—पीपाड़ ५ १८७६,८६,९ ९३ ९६
१७—जयपुर १ १८८१
१८—लाडनूं १ १८९४

1—हेम नवरसो १ १-१८ ११
2—हेम नवरसो १ ७

(४) सिंघाड़पति के रूप में : सिंघाड़पति के रूप में आपमें कुशल नेतृत्व दिखाई पड़ता है। आप दूरदर्शी और साहसी थे। मरूधर, मारवाड़, हाड़ोती और ढूंढाड़ इन चार प्रदेशों में आपने गुरु आज्ञा से भ्रमण किया। आपके द्वारा निम्नलिखित १४ दीक्षायें सपन्न हुइ :

१—सं० १८६१ के पाली चातुर्मास के बाद फाल्गुन में वैरागी संत जीवनजी की।

२—सं० १८६६ में पाली चातुर्मास में तपस्वी संत पीथलजी की। आपने पत्नी छोड़कर दीक्षा ली थी।

३—स० १८७३ मार्गशीर्ष वदि पचमी के दिन लाहुवा में मुनि रतनचंदजी की। आपकी पत्नी ने भी साथ ही दीक्षा ग्रहण की।

४—उसी दिन तपस्वी सत अमीचदजी की। आपने पुत्र और पत्नी को छोड़कर दीक्षा ग्रहण की थी।

५—सं १८७१ में सामगांव में सती मन्दूजी की। आपको गृहस्थ के वस्त्रों में रहते हुये ही दीक्षा दी गई। दीक्षा के बाद आपने गृहस्थ-वस्त्रों को उतारा।

६—सं १८७६ के देवगढ़ के चातुर्मास में तपस्वी संत कर्मचदजी की। आपने माता-पिता को छोड़कर दीक्षा ली थी।

७—उपर्युक्त चातुर्मास में ही सत रतजी की। आपने पत्नी छोड़ कर दीक्षा ग्रहण की।

८—उपर्युक्त चातुर्मास में ही संत सिवजी की। आपने भी पत्नी छोड़कर दीक्षा ग्रहण की।

९—सं० १८७७ के चातुर्मास के बाद गोघुन्दा म वसंत पचमी के दिन सत सतीदासजी की।

१०—स० १८८१ में सत उत्तमचंदजी की। आप सौंवार वादी थे। आपने स्त्री-पुत्र छोड़कर दीक्षा ग्रहण की थी।

११—इसी वर्ष उदयपुर में मुनि उदयचन्दजी (बड़े) की।

१२—सं १८८५ में पाली चातुर्मास में मुनि मोतीजी की।

१३—सं १९ २ के चातुर्मास के बाद ब्यावर में मुनि हुपचदजी की। आपने माता-पिता भाई-बहन को छोड़कर दीक्षा ग्रहण की थी। आपकी दीक्षा आभूषणों सहित हुई। दीक्षा के बाद आपने आभूषणों का त्याग किया।

(५) सिंघाड़े की विशिष्ट तपस्याए आपके सिंघाड़े में तपस्याए भी बड़ी-बड़ी होती रहीं। उनका विवरण इस प्रकार है :

१—सं १८६२ म जैतारण चातुर्मास में मुनि जीवनजी ने २२ दिन की तपस्या की। बाईसवें दिन सथारा किया। १७ दिन का सथारा आया। इस तरह ३९ दिन की तपस्या हुई।

२—स १८६४ म देवगढ़ चातुर्मास म सत सुखजी ने सथारा किया। दस दिन का अनशन आया।

३—सं० १८६६ में पाली चातुर्मास में मुनि मोपजी ने ५८ दिन की उदकागार तपस्या की। पारण के बाद मुनि हेमराजजी के चरण पकड़कर आपने यावज्जीवन सथारा कराने का अनुरोध किया। चार पहर का संथारा आया।

४—सं० १८७० के देवगढ़ चातुर्मास में मुनि रामजी अष्टम भक्त तप में परलोक सिधारे।

५—सं० १८७१ के शेषकाल में नानजी चोले की तपस्या में दिवंगत हुए।

६—सं० १८७४ गोगुंदा चातुर्मास में मुनि पृथ्वीराजजी ने ८२ दिन की तपस्या की। मुनि पीथलजी (लघु) ने ४५ दिन मुनि शोभराजजी ने ८६ दिन मुनि सरूपचन्दजी ने १४ दिन और मुनि भीमराजजी ने १२ दिन की तपस्या की।

७—सं० १८७५ के पाली चातुर्मास में मुनि पृथ्वीराजजी ने ७१ दिन और मुनि पीथलजी (लघु) ने ३६ दिन की तपस्या की। मुनि सरूपचन्दजी और जीतमलजी ने भी ४२।४२ उपवास किये।

८—सं० १८७६ के देवगढ़ चातुर्मास में मुनि पीथलजी ने १०९ दिन का तप किया।

९—सं० १८७७ के उदयपुर चातुर्मास में मुनि वर्द्धमानजी तपस्वी ने भोजन के आगार से १४ दिन की तपस्या की।

१०—सं० १८७८ के आमेट चातुर्मास में मुनि पृथ्वीराज ने ९९ दिन की तपस्या की।

११—१८८५ के आमेट चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी ने मास-मास क्षमण का तप किया। मोतीजी मुनि ने आछ आगार से ७९ दिन का तप किया।

१२—सं० १८८६ में पिपाड़ में उदयचन्दजी ने आछ आगार से एक मास का तप किया। मुनि दीपजी ने आछ आगार से १८९ दिन का तप किया।

१३—सं० १८८७ में दीपचन्दजी स्वामी ने जल के आगार से ३१ दिन का तप किया और उदयचन्दजी ने एक मास का।

१४—सं० १८८८ गोगुंदे के चातुर्मास में सर्व मुनि उत्तमचन्दजी उदयचन्दजी और दीपचन्दजी ने क्रमशः ३४ ३७ और ४५ दिन की तपस्यायें कीं।

१५—सं० १८९० में पिपाड़ में उदयचन्दजी ने मास क्षमण का तप किया।

१६—सं० १८९२ के पाली चातुर्मास में वैयावृत्य करते हुए मुनि उदयचन्दजी ने ३ दिन की तपस्या की।

१७—सं० १८९३ के पिपाड़ चातुर्मास में वैयावृत्य करते हुए मुनि उदयचन्दजी ने ४१ दिन की तपस्या की।

१८—सं० १८९४ के लाडनूं चातुर्मास में मुनि रामजी ने तीस दिन की तपस्या की और वैयावृत्यी मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३७ दिन की।

१९—सं० १८९५ के पाली चातुर्मास में मुनि रामजी ने ४१ दिन का तप किया। मुनि उदयचन्दजी ने उदकागार से ३ दिन की तपस्या की।

२०—सं० १८६६ के पिपाड़ चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से २० दिन की तपस्या की।

२१—सं० १८९७ के सिरियारी चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी और मुनि अनूपचन्दजी ने जल के आगार से ५० दिन की तपस्या की।

२२—सं० १८९८ में पाली चातुर्मास में मुनि सतीदासजी ने आछ आगार से ३१ दिन की तपस्या की और मुनि उदयचन्दजी ने २१ दिन की।

२३—सं० १८९९ में गोगुंदे चातुर्मास में संत भैरजी ने २१ दिन और मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२४—सं० १९०० में पीपाड़ द्वार चातुर्मास में मुनि भैरजी ने २० दिन की और मुनि उदयचन्दजी ने जल आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२५—सं० १९०१ के पुर चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी ने ओसन जल के आगार से ७७ दिन का तप किया।

२६—सं० १९०२ में उदयपुर चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२७—सं० १९०३ के पीपाड़ द्वार चातुर्मास में मुनि कर्मचन्दजी ने जल के आगार से ३१ दिन की तपस्या की।

२८—सं० १९०४ के आमेट चातुर्मास में मुनि उदयचन्दजी ने २ मास का तप आछ आगार से किया।

(६) दीर्घ स्वस्थ मुनि जीवन आपका दीक्षा-पर्याय काल ५१ वर्ष व्यापी रहा। यह काल स्वामीजी के दीक्षा-पर्याय काल से भी नौ वर्ष अधिक है। इस सुदीर्घ कालीन मुनि जीवन में आप प्रायः स्वस्थ रहे।

सं० १८७५ के पाली चातुर्मास के बाद आप देवगढ़ पधारे। एक दिन दिशा से वापस आते समय आपको गाय ने चोट पहुंचा दी जिससे आपका घुटना उतर गया। कंवल में सुख मुनि आपको शहर में ले आये और दिल्ली के वैद्य मगनीरामजी ने मुनियों को उपचार बतलाया। उस उपचार के द्वारा आप स्वस्थ हुये परन्तु इस चोट के कारण आपको नौ मास तक वहीं रहना पड़ा और सं० १८७६ का चातुर्मास देवगढ़ में ही हुआ।

मुनि हेमराजजी के करीब ३॥। वर्ष तक नेत्रों में मोतिया का रोग रहा। इससे दृष्टि जाती रही। सं० १८९७ का चातुर्मास सिरियारी में रहा। बैशाख में एक संत ने सिरयारी में ही नेत्रों की कारी की। आपके नेत्रों में पुनः ज्योति प्रगट हुई।

(७) अन्तिम चातुर्मास के बाद का विहार : आपका अन्तिम चातुर्मास सं० १९०४ में आमेट शहर में हुआ। चातुर्मास की समाप्ति के बाद आप कांकरोली पधारे।

वहां आपने तृतीय आचार्य ऋषि रायचंदजी स्वामी का दर्शन किया और फिर उन्हीं के साथ मोठन्दे गांव पधारे। वहां से आप मीजी द्वार पधारे और वहां एक मास रहे। फिर सिसोदे, कांकड़ोली और रासोल होते हुये केलवा पधारे। वहां से विहार कर माहवा होते हुये आमेट पधारे। आपका विचार मरुधर देश जाने का था। साधु और श्रावकों ने आपको बहुत रोका पर आप अडिग रहे और विहार कर एक रात कमेरी रहे और दो रात कुवाकल। फिर वहां से दोलोजीरावेड़े से होते हुये देवगढ़ पधारे। तीव्र उष्णकाल आ गया था। फिर भी मरुधर जाने का विचार आपने नहीं छोड़ा। मीजी द्वार के प्रसिद्ध श्रावक मायाचंदजी के पुत्र फोजमलजी ने आपके दर्शन किये और आपसे रुकने की अर्ज की तब आप बोले—"हम मरुधर काल के खींचे हुये जा रहे हैं तो भी कुछ पता नहीं—'कालरा खांच्या आवां अठी कांई ते पिण खबर न काय। आप सात रात देवगढ़ रहे। इसके बाद पीपली कुलेज होते हुये सिरियारी पधारे।

आप सिरियारी पधारे उस दिन जेष्ठ बदी चौथ का दिन था। द्वादशी तक आप पूर्णतः स्वस्थ थे और उस दिन भी आपने खड़े-खड़े ही प्रतिक्रमण किया था :

> आसा एकावन वर्ष स्वामजी कांई विचरया हेम सचित।
> चुउथ दिन स्वामजी कियो उभो पडिकमणो विवत॥
> जेठ विद बारस तांई स्वामजी होसी उभा पडिकमणो कीध।
> पछमी कर्म काटण तणा होसी जग महि जस लीध[१]॥

(८) अन्तिम सप्ताह कहना होगा कि आपकी पहली अस्वस्थता यहीं से आरम्भ होती है। जेठ बदी तेरस के दिन आपको कुछ श्वास का प्रकोप हुआ। चौदस के दिन आप गाँव के बाहर दिशा के लिये पधारे। इसी दिन आचार्य जीतमलजी स्वामी ने आपके दर्शन किये। उस दिन आपने अन्याचार्य से अनेक तरह का वार्तालाप किया। इस तरह आपको दिन में चैन रहा पर रात्रि में श्वास विशेष रूप से उठने लगा। अमावस के प्रातः फिर साता हुआ। सुबह के भोजन में आपने दो फुलके खाये और शाम के आहार में एक फुलका। रात्रि में पुनः श्वास-प्रकोप बढ़ गया। प्रतिपदा के प्रभात में फिर साता हुई और आप गण-समुदाय सम्बन्धी बातें करते रहे। इस दिन तक दोनों वक्त का प्रतिक्रमण स्वयं बैठकर करते और उच्च स्वर से पाठोच्चार करते रहे।

इन दिनों आचार्य ऋषि रायचन्दजी चिरपटिया में विराजते थे। वहीं आपकी अस्वस्थता का समाचार आचार्य श्री को प्राप्त हुआ। प्रतिपदा के दिन आपने कपूरजी मुनिजी को मुनि हेमराजजी के पास भेजा। उस दिन आपने कहा—"आहार करने का भाव नहीं है क्योंकि इससे श्वास बढ़ जाता है।" परन्तु जीतमलजी स्वामी के विशेष अनुरोध से आपने एक सूरे (सूरे) फुलके का आहार लिया।

१—हेम नवरसो ८.१८ १९

उसी दिन तीसरे पहर आप मुनि कपूरजी से बोले—"शीघ्र जाओ और आचार्य श्री को आज ही दर्शन करने के लिये कहो। यदि आज न पधार सकें तो कल पहर दिन बीतने के पूर्व दर्शन करें। देर न करें। कहीं उनके मन की मन ही में न रह जाय।' इसके बाद श्वास का प्रकोप बढ़ गया। चौथे पहर कुछ साता हुई और फिर शासन सम्बन्धी बातें करने लगे। शाम के आहार का त्याग कर दिया। सायंकाल को अपने मुख से शब्दोच्चार करते हुये बैठे-बैठे प्रतिक्रमण किया। रात्रि में संतों से व्याख्यान दिलवाया।

रात्रि के अन्तिम प्रहर में मुनि सतीदासजी और उदयचन्दजी ने आपको चौबीसी की चौदह ढालें सुनाईं। बाद में आप फिर अनेक तरह की वैराग्य की बातें सन्तों से करने लगे। श्रीतमलजी स्वामी ने विचार किया : 'आयु का क्या भरोसा ? अभी तो कोई खतरा नहीं फिर भी 'मिच्छामि दुक्कडं' दिला देना अच्छा है।' ऐसा सोच उन्होंने व्रत उच्चारित करवाये और 'मिच्छामि दुक्कडं' दिलवाया। आपने बड़े प्रसन्न मन और बड़ी सावधानी के साथ आलोचना की। उस समय का चित्र इस प्रकार है :

> हेम पिण निज मुख सूं कही हो, ऊंचे शब्द उचार।
> मिच्छामि दुक्कडं मांहरे हो एहवा सावचाम गुणधार॥
> इम पांचू ही भेद में हो आख्यो हुवे अतिचार।
> मिच्छामि दुक्कडं तेहनो हो कह्या भूधा शब्द उचार॥
> मन वच काया गुप्त में हो लागो हुवे अतिचार।
> यूं जुदा भेद करी कह्या हो मिच्छामि दुक्कडं उदार॥
> छर्ड व्रतां रा अतिचार मले हो हेम बोले ऊंच स्वर वाण।
> गये काल री मिच्छामि दुक्कडं हो आगमिये काल रा पचखाण॥
> पाप अठारे आलोविया हो जुदा जुदा ले नाम।
> पचखाण आगमिये काल में हो, त्रिविध त्रिविधे कर ताम॥
> इण रीत महाव्रत आलोविया हो, आलोवण अधिकार।
> भाग्यवती हेम महामुनि हो योग्य मिल्यो श्रीकार'॥

इसके बाद मुनि श्रीतमलजी ने स्थानांग उत्तराध्ययन आदि सूत्रों के पाठ सुनाते हुये आपके परिणामों को वैराग्य में ऐसा तल्लीन किया कि आपकी आत्मा आनन्दविभोर हो उठी। मुनि श्रीतमलजी ने "मृत्यु महोत्सव है" इस बात को बड़े मार्मिक ढंग से अपने विद्या-गुरु के सम्मुख रखा और उसके बाद उनके गुणवाद किये।

अब तक प्रतिक्रमण का समय आ चुका था। आप सतीदासजी से बोले—'निद्रा आ रही है।" सतीदासजी बोले—"लेटकर निद्रा लें।" आप बोले—"प्रतिक्रमण करना है।"

१—हेम नवरसो ६ । १६ १८ २२ २३

सतीदासजी बोले—"आप अस्वस्थ हैं ऐसी स्थिति में प्रतिक्रमण न करें तो कोई बात नहीं।" आप बोले—"प्रतिक्रमण तो करना ही है, इसमें अस्वस्थता का क्या प्रश्न ?" इसके बाद उच्च स्वर से पाठोच्चार करते हुये आपने बैठे-बैठे प्रतिक्रमण किया।

(१) महा प्रयाण तदनन्तर संतों ने प्रतिलेखन किया और मुनि मोतीजी स्वामी दिशा जाने की आज्ञा लेने के लिये आये। आपने उनके मस्तक पर अपना हाथ रखा। संतों ने पूछा—'साता है तो ?" आपने आह्लादपूर्वक उच्च स्वर में उत्तर दिया—"देव, गुरु के प्रताप से साता है।"

फिर आप बाजौट से नीचे उतर विराज पधारे। सभी संत उपस्थित थे।

किसी ने श्वास की औषधि बताई थी। उसको कई संत घिस रहे थे। मुनि जीतमलजी सतीदासजी आदि संतों से बोले—"हम लोग दिशा से वापस आकर औषधि देंगे।" ऐसा कह पछेवड़ी (ऊपर का कपड़ा) पहन दिशा जाने को प्रस्तुत हुये। इस समय जीतमलजी स्वामी के मन में आया—'यदि कहीं श्वास बढ़ गया तो ? अच्छा हो हम औषधि देकर ही दिशा जाय।" ऐसा विचार कर वे ठहर गये। मुनि हेमराजजी दिशा से निवृत्त हो बाजौट पर बैठे। शरीर में अत्यन्त पसीना आ गया। श्वास का प्रकोप अत्यन्त बढ़ गया। हाथ के इशारे से अफीम माँगी। मुनि जीतमलजी ने अफीम दी। आप मुंह में रख उसे चूसने लगे। इतने में पुद्गलों की शक्ति क्षीण होती हुई दिखाई दी।

अवसर देखकर मुनि जीतमलजी ने अनशन ग्रहण कराया। आपने शुद्ध विवेकपूर्वक उसे ग्रहण किया। मुनि जीतमलजी बोले—"स्वामी ! आपको अरिहंत सिद्ध साधु और धर्म इन चारों शरणों का आधार है। इसके बाद अनेक वैराग्य की बातें सुनाईं। तदन्तर चारों आहार का त्याग कराया। फिर शरणों का आधार दिलाया।

इस प्रकार एक घड़ी का समय बीता। आप मुनि सतीदासजी और करमचन्दजी के हाथों के सहारे बैठे हुये थे। इसी दशा में आपने समाधि-मरण को प्राप्त किया। साधुओं ने शरीर व्युत्सर्ग कर कायोत्सर्ग ध्यान किया। सब संतों ने उस दिन उपवास किया।

इस तरह आपका स्वर्गवास आपकी जन्मभूमि सिरियारी में श्री सं १९०४ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया शनिवार के दिन हुआ। उस दिन वहां साठ से अधिक साधु-साध्वियाँ उपस्थित थीं। आचार्य श्री रायचन्दजी स्वामी आपके स्वर्गवास होने के दो मुहूर्त बाद पधारे। [1]उस समय आपने जो उद्गार प्रकट किये उनको मुनि जीतमलजी ने इस प्रकार पद्य-बद्ध किया है :

> मिच्छा मारीमाल राजगुरी चस्या हो चव इसी करड़ी वाणी भाम।
>
> पिन हिवड़ाँ करड़ी माची घणी ही इम बोल्या ऋषराय ॥

१ —हेम नवरसो १ १ १

(१०) महान् व्यक्तित्व —आपके व्यक्तित्व के विषय में हम जयाचार्य के ही उद्गारों को प्रकट करेंगे

मुनिवर रे सीयल पल्यो नववाड़ सूं रे, धुर बाला ब्रह्मचार हो लाल।
ए तन उत्कृष्टो पम्यों रे, सुरपति प्रणमें धार हो लाल॥
मुनिवर रे उपशम रस माहिं रह्या रे विविध गुणां री खाण हो लाल।
एकन्त कर्म काटण भणी रे, संवेग रस गलताण हो लाल॥
मुनिवर रे स्वाम गुणां रा सागर रे, निरखो मति गम्भीर हो लाल।
उजागर गुण आगलो रे, मेरु तणी पर धीर हो लाल॥
मुनिवर रे कठिन वचन कह्या तणो रे, थाप के सीधो नेम हो लाल।
बहुलपण नहीं बागस्यो रे, वचनामृत सूं प्रेम हो लाल॥
मुनिवर रे विविध कठिन वच सांभली रे, थांरे मन में नहीं समाय हो लाल।
तन मन वच मुनि वश किन्यो रे, ए तन अधिक उपाय हो लाल॥
मुनिवर रे चौथ आर सांभल्या रे क्षमा पूरा अरिहंत हो लाल।
विरला पंचम काल में रे, हेम सरिखा सन्त हो लाल॥
मुनिवर रे निरलोभी मुनि निमला रे, मायव निर अहंकार हो लाल।
इसका कम उपधि करी रे, सत्य वच महा सुखकार हो लाल॥
मुनिवर रे संयम में पूरा घणा रे, वर तप विविध प्रकार हो लाल।
उपधि अल्पादिक मुनि भणी रे, हिमरो हेम दातार हो लाल॥
मुनिवर रे ईर्या शुद्ध मति शोधती रे, वाणे भाख्यो जगराज हो लाल।
शुभ सुरत गमती घणी रे, प्रत्यग भवदधि पाज हो लाल॥
मुनिवर रे स्वाम गुणां रा सागर किम कहिये गुण एक हो लाल।
ऊंडी शुभ आलोचना रे, बाई शुभ विवेक हो लाल॥
मुनिवर रे पर्गंत आचार्य आगल्या रे तें पामी एकणकार हो लाल।
मान भेट मन वश किन्यो रे निरख शीश नमस्कार हो लाल॥
साम धणा मन्ना भणी रे, तें कीधो अधिक उदार हो लाल।
मय वन्दन पय वानहो रे, समरे तीरथ च्यार हो लाल॥

(११) आचार्यों के बहुमान के पात्र :—आपने तीन आचार्यों के—आचार्य भीखणजी, आचार्य भारीमालजी और आचार्य रायचन्दजी के युग देखे। आपको सभी का स्नेह एवं बहुमान प्राप्त था।

आपने दीक्षा लेने के बाद स्थिर होते ही स्वामीजी ने मुनिश्री भारीमालजी से फरमाया :

१—हेम नवरसो : ७ । ११ १८,१४-२६

भारिमल सूं भिक्खू कहै, मत थे हुवो अचिन्त।
आगे तो थारे म्हें हुंता अब हेम सुवनीत ॥
जे कोई पाखंड्यां थकी पड़े चरचा रो काम।
तो सह थारे हेमजी इम कहि भिक्खू स्वाम[1] ॥

जब मुनि वेणीरामजी को आपके यावज्जीवन ब्रह्मचर्य ग्रहण करने का संवाद स्वामीजी से मिला तब वे बोले :

वेणीरामजी स्वामजी हर्ष्या थया मन मांय।
धन्य प्रशंस्या स्वाम नें आप कीधी बात सवाय ॥
जे शील सवरायो हेम नें, कीधो उत्तम काम।
म्हें पिण तप कीधो थकी (पिण) ठीक न आयो ताम[2] ॥

आपका व्यक्तित्व कितना आकर्षक एवं प्रभावशाली था यह इन दोनों घटनाओं से स्वयं प्रकटित हो जाता है। स्वामीजी ने आपमें एक महान् ओजस्वी आत्मा का आलोक देखा था।

एक बार उदयपुर के राणाजी ने भारीमालजी स्वामी को उदयपुर में न रहने का हुक्म दे दिया। बाद में उनको अपनी गलती महसूस हुई और उन्होंने भारीमालजी स्वामी से उदयपुर पधारने की विनती की :

विहरंते वर्ष पुर मझे भारीमाल रिषराय।
आई हिन्दूपति नी विनती करी घणी नरमाय ॥
उदयापुर पधारिजें दुनियां साहमों देख।
दुष्ट साहमों नहीं देखिजें किरपा करो विशेष[3] ॥

आचार्य श्री भारीमालजी स्वयं तो नहीं पधारे पर उनकी विनती स्वीकार कर हेमराजजी स्वामी के सिंघाड़े को भेजा। इस अवसर पर ऋषि रायचन्दजी (भावी तृतीय आचार्य) भी आपके साथ थे :

हेम रिष रायचन्द जी ठेरे साथ उदार।
गुरु हुक्म सूं आविया उदयापुर शहर मझार ॥

१—हेम नवरसो ३ दोहा २ ३
२—वही दोहा ७-८
३—तेरापंथ आचार्य चरितावलि (द्वि. खण्ड) : आचार्य भारीमाल रो बखाण ५ दोहा ४-५

उदयापुर मायें नम्यो हिन्दुपति इरण सहीत।
उपगार हुवो त्यां प्रति घणो आंणे चौमा प्रारा नी रीत[1] ॥

आचार्य श्री ने मुनि श्री हेमराज को भेजना अपने पधारने के बराबर ही माना।

आमेट के अन्तिम चातुर्मास के बाद जब आप कांकरोली पधारे तब आचार्य ऋषि रायचन्दजी स्वयं संतों के साथ आपकी अगवानी के लिए गये। यह परम सम्मान था :

चम चौमासो उतरयो विहार कियो तिणवार।
विचरत विचरत आविया कांकरोली शहर मझार॥
परम पूज्य पूज हरषिया संत घणा ले संग।
साहमा आया हेम में उपनो घणो उमंग॥
बे कर जोड़ी वन्दना करे, देख बहु जनवृन्द।
नर नारी हर्ष्या घणा पाम्यां अधिक आणन्द[2] ॥

आचार्य श्री देहान्त के पूर्व नहीं पहुंच सके। दो मुहूर्त बाद में पहुंचने पर उन्होंने जो उद्गार व्यक्त किये वे ऊपर दिये जा चुके हैं। वे उद्गार भी इसी भावना के प्रतीक हैं।

स्वर्गवास के बाद आपने मुनि श्री जीतमलजी को 'हेम नवरसो' लिखने का आदेश दिया

परमपूज्य जीत ने कह्यो हो करो नवरसो सार।
इम पूज्य तणी आज्ञा थकी हो जोड्यो हेम नवरसो उदार[3] ॥

इन पंक्तियों से भी उसी भावना की अभिव्यक्ति होती है।

सं० १८८१ में आचार्य श्री रायचन्दजी ने आपके आहार के विषय में पांती का हिसाब उठा दिया। यह भी महती कृपा का ही कारण था।

(१२) तपस्वी जीवन : आपका जीवन बड़ा तपस्वी था। सं० १८५६ के चातुर्मास में आप स्वामीजी के साथ थे। आपने चातुर्मास भर एकान्तर तपस्या की। आपके तपस्वी-जीवन की झांकी जयाचार्य के शब्दों में इस प्रकार है :

१—तेरापंथ आचार्य चरितावलि (द्वि. ख.) आचार्य भारीमालजी रो बखाण ५ दोहा ७-८

इस घटना का उल्लेख हेम नवरसो ४ ४६-५० में इस प्रकार मिलता है

उदियापुर चम कलासो रे संतरे कियो चौमासो रे।
हिन्दुपति हुवो अधिक हुलासो॥
भीमसिंह मत्ति इद कीधी रे नमस्कार वंदणा प्रसिद्ध रे।
तिण सूं हुए जगी धर्म वृद्धि॥

२—हेम नवरसो ८ दोहा १ १

३—हेम नवरसो ६ ११२

४—हेम नवरसो ५ ६६

मुनिवर रे उपवास बेला बहुला किया रे, तेला चोला तंतसार हो लाल।
पांच-पांच नो थोकड़ा रे, कीया बहुली बार हो लाल॥
हेम ऋषि मझिये सदा रे॥
मुनिवर रे षट दिन कीया संत सूं रे पूरो तप सूं प्यार हो लाल।
आठ किया उत्कर्ष सूं रे, हेम बड़ा गुणधार हो लाल॥ हेम॥
मुनिवर रे इतना त्याग किया ऋषि रे, बहु विगय तणो परिहार हो लाल।
हेम वरागी देखने रे पामे अधिको प्यार हो लाल॥ हेम॥
मुनिवर रे शीतकाल बहु ही कम्योरे एक पछेवड़ी परिहार हो लाल।
घणा वर्षां लग आचर्यो रे, हेम गुणां रा भण्डार हो लाल॥ हेम॥
मुनिवर रे ऊभा काउसग्ग आदर्यो रे, शीतकाल में सोय हो लाल।
पछेवड़ी छांडी करी रे, बहु कष्ट सह्यो अवलोय हो लाल॥ हेम॥
मुनिवर रे सज्झाय करवा स्वामजी रे, तन मन अधिको प्यार हो लाल।
दिवस रात्रि में हेमनो रे, एहिज उद्यम सार हो लाल॥ हेम॥
मुनिवर रे काउसग मुद्रा स्यापने रे, ध्यान सुधा रस लीन हो लाल।
नित्य प्रति उद्यम अति घणो रे मुक्त स्हामी गुण लीन हो लाल[1]॥ हेम॥

(१३) कुछ जीवन प्रसंग : आपके जीवन के कई प्रसंग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं, उन्हें हम यहाँ संक्षेप में दे रहे हैं

(१) सं० १८७७ के उदयपुर चौमासे के बाद आपने संतों के साथ राजनगर में द्वि० आचार्य भारीमालजी के दर्शन किये। आचार्य श्री के शरीर में अधिक असाता थी इससे अनेक संत वहाँ एकत्रित हुए। आचार्य श्री ने युवराज पदवी के लिए दो नाम लिख रखे थे—एक मुनि खेतसीजी का तथा दूसरा ऋषि रायचन्दजी का। मुनि जीतमलजी ने एक ही नाम के लिए विनती की। आचार्य श्री आपके मन की प्रतिक्रिया जानने के इच्छुक थे। इस परिस्थिति को आपने जिस प्रकार परिपुष्ट किया उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है :

भारीमाल तनु कारण वाणी बहु संत मिल्या तिहां जाणी।
पदवानि नी मरजी घोलन ऋषि हेम करे इम वाणी॥
प्रथम धार ऋषिराय नामी मे मइर करी नें दीज।
म्हारी तरफ न् धार मन मांहि किंचित फिकर न कीज॥
हाथी जीतजी धारे दोनूं में नहिं है फरक लिगारो।
जिम धार तिमें ऋषिराय भणे हूं करीगा बेहुं सुविचारो॥
हेम वचन वर स्वाम सुना सुन पदवानि हर्ष सुवाया।
परम विनीत ए जीतचंद दर आश्या हेम सराया॥

1—हेम नवरसो ७ । १-७

तब पद युवराज दियो अभिराम मे हेम भणी सु विमासो।
सब संता स्युं स्वाम मोसायो शहर आमेट चोमासो ॥

मुनि हेमराजजी कितने विनयी और नीति के निमल थे यह इस घटना से स्वयं प्रकट होता है। श्री जीतमलजी स्वामीजी ने इस घटना के सम्बन्ध में लिखा है

इम बाच मुनी पूज्य हर्ष्या रे, मार्ने तन मन सुवनीत परख्या रे।
निकलंक हेम इम निरख्या ॥
एहवा हेम सुविनीत गम्भीरो रे, ए तो मेरु तणी पर धीरो रे।
इम निर्मल अमोलक हीरो[१] ॥

(ख) सं० १८८४ का चातुर्मास पटलावद में व्यतीत कर आचार्य रायचन्दजी पुर पधारे। दीक्षा में बड़े होते हुए भी आप अनक श्रावक-श्राविकाओं के वृन्द के साथ आचार्य श्री के सम्मुख पधारे। मुनि हेमराजजी प्रतिक्रमण में स्वयं ही आलोचना ले लिया करते थे। आचार्य श्री ने मुनि जीतमलजी से कहा— 'आलोचना गणि से लेनी चाहिये। जब तक हेमराजजी को सहमत नहीं करोगे तुम्हें चारों आहार का त्याग है। मुनि जीतमलजी ने यह बात आपसे अर्ज की। आपने यह बात तुरन्त स्वीकार की और तब से आचार्य श्री से आलोचना लेने लगे। वास्तव में बात यह थी कि उस समय तक इस प्रश्न की चोलना— चर्चा ही नहीं हुई थी—'तठा ताइ चोलणा न हुइ ताम'[२]।

(ग) एक बार वेणीरामजी मुनि ने स्वामीजी से कहा : हेमराजजी को व्याख्यान अस्खलित रूप से कण्ठस्थ नहीं होते। वे जोड़ते जाते हैं और व्याख्यान देते जाते हैं।" स्वामीजी बोले : 'केवली सूत्र व्यतिरिक्त ही होते हैं। उनके सूत्र से काम नहीं होता।"

(घ) नाथद्वार में स० १८६० में स्वामीजी को वातरोग के कारण करीब १३ महीने तक ठहरना पड़ा। एक बार मुनि हेमराजजी गोचरी गये। चने और मूंग की दाल को साथ देख कर स्वामीजी ने पूछा : 'दोनों दालों को साथ किसने किया ?" आप बोले "मैं साथ ही लाया था।" स्वामीजी बोले 'अस्वस्थ के लिए अलग मांग कर लाना तो दूर रहा तूने दोनों को मिला क्यों दिया ?' आप बोले "भजाने में इकट्ठी हुई। स्वामीजी ने कड़ा उपालम्भ दिया। आप एकांत में जाकर सो गये। आप उदास हो गये। स्वामीजी ने आहार कर आकर पूछा "दोष अपनी आत्मा का दिखाई दे रहा है या मेरा ?" आप बोले : "दोष तो अपना ही देखता हूं।"

१—(क) तेरापन्थ आचार्य चरितावलि (द्वि ख) : आचार्य जीतमलजी रो बखाण ७ १ १६
(ख) वही आचार्य रायचन्द जी रो बखाण ७ ६-७
(ग) हेम नवरसो ४ ५५-६
२—हेम नवरसो ४ ५८ ५९
३—तेरापंथ आचार्य चरितावलि : आचार्य जीतमलजी रो बखाण ११ बखाणी ११
४—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १५९

स्वामीजी बोले "ठीक है। आज के बाद सचेत रहना। उठो! आहार करो।" आपने आहार किया[1]।

(ङ) सं० १८५५ में स्वामीजी कोठारोसी में सैहलोतों की पोल में विराजे। रात में पोल-द्वार की छोटी खिड़की खोल स्वामीजी दिशा गये। आपने पूछा "स्वामीजी खिड़की खोलने में क्या बाधा नहीं?" स्वामीजी बोले 'पाली का चोथजी सकलेचा वन्दन करने के लिए आया था। वह बड़ा शंकाशील व्यक्ति है। पर इसकी शंका तो उसको भी नहीं हुई? फिर तुम्हें यह शंका कैसे हुई?" आप बोले "स्वामीजी! मुझे कोई शंका नहीं मैं तो पूछता हूं। स्वामीजी बोले: "तू पूछता है तो इसमें बाधा नहीं। यदि इसमें बाधा होती तो मैं क्यों खोलता?'

(च) सं० १८५५ में पाली में आप टीकमजी से चर्चा कर रहे थे। उस समय एक माहेश्वरी बोला 'चार पैसे देकर किसी ने सपेरा से सप छुड़ाया तो उसमें उसे क्या हुआ?" टीकमजी बोले: 'अच्छा धर्म हुआ।" माहेश्वरी बोला 'वह सप सीधा चूहे के बिल में जा घुसे तब?" टीकमजी बोले बिल के अन्दर चूहा न हो तो?"

इस प्रश्नोत्तर की बात आपने स्वामीजी से कही। स्वामीजी बोले: 'किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड़ गया। यह काग का भाग्य—उसकी आयु थी। पर गोली छोड़नेवाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह जिस सप को छुड़ाया वह बिल में गया। यदि अन्दर चूहा नहीं है तो यह चूहे का भाग्य पर सर्प को छुड़ानेवाला तो हिंसा का भागी ठहर चुका।"

स्वामीजी ने आपसे कहा—"ऐसा जवाब देना चाहिए"[2]।

(छ) आपने दीक्षा लेने के बाद दशवैकालिक सूत्र सीखा। उसके बाद उत्तराध्ययन सूत्र सीखने लगे। स्वामीजी बोले "व्याख्यान सीखो। तुममें मंडकला है।

(१४) सबसे बड़ी देन—विद्यादान: हेमराजजी स्वामी की सबसे बड़ी देन है उनका विद्यादान। वे चतुर्थ आचार्य जीतमलजी स्वामी के विद्यागुरु थे। उनकी दीक्षा आचार्य भारीमालजी के समय में यद्यपि रामचन्दजी के कर-कमलों से सं० १८६९ की माघ वदी ७ के दिन जयपुर में सम्पन्न हुई। दीक्षा के बाद उन्हें मुनि हेमराजजी को सौंप दिया गया था। मुनि जीतमलजी स्वयं ही लिखते हैं

> संयम देई सूंपिया हम भणी तिण वारी हो।
> हेम जगाय पका किया विद्यादान दातारी हो।
> थांरी बहु बलिहारी हो[3] ॥

१—भिक्खु दृष्टान्त: दृ० १६६

१—भिक्खु दृष्टान्त: दृ० १०१

१—भिक्खु दृष्टान्त: दृ० ७०

१—भिक्खु दृष्टान्त: दृ० २०३

१—(क) आचार्य चरितावलि आचार्य रामचन्द्रजी रो बखाण ६६

(ख) हेम नवरसो १:१८-२१

इसके बाद मुनि जीतमलजी के ग्यारह चातुर्मास सं० १८७० से लेकर १८८१ तक आपके साथ हुए। बाद में सं० १९०३ का चातुर्मास भी साथ में हुआ। इन तेरह चातुर्मासों में आपने जीतमलजी स्वामी को भरपूर ज्ञान-दान दिया :

तेरे चौमासा बहु चप करनें सूत्रादि धर्म धारी।
विविध कला सीखाई जीत नें हेम हद्या उपगारी[1] ॥

इस ज्ञान-दान की चर्चा करते हुए वे पुनः लिखते हैं :

मुनिवर रे हु तो बिन्दु समान वो रे तुम कियो सिन्धु समान हो लाल।
तुम गुण कबहु न विसरूं रे, निश दिन धरूं तुम ध्यान हो लाल।
मुनिवर रे जीत तणो जय थे करी रे, विद्यादिक विस्तार हो लाल।
निपुण कियो सतीदास ने रे, वलि प्रवर सन्त मधिकार हो लाल[2] ॥

(१५) साहित्यिक अभिरुचि और देन : आपकी साहित्यिक अभिरुचि बड़ी उच्च-कोटि की थी। आप सहज ज्ञानी और आध्यात्मिक कवि थे। आपकी कृतियाँ थोड़ी ही प्राप्त हैं पर जितनी भी प्राप्त हैं वे आपकी असाधारण साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देती हैं। सम्वत् १९०३ के चातुर्मास में आपने स्वामीजी के दृष्टान्त मुनि जीतमलजी को सिखाए :

विविध हेतु ध्याम युक्ति वर, भिक्खु रा दृष्टान्त भारी।
जीत सिखया स्वामी हेम सिखाया और ही विविध प्रकारी[3] ॥

आपके अन्तिम दिनों में मुनि जीतमलजी ने कोठे में आपकी दर्शन-सेवा की। उस समय भी आपने अनेक बातें उनको सिखाई :

विविध जमी वारता होजी हम सिखाई ताम।
हम बाल गुण पोरसो कोई समुद्र कम थोथाव ॥

देहान्त की पूर्व रात्रि में जब मुनि जीतमलजी कृत चौबीसी की ढालें उन्हें सुनाई गई तब आपने चौबीसी कंठस्थ करने का अभिग्रह लिया

हम पोते अभिग्रहो कियो हो कारण मिटियाँ ताम।
म्ह चिव चौबीसी मुंडे करी हो एहवा वरामी स्वाम[4] ॥

ये सब आपकी साहित्यिक अभिरुचि के ज्वलन्त उदाहरण हैं। अंतिम दिन के प्रातःकाल में आप और मुनि जीतमलजी के बीच जो संवाद हुआ वह जितना वैराग्यपूर्ण है उतना ही साहित्यिक अभिरुचिपरक भी[5]।

१—हेम नवरसो : ६ ११
२—वही : ७ ११ १९
३—वही : ६ १४
४—वही : ८ ५
५—वही : ६ २६
६—वही : ९ ११-७१

आपका अधिकांश समय स्वाध्याय ध्यान अध्ययन और अध्यापन में लगता था। "भीखू चरित" के उपरान्त आपकी अन्य कृति 'आचार्य भारीमालजी रो बखाण" है। यह कृति 'तेरापंथ आचार्य चरितावलि" (द्वि० ख०) के पृष्ठ १ से २४ पर प्रकाशित है। इसमें १३ ढालें हैं। दोहे और ढाल-गाथाओं की संख्या क्रमशः ७८ और १७२ है। यह कृति मारवाड़ के पिपाड़ शहर में सं० १८७४ में रचित है।

(२) प्रस्तुत कृति का परिचय

(१) कुल ढाल, दोहे तथा गाथाओं की संख्या : इस चरित में कुल १३ ढालें हैं जिनके दोहों तथा गाथाओं की संख्या इस प्रकार है :

ढाल	दोहा	गाथा
१	९	१७
२	२	२१
३	६	१५
४	६	१२
५	५	१३
६	५	१४
७	४	२१
८	४	१२
९	५	१३
१०	३	१७
११	५	९
१२	२	१२
१३	४	२१
	६	१९७

स्वामीजी के जीवन में तेरह की संख्या का विशेष महत्त्व रहा। आपका जन्म सं० १७८३ की आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी और स्वर्गवास सं० १८६० की भाद्र शुक्ला त्रयोदशी मंगलवार के दिन हुआ। संप्रदाय की नाम-स्थापना के समय अनुयायी श्रावक और साधु दोनों की संख्या तेरह-तेरह ही थी। सम्प्रदाय का नाम भी 'तेरह' संख्या के आधार पर ही तेरापंथ पड़ा। राजस्थानी 'तेरा' शब्द 'तेरह' का पर्यायवाची है।

इस कृति में ढालों की संख्या तेरह रखी गयी है वह आकस्मिक नहीं पर संभवतः स्वामीजी के जीवन में 'तेरह' के अंक के इस महत्त्व को ध्यान में रखते हुये ही रखी गई है।

तेरह ही ढालें भिन्न-भिन्न देसियों—रागिनियों में हैं। आप कंठकला में प्रवीण थे। आपकी वाणी में बड़ा मिठास था। आपकी यह कृति भी अति श्रुतिमधुर भक्ति-भाव से ओत-प्रोत तथा उच्च प्रमोद भावना और काव्य-रस से परिपूर्ण है। वर्णन जितना स्वाभाविक है उतना ही प्रामाणिक भी। इस संग्रह की अन्य कृतियाँ इस कृति की शैली, भावाभिव्यक्ति और घटना-वर्णन से प्रभावित हैं, यह स्पष्ट है।

(२) कृति का संक्षिप्त सार : पहली ढाल में स्वामीजी के जीवन की जन्म से देहावसान तक की मुख्य-मुख्य घटनाओं का सिंहावलोकन है और फिर संक्षेप में स्वामीजी की कुछ विशेषताओं का वर्णन। दूसरी ढाल में आचार्य रुघनाथजी से अलग होने पर स्वामीजी को कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था उसका रोमांचकारी वर्णन है। इन बाधारूपी बादलों को उन्होंने अपने तपोतेज से किस प्रकार तितर-बितर कर डाला इसका यहाँ बड़ा ही सुन्दर वर्णन है :

> रावण रूप किया था बका रे, वहाँ स्वामी देवी चौसाम रे। भवक जन।
> तिण लछमण रा बाण सूं रे लाल रूप गया विललाय रे। भ।
> ज्यूं पुष घावां सूं मछकाया लोकां तणी रे, थांरी संगत म करज्यो कोयरे। भ।
> तिण पूज सुज स्याय ध्यांन बाण सूं रे लाल प्रम भाग्यो बणां री जोय र। भ।
> चकडल चढे रैत सावका रे भांज करे सु खण्ड में भाव र। भ।
> ज्यूं भीखनजी रिप बिखरा डठे रे लाल परिहत भाग्या दीधी ऊनलाय र। भ।

तीसरी ढाल के प्रारम्भिक दोहों में स्वामीजी की साहित्यिक साधना का संक्षिप्त विवरण देते हुये उन्होंने विचार जगत में किस तरह से विजय प्राप्त की इसका सुन्दर वर्णन है। चौथी ढाल का भी प्रायः यही विषय है। पाँचवीं ढाल में स्वामीजी के चरम विहार का वर्णन है। स्वामीजी सिरियारी पधारे तब उनके साथ जो संत थे उन संतों का नामोल्लेख भी यहाँ प्राप्त है। छठी ढाल में स्वामीजी की रुग्णता और उनकी आत्म-आलोचना का वर्णन है। सातवीं ढाल में उन्होंने चतुर्विध संघ को जो चरम उपदेश दिया उसका वर्णन है। आठवीं ढाल में स्वामीजी के संल्लेखणा-संथारे का वर्णन है। नवीं ढाल में स्वामीजी के संथारे की जो प्रतिक्रिया चारों ओर हुई उसका वर्णन है। दसवीं ढाल में स्वामीजी के संथारे की सिद्धि का वर्णन है। ग्यारहवीं ढाल में स्वामीजी के देहान्त के बाद म जनता में जो धर्म-ध्यान हुआ उसका उल्लेख है। बारहवीं ढाल में स्वामीजी ने जो उपकार किया उसका वर्णन है। तेरहवीं ढाल में स्वामीजी के चातुर्मासों का वर्णन है। उन्होंने कितनी प्रव्रज्यायें दीं उसका भी यहाँ उल्लेख है।

(३) रचना-स्थान और समय—इस कृति का समाप्ति-दिवस सं० १८६० माघ शुक्ल नवमी शनिवार है। यह सिरियारी की उसी पक्की हाट में रचित है, जहाँ स्वामीजी ने संथारा किया और समाधिपूर्वक देवलोक पधारे। इसका उल्लेख तेरहवीं ढाल की २ वीं गाथा में इस प्रकार है :

> जोड़ कीधी सरीयारी सैहर में पक्की हाट विचार हो। मुनिंद।
> समत अठारै साठ समें भाद्रा सुदि नवमी सनिसर वार हो। मुनिंद।

यह महत्त्वपूर्ण जीवन चरित आज तक अप्रकाशित ही रहा और प्रथम बार प्रकाशित होकर पाठकों के सम्मुख आ रहा है।

(४) आधार प्रति प्रस्तुत प्रकाशन का आधार तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी स्वामी की हस्तलिखित प्रति से उतारी हुई प्रति है। यह प्रति सं० १८६६ की वैशाख सुदी चतुर्दशी को मेवाड़ के समगोर गांव में लिखी हुई है। श्री हेमराजजी स्वामी के हाथ की मूल प्रति के प्राप्त न होने से उपर्युक्त प्रति से मिलाकर ही यह चरित इस खण्ड में दिया गया है।

२ भीखु चरित

(१) रचयिता का जीवन-चरित

इस कृति के रचयिता मुनि वेणीरामजी (वेणीदासजी) स्वामीजी के स्वहस्त दीक्षित शिष्य थे। स्वामीजी के शिष्यों में आपका क्रम-स्थान २७ वां है। आपकी मातृभूमि बगड़ी (सुधरी) थी। आपकी दीक्षा सं० १८५४ में हुई। आपने साधुओं में अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया। 'साधों में वेणोंजी सतियों में मैणाजी' —यह उस समय की प्रसिद्ध लोकोक्ति थी। आपके व्यक्तित्व का चित्रण इस रूप में प्राप्त है[1]:

हुवो वेणीराम ऋषि भीखो रे, प्रबल पण्डित चरचावादी तीखो रे।
मुनि लियो सुजश नों टीको॥

चार आगल उत्तर बतावी रे उत्तर हेतु दृष्टान्त सुणावी रे।
मर्द मैं प्रगट्यो जिम मोती॥

हर केणा मैं हुसियारी रे, भोला नें लागे अधिक सुप्यारी रे।
चित माहि पामै चमत्कारी॥

थाय मालव देश चमासो रे, बगड़ी सूं चरचा कर तासी रे।
बहु जन नै किया उल्लासी॥

त्यारी धाक सूं पाखण्ड धूज रे वेणीराम केसरी जिम गूंज रे।
प्रगट हलुकर्मी प्रतिबूज॥

परतिमा घ बधि पचारी रे, समझाया घणा नरनारी रे।
हुवी जिन शासन विसतारी॥

वर्षा में दियो संथारो रे, बल बुद्धि मूर्ख सुखकारी रे।
ऐ ती भिक्खु तणी चमारी॥

१—भिक्खु जश रसायण ३० । १२

आप बड़े बहुश्रुती थे। आपको स्वामीजी रचित प्रायः १८०० गाथाएं कण्ठस्थ थीं। सूत्र और सिद्धान्त के रहस्यों के आप बड़े अच्छे जानकार थ। आप प्रचंड पण्डित और दुधर्ष चर्चावादी थे। मालवा देश में सब प्रथम धर्म-प्रचार आप ही के द्वारा हुआ। एक बार रतलाम में आपको स्थान के लिये बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। कोई स्थान देने को तयार न होता। जो देता भी वह बाद में चले जाने को कह देता। इस तरह तीन दिन में आपको ९ स्थान-परिवर्तन करने पड़े। इस प्रकार आहार और स्थानादि के कठिन परिषहों को सहन करते हुए भी आपने धर्म-प्रचार कर अनेक आत्माओं का उद्धार किया।

आप बड़े प्रभावशाली वक्ता थे। आपका व्याख्यान जनता को बड़ा प्रिय लगता। श्रोता के हृदय में आपकी वाणी से चमत्कार-सा उत्पन्न हो जाता। आपका व्याख्यान हेतु, न्याय और दृष्टान्तों से गर्भित होता। आप बड़ कुशाग्र-बुद्धि थे। आपकी बुद्धि बड़ी औत्पातिकी थी।

आप बड़े तेजस्वी थे। एक बार मेवाड़ में ग्राम के समय विहार करते हुए साधुओं से चोर भाण्डोपकरण आदि छीन कर ले गये। आप उस पथरीली भूमि में पद-चिह्नों से चोरों की खोज करते हुए चार गाँव में जा पहुँचे और उन्हें समझा-बुझा कर प्राय सब चीजें वापस ले आये। केवल एक पात्र और कुछ चित्रित पत्र वापस न मिल पाये।

आपका स्वर्गवास स० १८७० में हरचासट्ट नामक गांव में हुआ[1]। एक यति ने द्वषवश आपको दवा के बदले विष दे दिया। इस पर भी आपने बड़ा समभाव रखा। आपका देहावसान अचानक हो गया।

आपने २६ वष पयत बड़ी निमलता स मुनि जीवन यापन किया। भिक्खु दृष्टान्त में स्वामीजी क साथ घटित आपक कई जीवन-प्रसंग प्राप्त हैं। उनमें से कुछ हम यहाँ देते हैं:

मुनि वेणीरामजी बाल्यावस्था में थे तब स्वामीजी से बोले: "हिंगुलु से पात्र नहीं रंगने चाहिए।" स्वामीजी बोले— "मेरे पात्र तो रंगे हुए ही हैं। तुम्हें घृणा हो तो मत रंगो।" वेणीरामजी बोले—"मेरा केलू से रंगने का विचार है।" स्वामीजी बोले: "केलू लाने के लिए जाने पर यदि नजदीक में कच्चे पीले रंग का केलू हो और बाद में दूर पर पक्के लाल रंग का केलू हो तो तुम्हें पहले कच्चे पीले रंगवाले केलू को लेना चाहिए। यदि उसे न लेकर पक्के केलू की चाह करोगे तब तो ध्यान सुरंगे रंग का ही रहा[2]।" इस तरह उनको समझाया तब व समझ गय।

१—(क) हम नवासो १ को १ :
चमालीस संयम लियो वेणीरामजी जोय।
हरचासनु में सही सत्तरे पौंहता परलोक॥
(ग) भिक्खु जश रसायण ४० १४ :
छीपों स्वाम भिक्खु पछे कारों रे गहर चामदु में छविकाला रे।
संवत अठारह सत्तर सिहाळो॥
२—देखिए पृ १४१ ११ ११२ ११३ ११४ ११५
३—भिक्खु दृष्टान्त. ह ११

बाल्यावस्था में वेणीरामजी स्वामी में दोष निकालने की प्रवृत्ति थी। एक दिन वे दूर बैठ हुये थे। स्वामीजी ने गुप्त रूप से जगह पूँज कर पर फैलाया और साधुओं से बोले— देखो वेणी दूर बैठा देख रहा है, वह कुछ कहेगा।" एक क्षण के बाद ही मुनि वेणीरामजी बोले—"आपने बिना पूँजे पर कैसे फैलाया?" अन्य साधु स्वामीजी की ओर देखकर हसने लगे। साधु बोले— "पूँज कर ही पैर फैलाया है।" इसपर वे शर्मिंदा हो समीप आ स्वामीजी के चरणों में नतमस्तक हो गये[1]।

पिपाड़ की घटना है। एक दिन स्वामीजी ने वेणीरामजी को दो तीन बार पुकारा। वे दूसरी हाट में थे। बोले नहीं। श्रावक गुमानजी लूणावत से स्वामीजी बोले— "वेणो छूटतो दीसे है।" गुमानजी ने सारी बात आकर वेणीरामजी से कही। वेणीरामजी तुरन्त आकर चरणों में झुक गये। स्वामीजी बोले—"पुकारने पर भी तुम बोले नहीं?" वेणीरामजी विनयपूर्वक बोले— "मैंने सुना नहीं।" इसके बाद बड़ी विनम्रता से क्षमा-याचना की[2]।

एक बार वेणीरामजी बोले— मैं पाली में जाकर चन्द्रभानजी से चर्चा करूं?" अवसर न देखकर स्वामीजी बोले—"उनसे चर्चा करने का तुझे त्याग है[3]।"

स्वामीजी ने एक बार वेणीरामजी से कहा— 'तुम आँखों में औषधि बहुत लगाते हो। आँख खोले दिखाई देते हो। इसपर भी उन्होंने औषधि न छोड़ी। आँखें कच्ची पड़ गई। उनमें घाव हो गये[4]।

सं॰ १८६० की माद्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन स्वामीजी का संथारा सम्पन्न हुआ। उस दिन प्रातः डेढ़ पहर दिन चढ़ने पर आप साधुओं से बोले— साधु आ रहे हैं उनके सम्मुख जाओ। इसी प्रकार उन्होंने दो तीन बातें और कहीं। लोगों ने सोचा— 'स्वामीजी का ध्यान साधुओं में है।" करीब एक मुहूर्त बीता होगा कि दो साधु तृषावस्था में पधारे। इन दो संतों में एक वेणीरामजी थे और दूसरे कुशालजी। वेणीरामजी का चातुर्मास पाली में था। स्वामीजी के संथारे का समाचार पाकर वे तुरन्त रवाने होकर शीघ्र यहाँ स्वामीजी के दर्शन के लिये पहुँचे थ। इस सारी घटना का वर्णन इस रूप में मिलता है :

साधु आवे साहमां जावो मुनी प्रकासे वायं।
वले साधवीयां आवे वारें स्वामी बोले वचन सुहायं।
भवीयण नमो गुर भिखुवायं नमो भीखू चतुर सुजायं॥
के तो कह्यो घटकल उनमान के कह्यो सुध प्रमायं।
के कोइ अवधि ग्यान उपनो है जाणे सर्व नाथं। भवी॥

१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १६२
२—वही दृ० १६१
३—वही दृ० १६४
४—वही : दृ० १६५

केइ नर मुख सू इम भाखे सांमी रा जोग साम्हा में भखीया।
एतमें एक महूर्त आसरे, साध आया हेम रुलीया॥
बकसत बकसत साम करि, षग लगावे सीस।
नरनारी आच्यों अचंभ उपनो सांमी वसवावीस॥
सांमी साधु आया आंखी मस्तक दीधो हाथ।
एतले हेम महूरत आसरे, आमो साचवीयां रो साथ॥
वेणीरामजी साध वडीता साथे कुसालजी आया।
साचवीयां मगनू की मां कासी की प्रथमें भीखू रा पाया। म ॥
परचा थूं थूं आम पुगे छ, नरनारी हरखत थावे।
जिन हो जिन पे मोटा मुनीसर, इस गुण भीख ना पावें[1] ॥

दोनों संतों ने आकर स्वामीजी को वंदन-नमस्कार किया। स्वामीजी ने उनके मस्तक पर अपना हाथ रखा।

मुनि वेणीरामजी ने नाना प्रकार से स्वामीजी के गुण-वर्णन किये और उनके परिणामों को तीव्र करते हुए बोले :

रिख वेणीदास इम विनवें रे, थारें होज्यो सरणा च्यार।
तुम सरणो भव भव रे, होज्यो बारंबार। भी ॥
भिखोइ भारत जिन तणो रे, भिखोइ कमायो आप।
दिन दिन इधिका दीपिया रे टाल्या मर्मा रा संताप। भी ॥
स्तुति अरिहंत सिध तणी रे, संभलाइ अधिकार।
कोण्यो मगन कीधां की भीखु तणी रे, इण अवसर मझार। भी ॥

मुनि वेणीरामजी ने स्वामीजी को शरणों का आधार दिया और अरिहंत देव और सिद्धों की स्तुति सुनाई। उन्होंने स्वामीजी का किस तरह गुण-गान किया इसकी झांकी निम्नोक्त रूप में प्राप्त है :

आया ते साध गुण गावें मांत-मांत प्रणाम चढ़ावें।
थे मोटा उपगारी मेहमा भारी आप तुम मोर गुण गावें॥
थ पका पका श्रावक इगाया गुण ध्याय बताया।
दांन दया आछा दीपाया बुधवंता मन भाया॥
सावद्य निरवद्य मला निबेर्या भेषा गुण प्रमाणं।
गुण ध्याय सरधा गुण सीधी, थारी अरिहंत आदं[2] ॥

१—भीखू चरित १ १-७

२—भीखू चरित १ ८१

द्वितीय आचार्य भारीमालजी स्वामी ने भी आपका बड़ा सम्मान रखा। एक बार आप अनेक संतों के साथ आपके सम्मुख पधारे।

(२) कृति परिचय

इस कृति में कुल १३ ढालें हैं और प्रत्येक ढाल में दोहों के अतिरिक्त गाथाओं की संख्या १३ ही है। दोहों की संख्या इस प्रकार है :

ढाल	१	दोहा	५	गाथा	१३
„	२		५		१३
„	३	„	५		१३
	४		७		१३
	५	„	६		१३
„	६		१		१३
	७		५		१३
„	८		५		१३
„	९	„	५		१३
„	१०		५		१३
„	११		४		१३
„	१२		५		१३
	१३		५		१३
			७२		१६९

प्रथम कृति की तरह इसकी ढालें भी भिन्न-भिन्न रागिनियों में हैं।

इस कृति का रचना-स्थान बगड़ी और समाप्ति-काल सं० १८६० की फाल्गुन बदि १३ बृहस्पतिवार है :

ए चरित कियो में भीखु भणसालीरो बगड़ी शहर मझार हो। महामुनि ॥
संवत अठारे साठा बरस में फागण विद तेरस गुरवार हो। महामुनि ॥

[1]इस कृति पर रचयिता का नाम मुनि वेणीदासजी लिखा है। उनका नाम वेणीरामजी ही सर्वत्र मिलता है पर उन्होंने स्वयं इस कृति में तीन स्थानों पर अपने को वेणीदास लिखा है। इसीलिये हमने कर्ता का नाम इसी रूप में रखा है।

१—ढा ११ दो १ ; ढाल ११ गा २ ; ढाल १२ गा ११

कृति का संक्षिप्त सार : संक्षेप में प्रत्येक ढाल की विषय-वस्तु इस प्रकार है :

प्रथम ढाल के दोहों में मंगलाचरण के बाद कुल-परिचय जन्म-स्थान और संवत् को देते हुये स्वामीजी के दीक्षा-ग्रहण करने तक का वर्णन है। बाद में आगमों के अध्ययन से स्वामीजी के मन में उस समय के साधु-जीवन के प्रति जिन कारणों से असंतोष उत्पन्न हुआ उनका संक्षिप्त उल्लेख है।

दूसरी ढाल के दोहों में स्वामीजी के मन में राजनगर चातुर्मास में जो विचार-क्रान्ति हुई और उन्होंने सत्य के निर्णय के लिए सर्व आगमों का बार-बार अध्ययन किया, उसका उल्लेख है। बाद में चातुर्मास की समाप्ति पर वे सोजत में आचार्य रुघनाथजी से मिले और जो चर्चा तथा वार्तालाप हुआ उसका वर्णन है। दूसरी बार बगड़ी में चर्चा हुई, जिसके फलस्वरूप स्वामीजी आचार्य रुघनाथजी के संघ से अलग हो गये वहाँ तक का वर्णन इस ढाल में है।

तीसरी ढाल के दोहों में बगड़ी के क्षत्रियों में जो चर्चा हुई, उसका उल्लेख है। इसके बाद बखल की चर्चा का वर्णन है। फिर 'तेरापंथ' नाम कैसे पड़ा इसका वृत्तांत है। बाद में स्वामीजी ने केलवे में सं० १८१७ की आषाढ़ सुदी पूर्णिमा को जो नव दीक्षा ग्रहण की उसका वर्णन है। इस प्रथम चातुर्मास में जो संत साथ रहे उनका नामोल्लेख भी इस ढाल में मिलता है।

चौथी ढाल के दोहों में उत्तम श्रमण के लिये 'अनुयोगद्वार' और 'उत्तराध्ययन' में क्रमशः जो चौरासी और सोलह उपमायें दी हैं उनका उल्लेख कर ढाल में स्वामीजी के अनेक गुणों को उपमाओं द्वारा बड़े ही सुन्दर रूप में उपस्थित किया है। ये उपमायें कवि के आगम ज्ञान तथा असाधारण कवित्व-शक्ति को व्यक्त करती हैं।

पाँचवीं ढाल में शासन की उत्तरोत्तर वृद्धि का उल्लेख करते हुये स्वामीजी ने किन-किन देशों में विचरण किया उसका उल्लेख है तथा अन्तिम सिरियारी चातुर्मास के पूर्व के शेष काल के विहार का वर्णन है। इस अन्तिम सिरियारी चातुर्मास में स्वामीजी के साथ जो संत थे उनका नामोल्लेख है। स्वामीजी के श्रावण मास तक की शारीरिक अवस्था का वर्णन है।

छठी ढाल में भाद्र मास में हुई अस्वस्थता का वर्णन करते हुये पर्युषण पर्व में तीनों समय किस प्रकार व्याख्यान होता रहा इसका उल्लेख है। स्वामीजी ने भाद्र सुदी चौथ को किस तरह 'आयु समीप आ गयी है' इसका संकेत दिया और संयम में साथ देनेवाले संतों की प्रशंसा की इसका वृतांत है। इसके बाद स्वामीजी ने जो शिक्षा दी उसका उल्लेख है।

सातवीं ढाल में भारीमालजी आदि संतों को बुलाकर स्वामीजी ने अपने अतीत साधु-जीवन के प्रति परम संतोष की जो भावना व्यक्त की उसका उल्लेख है। और बाद में संतों ने साथ जो वैराग्यमयी बातें हुई और स्वामीजी ने जो पुनः उपदेश दिया उसका वर्णन है।

आठवीं ढाल में स्वामीजी ने किस प्रकार से आत्म-आलोचना की उसका हृदयग्राही चित्रण है।

नवीं ढाल में स्वामीजी के संलेखना तप का वर्णन है।

दसवीं ढाल में स्वामीजी के संथारे का वर्णन है। संथारे पर किस तरह त्याग-प्रत्याख्यान हुए, संतों को किस प्रकार व्याख्यान और उपदेश देने को कहा इन प्रसंगों की चर्चा है। स्वामीजी ने अपने परिणामों की दृढ़ता के सम्बन्ध में जो बातें कहीं तथा अन्त में जो चार चरम बातें कहीं उनका उल्लेख है।

स्वामीजी की कही हुई बातें किस प्रकार मिलीं उनका वर्णन ग्यारहवीं ढाल में आया है। मुनि वेणीरामजी और कुशालजी ने दर्शन कर किस प्रकार गुणगान किये स्वामीजी किस प्रकार पद्मासन लगाकर ध्यान मुद्रा में आसीन हुये और किस प्रकार इसी मुद्रा में उनका देहावसान हुआ इसका वर्णन है।

बारहवीं ढाल में स्वामीजी के पन्द्रह गाँवों के चौमासिक चातुर्मासों की इतिवृत्ति है।

स्वामीजी ने एक सौ चार प्रव्रज्यायें दीं लगभग अड़तीस हजार पद्यों की रचना की इसका उल्लेख तेरहवीं ढाल में है।

कृति की विशिष्टता : इस कृति की कई ढालों को यथार्थ में 'भिक्खु जस रसायण' में उद्धृत किया है। यह कृति अनुपम भक्ति तथा करुण रस से परिपूर्ण है। मुनि वेणीरामजी स्वामीजी के प्रमुख संतों में से एक थे। इस परिस्थिति में यह जीवन-चरित्र अधिकांशतः उनका आँखों देखा वर्णन है। अन्यत्र चातुर्मास होने पर भी संथारे के अवसर पर वे स्वामीजी के पास पहुँच गये थे और स्वर्गवास के समय उनके समीप रहे।

इस संग्रह में प्रकाशित मुनि हेमराजजी कृत 'भीखू चरित' और प्रस्तुत कृति को एक साथ पढ़ने से अनेक घटनाओं की परस्पर पूर्ति हो जाती है और स्वामीजी के जीवन का पूरा चित्रण मिल जाता है। दोनों ही कृतियाँ साहित्यिक प्रभा से परिपूर्ण हैं। मुनि हेमराजजी और आप दोनों ही कवि उस समय के साहित्यिक संतों में अग्रस्थान रखते थे। आपकी अन्य कृतियाँ तो उपलब्ध नहीं हो सकीं। इसलिये प्रसंगवश भी हम उनका संक्षिप्त परिचय नहीं दे पा रहे हैं। 'बीस बहरमान' की ढाल जो कि सं० १८५६ के चातुर्मास में रचित है, सम्भवतः आपकी ही कृति है। इस ढाल को तेरापंथ आचार्य चरितावलि के द्वितीय खंड में मुनि हेमराजजी रचित बताया गया है परन्तु यह भूल है। कारण यह है कि १८५६ में मुनि हेमराजजी का चातुर्मास गिरियारी में था पीपाड़ में नहीं जहाँ यह ढाल रची गई थी।

प्रकाशन : यह कृति 'भिक्षु जस रसायण' (द्वितीय भाग) में संवत् १९८२ में प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत प्रकाशन तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी की हस्तलिखित प्रति से मिलाकर किया गया है।

३ भिक्खु जश रसायण

(१) रचयिता का परिचय

श्रीमद् जयाचार्य का जन्म-नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियों में अपना उपनाम 'जय' रखा इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप जाति के ओसवाल गोलेछा थे। आपके पिताजी का नाम आईदानजी गोलेछा और माता श्री का नाम कल्लूजी था। आपका जन्म मारवाड़ राज्य के रोयट ग्राम में सं० १८६० के आश्विन सुदी १४ को रात्रि बेला में हुआ था। आपके सबसे बड़े भाई का नाम सरूपचन्दजी और उनसे छोटे भाई का नाम भीमराजजी था। आपके पिताजी का देहान्त आपके प्रव्रजित होने के पहले ही हो चुका था।

(१) दीक्षा : सं० १८६९ में आचार्य भारीमालजी का चातुर्मास जयपुर में हुआ। अस्वस्थता के कारण आप फाल्गुन तक वहीं विराजे। जीतमलजी की दीक्षा इसी साल माघ वदी ७ को हुई। आपके बड़े भाई सरूपचन्दजी इसी साल पौष सुदी ९ के दिन दीक्षा ले चुके थे। दूसरे बड़े भाई भीमराजजी की दीक्षा आपके बाद मिती फाल्गुन वदी ११ को हुई और इसी दिन आपकी माता कल्लूजी ने भी दीक्षा ले ली। इस तरह पौष सुदी ९ से लेकर फाल्गुन बदी ११ तक करीब डेढ़ महीने के भीतर सारा परिवार दीक्षित हो गया।

जीतमलजी महाराज की बुआ अजबूजी पहले से ही दीक्षित थीं। इनकी दीक्षा श्रीमद् आचार्य भीखणजी स्वामी के शासनकाल में सं० १८४४ में हुई थी। ४२ वर्ष की दीक्षा-पर्याय के बाद सं० १८८६ में इनका देवलोक हुआ। इनके विषय में पुरानी ख्यात में लिखा है : "भणी गुणी पक्की विनयवंत। उज्जैन क्षेत्र में धर्म-प्रचार आपने ही किया। उपर्युक्त वर्णन से पाठकों को सहज ही मालूम होगा कि श्रीमद् जयाचार्य का जन्म कैसे दृढ़ धर्मनिष्ठ-सम्पन्न कुल में हुआ था।

श्रीमद् जयाचार्य की दीक्षा द्वितीय आचार्य भारीमालजी के शासनकाल में ऋषि रायचन्दजी के हाथ से हुई थी। उनके हाथ से सब प्रथम दीक्षा आपकी ही हुई। आप चतुर्थ आचार्य हुए और अन्तिम दीक्षा मुनि मघराजजी की हुई जो पंचम आचार्य हुए।

(२) शिक्षा और अध्ययन : दीक्षा के बाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराजजी को सौंपे गये। वे ही आपके विद्या-गुरु थे। उनके चरणों में रहकर अल्पकाल में ही आपने अपूर्व आत्मज्ञान प्राप्त किया। आपने अपने विद्या-गुरु की अध्यापन-शक्ति का वर्णन करते हुए एक जगह कहा है— 'उनमें बिन्दु को सिन्धु करने की शक्ति थी।' दूसरी जगह कहा है— 'हेमराजजी सच्चे हेम—पारस थे। उनके संसर्ग से ही अपूर्व गुण आ जाते थे।' ऐसे अद्भुत उपाध्याय से शिक्षा पाकर आप भी एक महान् विचक्षण पुरुष निकले।

(१) बाल विचक्षण : बाल्यावस्था से ही आप एक असाधारण प्रतिभाशाली साधु थे। आपकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। आपमें सहज अध्यात्म था। आप बड़े परिश्रमी थे और स्वाध्यायी भी। आपका हृदय बड़ा गुणग्राही था। पुरानी बातों के संग्रह का आपको बाल्यावस्था से ही बड़ा शौक था। अपने विद्या-गुरु मुनि हेमराजजी से पुरानी बातों को ग्रहण कर आपने अपने पूर्व तीन आचार्यों के शासन-काल के इतिहास को बहुत सुन्दर क्रम से ग्रंथ-बद्ध किया।

आपकी दीक्षा केवल ६ वर्ष की अवस्था में हुई थी। आपकी ११ वर्ष की अवस्था की बात है। आप अपने विद्या-गुरु मुनि हेमराजजी के साथ पाली में विराज रहे थे। शहर पर झुकती हुई एक हाट में ठहरे हुए थे। हाट के सामने ही एक सोनार की दूकान थी। एक बार एक खिलाड़ी उस रास्ते में आकर अनेक तरह के खेल दिखाने लगा। खेल देखने के लिए बूढ़े-बूढ़े लोग भी आकर जमा हो गये। सोनार की हाट भर गई। आप उस समय कुछ लिख रहे थे। खेल के ढोल आदि बजते रहने पर भी आपने लिखने में ही अपना ध्यान एकाग्र रखा। बालक होने पर भी खेल की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। एकध्यान—एकचित्त से अपना कार्य करते रहे। बालक साधु की इस अपूर्व और आश्चर्यकारी एकाग्र-वृत्ति को देख कर सोनार की हाट में बैठा हुआ एक वृद्ध अचंभित हो रहा था। वह अपने साथियों से बोला—"इस सम्प्रदाय की नींव १०० वर्ष की तो पड़ गई। जब साथियों ने उसकी इस बात का रहस्य पूछा तो उसने जवाब दिया—"जिस सम्प्रदाय में ऐसे उत्कृष्ट वैरागी बालक संत हैं उसे चिरायु ही समझो। जिस खेल को देखने के लिए हम लोग बड़े-बूढ़े लपक गए, उसे देखने के लिए इस बालक ने मुँह तक नहीं फेरा कितनी आश्चर्यजनक एकाग्रता है इस बालक साधु की! इस एकाग्र-वृत्ति ने आपके जीवन में महान गुण पैदा कर दिए। आपकी वृत्तियाँ शुरू से ही जो अध्यात्म और तत्त्वज्ञान की ओर मुड़ीं सो अन्त तक उत्तरोत्तर अधिक प्रतिभा के साथ अपना प्रकाश फैलाती रहीं। अध्यात्म की इस अखण्ड एकाग्र साधना के कारण ही आप 'योगिराज' कहलाये। आप बाल रवि की तरह उत्तरोत्तर तेज और ज्ञान से दीप्त हुए। आपने गण का केवल १०० वर्ष की आयु ही नहीं दी परन्तु अपने यशस्वी आचार्य-काल में उसकी कीर्ति दिग्दिगंत में फैला कर एवं भविष्य के लिए अमर साहित्य की विरासत छोड़ कर उसे अमर बना दिया।

बाल्यावस्था से ही आपमें हिम्मत और साहस भी खूब था। श्रीमद् आचार्य भारीमालजी भावी आचार्य-पद के लिए दो संतों के नाम लेते—खेतसीजी और रायचन्दजी। वृद्ध हो चुकने पर भी उन्होंने युवराज नहीं बनाया। संतों की इच्छा हुई कि एक नाम निर्धारित करने के लिए अर्ज की जाय। पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि आचार्य श्री से जाकर यह अर्ज करे। आपने जब यह सुना तो अर्ज करने का भार तुरन्त अपने ऊपर ले लिया। आपने अपना चोल पट्टा कमर में कस लिया और अन्य संतों के आगे हो अर्ज करने के लिए आचार्य श्री के सम्मुख आकर खड़े हो गये। बालक साधु की इस वेष-सज्जा को देख कर आचार्य श्री हँसने लगे

और श्रम करने की आज्ञा दे दी। इस पर आपने निर्भीकता और निःसंकोच भाव से एक भावी 'पट्टधर' घोषित करने की आवश्यकता की अज विनम्र शब्दों में की। जो कार्य वयप्राप्त सतों को करना कठिन हो रहा था उसे आपने सहज साहस से कुशलतापूर्वक कर दिखाया। बाल्यावस्था से ही आपमें असाधारण ओज और प्रतिभा थी।

आपमें ११ वर्ष की अवस्था में ही कवित्व शक्ति का प्रादुर्भाव हो गया और वह अपनी असाधारण छटा दिखाने लगी। आप एक संस्कारी कवि थे। यह प्रतिभा आगे जाकर बड़े ही बहुमुख रूप से चमकी। आप अपनी रचनाओं में तत्त्वज्ञान और अध्यात्मरस की स्रोतस्विनी बहा गए।

(४) उत्तरोत्तर उत्कर्ष : दीक्षा के बाद १२ वर्ष तक आप निरन्तर हेमराजजी महाराज के सिंघाड़े में रहे और इन वर्षों में घोर परिश्रम कर आपने गहरा विद्याध्ययन किया। पन्नवणा सूत्र तात्त्विक दृष्टि से बड़ा ही गम्भीर और कठिन सूत्र है। आपने १८ वर्ष की अवस्था में तो इस सूत्र का राजस्थानी भाषा में पद्यानुवाद ही शुरू कर दिया।

आपकी अपूर्व प्रतिभा पाण्डित्य व्यवस्था-शक्ति और वात्सल्यता को देख कर तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी ने आपको सं १८८१ के पौष सुदी ३ को पाली में सिंघाड़पति बना दिया। उस समय आपकी अवस्था केवल २१ वर्ष की थी।

आपकी माता श्री सती कल्लूजी का देहावसान सं १८८७ के सावन सुदी ११ को खेर गांव में हुआ। आपको एक पहर का संथारा आया। आर्या कल्लूजी के देहावसान के समय आपकी उमर २७ वर्ष की थी।

आपको सं० १८९३ में युवराज पदवी प्रदान की गई। उस समय आपकी अवस्था केवल ३३ वर्ष की थी।

(५) विद्या-रसिकता : सं १९०३ में मुनि श्री हेमराजजी के साथ आपका चातुर्मास श्रीजीद्वार में हुआ। इसी चातुर्मास में मुनि हेमराजजी ने भीखणजी स्वामी के विविध दृष्टान्त और संस्मरण आपको सुनाये और आपने उन्हें लिपिबद्ध किया। दृष्टान्त और संस्मरणों का यह संग्रह आज एक अनमोल धरोहर है और स्वामीजी की बहुमुखी विशेषताओं पर अपूर्व प्रकाश डालता है। आप एक जन्मसिद्ध इतिहासकार थे। आपने गण सम्बन्धी पुरानी बातों को संग्रहीत कर बड़े ही प्रामाणिक रूप से अपनी कृतियों में भर सदा के लिये उन्हें सुरक्षित कर दिया है।

सं १९०४ में आपका चातुर्मास जयपुर में था। चातुर्मास के बाद भीलाड़े होते हुए केलवे पहुंच आपने मुनि हेमराजजी के दर्शन किए। इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए आपने स्वयं लिखा है :

विविध मुनी वारता होमी हम लिखाइ ताय
हेम आप पुष पोरसो कोई समुद्र जेम थोभाय

इस प्रसंग से यह प्रकट है कि आप पुरानी बातों की बराबर खोज करते रहते थे और जब कभी मौका मिलता तो वे ऐसी बातों को लिख लेते। हेमराजजी महाराज भी अपना समुद्र-सा अगाध ज्ञान अपने इस गुणवान शिष्य को मुक्त-हस्त से देते थे। वास्तव में आप उन्हींकी अनन्य कृति थे। आपकी सहज प्रतिमा ऐसे अद्वितीय विद्या-गुरु को पाकर ही अपर्व छटा के साथ मुखरित हो सकी थी। अपने विद्या-गुरु की महान् ज्ञान वारिधि को आप अगस्त्य ऋषि की तरह पी गए थे। आप महान् मेधावी थे। आप जैसी धारणा-शक्ति विरले ही व्यक्ति को होती है। आपमें जिज्ञासु वृत्ति बहुत थी और मुनि हेमराजजी में बताने की। एक अपनी जिज्ञासु वृत्ति और विनय वृत्ति से आदर्श शिष्य थे और दूसरे बताने की उदारता और ज्ञान पारमिता से महान् गुरु। एक बताने में बृहस्पति थे और दूसरे ग्रहण करने में। मुनि हेमराजजी के अन्तिम दिनों की घटनाओं से गुरु-शिष्य दोनों की इस प्रवृत्ति पर और भी अधिक प्रकाश पड़ता है।

सं १९०४ के जेठ महीने में मुनि हेमराजजी सिरियारी पधारे और जेठ बदी १३ के दिन से वे बीमार रहने लगे। आप एक दिन बाद जेठ बदी १४ को सिरियारी पहुंचे। १३ के दिन मुनि हेमराजजी को श्वास का दौरा आ चुका था तो भी १४ के दिन उन्होंने आपसे नाना तरह की महत्त्वपूर्ण बातें की। १४ की रात में श्वास का विशेष प्रकोप रहा और फिर १५ की रात में भी दौरा आया। जेठ सुदी १ के प्रातःकाल फिर चैन हुआ। साता होते ही फिर गुरु-शिष्य में अनेक संवाद हुए। आपने इस संबंध में लिखा है :

> रात्री श्वास फिर बधियो एकम दिन प्रभात।
> फिर साता हुई स्वाम रे, वातां करी विख्यात॥

इस वार्तालाप में एक पहर दिन चढ़ गया था।

इसी वार्तालाप के प्रसंग की एक बात इस प्रकार है : आपने मुनि हेमराजजी से कहा— 'यदि आपके साता हो जाय तो इस वर्ष १५ संतो से सिरियारी में चातुर्मास करें। यदि आहार की कमी रहेगी तो श्रावण और भाद्र मास में हम कई संत एकान्तर कर लेंगे। आश्विन कार्तिक में अब रास्ते साफ हो जायगे तो आस-पास के अन्य गांवों से गोचरी कर ली जायगी। यह सुन कर मुनि हेमराजजी बड़े ही हर्षित हुए। बोले— 'मैं भी ११ उपवास कर लूंगा। तुम लोगो ने यह बात बहुत अच्छी विचारी।

आप मुनि हेमराजजी के पास रह कर अनेक बातें धारण करना—हासिल करना चाहते थे और इसके लिए एकान्त उपवास करने तक के लिए तैयार थे। यह आपकी विद्यारसिकता थी। आपके जीवन का यह प्रसंग ज्ञानार्जन के लिए आपकी उत्कट इच्छा और कठोर साधना का एक ज्वलन्त उदाहरण है।

ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा के दिन तीसरे पहर मुनि हेमराजजी के श्वास का प्रकोप अधिक हो गया। चौथे पहर कम हुआ तो फिर अनेक तरह की बातचीत हुई। रात में व्याख्यान के बाद

अनेक त्याग-वैराग्य की बातें हेमराजजी महाराज ने बतलाई। शिष्य किस तरह ज्ञान-तृषित और गुरु किस तरह ज्ञान उदार था—यह उपरोक्त प्रसगों से साफ प्रकट होगा।

इस तरह ज्ञानार्जन कर आप प्रकांड पण्डित हुए। आपने सं० १८०० में चौबीस तीर्थंकरों की २४ स्तुतियाँ रचीं जो 'जिन-चौबीसी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। मुनि हेमराजजी ने अपनी अस्वस्थता में यह अभिग्रह लिया कि रोग मिटते ही वे चौबीसी कण्ठस्थ करेंगे। यह घटना आपके लिए बड़ी गौरवास्पद है। विचक्षण महापण्डित गुरु के मुख से अपने ही शिष्य की कृति कण्ठस्थ करने की बात शिष्य के लिये अवश्य ही एक बड़ी-से-बड़ी कीर्ति की बात है। आप ऐसी कीर्ति के भाजन हुए, यह आपके पाण्डित्य और विद्या रसिकता की यशोगाथा है।

आप बड़े ही स्वाध्याय प्रेमी थे। सभी सूत्रों का आपने कई बार आद्योपान्त गहरा अध्ययन किया। सूत्र-स्मार्गी टीका आदि सब ग्रन्थों का मनन कर आपने अपने पाण्डित्य को बड़ा ही गंभीर बना लिया था। ग्रंथ अवलोकन आपका एक व्यसन-सा था। यह सुनने में आता है कि आपने प्राय एक पहर से अधिक नींद नहीं ली। सब संतों के सो जाने के बाद प्राय एक पहर बाद सोते और एक पहर रात्रि रहते उठ जाते। प्रभात के पूर्व के एक पहर में आप चिन्तन करते। रोज ५०० गाथाओं की आवृत्ति का आपने नियम-सा कर रखा था। ऐसे ही सतत अनुशीलन से आपका बहुश्रुतित्व अजोड़ हो गया था।

आप रागिणियों के राजा थे। शुद्ध राग को बहुत पसन्द करते थे। आपकी कृतियाँ प्रसिद्ध रागिनियों में हैं। उनमें अमृत की तरह मधुर रस भरा हुआ है। जब कोई राग शुद्ध नहीं बैठता या कोई राग सीखना होता तो आप अच्छे-से अच्छे जानकार से उसे ग्रहण करते। इस गुणग्राहिता के कारण ही आप अद्भुत मधुर गानमय छन्द दे सके। आपकी कृतियाँ प्रसाद गुण से ओत-प्रोत हैं।

संस्कृत अध्ययन की आपकी बड़ी इच्छा रहती। जब कभी संस्कृतविद् पण्डित का ससर्ग होता तो आप उससे पूछने की बात पूछ लेते। इसी तरह संस्कृत अध्ययन कर आपने जैन-सूत्रों की संस्कृत टीका आदि को अच्छी तरह समझने का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। आपकी राजस्थानी भाषा की रचनाओं में संस्कृत का घना प्रभाव दिखाई देगा।

(५) विद्या गुरु से उऋण : अन्तिम समय में आपने अपने विद्या-गुरु को बड़ा ही सहारा पहुँचाया। जेठ सुदी १ की रात्रि के पिछले पहर के समय आपने मुनि हेमराजजी को आलोचना कराने की सोची। आपने सोचा :

> छदि कीन मन मैं विचारियो हो भाउगारी खबर न काय।
> हिवड़ा तो बहम दिसे नहीं हो तो फिर कर बेठे उपराय॥

यह घटना आपकी दूरदर्शिता का बड़ा अच्छा परिचय देती है।

यह विचार कर आपने बड़े ही सुन्दर ढंग से पाठोच्चारण करवा कर मुनि हेमराजजी से आत्मालोचना करवाई। आत्म-शुद्धि किस तरह की जानी चाहिये—जैसे भार उसके एक

धुरन्धर विशेषज्ञ हों। आप आत्म भावनाओं को निर्मल करने की कला में पारंगत थे।

उपरोक्त आलोचना के बाद मुनि हेमराजजी और आपमें बड़ा ही रसप्रद और वैराग्य-भावपूर्ण वार्तालाप हुआ। विस्तार का भय होते हुए भी उसे ज्यों-का-त्यों यहाँ उद्धृत करने का लोभ-संवरण नहीं किया जा सका है :

हेम कहै आज रात का हो, भयंक रही थी वाय।
तिण सूं निद्रा पिण पूरी आई नहीं हो इम कहै जीत में आय॥
जदि जीत कहै स्वामी हेम नें हो सांभलज्यो महाराज।
या वेदन सम परिणामां सह्यां हो मोटिका तप समाज॥
ठाणायंग चौथे ठाणे तणो हो पाठ कह्यो तिण वार।
कष्ट वेदना आयां सह्यां हो, इम सिखवे अणगार॥
तीर्थंकर वेदन सहु समपणे हो, त्यांरी शरीर रोग रहित।
ते पिण लेवे कष्ट उदीरीने हो, घोर तप करे हुय सहित॥
तो कष्ट ओपाधिक रोग नो हो हूं किम न सहूं समचित्त आज।
सम परिणामा भोगव्यां विना हो एकन्त पाप सिकाज॥
कष्ट ओपाधिक तथा ब्रह्मचर्य नो ही, तथा रोगादिक वेदन जाण।
सम परिणामां भोगव्यां हो, एकंत निर्जरा पिछाण॥
इण विध साख जितवे हो कह्यो ठाणा अंग मझार।
हेम नें अर्थ सुणाविया हो पाम्या हर्ष अपार॥
वली उत्तराध्ययन पांचमें अध्ययने हो सकाम मरण अधिकार।
गाथा सुणाई हेमने हो अर्थ सहित विस्तार॥
मरण आयां थकां महामुनि हो रागे अधिक उमेद।
मन करी कंप तथा करे नहीं हो वंछे शरीर नो भेद॥
सोमवन्ता प बहुश्रुति हो मरण की आस न पाय।
पहिलो प्रणाम हुंतो जिसा हो अन्त समय अधिकाय॥
तन सूं शरीर विखेरले हो सकाम मरण मरे जाण।
पादुगमण इंगत मरण सूं हो अथवा भक्त पचखाण॥
उत्तराध्येन पंचम भणे हो, एम कह्यो वर्धमान।
हेम सुणी हर्ष्या घणा हो, वराग रस गलतान॥
वलि जीत कहै स्वामी हेम ने हो जिन वरणी अणगार।
ते सबे कष्ट उदीरने हो भय नहीं आणे लिगार॥
पांग पी भांगे नाड़ी नहीं हो भांगे पग की न कांत।
पनी कष्ट सबे उदीरने हो जिनकल्पी महा सन्त॥

इसी वेदना तो किसे नहीं हो जब इम बोल्या इम वाय।
इसी वेदना तो म्हारे नहीं हो जिनकल्पी सरिखी ताय॥
मेघ सरिखा महामुनि हो कियो पादोपगमन संथार।
ते आंख पिण टमकारे नहीं हो एक मास ताईं इकधार॥
ए तन महीना पछे ही छोड़णो हो तो आप्या महीनां पहली छोड़ों एह।
छोड़ी में जीव छतां शरीर नी हो सार संभाल तजेह॥
इसा कष्ट सह्या छै महामुनि हो, ते वेदन में तुच्छ जाण।
हेम सुणी हर्ष्या घणा हो उचित रस गलताण॥
ए मरण छ हो तो मोक्षण मधे हो छूटे अशुच तन एह।
सोच करे किण वात रो हो भाखी वस्तु नहीं छै बेह॥
भागे असंख्याता काल में हो इसा कष्ट तप्यो नहीं काम।
जीव जावे शिवपुर तणी हो, तिण सूं मृत्यु मोक्षण अभिराम॥
हेम हृद धर पूछियो हो मृत्यु मोक्षण है ताम।
जीत कहै मृत्यु मोक्षण सही हो पण्डित मरण सकाम॥
ए शरीर विणसे सही हो तिण रो तो इचरज नांय।
इता वर्ष रह्या अठा हो इचरज एह कहिवाय॥
देख तणा मनुष्य आवने हो खास मनुष्य भेला हुआ आय।
एक मास पछी भेली विलसो हो गया आपरे ठिकाय॥
ते मनुष्य विखरिया देखणो हो अचरज नहीं छ लिगार।
एक मास ताईं भेला रह्या हो, इचरज ए अवधार॥
अनन्त परमाणु भेला थई हो शरीर बण्यो छ एह।
इता वर्ष भेला रह्या हो हिव विणसे छ तेह॥
पुद्गल रो मलण विखण स्वभाव छ हो विणसे तिणरो इचरज नांय।
इता वर्ष ए पुद्गल रह्या हो, इचरज ते कहिवाय॥
तिण कारण ए तन छूट देखणो हो सोच नहीं छ लिगार।
इत्यादिक घणी वार्ता सुणी हो हेम पाम्या करार अपार॥
घणो हर्ष घरी में इम कहै हो, धुन धुन रे सतीदास।
सोभग करामनी धारता हो, धनि कहै जीत विमास॥
सुविणा जम्या सुविणा फला हो, भली करणी रा भला फल होय।
दुविणा जम्या दुविणा फला हो, भूंडी करणी रा भूंडा फल जोय॥
इम गुण हेम बोल्या तदा हो, इम कह्यो जयपुरवासी जाण।
देख जीतमल शुश्रूषा स्वामी किस्या हो किसी विचारणा पिछाण॥

यह पिछली रात का प्रसंग है। सूर्योदय के बाद आपने जो काम किया उसका वर्णन इस प्रकार है :

सतीदासजी आद साधाँ भणी हो, सीख बोल्या इम आय।
म्हारी दिसां आप पाछा आयने हो औषध देवोला ताय॥
इम कही हाठ थी उठल्या हो मोड़ी पसेवड़ी चीत।
मोखो सेई दिसां नें त्यारी थया हो, साथ साध उभा सुवनीत॥
बलि चीत मनमें विचारियो हो स्वामी दिसां पधारुया ताय।
सेर भी सांस बध गया हो तो औषध देई पछ दिसां जाय॥
इम चिन्तव बेठो हाठ नें चिप हो स्वामी दिसो जाय सुरीत।
पाछा बठा बाजोट ऊपरे हो स्तने आयो आउखो अचिन्त॥
तन मांहीं परसेवो थयो हो बाध्यो सांस असेप।
बठा बाजोट ऊपरे हो उत्पिण बिना संपेख॥
हाथ सूं छानी करी तदा हो, अमल मांग्यो चीत पात।
चीत लियो अमल हाथ में हो आप मुख मांहि म्हेल्यो विमात॥
मुख में म्हेलनें चिगलतां हो पुद्गल दीधा पलम्या पेख।
अचरज चीत उचराविया हो स्वामी मुख विवेक॥
आप चीत कही स्वामी आपने हो होम्यो सरणा च्यार।
अरिहन्त सिद्ध साधु धर्म नो हो, कही जैन स्वर विस्तार॥
बसे बराम्पनी आवता हो सुणावे विविध प्रकार॥
थोड़ी बेल्यां रो अन्त रह्यो मद्ध हो मारी मुख पामता सिद्धो साद्ध॥
पछ च्यार ही आहार पचखावनें हो जिम दे सरणा सुखसाज।
आयरे मही में चमता रमा हो हेम जामे भमराज॥
आप मनीराम धर्मचन्द में हो हस्त सहारे मुनि हेम।
समाधि मरण सह्यो भलो हो निर्मल ज्यांरा नेम॥

उपर्युक्त प्रसंग में आपके जीवन के कई पहलुओं पर बड़ा सुन्दर प्रकाश पड़ता है। आप कितने गहरे आत्मज्ञानी थे—यह उपर्युक्त घटना से साफ प्रकट है। आप एक सेनापति के रूप में प्रकट होते हैं जो घोर संग्राम के समय भी पौरुष और वीरता को कायम रख सकता है। आपने मृत्यु को महा महोत्सव और जीवन को एक मेला—पुद्गलों का संयोग—बतलाया है। आपने अपने उपदेश से अपने विद्या-गुरु के हृदय में संवेग-रस की स्रोतस्विनी बहा दी। उस वेदना के समय भी वैराग्योत्पादक वाणी के चमत्कारपूर्ण कथन से मुनि हेमराजजी का रोम-रोम हर्षित कर दिया। आप एक वैरागी कवि और अनूठे आत्मज्ञानी थे। आप सूत्रों के महान् अध्ययनकर्ता और अध्यात्म रस के निर्झर थे। घटनाओं का हूबहू वर्णन आपकी लेखनी के लिए एक सहज

बात थी। जैसे भाव और राग आपकी कलम की नोंक के इशारे पर नाचा करते। आप एक महान् धन्वन्तरि वैद्य थे जो आत्मिक कष्टों को हरण कर परम सुख की धारा बहा देते।

आपके हृदय में कृतज्ञता का भाव कूट-कूट कर भरा था। जिस महान् गुरु ने आपको महान् बनाया उसके प्रति आपने जो श्रद्धांजलि अर्पित की है वह अनूठी है। आप एक जगह कहते हैं

मुनिवर रे मो स उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जाय हो लाल।
निश-दिन तुम गुण समरूं रे, बस रह्या मो मन मांय हो लाल॥
मु रे सुपने में सूरत स्वाम नी रे, देखत पामें प्रेम हो लाल।
याद कियां हियो हुलसे रे, म्हारी प्रात केम हो लाल॥
मु रे हूं तो बिन्दु समान थो रे, तुम कियो सिन्धु समान हो लाल।
तुम गुण कबहु न बिसरूं रे निश दिन धरूं तुम ध्यान हो लाल॥
मु रे साचा पारस थे सही रे, कर देवो आप सरिस हो लाल।
बिरह तुम्हारा दोहिलो रे आप रह्या जगदीश हो लाल॥
मु रे जीत तणी जय थे करी रे, विद्यादिक विस्तार हो लाल।
निपुण कियो सतीदास ने रे, वलि मघ सन्त अधिकार हो लाल॥
मु रे स्वाम गुणा रा सागरु रे किम कहिये मुख एक हो लाल।
ऊंडी तुम आलोचना रे, भारी तुम विवेक हो लाल॥
मु रे भवजल आचार्य आपमयी रे, त पामी एकम बार हो लाल।
मात मेर मन बस किया रे, नित्य कीजे नमस्कार हो लाल॥

अपने विद्या-गुरु के देहान्त के बाद आपने उनका नव रस पूर्ण एक सुन्दर काव्य चरित लिखा है। यह चरित-ग्रन्थ साहित्यिक दृष्टि से बड़ा ही अनोखा है। मुनि हेमराजजी के परलोक गमन के करीब २ महीने के बाद अर्थात् सं १९ ५ के श्रावण वदी ११ को आपने इसे जयपुर में सम्पूर्ण किया। आप चरित लेखन में बेजोड़ थे। आप एक महान् इतिहासकार थे जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को भी सम्पूर्ण ब्यौरे के साथ लिख लेने की असाधारण प्रतिभा रखते थे।

(७) शासन-काल और प्रचार क्षेत्र आचार्य श्रीमद् रायचन्दजी महाराज का देहावसान मिती माघ सुदी १४ को हुआ और उसके दूसरे दिन अर्थात् सं १९ ८ साल की माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र में आप शासनाभिषिक्त हुए। आपने करीब ३० वर्ष तक शासन भार वहन किया। तीस वर्ष के इस शासन-काल में आपने अनेक प्रदेशों में भ्रमण किया। मारवाड़, मेवाड़, मालवा कच्छ, गुजरात हरियाना दिल्ली हाड़ोती ढूंढाड़, थली आदि प्रदेश आपके विहार-स्थल रहे। आपके शासन-काल के चातुर्मासों की विगत इस प्रकार है:—

स्थान	चातुर्मासों की संख्या	सम्वत्
जयपुर	४	१९ ६,२८ ३७ ३८
नाथद्वार	१	१९१०
रतलाम	१	१९११
उदयपुर	१	१९१२
पाली	२	१९१३ २२
बीदासर	८	१९१४ १७ २३ २६ २९,३० ३५ ३६
लाडनूं	६	१९१५,१८ २७ ३२ ३३ ३४
सुजानगढ़	४	१९१६ १९,२४ ३१
चूरू	१	१९२
जोधपुर	२	१९२१ २५

इस दीर्घ शासन-काल में आपने धर्म का बड़ा ही उत्थान किया। हजारों गृहस्थों को श्रावक-व्रत धारण करवाया। सहस्रों को सुलभ बोधि किया। आपके शासनकाल में १ ५ साधु और २२४ साध्वियों की दीक्षा हुई। उस समय सतियों में मुखिया साध्वी सरदारांजी थीं।

(८) महाप्रयाण आपका ३ वर्ष व्यापी सुदीर्घ शासन-काल बड़ा ही अभ्युदयशील रहा। आपके शासन-काल में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं। आपका यश अनेक देश-प्रदेशों में फैला। तात्कालिक जयपुर नरेश श्रीमान महाराज मानसिंहजी आपको अपना गुरु मानते थे। इनमें वेश बदल कर रात में गश्त लगाने की आदत थी। जब श्री श्रीमद् जयाचार्य जयपुर में विराजते तो रात के समय गुप्त वेष में आप दर्शनार्थ पहुँच जाते। एक बार द्वारपाल को सन्देह हुआ और उसने जयपुर के प्रसिद्ध श्रावक लालाजी को खबर दी। दूसरी बार जब महाराज फिर दर्शन करने के लिए आये तो लालाजी भेंट लेकर द्वार के पास खड़े हो गये और उनके वापस जाने की प्रतीक्षा करने लगे। जब महाराज लौटने लगे तो उन्होंने उनके सम्मुख भेंट उपस्थित की। उस समय महाराज साहब ने कहा—"यहाँ यह भेंट कैसी? मैं तो यहाँ गुरु-दर्शन के लिए आया हूँ। दिन में कई विचार रहते हैं इसलिए रात का अवसर निकालता हूँ।" यह कह कर उन्होंने भेंट लेना अस्वीकार कर दिया।

आपका अन्तिम चातुर्मास जयपुर में हुआ। श्रावण मास में आपको अन्न-अरुचि हो गई। गले में गाँठ निकल आई और दस्त की शिकायत रहने लगी। भाद्र मास में ये शिकायतें और बढ़ गई। अब आपको अंत समीप दिखाई देने लगा। भाद्र सुदी ५ और ६ को आपने स्वमुख से आलोचना की उच्च स्वर में चौरासी लाख जीव योनियों से क्षमतक्षामणा कर व्रत आरोपण और दुष्कृत निन्दा की। चारों शरणों का आधार लिया। वेदना को आप बड़े ही समभाव से सहन कर रहे थे। द्वादशी की शाम का जल उपरांत आगारी अनशन कर लिया। द्वादशी को दोपहर से कुछ पहले पट्टधर मघराजजी से जीवन पर्यन्त के लिए तिविहारी संथारा ग्रहण किया और अन्त समय में चौविहारी संथारा। सं १९३८ के भाद्र वदी १२ को सायंकाल आप देवलोक सिधारे।

जयपुर शहर में चाँदपोल नामक स्थान है। वहाँ से केवल जयपुर दरबार की ही रथी निकल सकती थी। बैकुण्ठी भी राजकुल की ही निकल सकती थी। जयाचार्य के महाप्रयाण के कुछ दिन पूर्व ही लालाजी—भक्तलालजी का स्वर्गवास हो चुका था। उधर जयपुर नरेश श्रीमान् मानसिंहजी का भी देहान्त हो चुका था। लालाजी की धर्मपत्नी ने महारानी से मिल कर यह बात बतलाई कि दिवंगत महाराज जयाचार्य को किस तरह धर्मगुरु मानते थे। महारानीजी को सारी बातें मालूम थीं। उन्होंने कहा—"जो महाराज के धर्मगुरु थे वे हमारे भी धर्मगुरु हैं।" उन्होंने चाँदपोल से जयाचार्य की बैकुण्ठी निकालने का हुक्म दे दिया। बड़ी ही सुन्दर बैकुण्ठी में रथी निकाली गई। रुपयों की काफी उछाल की गई। देखने वाले एक सज्जन ने कहा था कि जयपुर में इतना बड़ा जुलूस पहले कभी नहीं देखा। उस जुलूस में सभी जाति के लोग सम्मिलित थे। राज्य की ओर से काफी प्रबन्ध था। इस तरह युगपुरुष योगी जयाचार्य ने महान् यश प्राप्त कर महाप्रयाण किया।

जयाचार्य आचार्य भीखणजी निर्मित जिन-शासन रूपी महान मन्दिर के तृतीय स्वर्ण कलश हुए।

(४) जयाचार्य साहित्यिक के रूप में: श्रीमद् जयाचार्य अध्यात्मवाद के एक महान् कवि थे। आपने अपने जीवन काल में ३॥ लाख गाथाओं की रचना की जिनमें गम्भीर तत्त्वज्ञान और सूक्ष्म से सूक्ष्म अध्यात्मभाव भरा पड़ा है। स्वामीजी ने ३८ गाथाओं की ही रचना की थी। आपका साहित्य बहुत विस्तृत है। आप एक महान चरित-लेखक थे। आपने गुणवान् साधु-सतों के बड़े ही सुन्दर जीवन-चरित लिखे हैं, जिन्हें पढ़ने से आत्मा वैराग्य रस में झूलने लगती है। आपके उपदेश और व्याख्यान बड़े सारगर्भित और वैराग्यपूर्ण होते। आप इतने उच्च कोटि के और शीघ्र प्रतिभावान कवि थे कि जब कोई रचना करने लगते तो पाँच-सात संतों को अपने पास रखते और प्रत्येक को अलग अलग पद धराते—लिखाते जाते। धारण करने वाले संत भी महान् धृतिवान और विचक्षण थे। इस तरह धारे हुए पदों को एकत्रित कर बाद में समूची रचना संगठित कर ली जाती थी। आप विचक्षण आशु कवि थे। आपके मुख से कविता उसी तरह निकलती जिस तरह से हिमालय से गंगा का स्रोत। आचार्य जैसे उत्तरदायित्वपूर्ण पद के धारक होने से वे रचना के लिए बहुत थोड़ा ही समय दे सकते थे और इस थोड़े से समय में ही वे काफी रचना कर लेते थे। एक-एक दिन में १६४ पदों की रचना का उदाहरण तो ३ ६ बोल की हुण्डी की ढाल २, ३ और ४ को देखने से ही मिल जाता है। आपकी गति और भी अधिक तेज रही होगी—ऐसी हमारी धारणा है अन्यथा इतना ग्रंथ-निर्माण आप जैसे कार्य-व्यस्त आचार्य के लिए थोड़े समय में करना संभव नहीं था। आप एक दिग्गज विद्वान और प्रगाढ़ लेखक थे।

आपने कई कठिन सूत्रों का मधुर रागिनीपूर्ण राजस्थानी ढालों में सरस अनुवाद कर उनके विषय को सबग्राही बनाया। पन्नवणा जैसे अति कठिन सूत्र के १० पद तक का अनुवाद तो आपने केवल १८ वर्ष की अवस्था में ही शुरू कर के पूरा किया। आचाराङ्गसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध को ढालों में गूंथा और द्वितीय श्रुतस्कध पर एक सुन्दर टब्बा लिखा। निशीथसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र के २८ अध्ययन का आपने राजस्थानी में पद्यानुवाद किया। आपने सम्पूर्ण भगवती सूत्र का भी राजस्थानी में पद्यानुवाद किया और प्रसिद्ध टीकाओं का उसमें उपयोग किया। भगवती सूत्र के इस राजस्थानी पद्यानुवाद के पदों और ढालों की संख्या क्रमशः ६० ०० और ५०१ है। इस तरह आपने जैनागम वाङ्मय को राजस्थानी भाषा में अनुवादित कर उसे सबग्राही रूप दिया और राजस्थानी साहित्य को सुसम्पन्न बनाया। इस आगम-अनुवाद काम के अतिरिक्त आपने अनेक स्वतंत्र रचनायें भी कीं। आपकी कृतियों की सूचि इस प्रकार है :—

१—मुनिवर गुणमाला की ढाल
२—३ ६ बोल की हुंडी की जोड़ (६ ढालें)
३—आचारांग (प्रथम श्रुतस्कन्ध) की जोड़ (८८ ढालें)
४—भगवती की जोड़ (५ १ ढालें)
५—ज्ञाता सूत्र की जोड़ (१२ अध्ययनों की १ ढालें)
६—उत्तराध्ययन सूत्र की जोड़ (प्रथम २८ अध्ययन सम्पूर्ण २९ वां शेष रूप)
७—विपाक सूत्र (दो अध्ययनों की जोड़)
८—आचारांग (द्वितीय श्रुतस्कंध) का टब्बा
९—निशीथ की जोड़
१०—अनुयोग द्वार की जोड़ (थोड़ी)
११—पन्नवणा की जोड़ (१० पद तक)
१२—अवगण (१५१ ढालें)
१३—टीगण (८५ ढालें)
१४—भनजी रो बखाण (३८ ढालें)
१५—महिपाल चरित्र (७७ ढालें)
१६—सुरसुंदर दवदंती (२२ ढालें)
१७—पार्श्व चरित्र बखाण
१८—मंगलकलश बखाण
१९—मोहजीत रो बखाण
२ —शीतेन्द्र रो बखाण
२१—शील मंजरी
२२—ब्रह्मदत्त बखाण
२३—यशोभद्र बखाण
२४—भरत बाहुबल रो बखाण
२५—व्याघ्र क्षत्री रो बखाण
२६—जमाली रो बखाण (१५ ढालें)
२७—महाबल रो बखाण
२८—खंधक सन्यासी रो बखाण (८७ ढालें)
२९—भिक्खु यश रसायण (६३ ढालें)
३०—लघु भिक्खु यश रसायन (५ ढालें)
३१—शतसी चरित्र (१३ ढालें)
३२—ऋषि राय सुजश (१३ ढालें)
३३—शांति विलास (११ ढालें)
३४—हेम नवरसो (९ ढालें)
३५—सरूप नवरसो (९ ढालें)
३६—भीम विलास (५ ढालें)

३७—मोतीजी स्वामी (बड़ा) (५ ढालें)
३८—उदेरामजी स्वामी (५ ढालें)
३९—ऋषिराय रो चोढालियो (४ ढालें)
४०—सरूपचन्दजी रो चोढालियो (४ ढालें)
४१—शिवजी स्वामी रो चोढालियो (४ ढालें)
४२—रूप ऋषि रो चोढालियो (४ ढालें)
४३—सती सिरदार सुजश (१५ ढालें)
४४—भाव मोहजयकी ढालें (२४ ढालें)
४५—मर्यादा मोहजय की ढालें (१७ ढालें)
४६—साधु सती गुणमाला (सैंकड़ों ढालें)
४७—शासन विलास (४ ढालें)
४८—मघवा की चोपी (३८ ढालें)
४९—भगवती व्याख्या री चोपी
५०—जिन आगन्या री चोपी (५४ ढालें)
५१—१८९ में गण बारह हुआ री जोड़ (२३ ढालें)
५२—उपदेश री चोपी
५३—शिक्षामण री चोपी
५४—चरचा री चोपी (२१ ढालें)
५५—भिक्खु लिखत चोपी (१६ ढालें)
५६—चोबीसी बड़ी (२४ ढालें)
५७—चोबीसी छोटी (२४ ढालें)
५८—प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध
५९—नयचक्र की जोड़
६० —पंच संधि ना दोहा
६१—धातु रूपावलि का दोहा
६२ -टालोकड़ां री ढालां
६३—टालोकड़ा रो लघु रास
६४—परम्परा रा बोल (७ ढालें)
६५—भ्रम विध्वंसण
६६—कुमतिविहंडन
६७—संदेहविष औषधि
६८—जिनाज्ञा मुखमंडन
६९—प्रश्नोत्तर सार्द्धशतक
७०—चर्चा रत्नमाला (अधूरा)
७१—सिद्धान्त सार
७२—झीण चर्चा
७३—ध्यान छोटा
७४—ध्यान बड़ा
७५—आराधना (१ ढाल)
७६—मर्यादा की ढाला
७७—थोकड़ा
*७८—शांति चरित (दीर्घ)
७९—शांति चरित (लघु)
८० —हरिवंश
८१—महाबल
८२—मलया सुन्दरी
८३—पाण्डु चरित्र
८४—चंद राजा रो बखाण
८५—रत्नपाल चरित
८६—धनबुद्धि पाप बुद्धि
८७—मुनपति चरित
८८—श्रेणिक चरित
८९—मृगावती चरित
९०—लीलावती चरित
९१—हरिबल चरित
९२—जयसेन चरित
९३ उत्तम कुमार चरित

*७८-९१ में उल्लिखित कृतियाँ जयाचार्य रचित नहीं हैं। व्याख्यान के लिए इन कृतियों के भिन्न भिन्न स्थलों पर उपयोग के लिए श्रीमद् जयाचार्य ने अनेक अंशों की रचना की और अपनी ओर से नयी ढालें आदि लिखी हैं। इनकी संख्या प्रचुर है। इसलिए इनका यहाँ उल्लेख किया गया है।

आपकी सभी रचनाएं राजस्थानी भाषा में हैं और प्रायः सभी पद्य में। उनमें सरसता, सुस्पष्टता मौलिकता भावों की ऊंची उड़ान और गहरा तत्त्वज्ञान भरा है। वे हृदय को बिजली के प्रवाह की तरह अपनी ओर खींच लेती हैं और एक तन्मयता उत्पन्न कर मन और भावों को आत्मिक शान्ति और पवित्र भावनाओं से ओत-प्रोत कर देती हैं। कई ढालें तो अन्त समय के लिए बनाई हुई हैं और उस समय में उन्हें सुनाने से आत्मा में एक अपूर्व बल का संचार हो जाता है और म्रियमाण व्यक्ति भी आध्यात्मिक सजीवता से भर जाता है।

श्रीमद् जयाचार्य वास्तव में एक जीवन-कवि थे। जीवन को उन्नत बनाने के लिए, भावों को पवित्र बनाने के लिए, इन्द्रियों को जीतने और मन को वश में करने के लिए, संक्षेप में हृदय में धर्म की स्रोतस्विनी बहा देने के लिए आपकी ढालें बड़ी ही उपयोगी हैं। आपकी कृतियों को समझने के लिए विद्वत्ता की जरूरत नहीं होती और न कोष की ही। उनमें इतनी सरलता है कि यदि एक अनपढ़ मनुष्य भी उन्हें सुने तो वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आपकी रचनाओं में संस्कृत शब्दों की बहुलता है परन्तु इन शब्दों का प्रयोग इतने सुन्दर रूप से किया गया है कि ठेठ राजस्थानी की सरसता को वे बिगाड़ते नहीं परन्तु उसे और भी दीप्त करते हैं। उनके संस्कृत शब्दों के प्रयोग से न भाषा बोझिल हुई है और न भाव दुर्ग्राह्य। परन्तु उनमें एक अद्भुत मिठास और सर्वग्राहिता निहित है। वास्तव में वह लोक-साहित्य है। स्वामीजी की तरह हम जयाचार्य को भी लोक-साहित्य के अमर गायक-कवि कहेंगे।

(१०) कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसंग सं० १९११ में आपका चातुर्मास लाडनूं (मारवाड़) में हुआ। उस वर्ष ५२ दोहों की एक प्रश्नावली अजीमगंज के कालूरामजी श्रीमाल नामक एक श्रावक ने लाडनूं के श्रावकों को भेजी। श्रावकों ने यह प्रश्नावली आपसे निवेदन की। इस प्रश्नावली में अनेक तात्त्विक प्रश्न थे और वह बहुत सुन्दर ढंग से लिखी गई थी। आपने इस प्रश्नावली के उत्तर में एक ग्रंथ ही बना डाला है जो 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध' के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध को कई श्रावकों ने मिलकर कण्ठस्थ कर कालूरामजी को भेजा। बाद में यह ग्रंथ प्रकाशित भी हुआ। यह छपा हुआ ग्रंथ १६५ पृष्ठों में है। आप तत्त्वज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित थ। सूत्र तो जैसे आपके कण्ठस्थ-से थे। आपकी रचना सूत्र संदर्भों से भरपूर है। 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध' जैन तत्त्वज्ञान का एक गम्भीर अध्ययनपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में २७ अधिकार व परिच्छेद हैं और प्रत्येक अधिकार में एक-एक विषय का सूक्ष्म विवेचन।

पहले साधु तम्बाकू सूंघा करते थे जिससे सफाई कम रहती। आपने तम्बाकू सूंघना एकदम बन्द कर दिया। जो एक बार तम्बाकू सूंघते उन्हें पाँच विगह और सूंखड़ी[१] छोड़नी पड़ती। इस नियम के लागू करते ही तम्बाकू की चाल बन्द हो गई।

१—घी दूध दही तेल और तली हुई वस्तुएं।
२—मिठाई आदि।

एक बार जयाचार्य लाडनूं में विराज रहे थे। वहाँ पूनी बाई नाम की एक श्राविका जाति की बहिन थी। उसने अपना जीवित ओसर किया। ओसर में काफी मिठाई बनी। ओसर के बाद उसने जयाचार्य से संतों को गोचरी भेजने की अर्ज की। जयाचार्य ने उत्तर दिया— 'अवसर होगा तो देखा जायगा। बादमें जयाचार्य के मन से यह बात बिसर गई और वे संतों सहित लाडनूं से विहार कर सुजानगढ़ पधार गए। जब उस बाई को इस बात की खबर लगी तो उसे मर्मान्तिक पीड़ा हुई। वह एक बार तो बेहोश भी हो गई। बड़े मोतीजी स्वामी उस समय लाडनूं में थे। उस बाई ने अपनी दुःख-गाथा उनसे कही—"आपके महाराज तो बड़ी बन्दोले वालों के (धनिकों के) घर ही जाते हैं मुझ गरीबनी के घर कौन आवे ?' मोतीजी स्वामी लाडनूं से विहार कर सुजानगढ़ पधारे और वन्दना करते हुए बोले— 'आपने तो धींगा निवाजवाली की !" जयाचार्य ने पूछा— 'सो कैसे ? मोतीजी स्वामी बोले—"राजा की सवारी निकलती तब एक गरीब आदमी पुकार किया करता—'गरीब निवाज ! मेरी भी सुनें' परन्तु राजा इस पर ध्यान नहीं देते थ। आखिर उसने एक दिन ऊँचे स्थान पर खड़े होकर पुकार की—'धींगा निवाज ! मेरी भी सुनें !' तब कहीं राजा के कान खुले। आपने भी पूनी बाई की अर्ज पर ध्यान नहीं दिया। अतः वह दुःखी होकर अर्ज कर रही थी कि आप 'धींगे निवाज' के साथी हैं।"

मोतीजी स्वामी की यह बात सुनते ही जयाचार्य को सारी बात याद आ गई। आप बातचीत कर रहे थे वहीं खूंटीपर आपका ओघा (रजोहरण) रखा हुआ था। ओघे को हाथमें ले आप उसी समय लाडनूं की ओर चल पड़। काफी दूर चले भी गये। पीछे से युवाचार्य श्रीमघराजजी स्वामी पहुंचे और अपने को भेजने की अर्ज की। जयाचार्य ने मघराजजी स्वामी को भेजा और अच्छी तरह काम निपटाने का हुक्म दिया। मघराजजी स्वामी लाडनूं पहुंच उस बाई के घर गोचरी पधारे। अब उसके हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। मघराजजी स्वामी ने बताया कि जयाचार्य किस तरह विहार कर काफी दूर आ गए थे। बाई गद्गद् हो गई। उसे समझते देर न लगी कि भूल से ही साधुओं को गोचरी भेजे बिना महाराज विहार कर गए।

स्मरण कराते ही जयाचार्य ने अपने वचनों पर कितना ध्यान दिया और वे जैसे धनियों के हैं, वैसे ही गरीबों के भी—यह दिखा दिया। मघराजजी स्वामी उस समय युवराज थे। उन्होंने युवराज को भेजकर अपने वात्सल्य का परिचय दिया। मोतीजी महाराज का अर्ज करने का ढंग भी काफी साहस पूर्ण था। वे गण पर किसी तरह का लांछन आवे—यह सह नहीं सकते थे और इसलिए स्पष्ट अर्ज करने में भी उन्होंने हिचकिचाहट नहीं की।

तेजपालजी मुनि बड़े तपस्वी साधु थ। आप लाडनूं के वासी थे। आपके पिताजी का नाम शाह डूंगरसी गोलछा था। बाल्यवय से ही आपके हृदय में अत्यन्त वैराग्य था और धर्म के प्रति सहज रुचि थी। एक बार जयाचार्य लाडनूं पधारे। उनके उपदेश को सुनकर तेजपालजी दीक्षा के लिए तैयार हो गए। उनका वैराग्य इतना तीव्र था कि गृहस्थावस्था में ही उन्होंने हजारों गाथाएं सीखीं। चारित्र लेने की उनकी तीव्र इच्छा थी पर घरवाले अनुमति नहीं देते थे।

उन्होंने तेजपालजी को एक कोठरी में बन्द कर बाहर ताला लगा दिया। परन्तु तेजपालजी की लौ साधु-जीवन से लग चुकी थी। वे अंतस्थ वैरागी थे। उन्होंने कोठरी में ही लोच कर अपना माथा मूंड लिया और घर में न रहने की अभिलाषा दिखाई। तेजपालजी को और भी कष्ट दिए गये। अंत में जयाचार्य ने उनके पिताजी को समझा दिया। जयाचार्य बोले—'हम गोलछे हैं और तुम भी गोलछे हो। तुम्हारे पाँच पुत्र हैं। समझ लेना एक पुत्र को गोद ही दिया सही। जया-चार्य के विनोद पूर्वक समझाने पर और तेजपालजी के उत्कृष्ट वैराग्य को देखकर डूंगरसीजी ने दीक्षा की आज्ञा दी।

श्री जयाचार्य भी स्वामीजी की तरह ही बड़े कठोर अनुशासक थे। गुणों के लिए तथा शुद्ध जीवन के लिए उनके हृदय में बड़ा सम्मान रहता। उन्होंने आचार्य होते हुये भी गुणवान साधु-साध्वियों की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की और जब कहीं प्रसंग आया उनका यशोगान करने में चूक नहीं की।

मानसिक शुद्धता और चारित्रिक शुद्धता के लिए उन्होंने बहुत कड़े नियम बनाए। अनेक मर्यादाएं बांधी। साधुओं की हाजिरी उन्हीं की प्रारम्भ की हुई है। माघ सुदी ७ के दिन जो मर्यादा-महोत्सव मनाया जाता है उसके स्रष्टा भी आप ही हैं। स्वामीजी ने सं १८३२, ४७ ४५, ५० और ५९ में अनेक मर्यादाएं स्थिर कीं। अनुभव और जरूरत के अनुसार इन मर्या-दाओं को विस्तृत और व्यापक बनाया गया। श्री जयाचार्य ने सं० १९११ में इन समस्त मर्यादाओं को एकत्रित कर सार रूपमें एक संक्षिप्त मर्यादा बनाई और साधु-संत उसे रोज पढ़ें ऐसा नियम बना दिया। साधुओं को जो रोज एक लिखित—प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता है, वह भी आप ही का चालू किया हुआ है। इस प्रतिज्ञा-पत्र के अन्तिम शब्द हैं—"मैं वले मन सीधे हरख राजीपा सुं लिख्यो सरमा सरमी सुं लिख्यो नथी। इस प्रतिज्ञा का अर्थ यही था कि साधओं को प्रतिपल यह स्मरण रहे कि वे महिमामय जैन-शासन के साधु हैं और कुशलता पूर्वक चारित्र का पालन करने और आचार्य के कठोर से कठोर अनुशासन को भी वे अन्तर हृदय से मानने और शिरोधार्य करने के लिए प्रस्तुत हैं। यह प्रतिज्ञा-पत्र विनीत शिष्य की आत्म-साक्षी और आचार्य के पवित्र चरणों पर अपना सम्र समर्पण है।

वृद्धावस्था में जयाचार्य की आँखों में मोतियाबिंद हो गया। बड़े डाक्टरजी महाराज उनकी आँख का आपरेशन कर रहे थ। हठात् बीच ही में वे वहां से तिरवारी में आ गए। जो डाक्टर वहाँ मौजूद थे बोले—"यह क्या करते हैं?" जयाचार्य बोले—"मेरे शरीर पर जल की छींट—बूंद सी लगी। चारित्र से बढ़ कर आँख नहीं है। संतों ने आँख की ओर जब विश्वास हो गया कि फुहारे नहीं गिरते हैं, तब फिर चौक में आकर आपरेशन कराया। चारित्रिक विशुद्धता पर जया-चार्य का कितना ध्यान रहता था—यह इस घटना से साफ प्रगट है।

आपके शासनकाल में सती सिरदारांजी और गुलाबांजी बहुत ही प्रसिद्ध आर्याएं हुईं। सती सिरदारांजी सतियों की मुखिया थीं और इस तरह उनका नाम सार्थक था। वह इतनी बुद्धिमती थीं कि संत भी उनकी सलाह से काम करते। उस समय ऐसी परिपाटी थी कि जब संत आहार कर चुकते

तब बाकी आहार साध्वियाँ अपने में विभाजित करतीं। सती सिरदारांजी ने विभाजन-पद्धति की त्रुटि की ओर भी जयाचार्य का ध्यान आकर्षित किया। जयाचार्य ने तुरन्त ही इस परिपाटी को बदलकर बराबर विभाजन की पद्धति चलाई। जय-जश और दीप-जश व्याख्यान की तो सामग्री भी उनकी दी हुई है। वे सामग्री देते और जयाचार्य उसे सम्बद्ध करते।

सती गुलाबांजी भी बड़ी विदुषी और विचक्षण थीं। वे मघराजजी स्वामी की बहिन थीं। उनके अक्षरों की मोती से उपमा दी जाती है। वे इतना सुन्दर और साफ लिखती थीं कि देखनेवाले की आँखें तृप्त हो जातीं। जयाचार्य उनसे लिखवाया करते थे।

पाली में एक सुनारिन ने संथारा ग्रहण किया। उसकी इच्छा थी कि जयाचार्य दर्शन दें। उसने श्रावकों से यह अर्ज जयाचार्य से करवाई। उस समय जयाचार्य पाली से लग-भग १२ मील दूर पर विराज रहे थे। अर्ज सुनते ही विहार कर पाली पहुँच दर्शन दे उस सुनारिन के मनोरथ को पूरा किया। आप ऐसे ही कृपालु आचार्य थे।

जयाचार्य के जीवन में अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ घटीं। सं० १९१५ फाल्गुन सुदी १० के रात की बात है। हठात् जयाचार्य को छोड़कर सर्व साधु बेहोश हो गए। उस समय जयाचार्य ने एक ढाल जोड़ी। उसे 'विघ्न हरण की ढाल' कहते हैं। इस ढाल की प्रथम पंक्ति है—"मुणिन्द मोरा भिक्षु ने भारीमाल वीर गोयम री जोड़ी रे।" इसमें तेरापन्थ-सम्प्रदाय के सभी विशिष्ट साधु-साध्वियों के गुणों का स्मरण और कीर्तन है। इस ढाल के स्तोत्र से साधु फिर होश में आये।

इसी तरह एक अन्य परीषह के समय उन्होंने सिरियारी में सं० १९११ की बसंत-पञ्चमी वार सोमवार के दिन एक दूसरी ढाल रची उसमें भी गुणी सन्तों का गुणगान है। इस ढाल के स्तोत्र के बाद परीषह दूर हुआ।

गृहस्थ-जीवन की घटना है। साध्वी अजबूजी का चातुर्मास रोहट में था। उन्होंने माता कल्लूजी को धर्मध्यान अधिक करने का उपदेश दिया। उस समय जयाचार्य बाल्यावस्था में थे और अत्यन्त अस्वस्थ थे। बचने की कोई आशा न थी। धान गले न उतरता। इससे माता कल्लूजी बड़ी चिन्तित रहतीं। उन्होंने साध्वी अजबूजी से कहा— 'जीतमल बीमार है। बड़ा आर्तध्यान रहता है। इससे धर्म ध्यान विक्षेप होता नहीं।' साध्वी अजबूजी बोलीं— 'यदि जीतमल स्वस्थ हो जाय और उसको प्रव्रज्या लेने का भाव हो जाय तो उसे मना करने का त्याग लो।' माता कल्लूजी ने त्याग कर दिया। आप तुरंत नीरोग हो गये। धान गले उतरने लगा।

बाल्यावस्था में ही आपमें अत्यधिक वैराग्य-भावना थी। साधुओं की सेवा-भक्ति तथा धर्म-ध्यान में आपकी विशेष अभिरुचि रहती। यदि कोई आपसे पूछता— 'आप दीक्षा लेंगे ?' तो आपका उत्तर होता—"लूँगा।" इस पर साधु कहते— 'अभी तुम्हारी उम्र छोटी है। ९ वर्ष के पूर्व दीक्षा नहीं कल्पती।

आप हाथ में पला लेकर उसमें कटोरी रख लेते और अपने काका के पास आकर कहते— "मैं साधु हो गया हूं, मुझे आहार देना।" साधु सन्तों से आप बार-बार पूछते—"अभी कल्प आया है या नहीं ?"

इस प्रसंग से यह स्पष्ट विदित होता है कि छोटी उम्र में ही आप में साधु-जीवन की बड़ी बलवती इच्छा थी।

आपके बड़े भाइयों की सगाई आपके पिताजी ने कर दी थी किन्तु आपकी सगाई वे नहीं कर सके क्योंकि उनका देहान्त सं० १८९३ में हगाद् हो गया। आपकी सगाई बाद में पूंभारे में हुई। यहीं आपका ननिहाल भी था।

संवत् १८९९ में मारीमालजी स्वामी का चतुर्मास जयपुर में हुआ। वे पद्मसिंह जी बया की हवेली में विराजे। उस समय स्वरूपचन्द जी अपनी माता और भाइयों के साथ जयपुर आये और वहाँ पर हरचन्दलालजी जौहरी के मकान पर उतरे। अपने भाइयों के साथ आप तीनों वक्त व्याख्यान सुनते। इससे आपका वैराग्य बढ़ता गया। रात में ऋषि रायचन्दजी रामायण का व्याख्यान दिया करते थे। आप ने सांगा छोड़कर पचीस बोल कण्ठस्थ कर लिया और तेरहद्वार के ग्यारह द्वार सीख लिए। आपने विविध चर्चाएं सीखीं। उस समय आप ९ वर्ष के थे। आपकी चातुरी और प्रत्युत्पन्न बुद्धि को देखकर हरचन्दलालजी जौहरी ने विचार प्रकट किया कि यदि जीतमलजी ने दीक्षा ली तो बड़े सुयोग्य साधु होंगे। यदि दीक्षा लेने का उनका विचार नहीं रहा तो मैं छोटी बीबी (अपनी भतीजी) का विवाह इससे कर दूंगा और बाद सिंह को गोद बिठाकर ५० ०० रुपये नगद तथा वस्त्रादि जो हैं, उन सबको उन्हें दे दूंगा। परन्तु कंचन और कामिनी के प्रलोभन से आप विचलित नहीं हुए। आपका वैराग्य बढ़ता ही गया।

चतुर्मास समाप्त होने पर भी शारीरिक अस्वस्थता वश मारीमालजी स्वामी तथा ऋषि रायचन्दजी को कुछ दिनों तक जयपुर में ही ठहरना पड़ा। इस अवसर पर हेमराजजी स्वामी, कस्तूजी, हीरांजी हस्तुजी दिस्तुजी आदि मारीमालजी स्वामी का दर्शन करने आये। जयपुर में आचार्य श्री के ठहर जाने से लोगों का बड़ा उपकार हुआ। कइयों ने व्रत आदि धारण किये। कलूजी ने स्वरूपचन्दजी को उपदेश दिया। युक्ति और उक्ति से उनके अन्तर में वैराग्य जगाया। हस्तुजी ने कहा—"देखते क्या हो ? सारा घर अपनी बुआ को दो। घर में न रहने का अभिग्रह लो।" स्वरूपचन्दजी में वैराग्य भावना तो थी ही इससे उन्होंने घर में न रहने का अभिग्रह लिया। अब श्री जीतमलजी के हृदय में भी दीक्षा लेने के तीव्र भाव जागृत हुए। मारीमाल जी स्वामी ने स्वरूपचन्दजी को पहले दीक्षा देने का भाव प्रकट किया। माता कलूजी ने सहर्ष आज्ञा प्रदान की।

मारीमालजी स्वामी ने आपकी दीक्षा मिति माघ वदी ७ के दिन ऋषि रायचन्दजी के हाथों चाट दरवाजे के पूर्व के बट-वृक्ष के नीचे करवाई।

भारीमालजी स्वामी ने मुनि भीमराज को ४ महीने बाद और जीतमलजी को ६ महीने बाद बड़ी दीक्षा देकर मुनि श्री भीमराजजी को बड़ा किया। मुनि जीतमलजी का प्रथम चातुर्मास मुनि श्री हेमराजजी स्वामी के साथ सं० १८७० में इन्द्रगढ़ में हुआ।

सं० १८७१ में आपका पाली में चातुर्मास हुआ। इस चातुर्मास में आपने और स्वरूपचन्दजी स्वामी ने ४२ ४२ उपवास किये। आपने 'जब तक पूज्यजी के दर्शन न होंगे तब तक पाँच विगह न खाऊंगा' ऐसा अभिग्रह किया। यह अभिग्रह १३ महीने बाद पूरा हुआ अर्थात् १३ महीने तक आपने घी दूध दही मिठाई आदि का परिहार रखा।

पाली से सुरगढ़ पधारे। वहाँ दिशा जाकर वापिस आते समय पर फिसल कर गिर पड़ने से पैर की ढकनी उतर गयी। बाद में पीड़ा दूर हुई, पर कच्ची अवस्था में पैर पर जोर दे देने से कुछ कसर रह गयी।
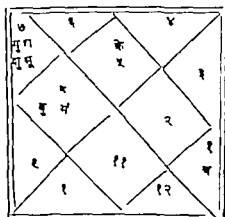
श्रीमज्जयाचार्य की जन्म-कुण्डली इस प्रकार है

श्री जयाचार्य का विस्तृत जीवन-चरित्र पंचम आचार्य श्री मघराजजी स्वामी कृत आचार्य चरित्रावलि में प्रकाशित है। कृपया पाठक उसे देखें।

कृति-परिचय

भिक्खु जश रसायण कृति का रचना काल संवत् १९०८ आसोज सुदी १ वार शुक्रवार है। यह कृति बीदासर शहर में सम्पूर्ण हुई जो कि बीकानेर (राजस्थान) में है[१]।

इस कृति की रचना में श्री जयाचार्य ने मुख्यतः निम्न कृतियों का सहारा लिया है[२]:

१—ढाल ६३ गा ४८

संवत उगणीसे आठे आसोज पक्ष सुदि सार।
शुक्रवार ए जोड़ रची बीदासर शहर मझार॥

२—६३ गा ४५ ४६:

विस्तार रच्यौ भिक्खु मुनिवर नौ इणिवौ तिण अनुसार।
भिक्खु दृष्टान्त हेम मिलाया हिवी ते अधिकार॥
वेणीरामजी हेम एम वा भिक्खु चरित उदार।
इत्यादिक अवलोकी अधिकौ ग्रंथ रच्यौ इणिवार॥

१—'भिक्खु दृष्टान्त'—जो स्वामीजी के शिष्य मुनि श्री हेमराजजी ने लिखाये थे और जिनका संग्रह स्वयं जयाचार्य ने किया था। यह पुस्तक महासभा द्वारा प्रकाशित हो चुकी है।

२—मुनि श्री हेमराजजी कृत 'भीखू चरित'—जो प्रस्तुत खण्ड में प्रकाशित किया जा रहा है।

३—मुनि श्री वेणीदास कृत 'भीखू चरित'—यह कृति भी प्रस्तुत संग्रह में प्रकाशित है।

यह कृति चार खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में चौदह ढालें हैं। जिनमें आचार्य रघुनाथजी से पृथक् हो नूतन दीक्षा ग्रहण करने तक का विवरण है। तथा स्वामीजी ने आध्यात्मिक और दार्शनिक क्षेत्र में जो विचार-क्रान्ति प्रस्तुत की उसका सुन्दर वर्णन है।

द्वितीय खण्ड में कुल २८ ढालें हैं। इस खण्ड में स्वामीजी के अत्यन्त रोचक संस्मरण, दृष्टान्त और प्रसंगों का बड़ा ही हृदयग्राही चित्रण है। इस खण्ड में श्री जयाचार्य ने स्वामीजी के जीवन के १५१ प्रसंगों का उल्लेख किया है।

तृतीय खण्ड में कुल १० ढालें हैं। इनमें स्वामीजी के शासन में जो दीक्षाएँ सम्पन्न हुई उनका विवरण है। श्री जयाचार्य ने इस खण्ड में सब साधु-साध्वियों का संक्षिप्त में घटनापरक जीवन-चरित्र दे दिया है।

चतुर्थ खण्ड में कुल ११ ढालें हैं। यहाँ स्वामीजी ने किन-किन देशों में उपकार किया, उसका और अन्तिम पद-यात्रा का वर्णन आया है। इसी खण्ड में स्वामीजी ने किस तरह संथारा किया, उसका लोमहर्षक वर्णन है। अन्त में स्वामीजी के चातुर्मासों का विवरण दिया है।

इस कृति में कुल ६३ ढालें हैं। ढालवार दोहा और गाथा संख्या इस प्रकार है :

प्रथम खण्ड

ढाल	दोहा	गाथा	कलश	सोरठा
१	९	२१		
२	६	२१		
३	९	२		
४	६	२६		
५	६	२७		
६	९	१८		
७	९	१३		
८	६	२१		
९	६	३३		
१०	६	१५		१

१—यहाँ लगता है दूहा और भरत हम छन्द अधूरा है।

ढाल	दोहा	गाथा	कलश	सोरठा
४	६	३१[1]		
४१	६	१३०		
४२	६	५६	२	
तृतीय खण्ड				
४३				१[2]
४४	६	१५		
४५	६	२१		
४६	१	२७		१४+२
४७	६	१५		५
४८	१+८	२[2]		
४९	५	१५		७
५०	७	२४		११
५१	५	१५		१२
५२ भुजंगी छन्द १४	२१	३७	२	५+२ छप्पय ४
चतुर्थ खण्ड				
५३	४	११		६
५४	५	१४		
५५	४	३१		
५६	४	१५		
५७	४	१३		
५८	४	२३		
५९	५	१९		
६	४	१५		
६१	५	१७		
६२	७	२८		
६३	५	४९	२	

१—शोभाचन्द सेवग कृत 'समसय कामी रसिकी' वाला छन्द उद्धृत है।

२—इसके बाद मुनि वेणीदासजी कृत दोहों सहित चौथी ढाल उद्धृत है। श्री जयाचार्य ने इस ढाल में जो थोड़ा शाब्दिक संशोधन किया है वह मूल कृति की इस ढाल के साथ मिलान से स्वयं प्रकट होगा।

श्रीमज्जयाचार्य की कृतियों और उनके द्वारा रचित जीवन-चरितों में 'भिक्खु जश रसायन' अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है।

उनके द्वारा रचित ग्रंथों के अध्ययन से निम्न बातें प्रमुख रूप से सामने आती हैं: (१) वे गंभीर अध्ययनशील पुरुष थे। (२) गूढ़ तत्त्वज्ञानी थे। (३) आगम-शास्त्र में पारगत थे। (४) जन्मजात इतिहासकार थे। (५) मर्यादा पुरुषोत्तम थे। (६) सिद्धहस्त कवि और कुशल लेखक थे। (७) उद्भट टीकाकार थे। (८) विशुद्ध दृष्टि सम्पन्न नैयायिक थे और (९) वे धैर्यशील अनुसन्धित्सु थे।

'भिक्खु-जश रसायन'—एक जन्मजात इतिहासकार कवि की सूक्ष्म प्रामाणिक लेखनी का उत्कृष्ट नमूना है। भक्ति-भावना से भीगा हुआ यह जीवन-चरित आराध्य के प्रति अतिरंजित नहीं पर एक अपेक्षित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्रीमद् जयाचार्य को लगता था— 'स्मरण स्वाम तणो सुद्ध साच्चों शिवसुख धाम सार।' जयाचार्य ने ऐसे महान पुरुष की महान यशोगाथा अत्यन्त प्रामाणिक रूप में उपस्थित की है।

इस जीवन-चरित्र के लिखने के लिए सामग्री एकत्रित करने में श्री जयाचार्य ने जो घोर परिश्रम किया है, वह पुस्तक के एक-एक पृष्ठ से स्वयं प्रगट है।

'भिक्खु दृष्टान्त' का संकलन उन्होंने इसी दृष्टि से किया। इन संस्मरणों को संग्रह करते समय उनके हृदय में जो एक अभिनव कल्पना कार्य कर रही थी उसने प्रस्तुत चरित के द्वितीय खण्ड में साकार रूप लिया है। 'खण्ड दूजै गुण खाण रे, दृष्टान्त कहूं स्वाम्ना' ये दृष्टान्त स्वामीजी की आन्तरिक भावना और वृत्तियों के अन्यतम चित्र हैं। कवि की कुशल तूलिका इन संस्मरणों के आधार से ही नाना भरे रंग-बिरंगे समतल चित्र उपस्थित करने में सफल हुई है। इस जीवन-चरित में पूर्व चरितों की अपेक्षा असाधारण विशेषता भी इन संस्मरणों के गुम्फन से ही आ सकी है।

राजस्थानी संस्मरण-परक जीवन-चरित लिखने की कल्पना और चिन्तन की शृंखला में श्रीमज्जयाचार्य का स्थान एक अग्रणी के रूप में आता है। उन्होंने प्रस्तुत चरित-लेखन में जिस शैली कल्पना और ऐतिहासिक वृत्ति को रखा है, वह उस समय के जीवन-चरितों में दुर्लभ है।

इस चरित-ग्रंथ की अन्तिम पंक्तियों में कवि कहता है—

> अधिको ओछो जे कोई आयो
>
> विरुद्ध आयो हुवै कोय।
>
> सिद्ध अरिहन्त देव री साखैं
>
> मिच्छामि दुक्कड़ मोय॥

इस चरित-लेखन में जान-बूझकर कम-अधिक उपस्थित करने की बात तो है ही नहीं। भूल-चूक से भी ऐसा कुछ रह गया हो ऐसा नहीं लगता। इतिहासकार की विशुद्ध वृत्ति का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

तृतीय खण्ड में स्वामीजी कालीन साधु और आर्याओं का जो संक्षिप्त परिचय उपस्थित हुआ है, यह तेरापन्थ इतिहास की स्वर्ण कड़ियों को सुरक्षित रखता है। स्वामीजी के गण में कैसे उत्तम चारित्रिक संत तपस्वी और शास्त्रगामी साधु-साध्वी हुए, उनका यह सुन्दर हृदयग्राही परिचय प्रस्तुत करता है। समूचा चारित्र संवेग-रस की भावना के उद्रेक का सहज अविराम स्रोत है। उत्तम रागिनियों में गुम्फित यह जीवन चरित उतना श्रद्धाञ्जलि परक नहीं जितना कि वह भावना प्रेरक है। यह अध्यात्म रस का निर्झर है। जीवन-विशुद्धि की प्रक्रिया में ऐसा अध्यात्मरस समृद्ध जीवन-चरित साधक के लिए प्रबल सबल होता है।

कवि जितना भावना के साथ चला है उतना ही तथ्यों के साथ भी। तथ्य चित्रण की रोचकता में कमी नहीं आ सके। न भाव प्रवीणता से ही तथ्यों को ओझल किया है। दोनों ने मिलकर ग्रंथ को एक सुन्दररूप दिया है।

लेखक की "आचार्य संत भीखणजी" नामक पुस्तक प्रस्तुत कृति पर ही आधारित है। उसके अवलोकन से प्रस्तुत ग्रंथ का सार विस्तृत रूप में सामने आ जायगा।

प्रस्तुत प्रकाशन का आधार श्रीमज्जयाचार्य के स्वयं की हस्तलिखित प्रति है।

यह जीवन-चरित पहले भी दो बार श्री धनसुखदास हीरालाल आंचलिया गंगाशहर की ओर से प्रकाशित हो चुका है। गुजराती लिपि में वह बम्बई से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत संस्करण में उन प्रकाशनों में रही हुई भूलों का संशोधन मूल प्रति से मिलाकर किया गया है।

४. लघु भिक्खु जश रसायण

यह भी श्री जयाचार्य की ही कृति है। भिक्खुजश रसायण के १५ वर्ष बाद यह लिखी गयी है। इसके सम्पूर्ण होने की तिथि का उल्लेख इस रूप में मिलता है :

> उगणीस तेवीस माघ सुदि तिथ तिज।
> गुरुवारे ए जोड़ करी भिखु बीज॥

इस कृति में स्वामीजी के संस्मरण और अनुयायी साधु-साध्वियों का वर्णन नहीं है। अवशेष जीवन-चरित है। यद्यपि इसका नाम लघु भिक्खु जश रसायण" है तथापि यह "भिक्खु जश रसायण" कृति का संक्षिप्तरूप नहीं पर एक स्वतन्त्र कृति है। इसमें स्वामीजी के जीवन चरित को संक्षेप में उपस्थित किया गया है, पर वह अपने आप में सम्पूर्ण है।

रचना की दृष्टि से यह कृति भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कवि की चित्रण-कुशलता सर्वत्र व्याप्त है। एक ही बात दोनों चरितों में भिन्न-भिन्न शब्दों में कैसे समानरूप से सुन्दर चित्रित हुई है यह कवि की सहज कवित्व-शक्ति का परिचायक है।

इस कृति का आरम्भिक अंश एक भिन्न ही भूमिका को लिए हुए है और उतना सर्वथा नवीन है। अवशेष चरित में प्रथम चरित में समाविष्ट घटनाओं का ही दर्शन है पर वह

भाषा और भाव-व्यंजना की दृष्टि से सम्पूर्णतः नवीन है। दोनों चरितों के वर्णनों से घटनाओं का पूरा-पूरा रूप सामने आ जाता है।

इस कृति में कुल पांच ढालें हैं तथा दोहे और गाथाओं आदि की संख्या २६३ है।

प्रस्तुत प्रकाशन का आधार शासन की हस्तलिखित प्रति से धारा हुआ पाठ है। यह प्रति किसके हाथ की लिखी हुई है, इसका पता नहीं चल सका।

यह चरित प्रथम बार ही प्रकाशन में आ रहा है।

तेरापन्थ आचार्य चरितावली के इस प्रथम खण्ड में प्रकाशित आचार्य भिक्षु के चार जीवन चरितों से स्वामीजी के जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का हूबहू चित्र सामने आ जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि भविष्य में हिन्दी में स्वामीजी के चरित लिखने के लिए इस प्रकाशन द्वारा पाठकों के हाथ में अपूर्व सामग्री आ जाती है।

तेरापन्थ आचार्यों और सन्तों द्वारा राजस्थानी साहित्य की जो श्री वृद्धि हुई है, उसका यह प्रकाशन एक ज्वलन्त प्रमाण है। महासभा का यह प्रकाशन राजस्थानी साहित्य में अवश्य महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा इसमें कोई सन्देह नहीं।

कलकत्ता
माघ शुक्ला १, २ १८

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

तेरापंथ आचार्य चरितावलि

[खण्ड : १]

१

भीखू चरित

[मुनि श्री हेमराज जी कृत]

दूहा

अरिहंत सिध साधु नमूं भाव भगत उर आंण।
गुर गिरवा गुणवत नो, कहूं भीखू चरित बखाण॥ १॥
मोटा मोटा मुनिवर हुवा, आगेइ चोथ आर।
बखांण्या मुख वीर जी सुत्र में सुख सार॥ २॥
त्यांने नेंणां मही निरखीया वीर कह्यो विस्तार।
तिण विन जिन मिलू सामग्री प्रगट्या पांचम आर॥ ३॥
गुण गावे गुणवत गुर तिणा मोख रे मन नहीं भ्रम।
ग्यानीं कह्या गिनाता मझे, तीथकर गोत्र बमाय॥ ४॥
उत्कृष्ट परिणाम सूं, उत्कृष्टी आवे रसांण।
सका म आणो सबया, वीर मुखा री वांण॥ ५॥
तिण काले मे तिण समे दुषम आरा मी बात।
पूज भीखनजी प्रगट्या सुखो साध साख्यात॥ ६॥
सुखी कथा सुखी बारता सुखी सरधा आचार।
सुख सुख आय मुगत म आवागमण निवार॥ ७॥
जनम किहां दिख्या किहां प्रभव पोहता किण ठांम।
कीया चोमासा किण विधे सहुना पिण कहूं नांम॥ ८॥
जस मेहमा घणी जगत म कही कथ्य लग जाय।
पिण थोड़सी प्रगट करु सांभलज्यो चित ल्याय॥ ९॥

ढाल १

[धाज भलो दिन ऊगो भी धीमिन्धर सामी जी नै वाद]

जंबू दीप भरतखेतो जी कांइ देस मुरधर दीपता।
कांइ कांठ कनेर बहवास।
नगर कंटाल्यो नीको जी कांइ वनमज राज करे तिहां।
बसत सघ सोमाय।
साव भीखू सुखदाया जी मन माया मवीयण जीव रे॥ १॥

ज्यों भीखनजी अवतरीया जी कांइ धरीया जननी गर्भ में
उत्तम जीव मपार।
समत सतरेसे बेयासी जी, सुखवासी मंगण उपना
सुपन लह्यो श्रीकार ॥ २ ॥
सीह सुपन माता जी सुखसाता सुत मे जनमीया
हुओ हरख उछाव।
दीपांदे अंग जाता जी कांइ पिता बलूजी सोमता।
कांइ कुल ओसवाल कहाव ॥ ३ ॥
बड साजन कल दीसा जी सकलेसा जात जाणजो
एक परण्या था नार।
घणो नहीं कीयो ग्रहवासो जी कांइ आयो दीसज आदरवो
दीख्या री मन धार ॥ ४ ॥
वरस पचीस आसरे वमीया जी कांइ सघीया चेत सखा हुआ।
आयो भट वेराग।
रूघनाथजी गुरु धरीया जी कांइ किया काची जांणमें
पछे अपनो सोच अथाग ॥ ५ ॥
सुत्र ने सुध वांच्या जी कांइ राच्या ग्यांन रसालसूं
अछा दियो उपयोग।
भगवत मारग भूला जी कांइ झूला छोड संसार में।
नहीं दीसे संजम जोग ॥ ६ ॥
राजनगर में मणता जी कांइ गुणता ग्यांन भलो लह्यो
बरस पनरे षटमास।
सुत्र माहि साचो जी कांइ काचो म्हे पाल्यां अबो
हिवे तोड न्हाखूं मोह पास ॥ ७ ॥
भाव कहे गुरा ने क्रिया जी बीसरीया वीर भाखी अबा,
कांइ चूका समक्त सार।
छाणे सुरत संभाल्मे जी मन वाली मारग मोकलो
पिण उखांरी उठ न हुई सिगार ॥ ८ ॥
अबा पांचमो आरो जी कहे सारो संयम नहीं पले
इत्यादिक कह्या दीग्य बचन अनेक।
पिण गुन न्याय मांहर लीधा जी कांइ धीधा कष्ट हरी परे,
बीर बचन बनाय बमेग ॥ ९ ॥

सात चोमासा आगे जी मन भाग त्यां माहि रह्या
विचलायक समम्रम काज ।
समम रेख्या पूरा जी कांइ पूरा असल आचार सूं,
साम्रुम सिन्धुर राज ॥ १० ॥
भीखनजी मादि विचारी जी कांइ त्यारी जाण तेरे हुआ
करवा आतम काम ।
तेरें श्रावक समाइ पोसा जी कांइ सेहर आर्षाणा में कीया
जठ तेरापंथी दीयो नाम ॥ ११ ॥
समत अठारो सतरो जी कांइ सुथरो समो आयो तिहां
सबलो हुबो सुगाल ।
साधपणो सुध लीयो जी कांइ कीयो कारज केलवे,
प्रमव साहूमो भाल ॥ १२ ॥
पांच देस प्रगटीया जी कांइ गुण रटीया राम नाम ज्यूं,
कांइ कटीया कम करूर ।
पाखंड मोथा पोथा जी कां ग्यांन बले मोट मुनी
मांज कीया मजबूर ॥ १३ ॥
स्वामी ग्यांन करी गुणसागर जी सुध आगर अर्थ मे हेत रा
ओजागर घणा अमोल ।
भांत भांत गुण भरीया जी कांइ तरीया त्यारा भव जीव ने
त्यांरो दीलो वधीयो तोल ॥ १४ ॥
आप भाग्या सुध आराधी जी कांइ गाधी बीर जिणद री
आप असल दीसो अणगार ।
च्यार तीथ सुध थाप्या जी आप्या अणुव्रत माहाव्रत मोटका,
बले आछो ग्यांन अपार ॥ १५ ॥
साध सभा सिणगारी जी गुण भारी भीखू सांम में
कांइ भागी ममत बलाय ।
चतर बबेकी पूरा जी कांइ सूरा धरचा धार्म
मबीयण रे मन भाय ॥ १६ ॥
सांरा मिरे सिंघ भारी जी सुहामी प्रकट आंपने
बले सरल घणा सभाव ।
भारमलजी पाट थापी जी कांइ भापी पदवी आचाय तणी
च्यार तीर्थ चित्त चाव ॥१७ ॥

स्यां भीखनजी भवसरीया जी कांइ भरीया जगणी गम में
उत्तम जीव अपार।
समत सतरेसे बेयासी जी सुखवासी नदण उपना
सुपन लह्यो श्रीकार ॥ २ ॥
सीह सुपन माता जी सुखसाता सुत मे मनमीया
हुओ हरख उछाव।
दीपांदे अंग माता जी कांइ पिता बलूजी सोभता।
कांइ कुल ओसवाल' महाव ॥ ३ ॥
बड़े साजन बले वीसा जी सकलेसा वास जाणजो
एक परण्या था नार।
घणो नहीं कीयो ग्रहवासो जी कांइ आछो सीलज आदर्यो
दीख्या री मन धार ॥ ४ ॥
वरस पचीस आसरे वधीया जी कांइ सधीया चेत सवा हुआ।
आयो घट वैराग।
रुघनाथजी गुरु करीया जी कांइ क्रिया काची जाणनें
पछे अपनो सोच अथाग ॥ ५ ॥
सूत्र ने सुध वांच्या जी कांइ राच्या ग्यांन रसालसूं
ऊंडो दियो उपयोग।
भगवंत मारग भूला जी कांइ झूला छोड संसार नें।
म्हाँ दीसे संजम जोग ॥ ६ ॥
राजनगर में भणतां जी कांइ गुण्यां ग्यांन भलो लह्यो,
बरस पनरे बऊमास।
सूत्र मांहि साखा जी कांइ कायो म्हे पासां अखो
हिवे छोड महान् मोह पास ॥ ७ ॥
भाव कहे गुरां मे क्रिया जी बीसरीया बीर भाखी जका
कांइ चूरा समस्त सार।
छाडो सुरत संभाल्यो जी मन बाल्यो मारग मोखनो
पिण उहोरी उठ न हुई सिमार ॥ ८ ॥
अवाऽ' पांचमो आरा जी कहे सारो संयम नहीं पल
इत्यादिक कह्या दीन्या वचन अनेक।
पिण गुरु न्याय मांडे रोजा जी कांइ थोथा कव्ज नहीं पर
बीर वचन बनाय वसन ॥ ९ ॥

सात चोमासा आगे जी मन भागे त्यां माहि रह्या
　　किंतलायक समम्रयण काज।
सम्म सेवा सूग जी कांइ पूरा असल आचार सुं
　　सामल सिवपुर राज ॥ १० ॥
भीखनजी भवि विचारी जी कांइ त्यारी आण तेरे हुआ
　　करवा आतम काम।
तेरे श्रावक समाइ पोसा जी कांइ सेहर जोधांणा में कीया
　　जठ तेरापंथी दीयो नाम ॥ ११ ॥
समत अठारो सतरे जी कांइ सुधरो समो आयो तिहां
　　सबलो हुवो सुगाल।
साधपणो सुध लीधा जी कांइ कीधो कारज केल्बे,
　　प्रथम साहमो भाल ॥ १२ ॥
पांच देस प्रगटीया जी कांइ गुण रटीया राम नाम ज्यूं,
　　कांइ कटीया कर्म करूर।
पाखंड घोचा पोचा जी कोन्' ग्यांन बले मोटे मुनी
　　भांज कीया मजबूर ॥ १३ ॥
स्वांमी ग्यांन करी गुणसागर जी बुध आगर अर्थ मे हेत रा
　　ओजागर बचा अमोल।
भांत भांत गुण भरीया जी कांइ तरीया त्यारा भवजीव ने
　　त्यांरो तोलो कथीयो तोल ॥ १४ ॥
मास आग्या सुध आराधी जी कांइ गाधी बीर जिणद री,
　　आप असल दीसो अणगार।
च्यार तीथ सुध थाप्या जी आप्या अमृत साहगत मोटका
　　बले आछो ग्यांन अपार ॥ १५ ॥
साध सभा सिणगारी जी गुण भारी भीखू सांम में
　　कांइ भारी भमत बलाय।
चतर बबेकी पूरा जी कांइ सूरा करबा कारजं,
　　भवीयण रे मन भाय ॥ १६ ॥
सांरा सिरे सिख भारी जी सुहाली प्रकत आंणमे
　　बले सरल घणो सभाव।
भारमलजी पाट बासी जी कांइ भारी पदवी आचाय तणी
　　च्यार तीर्थ निस भाव ॥१७॥

दूहा

सांमी मारग साचो लीयो सारण आतम काम।
पिण भारीकर्मा जीवड़ा मक्कीया बोले आंम ॥ १ ॥
कुगुरां ना भरमावीया बोले आल पंपाल।
थोड़ा सा प्रगट करूं सुणजो सुरत संभाल ॥ २ ॥

ढाल २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

अ गुरु मे उथापी अल्गा हुआ रे, यांरे दान दया दीधी उथाप रे, मतक जिण।
कोई जीव बचावे छे तेहने रे लाल अ कहे छे अठारे पाप रे, मतक जिण।
मुक्तो भीखूजी रो मारग रे लाल ॥ १ ॥

कोइ संगत यांरी करज्यो मती रे, लाग जायला थारे लाल रे। म०।
मिन्हव छे ए नीकल्या रे लाल इम देवे अनेक विध आल रे। म ॥ २ ॥

इम भरमाया अनेक जीवां घणी रे घणा गावां नगरां विख्यात रे। म०।
जो तेरापंथ्या रो मारग ओलख्या रे लाल तो हरगज नावे म्हारे हाथ रे। म ॥ ३ ॥

भार भापरा पखीयां घणी रे, वले अनेक टोला सूं मिलीया आय रे। म०।
वले अनेक ग्रहस्थां ने सीखावीया रे लाल याने टलका म देज्यो ताहि रे। म० ॥ ४ ॥

बावीस टोलां रे माहोमा वेंधा घणो रे, एक एक मे सरधे असाध रे। म०।
पिण भीखनजी सूं वेंनो करें तरे रे लाल कहें म्हे तो सगलाइ छां साध रे। म० ॥ ५ ॥

इम अनेक विध कर रह्या रे, आहमी साहमी घमरोल रे। म०।
पिण वह्यो ने किलायस विन ठाहरे रे लाल तोवा ऊपर मोल रे। म० ॥ ६ ॥

कोई धूल न्हाख्या सूर्य भखे रे, आप ऊपर पाछी परे आय रे। म०।
ज्यूं भीखनजी सूं भरमावा मांड मांड सूं रे लाल देखो गांठ रा श्रावक जाय रे। म० ॥ ७ ॥

त्रिवे ज्यूं ज्यूं भीखनजी विचरे जठे रे उथापी भरमाया आगुण जोवें बाट रे। म०।
घणो वह्यो प मने आवज्यो मती रे लाल माया थोड़ा में भेल्या हुवे थाट रे। म० ॥ ८ ॥

केई तो प्रश्न पूछवा रे, केई देखण काज रे। म०।
केई कुगुर ना भरमावीया रे लाल ऊंधा बोल्या नहीं आवे लाज रे। म० ॥ ९ ॥

उणमण अनेक देखा घणा रे केइ बोल्या वचन विकराल रे। म०।
के कहे ए मिन्हव ए छ रे लाल केइ कहे जमाली गोसाल रे। म० ॥ १० ॥

तिम पूज जो क्रोध करे नहीं रे सुध बतावे सूत्र न्याय रे। म०।
वले प्रश्न अनेक मांड बतावता रे लाल, देवे भिन्न भिन्न भेद दरसाय रे। म० ॥ ११ ॥

चतुर ते सुध सुण चितवे रे, कुड़ कपट न दीस याम कोय रे। म०।
आंधो साची बातां कही सही रे लाल घणा इचर्य होय रह्या जोय रे। म०।
साचो धर्म भगवान रो रे लाल ॥ १२ ॥

भगू भरमाया था बेटा भणी रे सुध सार्धा में चूक बताय रे। म०।
ज्यूं लोका ने भरमाया भीखनजी थकी रे लाल आहीज मेल्यो न्याय रे ॥ १३ ॥

वारम्वार पूछी निरणो करी र, कुगुरां ने दीया छिटकाय र। म०।
साची सरधा आदरी रे लाल कई धिन धिन भीखू रिषराय रे। म० ॥ १४ ॥

केइकां लियो साधुपणो रे, के हुवां श्रावक श्रावका सास्यात रे। म०।
केइ प्रतीत धार पका हुवा रे लाल छोडी कुगुरां तणी पखपात रे। म० ॥ १५ ॥

इम अनेक गामां नगरां मझे रे चरचा कर दीया समजाय रे। म०।
जे हलूकर्मी था जीवड़ा रे लाल ते कुगुरू छोड़ने आया ठाय रे। म ॥ १६ ॥

जो भारीकर्मा था जीव रे, खोटा मत माहें रह्या खूत रे। म ।
कुमत कुकदम माहें कल रह्या रे लाल ज्यूं माखी रहे खंखेग मे सूत रे। म० ॥ १७ ॥

रावण रूप कीया था घणा रे, बहो रूपणी देवी मोलाय रे। म०।
पिण लछमण रा बाण सूं रे लाल रूप गया विललाय रे। म० ॥ १८ ॥

ज्यूं सुध साधां सूं भरमाया लोकां तणी रे, यांरी सगत म करस्यो कोय रे। म०।
पिण पूज सुध न्याय ग्यांन बांण सूं रे लाल भ्रम भाग्यो घणां रो जोय रे। म० ॥ १९ ॥

चकव्रत खट देस साधवा रे, आण फेरे छ खड म आय रे। म०।
ज्यूं भीखनजी रिष विचरया जठे रे लाल अरिहंत आगन्या दीधी धुरसाय रे। म०। २० ।

निरजुगता न्याय मेल्या घणा रे, सुध सूत्र जोय जोय सार रे। म०।
वले उतपात सुध सूं आछो कीयो र लाल आसर ग्रंथ अड़तीस हजार र। म ॥ २१ ॥

दूहा

आचार उपर हजारां कीया समकत उपर हजारां सोय।
व्रत अव्रत ने उपरे, ग्रंथ हजारां जोय ॥ १ ॥
वले उपदेस अनेक विध रचीया वचन रसाल।
तेरे दुवार ताजा कीया सूत्र साख्यमो माल ॥ २ ॥
उपगार आछो कीयो कमी न राखी काय।
सके तो जाणू ग्यांन थी पदवी तीर्थकर पाय ॥ ३ ॥
ज्यां ज्यां विचरया पूज जी मिथ्यात देवे मिटाय।
उतकष्टी रसायण उपजे तो पदवी तीर्थकर पाय ॥ ४ ॥
ग्यांनी कह्यो शाता मझे संका म करजो सोय।
बोसमो बोल बिचारजो निरणो कीजो जोय ॥ ५ ॥

उतपात बुध अत ही भलो न्याइ बुध रे मांहि।
ते हुवी घट पूज मे निरमल मेल्या न्याय ॥ ६ ॥

ढाल ३

[धिन धिन जीव पो]

आठ संपदा सहीत आचाय कुल मडण कुल दीपो।
पांचमे आरे प्रगट हुआ रे, भीखू रिष बांदो भव जीवो।
धिन धिन भीखू सांम जी ॥ १ ॥

पाखंड पंथ मे पराहख्यो रे, मोटा मुनी मतवंत।
सुमत गुप्त माहावरत सही रे, एतो रे पाले ते तेरापथ ॥ २ ॥

दोष बयालीस टालता रे, बावण टाले अणाचार।
सुत्र न्याय सुध परूपणा रे अरिहंत आगन्या धार ॥ ३ ॥

सुध ने सुध बायसा रे मेल्या सुध सरूप।
मीठे वचन मे मुनीसरु रे बागरे वाण अनूप ॥ ४ ॥

कोई पाखंडी आई आसने रे उणरा वचन सुणी ने सांम।
उणरा वचनां सु कष्ट उनने करे रे आछी वात अमाप ॥ ५ ॥

अनेक स्याल आये अठ रे कों किम मागे सीह।
जे भाषारे उजण रे ते वचां मे आले बीह ॥ ६ ॥

मवाड मुरधर देस में रे, कछ देस हाडोती ढूंढार।
साधी सरधा प्रगट करी रे, थाप्यो धर्म में सार ॥ ७ ॥

जब भाषा भावरा किया घणा रे भेद हुवा सामबी साप।
ते चरणां ल्या स्वामी तण रे, आछी टाली अममाप ॥ ८ ॥

भेद भेष धाख्यां ने छोड साधु हुआ रे चरचा करमे मोष।
मान मछर मेल्यो रे भुमी न राखी कोव ॥ ९ ॥

कुगुरु छोडी सतगुरु कीया रे आ चोखा मारग नी रीत।
पगा मावा मगरो मम रे, पूज तणी पारी परतीत ॥ १० ॥

जगरमीं था जीवरा रे, आग्ने वचन आचार।
मिगृ रिपख्यां ज्यां पाखंड भाजना रे धम आमे ज्यू धार ॥ ११ ॥

समता मीग गो ज्यां देमीयो रे गमीया गुण वचन विग्राम।
मो आगे स्वामी नी सेवा करे रे, उत्तम इविरो भाग ॥ १२ ॥

मत मत गिर भीखू मगी रे तत तत पाखंड ठाम।
पत्र पम पारो पुरा रे करे मुगत में वाम ॥ १३ ॥

भमता भव आगे कीया रे, संत न मिलीया सार।
कदा मिलीया तो ही सरध्या नही रे, आय उपनो पांचमे आर ॥ १४ ॥
हिवे भीखू मुनीसर भेटीया रे गुणवंत ग्यांन भंडार।
साचो संजम लीधो सही रे, पांमाला बेगा भव पार ॥ १५ ॥

दूहा

पूज भीखनजी मोटका मोटा गुण भरपूर।
भव जीवां भजो सुमे पहो उगते सूर ॥ १ ॥
बले गुण गाऊ भीखू तणा सांभलजो सहु कोय।
मोटा गुण महाव्रत मा कहूं सुण साहमो जोय ॥ २ ॥
भीखनजी भरत क्षेत्र मझे, कीयो धम उद्योत।
जीवादिक उलखाविया घट घट व्यापी ज्योत ॥ ३ ॥
भजन कीया भीखू तणा मांझे भव भव भूख।
कम कट निरजरा हुवे दूर जावे सर्व दुख ॥ ४ ॥
छोग कीधी जिण धर्म नी मला मीवेक्या न्याय।
इसडा मुवचन जीवडा नही दीसे भरत रे माहि ॥ ५ ॥
तिहां भीखनजी रिष भेटीया त्यारे माथे भाग।
सुणजो गुण स्वामी तणा एक मनां चित्त लाग ॥ ६ ॥

ढाल ४

[हरमंत गावसो ऐ सुधारा भव]

सामी भीखू सारिखा, दुषम आरा रे माहि।
हुआ ने होसी बली भाज न कोइ विसाय।
भीखू गुण गायसो रे, सुधारसो भव होय ॥ भी ॥
भसवंत बुधवंत जोय। धी। भजन करो सहु कोय ॥ भी० १ ॥
मिथ्यात मेटे मोटा मुनी कीधो ग्यांन उजास।
धम अधर्म उलखावीया ज्यूं मुख दीसे काच ॥ भी० २ ॥
धर्म धुरा धुरंधर महमा मेर समान।
भरत क्षेत्र में भलके रह्या भरथा क्रोध ने मांन ॥ भी ३ ॥
किरिया करी सामी तणी कम काटण तरवार।
तपसा पिण कुले भावे नहीं प्रसिध लोक विचार ॥ भी० ४ ॥
दयावंत मुनी दीपता गिरवा ग्यांन भंडार।
एक जीभ कहणी आवे नहीं पूज गुणां रो पार ॥ भी० ५ ॥

सतवादी मुनी सुरमा नही कूड़ कपट री वात।
साचो धम उपदेशावीया ज्यूं भाख गया जगनाथ ॥ भी० ६ ॥
अदत न ग्रही दत्तग्रही ब्रह्मचारी वखाणं।
नव ही जात रो सर्वथा परिग्रह ना पचखाणं ॥ भी० ७ ॥
नित नित नमो भीखू मुनी काट्ये कर्म कठोर।
नरमाइ नित नित करो मछरो मान मरोड़ ॥ भी० ८ ॥
साचो गुण स्वामी तणा संभरे छे दिन रात।
जाव ज्यां लग भूल नही घणा गुण साख्यात ॥ भी० ९ ॥
च्यार तीर्थ गुण संभरे हुता भीखनजी साध।
काम पड्यां कठणी घरचा तणो आवेला मद याद ॥ भी० १० ॥
मन्नो हुई मुझ चाकरी रूड़े रूगी आज।
गुण गाया भीखू तणा सारण बहुल काज ॥ भी० ११ ॥
गुण प्रमाण गणनायक थिर कर थाप्या हो साम।
भार चलावे टोला तिणो भारमलजी त्यांरो नाम ॥ भी १२ ॥

दूहा

बयालीसे बरसां लग पूज श्री बाहर कीयो उपगार।
विचरत विचरत आविया मुरधर देश मझार ॥ १ ॥
उपगार कीयो दोय बरस में मारवाड़ में थाय।
च्यार साध सात साधव्यां हुई, त्यां संजम लीयो सुखदाय ॥ २ ॥
वले श्रावक श्राविका कीया घणा विचरत्या घणा गामां नगरां माहि।
जठे उपगार कीयो घणो कह्यो कठा लग जाय ॥ ३ ॥
शिव वर्म किल्याण स्वामी तणो भण भव आसरी जाण।
जिहां विचरता जिण सेहर में प्रभव पोहता जिहां आंण ॥ ४ ॥
खेत्र खेत्र गांम परसता खेत्रांइ करता विहार।
विचरत विचरत आविया सोजत सहर मझार ॥ ५ ॥

ढाल ५

[समझा मारू ना गीत नी तथा हमरूपुर हो]

विचरत विचरत हो आया सोजत सेहर मझार, आगन्या लेइ सत्री मांहि उतरया जी।
ते सत्री छे हो मुता रायमल री विचार, उण ठांमे आगे इ उपगार कीयो घणो जी ॥१॥
त्यां बहु आया हो साध साधवी सुपनीत केइ दर्शन करवा धम चरचा कारणें जी।
स्वा न पूरी हा पूजजी री प्रतीत केइ आया चोमासा री आग्या कारणें जी ॥२॥

भीखू त्यांन हो दीया चोमास भलाय　मुनी पिण चोमासा रो कीधो हुवेला मनो जी ।
एतले आयो हो हुकमचंद आछो चलाय　धर्म दलाली मांहे आछो दीपतो जी ॥३॥
ते करे दलाली हो बोले बेकर जोडी ताहि,　धम आचाय मोटा गुर आंण मे जी ।
सांमी चोमासो हो करो सेहर सरीयारी माहि,　आ वीनती मानो करपा भाव आपनें दी ॥४॥
चतुराई सू हो वीनती कीधी बारवार　अबको चोमासो सरीयारी कीजियें जी ।
सुभली छ हो पनी हान विचार　स्वामी तिण ठमे वासो लीजियें जी ॥५॥
केतलायक दिन रहनें हो सांमीजी तो कीधो विहार　बाबी रहने कटास्यो आया सही जी ।
ठाम ठाम हो वीनती करे नरनार　सांमी तो सरीयारी चलाय आया सही जी ॥६॥
सरीयारी हो सोमे सेहर कांठा री कोड,　दोलो दोलो मगरो गढ़ कोट ज्यूं दीससो जी ।
राज करे छे हो तिहां राज राठोर,　कुसालत कवली साप नो दीपतो जी ॥७॥
जाबी बस्ती हो त्यां माजनां री जाण　अठे मेहमां घणी छे जिन धम तणी जी ।
बहु नरनारी हो सुणे सार्धा रा बखाण　भली तपसा करे केइ कर्म काटण घणी जी ॥८॥
तिहां मुनी आया हो सहरिपी अणगार　सुध संजम पाले इंद्रया ने जीपता जी ।
स्वांमी सोमे हो सार्धा रे सिरदार,　गणनायक रिप भीखन जी दीपता जी ॥९॥
भाग्या केन हो उतरया पने हाट,　रखे दोप लागे तो रहे मुनी डरपता जी ।
बखांण वाणी रा हो लागे छे तिहां थाट,　घणा नरनारी सुण सुण मन हीये हरपता जी ॥१०॥
बखांण वाणी में हो सांमी भारमल जी बदीत　साथी खेतसीजी सतजुगी महासेता जी ।
उदेरामजी हो त्यारे तपसा री नीत　बाल ब्रह्मचारी रायचंद मुनी चीबो मन माकता जी ॥११॥
भगती कीधी हो सांमी जी री सवा भगत　तिण सू सार्धा मे सोभा हुइ घणी जी ।
बनीत होवे छे हो तिण ने सरावें जगत　अवनीत माहि अवगति कही घणी जी ॥१२॥
आपाड उतरत हो सांवण सुध छहुले आम　स्वामी जी रे कांइक असाता उठी सही जी ।
तो ही दिसां बारे हा गोचरी उठे गांव माहि,　सांधी तो गिणत स्वामी जी राखे नही जी ॥१३॥

दूहा

अवसर काल भाव स्वो सूत्र मणवा चाहि ।
सुध कर कर सांम जी सिप में अभ मताय ॥ १ ॥
जोड़ करे घणी जुगत सूं जोर छी अध अनेक ।
उतमो छे मही माल्मु, सांमी सुध ववेक ॥ २ ॥
फोरी भासता फेरा तणी मिटावण मुनी सोय ।
जोखव सीया मणाव ने पिण कांम न आया कोय ॥ ३ ॥
चले पुनम रे दिन पुज जी उठ्या गोचरी आप ।
मोलर माग तारी तरी वेदन रही छे व्याप ॥ ४ ॥

हिवे भागा ऊपर आदरी साचे मन स्वामी साथ।
काय सुधारे किण विध, साँभलजो साक्षात ॥ ५ ॥

ढाल ६

[कामणगारो छै कुकड़ो रे]

साध भीखूजी तिण अवसर रे, आऊ नेड़ो आयो जाण।
करे आलोवणा किण विध रे, साचा साचा चतुर सुजाण।
सुणज्यो आलोवण स्वामी तणी रे ॥ १ ॥

आज पेंहली इण जोगवा रे, हिंसा कीधी हुवे काय।
मन वचन काया करी रे, मिच्छामी दुकड़ा छे मोय ॥ सु० २ ॥

क्रोध मान माया लोभ सूं रे, झूठ कह्यो हुवे कोय।
जाणतां न अजाणतां रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ३ ॥

अदत्त पांच प्रकार नों रे, सम्यो सेवायो हुवे सोय।
भलो जाण्यो हुवे सेवतां रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ४ ॥

ममता धरी हुवे मढीपन सू रे, सूतां जागतां जोय।
मन वचन काया करी रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ५ ॥

परिग्रहो नवइ जात नो रे, त्यांरा न्यारां न्यारां भेद होय।
ममता करी हुवे किण ही ऊपरे रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ६ ॥

क्रोध कीधो वे किण ही ऊपरे रे, कठण सीख दीधी हुवे कोय।
कडूका काठा वद वचन रो रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ७ ॥

मान माया लोभ कीया हुवे रे, राग द्वेष कीया वे दोय।
इत्यादिक अठारेइ पापना रे, मिच्छामी दुकड़ो छे मोय ॥ ८ ॥

रागी ऊपर राग कीयो हुवे रे, द्वेषी सूं धरीयो हुवे द्वेष।
मन साचे हिव मांहरे रे, मिच्छामी दुकड़ो छे अशेष ॥ ९ ॥

पृथ्वी अप तेऊ वाऊ छे रे, च्यारी सात सात लाख जात।
हणी वें तीन करण जोग सूं रे, वारम्वार खमाऊ विख्यात ॥ १० ॥

चवदे लाख साधारण वनस्पति रे, दस लाख प्रतेक।
बे ते चोरिन्द्री वें वें लाख छ रे, नमी नमी खमाऊ आण विवेक ॥ ११ ॥

नारकी देवता तियच नी रे, जात च्यार च्यार लाख।
चवदे लाख जात मिनख नी रे, खमाऊं अरिहंत सिधां री साख ॥ १२ ॥

वले बडा शिष्य सुवनीत छे रे, अंतेवासी अमोल।
आगे ऐहुर वे माह हुवे रे, खमाऊं छूं दिल खोल ॥ १३ ॥

एहवी आलवणा कांने सुण्या रे, आवे इसक वेराग।
करे ज्यारों केहवो कलू रे, त्यांरि माघ मोटो भाग ॥ १४ ॥

दूहा

शांत करी समावता सर्व जीवां न सांम।
वारम्बार विशेष जी आछी माग अमांम ॥ १ ॥
बावीस टोला माहि तेहसूं कहली चरचा रो पड़ियो हुवे कांम।
मवर ई मनमती अनेक ने समावे ले ले नांम ॥ २ ॥
बले आप तणा गछ मांहिला गछ वारे प्रते कोय।
त्यांनें पिण समावता हरखत मन में होय ॥ ३ ॥
हिवें सांवण छो सर्व नीकल्यो आयो भादवो मास।
साधां ने तेडी स्वांमजी, बोले वचन विलास ॥ ४ ॥

ढाल ७

[मीठो छे पुन संसार में]

श्रावक श्राविका सुणता थकां बोले अमृत वाय।
ऐहवें अवसर सांमजी सीख देवे मुलकाय।
सुणज्यो सीख स्वामी तणी जी ॥ १ ॥
थ आगे जाणता मो भणी ज्यूं जाणीजो भारीमाल।
संका म आणजो सवथा असल साधु री छे चाल। २ ॥
साध साधवी ए सव छ त्यारां भारमलजी नाथ।
भार सूंप्या छे टोला तिणो कोइ म लोपज्यो यांरी वात ॥ ३ ॥
अरिहंत आगन्या माहि रहे, जिण ने सरधज्यो साध साख्यात।
आगन्या लोपने उंधो पडे, त्यांरी म करज्यो पखपात ॥ ४ ॥
इणहीं आगन्या सत गुर तणी रहे भारमल जी माहि।
सुध आचार पाले सही त्यांमें मत दीज्यो चलाय ॥ ५ ॥
अरिहंत सतगुर री आगन्या कम जोगे लोपे कोय।
वरणा परतीत करज्यो मती साध म सरधज्यो तिणनें सोय ॥ ६ ॥
साधी सीख दीप ज्यार मे विध सूं दीधी छ बताय।
इत्यादिक अनेक वचनां करी कही कथ्य सम जाय ॥ ७ ॥
हिवे सुतजुगी साम सुं मुख सूं बोले एहवी वाय।
म्हांरे विरहो पडतो दीसे पूज मो आप आसा दीसो मझ माहि।
हाथ जोडि ने इम कहे ॥ ८ ॥

करुणा सामी इम सागर, मारे मठ तणो नही चाहि।
आगे अनंती बार जीवड़ो गयो देवलोकां माहि॥ ९ ॥
पुदगल सुख कारिमा विणसतां नहीं लागे वार।
गृधी हुवे ते जाय नरक में आगे खाय अनंती मार॥ १० ॥
में आगे पुग्गल खाधा मोकला सार जाण जोय।
देखतां देखतां विणसे गया काम न आवे आज मोय॥ ११ ॥
तिण कारण हूं देवलोक नी करूं नही वांछा कोय।
पोषा सुख पुदगल तिणा भुगत सुखां सूं मन मोय॥ १२ ॥
थे पिण वंछा पुग्गल तणी मूल म करज्यो मन माहि।
अफासू नै अनएषणी चित्त में धरज्यो मती चाहि॥ १३ ॥
वले ढालपणो करज्यो मती माया ममता ने मार।
दोष बयालीस टालनें असल लीज्यो सुध आहार॥ १४ ॥
धरज्या भावा नें एषणा इत्यादिक आठ प्रवचन।
मन वचन काया करी कीज्यो घणा जतन॥ १५ ॥
साधपणो सुध पालज्यो चिंता फिकर म करज्यो तास।
म्हां सुद्ध मिलेला ग्यांनी मोटका, वले केगो करोला मुगत में वास॥ १६ ॥
चेलां री ममता करज्यो मती लीजो सुध जोय जोय।
असल आचार पाले तको ताको म चालज्यो गण में कोय॥ १७ ॥
असल आचार आछी तरें, पालज्यो प्रभु वचन पिछाण।
आग्या म लोपज्यो अरिहंत नी तो वेगा पामसो निरवांण॥ १८ ॥
हूं तो जातो दीसू परभवे सीख दीधी छे थांने तांम।
मोक बतावे कोई आगली कदीय म कीजो एहवो कांम॥ १९ ॥
सुणज्यो सहु स्वामी तणा मुख हुवा रे बोल।
बोल सहु रे सुहामणा आछा वले अमोल॥ सु २० ॥
ए साखी सीख सामी तणी पालसी चतुर सुजाण।
सूरा वीरा धीर तके उत्तम मन माहि आण॥ २१ ॥

दूहा

आलवणा आछी करी सीख दीधी वले सार।
उत्तम मन माहि भावता आतम्या उपर भार॥ १ ॥
वले आयो पख पजूषणा धर्म बधतो जाय।
सामी कार्य किण विधें सुधारे छे ताहि॥ २ ॥

हिवे पांचम रे दिन पूज जी आप कीयो उपवास।
सुदि पख पांचम ने संवछरी भाद्रवो थो मास॥ ३ ॥
पूज कीयो छठ पारणो उल्ट्ये पचीयो आय।
किण विध करे संलेषणा ते सुणजो चित ल्याय॥ ४ ॥

ढाल ८

[धिन प्रभु राम जी]

सातम आठम नम मुनीसर, अल्प सो कीधो आहार वे।
दसम रे दिन चोखा चारीस आसरै दस मोठ विचार वे।
धिन भीखू साम जी धिन ल्योरो नाम जी।
ल्यां कीधो आछो काम जी आछो पख अमाम जी ॥धि०१॥
इग्यारस रे दिन अमूल आगारे, बेलो कीयो उपवास वे।
भली भावना भावतां भीखू करता कर्मां रो नास वे॥ २ ॥
बारस रे दिन बेलो कीयो पूज पचख दीया तीनूं आहार वे।
चतुर विचक्षण चितव्यो दीसे हिवे वेगो करणो संथार वे॥ ३ ॥
माहोमा नर नारी कहे मुख सूं ओ स्वामी करे संथार वे।
हो मन रा मनोरथ आपेई पूरां ओ आछो अवसर सार वे॥ ४ ॥
साधां माहो मा विचार करै ने रायचन्द जी ने मेल्यो सीताब वे।
पूज में कहूं पुद्गल हलीया दीसे सुण ने सीह जिम उठ्या मुनिराम वे॥ ५ ॥
सोमसी हाट सूं उठ मुनीसर, धरीया धल्लीया आय वे।
पछोड़ हाट ने पका मुनीसर देवे पको सथारो ठाय वे॥ ६ ॥
करे नमोत्थुण अरिहंत सिधां ने दीसे धर्मे ताम वे।
घणा नर नारी देखतां सुणतां संथारो पचख्यो भीखू साम वे॥ ७ ॥
भाद्रवा सुदि बारस भली तिथ वार सोम विचार वे।
ल्यां वेराग आयो ने संथारो ठायो छेल्गे कुगरीमो छीकार वे॥ ८ ॥
धिन धिन कहे बहु नरनारी धिन धिन केहता केसां देव वे।
सुध साद मुनीसर मोटा, त्यांरी इंद्रादिक करे सेव वे॥ ९ ॥
घणा नर नारी आवे ने सीस नमावे बोले वेकर जोड़ वे।
धिन हो धिन थ मोटा मुनीसर, कीधी बडां बडां री होड़ वे॥१०॥
केइ सनमुख आया ने परणमें पाया, विकसित हुवे विस्वास वे।
सांत करी वमावे ने भय उडावे, हीये आंण हुल्लास वे॥११॥

कहै केइ का अभिग्रहो एहवो कीयो थो मा साधो मत काडयो होसी सार म।
तो संथारो करसी नें जीतब सुधरसी पको छतरसी पार बे॥१२॥

दूहा

इण विध कीयो अभिग्रह, मोला लोकां ताम।
बात सुणी कहे पचखीयो संथारो भीखू स्वाम॥१॥
जे घेसी हूता जिण धम मा ते चित में पाम्यां चमतकार।
आम्यों दीसे ओ मार्ग खरो केइ बदि बारंबार॥२॥
संथारो थायो हुओ घणा गामां नगरां माहि।
केइ माहोमां इम कहे, आसे बांदो पूज रा पाय॥३॥
गुण गावे मुख सूं घणा मन मन भीखू स्वांम।
इण दुखम आरा मम्हे, भलो सुधार्यो काम॥४॥
धाणे कठइ थपीया नही छंदी नही पबी हीण।
आहार करता विचरता पालता पका रह्या परवीण॥५॥

ढाल ६

[एक दिवस लंकापति क्रीडा नी छम्नी रति]

संथारो चोखो कीयो सरणो अरिहंत नो लीयो।
सरणो लीयो कीयो कार्य आतम तणो ए॥१॥
मुनी आण्यो मन सतोस ए, मेटयो राग में रोस ए।
मेटयो रोस ने दोस कम नो टालीयो ए॥२॥
सुमता धारी सांम ए, भजे भगवंत नो नाम ए।
भजे नांम ने, कांम करे छे आतम तणो ए॥३॥
हरस सहीत हुलास ए, तोडे छ कर्म पास ए।
तोडे पास ने आस तो मुक्त री ए॥४॥
नर नारी बहु आवता गुण भीखू रा गावता।
गुण गावता वचन बोलें मन भावता ए॥५॥
भेखी मिथ केइ आवता क्षांत करी खमावता।
खमावता गुण भीखू रा गावता ए॥६॥
बहु गामां नगरां तणा नरनारी श्रावक श्राविका आया था घणा।
आया घणा दर्शन करवा पुरां तणा ए॥७॥
आय पडे पूज रे पाय ए, वंदणा करे सीस नमाय ए।
वंदणा करे, सीस नमाय आतम ने सुध करें ए॥८॥

ओर लोक अनेक ए, करे गुण ग्राम वशेष ए।
करे वशेष, देख मुनी नें हरखत हुवे ए॥ ६॥
कहे उत्तम पाए सांम ए, उत्तम कीधो काम ए।
कीधो कांम, नांम कहीजे इण रिषी तणा ए॥ १०॥
नर नारी सहकर्षां भालता बाजार माहि अमावता।
अमावता गुण स्वांमी ना गावता ए॥ ११॥
मांत मांत करे गुण ग्राम ए, किसा किसा कहूं नाम ए।
किसा कहूं, नाम सांम में गुण घणा ए॥ १२॥
सांमी भारमल ओ आदि साध ए, त्यां कीधी सेवा बाध ए।
कीधी बाध असमाध टालण स्वांमी तणी ए॥ १३॥

दूहा

तरस मो दिन आवीयो ध्यावता निरमल ध्यांन।
धर्के तो जागु स्वांम ने उपनो दीसे अवधि ग्यांन॥ १॥
साघ वेठा सेवा करें, बोलता मीठी वांण।
श्रावक श्रावका हरष सुं, करे सांमी नां कल्याण॥ २॥
दिन दाढ पोहर ने आसरे, घडती वेला सोय।
वचन प्रकासे विध विध, सांमलज्यो सहू कोय॥ ३॥

ढाल १०

[वीस विहरमान सदा शास्वता पचन्य०]

साधु आवे साहुमां आवो मुनी प्रकासे वाण।
कले सावत्रीयां आवे वारें, स्वांमी बोले वचन सुहांणं।
भवीयण नमो गुर गिरवांणे नमो भीखू चतुर सुजांणे॥ १॥
के तो कह्यो अटकल उनमांनें के कह्यो बुध प्रमाणं।
के कोइ अवधि ग्यान उपनो तै जाणे सर्व माणं। भवी०॥ २॥
केइ नर सुर सूं इम भाले सांमी रा जोग साचां म वलीया।
एतलें एक महुत आसरे, साध आया दोय तसीया॥ ३॥
बरसत बरसत साधु मांवे, चर्च एगाव दीर्ण।
नरनारी जाण्यों अवधि उपनो साचो समवायींगं॥ ४॥
सांमी साध आया जांगी मस्तक दीधा हाथ।
एतला दोय महुरत आसरे, आयो सापवायां रो साथ॥ ५॥

टेकीराम जी साध वदीता सायें कुसाल जी आया।
साध्वीयां वगतू जी मां डाही जी प्रणमें भीखू रा पाया। म० ॥ ६ ॥
परचा नूं नूं आय पुगे छे, नरनारी हरखत थावें।
धिन हो धिन ये मोटा मुनीसर, इम गुण भीखू ना गावें ॥ ७ ॥
आया ते साधु गुण गावें, भांत भांत प्रणाम चढावें।
थे मोटा उपगारी मेहमा भारी आप तुले ओर कुण आवें ॥ ८ ॥
थे पका पका पाखण्ड हटाया सुध न्याय बताया।
दांन दया आछा दीपाया बुधवंता मन भाया ॥ ९ ॥
सावद निरवद भला निर्वेडा कीधा कुण प्रमाणें।
सुध न्याय सरधा सुध सीधी धारी अरिहंत आणं ॥ १० ॥
सार्या आंख्यो सामी सूताने, बणी हुइ छे वारं।
आप कहो तो बैठा करां अब, भरीयो काम हुंकार ॥ ११ ॥
बेठा कर साधु सारे बेठा गुण स्वांमी ना गावे।
बहु नरनारी दरसण देखी मन में हरखत थावे ॥ १२ ॥
मांमो आऊखो अब चितवीयो बेठां बेठां जांणं।
सुखे समाधे बारज दीसत घट वे छोडया प्रांण ॥ १३ ॥
अणसण आयो सात प्रगत रो तीन प्रगत सथार।
सात पोहुर तिण माही वरतीया पको ऊतारयो पार ॥ १४ ॥
मांधी सीबिने वरजी पूगा कहे सुह पाग में भाली।
इर्ग-लोक पांमिया हमिको घट स्वांमी गया चाली ॥ १५ ॥
समत अठारे साठे बरस भादवा सुदि तेरस मंगलवार।
पूज पोहता परलोक सरीयारी गुण गावे नरनार ॥ १६ ॥
दिन पाछिलो दोढ पोहुर आसरे, उण वेला आउखो आयो।
विकसे मरवो रासे जनमवो कहे विरला ने पायो ॥ १७ ॥

दूहा

साध देही नें छोड़ने अलगा बेठा जाय।
विरहो पडीयो छे पूजनो समभाव रह्या सुख थाय ॥ १ ॥
अहो अहो अस्थिर संसार, संयोग अठेई वियोग।
पूज सरीखा पुण्य था पोहता आज परलोग ॥ २ ॥
सुख दुख संसार में हर कोइ नूं होय।
ग्यांनी भुगते ग्यांन सूं, मूरख भुगते रोय ॥ ३ ॥

तीर्थङ्कर चक्रवत मोटका, काल न छोड़े कोय।
जेतो आऊखो बांधीयो, तेतोई भुगते सोय ॥ ४ ॥
सार्धां जाण्यो स्वामी जी पोहुता परलोक रे माहि।
याद कीयां सिध अरिहंत ने काउसग दीधा ठाय ॥ ५ ॥

ढाल ११

[रघुपति प्यारो रे]

काल गया जाणी भीखू तणो हो मेल्या मांढी रे माहि।
जे म्हूंमा भीखी मांडी तणी हो, कही कथ लग जाय।
स्वामी नो सुजस घणो ॥ १ ॥
अनेक रूपीया लगावीया हो अनेक उछाल्या एर।
अनेक देइ सोमावरी हो ते गृहस्थ नो ववहार। स्वामी० ॥ २ ॥
जो विसतार करे मांडी तिणो हो तो सुणतां इचरज थाय।
पिण साधु रे मुंडे सोभे नहीं हो तिण री बुधवत जाणसी न्याय ॥ ३ ॥
संसार करतब सरावे नहीं हो त्यांरे सावद्य जोग पचखाण।
पिण धीठी वात वरणवें हो बागरे निरवद्य वाण ॥ ४ ॥
संसकरां करनारी आवीया हो छोडी घरां मां काम।
जाणे के मलो मझीमो हो गावे भीखू ना गुण ग्राम ॥ ५ ॥
वले सूंस लेवे केइ चूप सूं हो उजम मन माहि आण।
सीलव्रत केइ आदरे हो केइ छोडे काचो पांण ॥ ६ ॥
केइ छाडे नीलोतरी हो केइ छोड कूड निर्वाण।
केन्ना तेला आदरे हो अनेक प्रकारे आंण ॥ ७ ॥
बल च्यार तीथ भाव मिल्या हो स्वामी तणे संथार।
काल गया जब पूज जी हो ठहों पिण आहार पचख्या घण धार ॥ ८ ॥
असधर्मी था जीवन हो जस गावे संसार।
यक आगइ जस हूतो दीसे घणो हो वेगा पामसी दीम भवपार ॥ ९ ॥

दूहा

आदि धाड़ी आदिनाथ ज्यूं इण दुषम आरा माहि।
मारग धर्म ओलखाविओ पिन भीखू रिषराय ॥ १ ॥
धारी चौथो अमोलख धारी घण घट माहि।
पोरी री प्रगट करे सोमल्या पिउ ध्याय ॥ २ ॥

ढाल १२

[उस रघुपति के धर्म पूरा पी सुसीया सगला]

भगवंत भाखी सरखा राखी प्रसरू कीयो आचार।
आछण नी प्रे ग्यान उद्योतो मेट दीयो मिथ्यात अधार।
रिष भीखू जी मा धम पूरो जी सुख पावे श्रीकार॥ १॥
चन्द्रमा ज्यूं सोम निर्मल पी दीठां दिल ठराय।
क्रोध करी कोइ कटक आवे, सांमी देख सुख पाय। रिष ॥ २॥
इत्यादिक सीसोंइ उपमा भीखू में सोभाय।
चतुर होसी ते समझे भासी मोलो ने खबर न काय॥ ३॥
चरचा वाला नें चरचा आपी ग्यान वाला नें ग्यान।
प्रश्न वाला में प्रश्न आप्यो ध्यांन वाला में ध्यान॥ ४॥
विष्टत वाला नें विष्टत आप्यो हेत वाला नें हेत।
क्रोध करी मही बोले किरवा मन्मी सीखावण देत॥ ५॥
संजम दे सिवपुर ना कीधा वले आपी समकत सार।
समणोवासक कीया देइनें श्रावक ना व्रत बार॥ ६॥
समता दमता सुमता आपी वले गंमता वचन वखांण।
दिढ़ता विरता अमता चुरता सुत्र न्याय ओलखा सुध जांण॥ ७॥
रागी हे तो रागी होसी षेखी करसी भख।
रागी षेखी नी खबर पडेसी वखांण सुण्या वखेस॥ ८॥
बड़ा सिष जुमरंत कहीषा सारां सिरें सोभाय।
आचाय पदवी त्यानें आपी भारमलजी मन भाय॥ ९॥
और साध साधवीयां नें सांमी आपी सीख अमोल।
अरिहंत आग्या मांहि रहिज्यो पारो तीखो वध ज्यूं तौल। १०॥
साची वात बतावे सांमी पोहतो परभव माहि।
गुणतरो स्वांमी था गिरवा म्हांसू पूरा केम कहवाय॥ ११॥
नित नित नमो भीखू मुनीसर, हिवडें आंण हुलास।
मुगत हेतें करणी करने तोड़ म्हाखो मोह पास॥ १२॥

दूहा

घणा वरसो लग सांमजी आछो कीयो उपगार।
घणां जीवा ने प्रतिबोधीया आर्य देस मझार॥ १॥

हिवे चोमासा सांमला सांभलज्यो सहू कोय।
चवरो कहूं छूं तेहनो नाम प्रणाम सोय॥ २ ॥
आठ चोमासा आगे कीया असल नही अणगार।
सतरां सूं सात्रं लगे, बरत्यो सुध वबहार॥ ३ ॥
सावपणों सतरें लीयो साल्ठे सुधा स्वांम।
चोमासा चमाली कीया सुणो तेहना नांम॥ ४ ॥

ढाल १६

[धिन धिन जंबू स्वाम नें तथा धिन धिन मसी जिनं]

इ चोमासा केलवा कीया सतरें इकवीसें पचीसे पिछाण हो मुणिंद।
अठावीसे गुणचासे उठावनें हद कीधी कर्मां री हाण हो। मुणिंद।
धिन धिन भीखू अणगार मे॥ १ ॥
एक चोमासों बड़ू कीयो वरस अठारें विचार हो। मु०।
बीसें राजनगर कीयो छठ कीया घणो उपगार हो। मु०। धि०॥ २ ॥
कीया दोय चोमासा कंटालिये चोवीसे अठावीसे आय हो। मु०।
तीन चोमासा बगड़ी कीया सतावीसें तीसे छत्तीसें सुहाय हो। मु०॥ ३ ॥
दोय चोमासा माधोपुर कीया इगतीसे अठचालीसे आंण हो। मु०।
चोतीसमो ने पेंतालीसमा पीपार सेंहर पिछांण हो। मु०॥ ४ ॥
एक चोमासो मामेन्द में बरस पेतीसें विचार हो। मु०।
सेंतीसे पादू कीयो भलो कीयो उपगार हो। मु०॥ ५ ॥
एक चोमासो स्वांमजी कीयो सोजत सेहर ममभर हो। मु०।
समत अठारे सेयने, आछो कीयो उपगार हो। मु०॥ ६ ॥
नाथदुवारा सेहर म, तीन कीया चोमास हो। मु०।
तयालीसे पचासें छपने तठे लोकचा मेतारां बम पास हो। मु०॥ ७ ॥
दोय चोमासा पुर सेंहर में सेतालीसें ने सतावने होय हो। मु०।
एक सो में एकतीस पोसा एक दिन आसरे, बले जूमो छोड़ायो घणो सोय हो। मु०॥ ८ ॥
पांच चोमासा पूज जी सेंहर नरवे उपगार कियो सरस हो। मु०।
छतीसे यतीसें एगतालीसे सम छयालीसे चोरमें बरस हो। मु०॥ ६ ॥
सात चोमासा पाली सेहर म तेवीसे तेतीसें चालीसें चोमास हो। मु०।
बावने पचावने गुणसठे गुने गुने मेड़ो आयो मास हो। मु॥ १०॥
सात चोमासा सरीयारी सेंहर म उगणीसे यावीसे गुणतीसे गिणाय हो। मु०।
गुणाचीसे छयालीसे एकावने, साठे प्रमय चोटना मुनी भाय हो। मु०॥ ११ ॥

सासण श्री वर्धमान रो आछो दीपायो भीख स्वाम हो। मु०।
घणा जीवां नें प्रतिबोधनें आप पोहता सुध ठांम हो। मु० ॥ १२ ॥
पचीस वरस आसरे घर मं रह्या आठ वरस आसरें भेखधार हो। मु०।
एक दिन अधिको सतरे सत्रम लीयो तिणमें वरस्या चाल्यौं नें वरस च्यार हो। मु० ॥ १३ ॥
सर्व आऊ सितंतर वरस आसरे, पाल्यौ भीखनजी स्वाम हो। मु०।
चमालीस वरसां मझ, साझ्या घणां रा काम हो। मु० ॥ १४ ॥
एकसो ने च्यार रे आसरे, दिख्या दीधी निज गण माहि हो। मु०।
एकवीस साव सतावीस साधव्यां मेली प्रभव पोहता मुनिराय हो। मु० ॥ १५ ॥
हजारां श्रावक श्राविका कीया सुलभ बोधि हजारां थाय हो। मु०।
गुणग्राम करतां लाखां गमें असा हुआ भीखू रिख राय हो ॥ १६ ॥
मुनी भीखू उपगार कीयो घणो सज्जम दीयो सुखदाय हो। मु०।
जो अनेक प्रकारें गुण मर्वू तो ही उरण नहीं थाय हो। मु० ॥ १७ ॥
जनम मरण री लाय सुं, आप काढ्यो देइने साम हो। मु०।
भले मारग बतायो मोख रो धिन धिन भीखू रिखराज हो। मु० ॥ १८ ॥
चिरत कीयो भीखू तणो सुणीयो जिम अटकल अणुसार हो। मु०।
सांसा सहीत ते निदर्श कह्यो हुवै, तो मिच्छामी दुकरो वारंवार हो। मु० ॥ १९ ॥
जोड कीधी सरीयारी सेंहर में पर्के हाट विचार हो। मु०।
समत अठारें साठें समें भाद्रासुदि नवमी सनिसर वार हो। मु० ॥ २ ॥
ए गुण गाया भीखू तणा कर्म काटण निरजरा करण हो। मु०।
हाथ जोडी ऋषि हेमो कहें, भव भव होज्यो भीखू रो मोनें सरण हो। मु०॥ ॥ २१ ॥

(इति श्री भीखू चरित्र संपूर्ण समत १८६६ रा बैसाख सुदी १४ वार प्रसपत पुजजी श्री भीखन जी सामी तरा सिष्य सघत ऋषि रायचंद देश मैंवार गांम कामकोर रै मधे पूरो कयो भीखू चरित्र ।)

२

भीखु चरित

[मुनि श्री वेणीरामजी कृत]

दोहा

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया उवज्झाया अणगार।
पांचूं पद परमेस्वरु त्यांमें वरतो जय जयकार॥ १ ॥
सासण नायक समरिये महावीर महिमंत।
मुक्त गया मोटा मुनि, सफल सिरे सोभंत॥ २ ॥
पांचूं पद प्रणमी करी भाव भगत भलि भांत।
कर्म काटण रे कारणें, कहूं भीखु चिरत वखांण॥ ३ ॥
आज्ञा लई अरिहंत नी करी सतगुरु आज्ञा स्वीकार।
गुण गाऊं गुणवंत ना ते सांभलज्यो नरनार॥ ४ ॥
किहां उपना किहां जनमिया परभव पहोंता किण ठांम।
धुर सूं उत्पति त्यांरी कहूं, ते सुणज्यो सुभ परिणाम॥ ५ ॥

ढाल १

[धीज करे सीता सती रे लाल—ए देसी]

तिण काले नें तिण समें रे लाल दुःखम आरा रें मांय रे। सोभागी।
जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र में रे लाल भरतार देश सुखदाय रे। सोभागी॥ १ ॥
भाव सुणो भीखु तणा रे लाल हृदय धुव धार रे। सो०।
सतगुरु नें समरथ थका रे लाल वरतसी जे जे कार रे। सो०। भा०॥ २ ॥
गांम कंटालियो सोभतो रे लाल कांठे कोर कहाय रे। सो०।
कमधज राज करें तिहां रे लाल भगतसिंघ सोभाय रे। सो०। भा०॥ ३ ॥
साह बलुजी सोभता रे लाल दीपांदे तसु नार रे। सो०।
तिहां भिपनजी भावी अवतरया रे लाल सिंह सुपनो दीठो श्रीकार रे। सो०। भा०॥ ४ ॥
संवत सतरे त्यासें समें रे लाल, आषाढ मास शुक्ल पख मांय रे। सो० ।
वार मंगल तीजी तिथि तेरस सुभी रे लाल जनम किल्याणक थाय रे। सो०। भा०॥ ५ ॥
अनुक्रमें मोटा हुआ रे लाल एक परण्या नार रे। सो०।
पछे सील दोनूंई आदरयो रे लाल कहूं चारित लेस्यां लार रे। सो०। भा०॥ ६ ॥
वियोग पड़ियो भीखा तणो रे लाल सगपण सनेहा अनेक रे। सो०।
छता भोग छिटकाविया रे लाल आयो वैराग अथोव रे। सो०। भा०॥ ७ ॥
संवत अठारें आठें बरस में रे लाल, लीधो द्रव्ये संयम भार रे। सो०।
गुरु किया रूघनाथ जी रे लाल पूरो ओलख्यो नहीं आचार रे। सो० ।भा०॥ ८ ॥
काल कितोएक किन्यां पछे रे लाल बांच्या सूत्र सिद्धंत रे। सो०।
ठीक पड़यां पकड़ावीया रे लाल ए तो न दीसें संत रे। सो । भा०॥ ९ ॥

थां थापिता थानक आदरथा रे लाल वले आधाकर्मी जाण रे। सो०।
मोल रा लिया मांहि रहे रे लाल थां मांगी भगवत आण रे। सो०। भा० ॥ १० ॥
ववेक विकल बालक भणी रे लाल मूंड्या नहीं शंके लिगार रे। सो०।
मत बांधण रे कारणें रे लाल थां मांगी भगवत कार रे। सो०। भा ॥ ११ ॥
नित्य पिंड लागा बेंहरवा रे लाल दोष्यां रा गिण ठामो ठाम रे। सो ।
पडिलेह्यां बिण पड्या रहे रे लाल थांरा किणविध सीमसी काम रे। सो० भा ॥१२॥
भंड उपकरण नें पातरा रे लाल वस्त्र उपध अनेक रे। सो ।
इधिका राखे जाणने रे लाल ए बूडे बिना ववेक रे। सो । भा० ॥ १३ ॥
क्रिया में ढाचा घणा रे लाल, कह्यो कठा लग जात रे। सो ।
समकत रतन जिन भाखियो रे लाल ते पण न आयो हाथ रे। सो । भा ॥ १४ ॥

दोहा

विषसू करी विचारणा वारूंवार वलेय।
मुन मारग लाधो सही परभव सांमो देख ॥ १ ॥
रखे जूठ लागे त्या मो भणी तो तप करणी वारूंवार।
सूतर सगला बांचणा ज्यूं संक न रहै लिगार ॥ २ ॥
राजनगर भणता थका उपनी अभितर आंख।
हवे चारित्र ले शुध पालणो छोड आतम रो वांक ॥ ३ ॥
में वैरागों घर छोडिया न्यातीलां नें रोवांण।
इणविध जन्म पूरो कियां मूल न होवें किल्यांण ॥ ४ ॥
वीर वचन विचारतां ए निश्चे नहीं अणगार।
तप करी समझावां एहनें मिल पालां शुध आचार ॥ ५ ॥

ढाल २

[धर पगुकम्पा जिन आज्ञा मां—ए देसी]

एहवो विचार किया तिण ठांम गाढी बात हिया मे धार।
टोडरजी हरनाथजी भारिमाल समझे लागा गुरु री लार।
भीखु थिरता गुणो भव्य जीवां। एआंकणी ॥ १ ॥
गुणधर दन मे आया तवारें, मिलिया सोजत सहर मझार।
गुरु नें कह वीर वचन सभाल्यो आंमा मे नहीं छै तप आचार। भी ॥ २ ॥
देव अरिहंत नें गुरु निग्रंथ केवली भाख्या धर्म तंतसार।
तीनइ रत्न अमोलख आंणो यमि मत मे सरधा लिगार। भी ॥ ३ ॥
ओर हि वस्तु मे मत पड्यो थो थोपी बसत किणहें छे बनाय।
ता पुन्य मे पाप रो मत किहां था सांमो हुवे तो सूतर स्योदल। भी ॥ ४ ॥
आ शुध सरधा पण हाथ न आई शुध किरीया थी तिण भरमा परिया।
आगम न्याय भजे शुध वाचो ता रागु मार्ग गुरु धरिया। भी० ॥ ५ ॥
भरमाय्या ता गुरु म मांनी जब भीखु मन मे विचारचा एम।
उत्तर दिया तो समझ मांहि धीरें समझावमां धर प्रेम। भी ॥ ६ ॥

भीखु कहे जिन भाषियो रे, सूतर आचारांग माहि।
ढीला आगल इम भाखसी रे हिवडां सुध न चलाय। च ॥ ५ ॥
वस्त्र विशेष होणा करी रे, पूरो न पलै आचार।
आगुच जिनजी इम भाषियो रे इम केहसी भेषधार। च ॥ ६ ॥
साधो सूतर तणी वारता रे, मानी नहीं लगार।
समझाया समझे नहीं रे, जब कष्ट हुआ तिणवार। च ॥ ७ ॥
भीखनजी आद दे तिहां रे, तेरे जणा हुवा त्यार।
फेर दीख्या लेवा भणी रे करवा आतम नों उधार। च ॥ ८ ॥
थानक पिण तिण अवसरें रे, जोधांणा शहर में ताम।
तेरे श्रावां समाई पोषा किया रे, तिण सूं तेरापंथी दियो नांम। भ ॥ ९ ॥
पाखंड पथ दूरो कियो रे, देव रह्या अरिहंत।
अनेरो पथ मानें नहीं रे, जांणो तेरापंथ संत। च ॥ १० ॥
गया देश मेवाड में रे, केलवा शहर मझार।
आग्या ले अरिहंत नी रे, पचख्या पाप अठार। च ॥ ११ ॥
संवत अठारें सतरो तरें रे, आसाढ सुद पूनम जांण।
संयम लीधो स्वामजी रे, कर जिन वचन प्रमांण। च ॥ १२ ॥
हरनाथजी डावर हुंता रे, टोकरजी तीजा सुवनीत।
परम भगता शिष पाम्यी रे, यां रासी पूज री परतीत। च ॥ १३ ॥

दोहा

चारित लीधो चूंप सूं पाखंड पथ निवार।
भविजण रें मन भावता हुआ मोटा अणगार ॥ १ ॥
उदे उदे पूजा कही श्रमण निग्रंथ नी जांण।
तिणसूं पूज प्रगट थया ए जिन वचन प्रमांण ॥ २ ॥
ओपमा तो आखी कही श्रमण निग्रंथ में श्रीकार।
चोरासी अति दीपती कही सूत्र अणुजोग दुवार मझार ॥ ३ ॥
वले दसमा अंग इधिकार म कही तीस ओपमा संत।
श्रमण भीखू में सोभती आप गया भगवंत ॥ ४
वले पटन्तर दीधी ओपमा सूत्रनी में श्रीकार।
उत्तराध्ययन अध्ययन इग्यारम श्री वीर कह्यो विसतार ॥ ५
इण अनुसारें आखस्यो भीखु नें भली भंत।
ओपम गुण आछा घणा तिणरा पार न काई पावत ॥ ६ ॥
गुणवंत गुरु ना गुण गावतां तीर्थंकर नाम गोत बंधाय।
हिवें ओपमा सहित गुण वरणवूं ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल ४

[हरियाले रंग भरिया पी—ए देशी]

आदिनाथ आदेसरजी जिनेश्वर जगतारण गुरू।
परम भाव कासी अरिहंत, इण जुगम आरें करम कटीया जी।
प्रगटीया भाव जिणन्द ज्यूं ओ इणरज इणिज भावत।
साम भीखु गुरुस्वामी मन भाया भवियण जीव ने। ए आंकणी॥१॥
स्याम चरण अति सोभैजी मन मोहे नेम जिणन्द ज्यूं।
प्यारी वांणी अमिय समाण, भवियण रे मन भाया जी।
चित चाया तीरथ चार में मुनि गुण रत्नां री खांण। साध० ॥ २ ॥
कालवादी भाव आंणी जी मत वांणी मारग उथापवा।
कुबध्यां केलवीया कूड अ पालड पोथा पोथा जी।
कोइ ग्यान करे गिरवा मुनि चरचा करी किया चकचूर। साध० ॥ ३ ॥
संत उत्तम थी कारी जी अपमारी दोनूं दीपता।
नहीं बिगाडे धूप स्मार, ज्यूं ये तप जप किरीया कीधी जी।
कर सोधी आतम उजली पयदता अति धम धार। साध० ॥ ४ ॥
कमोद देस नो घोडोजी अत सोरो करें खिरदार में।
नहीं आंगे माछर सिणगार, ज्यूं भवियण नें यें तारवा जी।
उतारया पार ससार थी मुखे आसी मोष मझार। साध० ॥ ५ ॥
सूर सिरोमण साचो जी नही काचो रह्यो कटक म।
सुवनित अश्व असवार, ज्यूं करम कटक दल दीधो जी।
जश लीधो जाभो जगत म भड सूतर अस्व धीकार। साध० ॥ ६ ॥
हाथी हथिणां परवारें जी बल भारें दिन दिन दीपतो।
वधे साठ वरस शुभ मोन ज्यूं ये तयालीस बरस रह्या आमझमी।
तप ताजा तेज तीखा रह्या पराक्रम सिंघ परमाण। साध० ॥ ७ ॥
वरपभ सिंग लंब भारी जी गिरधारी गायो गण मझे।
पेट भार बहु मस्ती मंत, ज्यूं ये गण भार पेट निभाया जी।
चलाया तीरथ धूप सू सहु सास्यां म सोभंत। साध ॥ ८ ॥
सिंघ मिरगाधिप मो राजा जी मद ताजी राजा तेज सूं।
ते जीव म जीपें मोप ज्यूं भार भेखधारी नी परे गूंज्या जी।
सद्य धूज्यां पाखंड धार सूं, वांसूं गिज गमयो नहीं कोय। साध०॥९॥
वासुदेव बल जाण्यों जी बखांण्यो बीर सिघत में।
संख चक्कर गदा धरणहार, ज्यूं थारा ग्यान दर्शन चारित दीपावी।
नहीं फीरा त्यांरा तेज सूं, पूज पाखंड दियो निवार। साध० ॥ १० ॥
आग्या भरत नो राजा जी भनि ताजा मेन्या मझ करी।
आंणे बंध्या गे भन ज्यूं ये पाखंड सहु मोस्तराया जी।
ह्यपा पप उजाण म तनव बनाया मन। साध० ॥ ११ ॥

सर्वेंद्र सिरदारी जी वज्रधारी सुर में सोभतो।
वज्रादिक भीखें जांण ज्यूं सूतर वज्र भ्रीकारी जी।
कल्पारी कुप उत्पात सूं पूज पाखी पाखंड री हांण। साध० ॥१२॥
आदय उगां आकासें जी विनासें तिमिर तेज सूं।
इधिको करें उद्योत ज्यूं थे अग्यान अंधार मिटायो जी।
बतायो मारग मुगत रो घणा रा घट भाल्यो जोत। साध ॥१३॥
चंद सदा सुखकारी जी परवारि ग्रह ना गण मर्के।
सोमकारी सोभंत ज्यूं चार तीरथ सुखदाया जी।
मन माया भविपण जीव रें भीखु मला अराध्या। साध ॥ १४ ॥
लोक घणां आधारी जी अत भारी धामां कर भर्यो।
ते कोठागार कहाय ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरिया जी।
परवरिया पूज प्रगट धमा आधार भूत अथाय। साध० ॥ १५ ॥
सर्व बिरषा में अति सोभें जी मन मोवें दीसें दीपतो।
जंमू सुदर्शन जांण ज्यूं संता में सिरदारी जी।
अत भारी भीखु भरत में उपना इचरिजकारी जांण। साध०॥ १६ ॥
सीता नदी सिरे जांणी जी वखांणी नीर सिद्धत में।
पांचसें जोजन प्रवाह, ज्यूं तप तेज अत तीखाजी।
नहीं फीका रह्याज फावता सदा काल्य सुखदाय। साध० ॥ १७ ॥
मेरू नी ओपमा चाखी जी नहीं काची कही किरपाल जी।
ते ऊंचो घणो अवल ओपम अनेक छाजेजी।
बिराजें गुण स्वांमें घणा ज्यूं अें बहुश्रुती गुणवंत। साध० ॥ १८ ॥
सयंभूरमण समुद्र कह्यो जी पुरो पाव रजु पेंहुलो पक्ष्यो।
परमूत रतन भरपूर, सागर जेम गमीरा जी।
सूरवीरा गुण कर गाजता सूतर चरचा में सूर॥ साध ॥ १६ ॥
अें पद्रस ओपमा भाखी जी कांई साखी सूतर में कही।
बहुश्रुति नें धीकार, ईण अणुसारे जांणोजी।
पीछांणो करस्यो पारिखा भीखु गुण भंडार॥ साध० ॥ २० ॥
ओपमा अनेक गुण छाज्या जी, बिराज्या गादी वीर नी।
पूज पट सायर गुण पाय समुद्र जेम अथागा जी।
अल्प वागा जिन भाख्यो नहीं ज्यूं गुण पूरा केम कहिवाय॥ साध ॥ २१ ॥
पाट कायक थिप मालजी सुहाम्मी परकत सुन्दरू।
भारमलजी गेंहरा गंभीर, पदवी थिर कर थापी जी।
आ भापी आचारज तणी जांणें सुविनीत सधीर॥ साध० ॥ २२ ॥

दोहा

भणोजी म भगवंत भापीयो भीखमा मतरू मझार।
छाम्या न्नि म्हा वापसी निरमल तीरथ चार॥ १ ॥

वले उतराधेन दसमा अध्यन में गोतम प्रते कह्यो भगवान।
दुषम आरा तेहमें जिन धर्म चालसी असमान ॥ २ ॥
धणी विना ते जुगती लेखी आगम वचन अराध।
तो हिवड़ां मुझ देख्यां थकां समो एक म कर परमाद ॥ ३ ॥
वले वक चूलीया में वारता तेपना पर्छ विचार।
इधिक पूजा अरिहंत कही श्रमण निर्ग्रंथ नी श्रीकार ॥ ४ ॥
तिणसूं पूज पूजाविया दिन २ इधिक दयाल।
उपकार कीया अति घणा, मेट्या मोह जंजाल ॥ ५ ॥
किहां किहां विचरया स्वामीजी, किहां किहां किया उपकार।
थोड़े सो प्रगट करूं ते सुणजो इधिकार ॥ ६ ॥

ढाल ५

[भरत नरिंद तिण वार—ए देशी]

हाडोती ढूंढाड मझार, वले मरुधर देश मेवाड़ ॥ आंकड़ी ॥
या च्यारूं देशां मे विचरीया जी ॥ १ ॥
पाखंड उठ्या अनेक, पूज मेट्या आंण ववेक ॥ आ० ॥
सूतर चरचा रा जोर सूं जी ॥ २ ॥
कीया साध साधवीयां रा थाट, रह्या दिन २ इधिक गेंह गाट ॥ आ० ॥
श्रावक श्राविका कीया घणा जी ॥ ३ ॥
करता पर उपकार, आया मुरधर देश मझार ॥ आ० ॥
परम उपकार हूओ घणो जी ॥ ४ ॥
च्यार भाया ने बायां सात त्यां दीख्या लीधी जोड़े हाथ ॥ आ० ॥
वैरागें घर छोड़ियां जी ॥ ५ ॥
कांणोद आवे देइ आंण पीपाड़ ताइ पीछाण ॥ आ० ॥
छेहूंमा दरसण दिया सांम जी ॥ ६ ॥
गांमा नगरां करता उपगार, आया सोजत शहर मझार ॥ आ० ॥
रामचन्दजी री छतरी में उतरया जी ॥ ७ ॥
हुकमचन्द आछो आयो तांम पूज्य नें नाया सीस नांम ॥ आ ॥
विनती तो विध सूं करी जी ॥ ८ ॥
चौमासो करो सिरियारी मांय म्हारी पचरी हाट विराजो आय ॥ आ० ॥
पूज्य मानें भीखी सोनजी जी ॥ ६ ॥
बाकी कंट्याले होय विनती कीधी घणा जोय ॥ आ० ॥
चौमासा री अरज मांनी नहीं जी ॥ १० ॥
पूज्य आया सिरियारी चलाय दियो चौमासो ठाय ॥ आ ॥
आज्ञा ले पचरी हाट विराजीया जी ॥ ११ ॥
सिरियारी सोभे कांठा री कोर जाणे मेहामन चमनी जोर ॥ आ ॥
दमा २ बाट ज्यूं मगरा दीसना जी ॥ १२ ॥

मारमलजी खेतसी ज्येरांम, रायचन्द ब्रह्मचारी तांम ॥ आं० ॥
जीवो मुनि वैरागी भगजी भगत में जी ॥ १३ ॥
सप्त रिष सहित तिणवार ग्यांनादिक गुण रा भंडार ॥ आं ॥
संजम तप सुध अराधता जी ॥ १४ ॥
रामी घणा शहर मझार ते वांदण आया नरनार ॥ आं० ॥
भवीयण रें मन भावीया जी ॥ १५ ॥
श्रावण मास मंझार, आवश्यक अथ विचार ॥ आं० ॥
लिख लिख शिष्य नें बतावता जी ॥ १६ ॥
गोचरी पिण फिरीया ठांम ठांम वखान देवा कांम ॥ आं ॥
श्रावण सुदि पूनम लगें जी ॥ १७ ॥

दोहा

परम निर्वाण पछे हुवौ, तिणरो सुणो सहु विस्तार ।
सरियारी में स्वाम विराजिया, हिवें भाद्रवा मास मंझार ॥ १ ॥
अस्य असाता फेरा तणी काइक असांगी जोग ।
और असाता इधिकी न उपनी प्रबल पुण्य प्रमांण ॥ २ ॥
पूर्व पाप प्रबल हुवें ते रिबें घणा दिन रात ।
एहवी असाता वेदनी मां रें नहीं ऐ पदवी भर पुन्य विख्यात ॥ ३ ॥
हुवें पजूसणां में परवरा सीम टंक हुवें बखांण ।
नरनारी आवें घणा, सुणवा सुन्दर वांण ॥ ४ ॥
शुक्ल पख सुहामणो मास भाद्रवो जांण ।
चौथ आई चोवणी आयु नेंडो आयो पिछांण ॥ ५ ॥
सतजुगी नें स्वामी कहें, थे आछा शिष सुवनीत ।
साज दियो थे मों भणी, में संयम पाल्यो रूडी रीत ॥ ६ ॥
आगें टोकरजी हीरजी हुंता विनेंवत विचार ।
भगत करी भारी घणी सुवनीत हुंता श्रीकार ॥ ७ ॥
भारीमालजी सूं मेल्प भली रहीज रूडी रीत ।
जांणक पाछिल्म भव तणी स्याली हुंती प्रीत ॥ ८ ॥
मों तीमां रा साझ सूं पाल्यो सुध संयम भार ।
चित्त समाध रही घणी न रह्याज एकण धार ॥ ९ ॥
उत्तराध्ययन पेंहलाध्ययन मं, भाख गया वीर जिणंद ।
निप सुवनीत हुवे सदा, तो गुरु नें रहें आंणद ॥ १० ॥

ढाल ६

[पछोलो रे वात कहे ने धुर प्रेह की रे—ए देशी]

दवे रे दवें सिंगामग स्वामीजी रे सामण चमावण कांम रे ।
सापम रे साप श्रावग नें श्राविका रे घणा सुणमा तिण ठांम रे ।
सुणजो रे सुणजो मीग स्वामी तणी रे । ए आंकणी ॥ १ ॥

मानें रे मानें जांणता जिण विधें रे, राखता मुज परतीत रे।
तिमहिज रे तिमहिज परतीत राखजो रे, भारीमालजी री आहिज रीत रे। मु ॥ २ ॥
आज्ञा रे आज्ञा त्यांरी एहनी रे, दाप त्यागी बार्‍हे गण वार रे।
तिण्नें रे तिण्नें साधु मत सरधजो रे, मत गिणजो तीरथ मंझार रे। मु ॥ ३ ॥
आज्ञा रे आज्ञा आराध एहनी रे, सन्त रहे सुवनीत रे।
सेवा रे सेवा भगत कीजो तहनी रे, आ जिन मारग री रीत रे। मु ॥ ४ ॥
म पदवी रे पदवी दीधी छै एहनें रे, भारल्याव जांणें भारीमाल रे।
सक रे संका मूल म आंणजो रे, यांमें असल सांनां री चाल रे। मु ॥ ५ ॥
कोइ दोष रे दोष त्यागी गण मझे रे कर्ले कर्म भोगें त्यागी कूर रे।
तो कांण रे कांण म राखजो तेहनी रे, प्राछितम लेतो करजो दूर रे। मु० ॥ ६ ॥
पुथ रे पुथ भावां म सवजा र, अणाचारी सूं रहेजो दूर रे।
आ छेहली रे छेहली सिखामण धारजो र, ज्यूं करम हुवें चकचूर रे। मु ॥ ७ ॥
उसना रे उसना में पासत्या रे, कुशीलिया परमादि पिछांण रे।
अगछया रे अपछंदा आप छांदें रहे रे, त्यांभांगी हे भगवत आण रे। मु ॥ ८ ॥
ए पांचा म रे पांचा ने प्रभु नपखिया रे, गिन्यांता निशीथ बिचाल रे।
त्यांरो संग रे संग परचो करणो नहीं रे, आ बांधी भगवत पाल रे। मु ॥ ९ ॥
आणंद रे आणंद श्रावक अभिग्रह लियो र, जिन मत थी न्यारा जांण रे।
तियांरी सवा रे सवा भक्ति करूं नहीं रे, पहली बोलस्यु रा पिण पचखाण रे मु० ॥१० ॥
बीर रे बीर जिणद बखांणियो र, आ आणन्द अभिग्रह थीकार रे।
आहीज रे आहीज रीत आराधजा रे, ज्यूं पांमो भवजल पार रे। मु ॥ ११ ॥
सगला रे सगला साध नें साधवी र, राखजो हेत वसेष रे।
जिण तिणनें रे जिण तिण नें मत मूंडजो रे, दिक्षा दीजो देख देख रे। मु ॥ १२ ॥
आ दीधी रे दीधी सीखामण स्वामजी रे, एकत तारण कांम रे।
ओर रे और कारण त्यांरें को नहीं रे, तिणसूं सीख भातम कांम रे। मु ॥ १३ ॥

दोहा

प्रथम बचन श्री पुज्य रा, चरम बचन विसतार।
उदेन ता आछो दाखो सांभल्यां सुखकार ॥ १ ॥
ध्रुव गति गंगा जहनें जिसाइज रहे परिणाम।
गंगा नीर ज्यं निरमलो चित्त रहे एकण ठांम ॥ २ ॥
परम भगता थीप स्यात दे, ठठ सुखी पह्या बाम्बार।
कोइ अगाता आगर स्वामी कहै नहीं रे निगार ॥ ३ ॥
श्री बीर सुगत बिराजनां सोहमें दोहर लियो बखांण।
इण दुसम आरे पांचमें तिहतिज भीखु जांण ॥ ४ ॥
कम उतन्ता लियो जिन बिधे तिन बिध बान्धा बान।
भव जीवां तुम सांभलो चित्त में भाग गिरांन ॥ ५ ॥

ढाल ७

[चतुर नर बात विचारो यह—ए देशी]

मारमलजी आव साधां भणी रे, श्री पूज्य कहे छै बोलाय।
चरम सीखामण माहरी रे, सांभलज्यो सुखदाय।
भविक रे भिखु दीया उपदेस। ए आंकणी ॥ १ ॥
म्हे छो जाता दीसां परभवे रे, सका न दीसें कोय।
मरण रो भय म्हारे नहीं रे हियडे हुए अथाय। भ ॥ २ ॥
म चारित्र लियो घणा जीवां भणी रे, समकत पमाडी रूडी रीत।
श्रावक श्राविका किया घणा रे, एकंत तारण नी नीत। भ ॥ ३ ॥
में जोवां कीनी जुगत सूं रे, समझाया नर नार।
उणायत रही नहीं रे म्हारा मन मजार। भ ॥ ४ ॥
थें पिण रहीजो निमला र मोह म कीज्यो मन्न माहि।
अरिहंत वचन आराधजो रे, ज्यूं मोसूं वेगा मलोला आय। भ ॥ ५ ॥
रायचद ब्रह्मचारी नें इम कहें रे तूं छ बालक बुधवान।
मोह म आंणे माहरो रे राखजे रूडो ध्यान। भ ॥ ६ ॥
ब्रह्मचारी कहे श्री पूज ने रे, आप जावो शुभ गति मांय।
पिंडत मरण करो भलो र, हूं मोह आंणू किण न्याय। भ० ॥ ७ ॥
वले पूज्य वांणी इण विध वर्दे रे, थे आराधजो आचार
इर्या भाषा में एषणा रे, लोभज्यो मती सिणगार। भ० ॥ ८ ॥
भंड उपकरण लेतां मेलतां रे, परठ्वां पूजतां तांम।
जयणा कीज्यो जुगत सूं रे, ज्यूं सीझे आतम कांम। भ० ॥ ९ ॥
लिप छिपणी उपगरण ऊपरे रें, ममता म कीज्यो कोय।
ममता मोह कियां थकां रे, करम तणो बंध होय। भ ॥ १० ॥
पुद्‌गल ममता कोइ मत करो रे, इण ममता थी दुःख थाय।
सुमता सखाई राखजो रे, ज्यूं वेगा आवो मुगत गढ मांय। भ० ॥ ११ ॥
भगतवंत भारमलजी रे, बोले एहवी वाय।
विरहो पडे दर्शन तणो रे हिवें पूज्य बोलें सुखदाय। भ० ॥ १२ ॥
थें संयम आराध्यो गुर होमे रे, मुज थकी मोटा अणगार।
महाविदेह खेतर मभे रे, त्यांरा देखजो दरसण दीदार। भ ॥ १३ ॥

दोहा

सतजुगी कहे श्री साम म आप जासो सिद्ध रे मांहि।
स्वाम कहे सुण साधजी म्हारे नहीं सिद्ध री चाहि ॥ १ ॥
पुदगलिक सुख छै पांवला मे भोगव्या अनंती बार।
त्यांरी वांछा मूल करूं नहीं म्हारे जांणो मुगत मंझार ॥ २ ॥
हिवें सथाम मरण कर स्वामिजी पंडित मरण पिछांण।
आलोयणा आछी करी होय गया गुण सुजांण ॥ ३ ॥

सदा निमल था स्वामी जी पिण मरण अत विशेष।
नरमाई करें भणी परभव साहमो देख ॥ ४ ॥
आलोयणा किण विध करें तिण विध रा हूंता वांण।
वचन अमोलख वागरे, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ५ ॥

ढाल ८

[मारग वहै रे उतावलो—ए देशी]

अरिहंत सिद्ध री साख सूं वडा शिष थीकार।
वले सतगुरी री साख सू वचन काढ्या मुन बार।
सुणजो आलोयणा स्वामि तणी ॥१॥ ए आंकणी ॥
चौरासी लख जीवाजोन नें खमावु कर ख्यंत।
राग द्वेष नहीं म्हारे, ते देख रह्या भगवंत। सु० ॥ २ ॥
साध सुवनीत हुआ घणा केई कुशिष अवनीत।
कठण वचन कह्या तेहनें खमावु सवी रीत। सु० ॥ ३ ॥
साधवियां सतियां मझ, केएक करडी विचार।
कठण सीख दीधी हुवें, तो खमावु वारम्बार। सु ॥ ४ ॥
श्रावक नें वले श्राविका केईनं करडा देख।
कठण वचन कह्या हुवें खमावुं छूं विशेष ॥ सु० ॥ ५ ॥
च्यार तीथ नें शुध चलावया सीख दीधी सुखदाय।
करडो काठो लागो हुवे तो त्यांनें दीजो खमाय। सु० ॥ ६ ॥
मे चरचा कीधी घृप सूं धर्मा सूं धम धम।
करडो वचन लागो जाणीयो त्यांनें खमाऊ ले ले नांम। सु ॥ ७ ॥
जिन मार्ग रा द्वेषी छे घणा छिद्र पेही अपाय।
खेद आइ हुवें किण उपरे, तो वेदं सहु ने खमाय। मु० ॥ ८ ॥
त्रस थावर आदे जीव री, हिंसा लागी हुवे कोय।
मन वचन काया करी तो मिच्छामि दुक्कड मोय। मु ॥ ६ ॥
क्रोध मान माया करी लोभ मय वश होय।
जे कोई झूठ लागो हुए, मिच्छामि दुक्कड मोय। सु० ॥ १० ॥
कोई अदत्त मुनें लागो हुए, सूतां जागतां जोय।
ममता धरी हावें मैथुन सूं ते आलोयण आने होय ।सु०॥११ ॥
शिष शिषणी वस्त्र पात्र उपरें मूर्छा वंछा कीधी देख।
मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कड विशेष। सु ॥ १२॥
एहवी आलोयणा सुणें, मांणें मन वैराग।
ते पिण कम खपावें आपरा पामें सुख अथाग। सु ॥ १३ ॥

दोहा

पांचूं आश्रव माहिलो लागो जाण्यो जिणवार।
व्रत सामल्या स्वामजी, आलोया अतिचार ॥ १ ॥

बड़ा शिष सुवनीत री जुगती मिलीय जोड़।
सेंहर कोई राखी नहीं काटण करम कठोड़॥ २॥
थोड़ी असाता फेरा तणी और असाता नहीं तिणवार।
घट शिष सेवा साचवें, एहवा पुण्य सञ्च्या सार॥ ३॥
आज्ञा ऊपर आदरी भीखु भलेंज भाव।
जनम सुधारयो जुगत सूं जांण तिरण रो दाव॥ ४॥
सपरी करी सलेषणा अणसण रो अधिकार।
भाव धरि भवियण सुणो आलस सब निवार॥ ५॥

ढाल ६

[बड़ घानी—ए देशी]

भाद्रवा सुकल पष पचमी प्रगटी जोष भगत थोड़ी आहार ठवें।
असाता अधिक तिरषा तणी उपनी सूर कायरपणो नाहीं लावें।
कर हो जीव तूं भजन भीखु तणो ॥ए आंकणी ॥१॥
पारणो कियो छठ प्रभात रो जोयन अल्प सो आहार लीयो।
ते पिण आहार समो नहीं प्रगम्यो तिण दिन तीनूं आहार नो त्याग कियो॥ क०॥२॥
सातम आठम आहार लें अल्प सो तलपिण त्याग तो कर लेवें।
पुद्गल स्वरूप तो पूज पिछांणनें आशा वछा सहु मेट देवें। क० ॥ ३॥
सरें मतें कहें खेतसी साधकर तलके त्याग रो नहीं कहिणो।
पूज कहें देही पातली पारणी तेरस दिन तो अणसण लेणों॥ क० ॥ ४॥
बीरघो छठ तो श्रावक सनमुखे विविध प्रकार सुखसी आपें।
पूज्य कहें वंछ्या नहीं माहरे थिर कर मोष सूं प्रीत थापें। क० ॥ ५॥
भाद्रवा सुकल नवमी तणें दिन पूज कहें आहार ना त्याग लेउं।
सतजुगी कहे मुझ हाथ नो चाखिए, चरिम आहार थोड़ो आंण देउं॥ क० ॥ ६॥
अल्प सो आहार आण्यां स्वामि खेतसी चाख नें तलपिण त्याग कीधो।
ओ तो मन राखीयो सुविनीत शिष तणो पिण इच्छा सूं आहार त्यां न्हां लीधो क०॥७॥
दशमी तणें दिन परम भगता शिष पूज जी सूं एम भाखे।
चालीस चावल दश मोठ रें आसरे, दीनती मांनकें तेह चाखे। क० ॥ ८॥
इग्यारस तो पूज आहार त्यागें दियो अमल पांणी रो आगार राख्यो।
हिवें मुझनें आगार रखो मत जाणजो वचन अमोलख एम भाख्यो। क० ॥ ९॥
सनमुख पधारिया तावड़ो आवियां बारस बेलो थिर कर ठायो।
सरस इसड़ी रही आहार कियां विनां एह अचरज[1] अधिक आयो॥ क० ॥ १०॥
जोबन मांहें भरत कीधी हाट री तेही पूज पलोठाट भाय बेंठा।
सेन सिपा कीयो विपरीत त्यां लियो स्वाम तो मन मांहे अधिक सेंठा। क० ॥११॥
गुणे गुणा वेस पूज परम गुरु रिस रायचन्द भाय एम बोलें।
तिरपा तो कीजिये दरशण दीजिये ताम तो पूजजी नेंण खोले। क० ॥ १२॥
पूज सें बीनवें पराक्रम हीणा पड्या ब्रह्मचारी जिनें सूं एम बोलें।
केसरी मो पड़े बेण हीयडे धरी ताम त आपरो तेज तोलें। क० ॥ १३॥

१—अचरज=अचरज=आश्चर्य

नाथद्वारे में नीका किया तीन चोमासा ठेहठीक जी।
त्यालीसें पधारें छपनें त्यांरी स्यूं रासनो ठीक जी। सु ॥ ७ ॥
कंट्यालिया मांयें किरपा करी पूज कीया चोमासा दोय जी।
चोवीसें अठावीसा वरस में तिहां जन्म किल्याणक जोय जी। सु० ॥ ८ ॥
पीपाड में पाखंड हूंता घणा दोय चोमासा दिया ठाय जी।
चोंतीसें नें पेंताल्लेस में घणु दियो मिथ्यात मिटाय जी। सु० ॥ ९ ॥
गढ रतनमभर किनो तिहां छसेंठी मासोपुर मंझार जी।
इकतीसें अडतालीसें दोनूं किया तिहां इधिक हुओ उपकार जी। सु० ॥ १० ॥
दोय चोमासा किया पुर सहर में तिहां उपकार आमरो जांण जी।
तेतालीसें नें सतावनें ते गिण लीजो चुनर सुजांण जी। सु० ॥ ११ ॥
अठारा रे वरस वद्धलू कियो बीसें राजनगर मिझार जी।
पेंतीसें आंमेट पाळू सेंतीसमें तेपनें सोजत सहर मझार जी। सु० ॥ १२ ॥
पनरे गांमां में किया पूज जी चुमालीस चोमासा सार जी।
ऐ परम भगता शिष्य पाम्पी घणा रह्या पूज रे लार जी। सु० ॥ १३ ॥

दोहा

आद हूआ आवेसक आदिनाथ अरिहंत।
तीजा आरा तेहमें मुगत गया भगवंत ॥ १ ॥
त्यां आद काढी जिन धर्म री जुगलधारो मिटाय।
संसारी में धम री वीधी रीत बताय ॥ २ ॥
आद काढी अरिहंत ज्यूं भीखु भलाइज साम।
आरा दुषम तेहमें कीधा अरिहंत बचन अराध ॥ ३ ॥
भव्य जीवां रा भाग सूं कियो असत उद्योत।
मत सुरत चलैं मोटा मूनी घणा घट चाल्ली जोत ॥ ४ ॥
उपकार कीधो अति घणो पूरो केम कहिवाय।
थोडो सो प्रगट करूं ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल १३

[पुण्य पधारो हो नगरी सेविया—ए देशी]

साध सावधी श्रावक श्राविका, ए थाप्या तीरथ च्यार हो। महामुनि।
जिन मारग जमायो हो मुनिवर जुगत सूं घणो पाखंड दियो निवार हो ॥ महा० ॥
थे मर्ता नें अवतरीया भीखु भरत क्षेत्र में। ए आंकणी ॥ १ ॥
सोरालोक मवोइ तणा तणा कीध दया दान न्याय हो। महा।
न्यारा भेद जयाण भिन भिन भापीया जिनवर ज्यूं दियो जमाय हो। महा। थे०॥ २॥
चारित लीयो एक सौ च्यार आसरे पूज री प्रतीत मन धार हो। महा।
केन्हा में पायं मा गूं गावमें आप दीधा पार उतार हो। महा। थे ॥ ॥
जोडो कीधी हो मुनिवर जुगत सें सहंग अडतीस रें आसरे गिणाय हो। महा ॥
निरणा न्याय बताया निरमला जांणें मार गया जिनराय हो। महा थे ॥६॥

भारमलजी स्वामी इम विनवें थांनें होय्यो हो स्वामी सरणा च्यार।
किण ही मांहें मन मत राखजो आप किधो हो घणा जीवां रो उधार।म०॥११॥
अवधि ज्ञान उपनो नहीं जांणीयो तिणरो पाछो हो नहीं पूछयो विस्तार।
यां जांण्यो मन सायां में गयो नहीं किधो हो इण बात रो विचार।म०॥१२॥
घणा गांवां रा श्रावक श्राविका दरसण करवा हो आया बहु थाट।
चरिम ओच्छव करें चंप सूं इसड़ा हुआ हो सिरियारी में गेहघाट।म०॥१३॥

दोहा

पाली रा चलीया पाधरा दोय साध आया तिणवार।
रिष वेणीदास कुसाल जी देखी इचरिज पाम्या नरनार॥१॥
पग प्रणम्या श्री पूज रा दियो माथे हाथ।
साता पूछया सांनी करी तिण मुख सूं म कीधी बात॥२॥
दुषम आरा तेहमें अवधि नाणरो दुर्लभ विख्यात।
संयम अराध्यो स्वामजी तिण सू कही अस्प सी बात॥३॥
छेहड़े स्वाम भिक्षु तणें, अवधि उपनो जणाय।
निश्चे तो जांणे केवली ताण न करवी ताहि॥४॥

ढाल ११

[हलुमत गावतो रै—ए देशी]

दोनूइ साध आया तके रे, बोलें बे कर जोड़।
दरसन दीठा दयाल रा रे, पुगा मन रा कोड़।
मीखु भजो भाव सूं रे।
त्या सुधारया भव दोय गुणवंत जसवंत होय।
यां समो अवर न कोय इण भरत में जोय। भी०॥ १ ॥
॥ ए आंकणी ॥
रिख वेणीदास इम विनवें रे, थांनें होय्यो सरणा च्यार।
तुम सरणो मुझ भव भव रे, होय्यो बारंबार। भी०॥ २ ॥
जिसोइ मारग जिन तणो रे, जिसोइ जमायो आप।
दिन दिन इधिका दीपिया रे, टाल्या धर्मा रा संताप। भी०॥ ३ ॥
स्तुति अरिहंत सिध तणी रे, समरयाइ ओंकार।
जांण्यो भगत कीहा भी भीखु तणी रे, इम अवसर मझार। भी ॥ ४ ॥
इतरें आइ तिन आरज्यां रे, वरजूजी सुरमां झाइजी जांण।
इचरिज इधिको उपना रे पूज कही ते बात मलि आंण। भी०॥ ५ ॥
च्यार तीथ मल्या भाव सूं रे देखें दरसण दीदार।
भगत करें भीखु तणी रे, जांणें अवसर सार। भी ॥ ६ ॥
बेठा हुआ तिण अवसरे रे, ध्यान भावना धीकार।
आगूंचे जिनजी विराजिया रे, म जांणी अणसण विस्तार। भी ॥ ७ ॥
तेरे गंठी त्यारी हुई रे, जांणक देव विमांण।
तणो तेज इमडो मिल्यो रे, पूज बैठा छोड़या प्रांण। भी॥ ८ ॥

सुकल पख सोहामणो रे, मास भाद्रवा मांहि।
तेरस तिथ दिन पाछलो रे, आसरे दोढ पोहर गिणाय। भी० ॥ ९ ॥
प्रथम पद परमेसरू रे, त्यांरा किल्यांण पांच प्रकार।
इणविध किल्यांण त्यांरा हुआ रे, इण दुसम काल मझार। भी० ॥ १० ॥
सिरियारी नें स्वामजी रे, थावी कीधी ठांम ठांम।
जनम सुधारयो जुगत सूं रे, त्यांरा भीखें नित प्रत नाम। भी० ॥ ११ ॥
साध तो भीखु सारिखा रे, आछा भरत रे मांय।
हुआ नें होसी बले रे, पिण आज न कोइ दिखाय। भी० ॥ १२ ॥
हिवें सोध्या तो पावें नहीं रे, भीखु सरीखा साध।
करसो कांम पड्सी चरचा तणो रे, तिण वेला आवेला याद। भी० ॥ १३ ॥

दोहा

तियाळीस वरसां लगें फोड़क जामेरो जांण।
सयम पाळ्यो स्वामजी सुमता रस घट आंण ॥ १ ॥
दिन दिन इधिका दीपिया तेज प्रताप पिछांण।
जिन मारग जमायो जुगत सूं भलाइ बरताइ आंण ॥ २ ॥
ओळ्यां भाद छंदा तणो रह्योज रूडो तेज।
शरीर निरोगो निरमलो तिण दीठां उपजें हेज ॥ ३ ॥
किया चोमासा चूंप सूं चतुर नें चालीस।
इधिक आछ्यो आछो हुओ ज्यूं दीप्या जगदीस ॥ ४ ॥
किहां किहां चोमासा किया किहां किहां किया उपकार।
नांम लेई निरणो कहूं, ते सुणजो बिसतार ॥ ५ ॥

ढाल १२

[जीव मोह अनुकम्पा न आणीए—ए देशी]

प चोमासा किया केलवें ससरे एकवीसें जांण जी।
पचवीसे भवतीसे गुणचास में कीध्यो अठावनो पिछांण जी ॥
सुणजो चोमासा स्वामी तणा। ए आंकणी ॥ १ ॥
तिण ठांमें उपकार हुवो घणो मोयम सींभजी ठाकुर जांण जी।
चरचा करतो दयाल रा बले सुनतो भाव बखांण जी। सु ॥ २ ॥
सात चोमासा सिरियारी किया उगणीसें बावीसें गुणतीसें जोयजी।
गुणचालीसें बियालीसें एकावनें, साठें चरम किल्याणज होय जी। सु ॥ ३ ॥
सात किया पाली में पूजजी तेवीसें तेतीसें जांण जी।
चालीसें चमालीसें बावनें पचावनें गुणसठें बखांण जी। सु ॥ ४ ॥
पांच चोमासा किया खेरवें, छाईसें छतीसें विचार जी।
एकतालीसें छेंयालीसें चोपनें तठे कियो घणो उपकार जी। सु ॥ ५ ॥
कांठे में पूज किध सूं किया तीन चोमासा श्रीकार जी।
सत्ताबीसें में तीसें समे तीजो छतीसें लीजो विचार जी। सु ॥ ६ ॥

नाथद्वारे में नीका किया तीम चोमासा तेंहतीक जी।
स्यारमीसें पधारें धपनें स्यारी स्वी रावजो ठीक जी। सु ॥ ७ ॥
कटालिया मांयें विरपा करी पूज कीया चोमासा च्येय जी।
चोबीसें अठबीसा वरस में विहां जन्म किस्याणक होय जी। सु० ॥ ८ ॥
पीपाड में पाखंड हूंता घणा दोय चोमासा किया ठाय जी।
चौतीसें नें पैंतालीस मे घणु दियो मिथ्यात मिटाय जी। सु० ॥ ९ ॥
गढ रतणममर किलो तिहां सलेंटी माधोपुर मम्भार जी।
इकतीसें मरतालीसें दोनूं किया तिहां इधिक हुओ उपकार जी। सु० ॥ १० ॥
दोय चोमासा किया पुर सहर में तिहां उवकार आच्छो जांण जी।
सेंतालीसें में सतावनें ते गिण लीजो चतुर सुजांण जी। सु० ॥ ११ ॥
अठारा रे बरस वरूरू कियो बीसें राजनगर विचार जी।
पंतीसें आंमेट पादू सेंतीसमें तेपनें सोजत सहर मंमार जी। सु० ॥ १२ ॥
पनरे गांमां में किया पूज जी चुमालीस चोमासा सार जी।
ऐ परम भगता सिष्य पामीं घणा रह्या पूज रे लार जी। सु० ॥ १३ ॥

दोहा

आद हुआ आलेसरू आदिनाथ अरिहंत।
तीजा आरा तेहमें जुगल गया मतवंत ॥ १ ॥
त्यां आद भाखी जिन धर्म री जुगलस्यारो मिटाय।
संसारी में धम री दीधी रीत बताय ॥ २ ॥
म्हा भाखी अरिहंत ज्यूं भीखु महाराज साथ।
आरा दूषम तेहमें लीधा अरिहंत वचन अराध ॥ ३ ॥
भव्य जीवां रा भाग सूं कियो अतत उद्योत।
मत सुरत बल मोटा मुनी घणा घट चासी जोत ॥ ४ ॥
उपकार कीधो अति घणो पूरो केम कहिवाय।
थोडो सो प्रगट करूं ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल १३

[पुज्य पधारो हो नगरी सेविया—ए देशी]

साध साधवी श्रावक श्राविका ए थाप्या तीरथ च्यार हो। महामुनि।
जिन मारग जमाया हो मुनिवर जुगत सूं घणो पाखंड दिया निवार हो ॥ महा० ॥
थे भरत में भवतरीया भीखु भरत क्षत्र में। ए आंकणी ॥ १ ॥
सोराखोड नवोद तवन तणा, घणे दया दान दिपाय हो। महा।
स्यारा भेद जयाजय भिन भिन थापीया जिनवर ज्यूं दियो जमाय हो। महा। थे० ॥ २ ॥
चारित लीधो एक सो च्यार भामरे पूज री प्रतीत मन धार हो। महा।
केइयां नें पारंट मां सूं पाछनें, भाव दीया पार उतार हो। महा। थे ॥ ॥
जोडां कीधी रा मुनिवर जुगत सूं सहंस अडतीस रे आसरे गिणाय हो। महा ॥
निरमा न्याय बताया निरमला आंणे माग गया जिनराय हो। महा। थे ॥४॥

२

भिक्खु जश रसायण

[चतुर्थाचार्य जीतमलजी स्वामी कृत]

दुहा

सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आंणी अधिक उलास।
सुख दायक आखूं सरस चाल भिक्खु विलास॥ १॥
गुणवंत ना गुण गावतां उत्कृष्ट रसायण आय।
पद तीर्थंकर पामियै कह्यौ सुज्ञाता मांय॥ २॥
शासन वीर तणैं समय कह्या अधिक अधिकाय।
गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहंस सुहाय॥ ३॥
सर्वज्ञ जिन मुनि सप्त सय, अवधि तेरसय आम।
मनपज्जव सयपञ्च मुनि विउंसय वादी पिछांण॥ ४॥
पूवधर त्रिण सय पवर, वैक्रे सप्त सय वाव।
समणी सहंस छतीस सुध चउदश सय निरवाधि॥ ५॥
सुधर्म जम्बू तिलक शिव अन्य मुनि अमर विमाण।
हिवड़ां पञ्चम काल मैं भिक्खु प्रगटया मांण॥ ६॥
चतुर्थ आरा ना मुनि श्रवणां देख्या नांय।
धिन धिन भिक्खु चरण वर प्रत्यक्ष दर्शन पाय॥ ७॥
किहां उपना जन्म्या किहां परभव पद किहां पाय।
किया चौमासा किण विधैं सांभलज्यो सुखदाय॥ ८॥
विउंसय सत्तर वष म्हैं मन्दीवर्द्धन निहाल।
त्यां पीछे विक्रम तणौ सांभलज सकल संभाल॥ ६॥

ढाल १

(द्वारिका नगरी अति भली रे—ए देशी)

सकल द्वीप शिरोमणि रे लाल जम्बू द्वीप सुतंत।
जगमी चन्द्रकला इसो रे लाल भरत क्षेत्र महन्त। भवजीवां रे॥
स्वामी म्हांरा भिक्खु भूपराय स्वामी आय स्वाम सुखदाय॥ १॥
बतीस सहस देशां मझ रे लाल नरधाम मरुधर देश।
कांठै नगर कंटालियो रे लाल कमधज राज करेश। भव॥ स्व० २॥
शाह बलूजी तिहां बसैं रे लाल, ओसवंस अवतंस।
जाति सकलेचा आपज्यो रे लाल बड़े साजन सुप्रशंस॥ ३॥
दीपां दे तसु भारज्या रे लाल सुग्स मन सुखकार।
उदरे भिक्खु उपना रे लाल देख्यौ सुपन उदार॥ ४॥

मृगपति मह्रा महिमा निलौ रे लाल पुण्यवंत सुत सुपसाय।
सफल स्वप्न सुखदायकौ रे लाल देखी हरषी माय ॥ ५ ॥
ब्रह्मचारी सुत जन्मियौ रे लाल अनुक्रम अवसर आय।
संवत् सतरेंसे तियासिय रे लाल पद्मराग लेखें ताहि ॥ ६ ॥
आषाढ़ सुदी पख ओपतौ रे लाल तेरस तिथ अथाय।
सम्म सिद्धा त्रयोदशी रे लाल कहै जगत में वाय ॥ ७ ॥
वर्णी माहिलौ दीपतौ रे लाल नक्षत्र मूल निहाल।
पायौ चौथो परवरो रे लाल जन्म थयौ तिण काल ॥ ८ ॥
जन्म किम्याण थयां पछै रे लाल बाल भाव मुकाय।
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे लाल विविध मेलवै न्याय ॥ ९ ॥
सुन्दर इक परण्या सही रे लाल सुखदाइ सुविनीत।
भिक्खु न परभव तणी रे लाल चिन्ता अधिकी चित्त ॥ १० ॥
केता दिन गच्छवास्यां कन्है रे लाल जाता कुलगुरु जाण।
पाछै पोत्याबन्ध कन्है रे लाल सुणवा लाग्या बखाण ॥ ११ ॥
पछ धारया रुघनाथ जी रे लाल छोड्या पोत्याबंध।
ते हिवड़ां समम सरधै नहीं रे लाल न सरधे सामायक संध ॥ १२ ॥
काल किलीक किर्यां पछै रे लाल दीक्षा आदरियौ सार।
भिक्खु नैं तसु भारज्या रे लाल चारित्र नी चित्त धार ॥ १३ ॥
मेवी संजम त्यां ल्यां रे लाल एकान्तर अवधार।
अभिग्रह एहवो आदर्यो रे लाल विरक्त पणैं सुविचार ॥ १४ ॥
तठा पछै त्रिया तणो रे लाल पड़ियौ तांम वियोग।
वर सगपण किन्ता बहु रे लाल भिक्खु न वंछ्या भोग ॥ १५ ॥
दीक्षा में त्यारी थया रे लाल अनुमति न दियै माय।
रुघनाथ जी नैं इम कह्यो रे लाल, मैं सिंह स्वप्न देखाय ॥ १६ ॥
तब बोल्या रुघनाथ जी रे लाल सांभल बाई वाय।
सिंह तणी पर गूंजसी रे लाल ए स्वप्नो छै चवदां मांय ॥ १७ ॥
अनुमति मा आपी तदा रे लाल सहस रोकड़ उन्मान।
भिक्षु दिया जननी भणी रे लाल चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥
दीक्ष्या महोत्सव दीपता रे लाल बगड़ी शहर बखांण।
द्रव्य चारित्र धारियौ रे लाल भावे चरण न जांण ॥ १९ ॥
धन अगार भार सम रे लाल घर छोड्यो चिप जांण।
द्रव्य गुरु धार्या रुघनाथ जी रे लाल जिण नाई धम्म नीं छांण ॥ २० ॥

बुद्धिवंत जिण भ्रम नां मिटै, तिण सूं थे बुद्धिवान।
आय चर्चा मेटो तेहनीं इम कहि मेल्या ते स्थान॥ ४ ॥
टोकरजी हरनाथजी वीरभाणजी साथ।
भिक्खु शिष भारीमालजी दीक्षा दी निज हाथ॥ ५ ॥
ऐ साथ लेई भिक्खु आविया राजनगर मझार।
सम्वत् अठारे पनरै समैं चौमासो गुणकार॥ ६ ॥
चूंप धरी चरचा करी सामां थी तिण वार।
ते कहै वात भिक्खु भणी आप देखो आचार॥ ७ ॥
आधाकरमी थानक आवश्या मोल लिया प्रसिद्ध।
उपधि वस्त्र पात्र अधिक ही आ पिण थे वात कीधी॥ ८ ॥
जांण किंवाड़ जड़ी सदा, इत्यादिक अवलोक।
म्हे वन्दना करां किण रीत सूं देखो थाप्या दोष॥ ९ ॥
द्रव्य गुरु नीं बेंण राखवा भिक्खु बुद्धि ना भण्डार।
अकल चतुराई करी तदा विमा आय विचार॥ १० ॥
करण विविध केलवी करी त्यांनें घणां समझाया।
ते कहै शंका मिटी नहीं पिण निसुणो मुझ वाया॥ ११ ॥
आप वरागी बुद्धिवंत छो आपरी परतीत।
तिण कारण वन्दना करां आप जगत में वदीत॥ १२ ॥
इम कहिम वंदना करी इह अवसर मांय।
भिक्खु रै असाता वेदनी उदय आवी अथाय॥ १३ ॥
अधिक ताव अति आकरो सीओ दोहरो सहणो।
उत्तम नर ने ते अवसरै, कठै चित रहणो॥ १४ ॥
अधम पुन्य दुःख उपना करै हाय्वतराय।
समचित वेदन नां सहै, पावे पिण्ड मराय॥ १५ ॥
तीव्र ताव नीं वेदना भिक्खु नै अधिकाय।
तिण अवसर मैं आविया एहवा अध्यवसाय॥ १६ ॥
म्हे छापां मे तौ मूढ़ जिम्या श्री जिन वचन उथाय।
आउ आय इण अवसर तो माठी गति पाय॥ १७ ॥
द्रव्य गुरु काम भाव भली तो हिवे वात विचारूं।
कारण मिथ्यां निरास सूं सांचो मारग धारूं॥ १८ ॥
जेम सिद्धान्त में जिन कह्यौ चूंप धरी तिम चालूं।
कांण न राखूं केहनी मठ जिन मारग भाखूं॥ १९ ॥

एहवो अभिग्रह आदरयो भिक्खु ताव मझार।
उत्तम पुरुष में आ भयो, भव परभव नों अपार ॥ २० ॥
दूजी हाले आविया राजनगर सुरीत।
आंख अभ्यन्तर उपनी निर्मल धारी नीत ॥ २१ ॥

दुहा

तुरत ताव तब उतरयो विमर्सु कियौ विचार।
हिव साचो मत आदरी करूं आतम तणो उद्धार ॥ १ ॥
रखे जूठ आगम मो भणी सौ करणी पक्की पिछांण।
इम चिंतवि सिद्धांत, वांच्या अधिक सुजांण ॥ २ ॥
जो साचो नं भूठ कहूं तो परभव र मांय।
जीम पांमणी दाहिली विविध पण दुख पाय ॥ ३ ॥
पक्ष राखी द्रव्य गुर भणी जो कहूं साचो सोय।
तो पिण परभव न बिय काम कठिन अति होय ॥ ३ ॥
औ दुधारो खांडो अछै, एहवी मन म धार।
दोय दोय बार सूत्रां भणी वांच्या धर अति प्यार ॥ ४ ॥
सूत्र विविध निर्णय करी गाढ़ी मन में धार।
सम्यक्त चारित्र जिहु नहीं एहवो कियो विचार ॥ ६ ॥
मार्गा मे भिक्खु कह्यो थे तो साचा सोय।
म्हे भूठ गुरु सूं मिल्यि शुद्ध मग लम्यां जोय ॥ ७ ॥
भाषा सुण हरष्या घणा बोल्या एहवी वाय।
अब म्हारी शंका मिटी दिल मे रही न काय ॥ ८ ॥
प्रतीत आप तणी हुंती जिसी म्हारा मन मांय।
तिसी निकाड़ी तुरत ही इम कही हरषत थाय ॥ ९ ॥

ढाल ३

[रात्ते माथै सुररे सूझा—ए देशी]

राजनगर थी कियो विहार, चोमासो रुतरियां सार।
आय सुरधर देश मझार रे।
मन प्यारा भिक्खु जश रसायण सुणिजे ॥ १ ॥
मार्गा म शहु बात सुणाई सरधा तिरिया ओलखाई।
ते तिण सुण हरष्या मन मांही रे। म० ॥ २ ॥
टोकरजी हरनाथजी ताय भागेमाल घणा सुखदाय।
समभी मागा पछे पाय रे। म० ॥ ३ ॥

वत ढाल कही ए तीजी, भीरमांण नी वात कहीजी।
भूप भिक्खु नीं वात रहीजी रे भ०॥२०॥

दुहा

हिव भिक्खु द्रव्य गुरु भणी वन्दै बेकर जोड़।
माथै हाथ दियौ नहीं अचभा देख्या ओर॥ १ ॥
जब भिक्खु मन जाणियो आगूंच आखी वात।
पहिलमी मनड़ो फिर गयो तो पूछूं साख्यात॥ २ ॥
कर जोड़ी नै इम कहै, मूं क्यूं स्वामीनाथ।
चित्त उदास तिण कारण माथै न दियौ हाथ॥ ३ ॥
द्रव्य गुरु भाखै तांहरै शंक पड़ी सुविचार।
तिण सूं कर शिर नां दियो मन पिण फाटौ धार॥ ४ ॥
वलि थांरै न मांहरै भली नहीं आहार।
वचन सुणी भिक्खु कहै, दाव मंटी इहवार॥ ५ ॥
वलि भिक्खु मन चिन्तवै म्हांमें यांमें आंण।
संजम समगत को नहीं पिण छिवड़ा म करणी तांण॥ ६ ॥
प्राछित लेई एहन थू प्रतीत उपजाय।
पछै समफकर न समभ्रय नै आणूं मारग ठाय॥ ७ ॥
इम चिन्तव द्रव्य गुरु भणी बोलै एहवी वाय।
शंक जांणो तो मुफ भणी प्राछित दौ सुखदाय॥ ८ ॥
इम प्रतीत उपजायन भेली किन्यौ आहार।
हिवै समभावै किण विधे ते सुणज्यो विस्तार॥ ९ ॥

ढाल ४

[हिव रांणी नै हो समभावै पण्डिता धाय—ए देशी]

हिवै द्रव्य गुरुनै हो समभावै भिक्खु स्वाम।
सूत्र वयण विस सरधो निसुणो बाल अभांम॥ १ ॥
अरि अघ हणिव हो देव कह्या अरिहन्त।
धम्म जिनेस्वर भाखियो गुरु जांणो निर्ग्रन्थ॥ २ ॥
साची सरधा हो ए जांणो तत धार, धांम तिण सूं पार।
आज्ञा बार धर्म को नहीं॥ ३ ॥
यां तीनू मैं हो भेल म जांणा लिगार, अन्तर आंख उघाड़।
सूत्र सील सरधी सही॥ ४ ॥

और वस्तु में हो मेल पड़ जो माय तो रूप्रौ पिण बिगड़ाय।
तौ पुन्य पाप मेला किम हुवै॥ ५ ॥
असुभ जोगां सूं हो बंधै पाप एकन्त शुभ सूं पुण्य बधंत।
पुण्य पाप मेला किया जोग सूं॥ ६ ॥
एकै करणी हो बंध पुन्य नै पाप तिण में मिश्र न थाप।
करणी तीज्यी जिन मां कही॥ ७ ॥
भिक्खु मार्खं हो प्रम्य गुर नैं अवलोय जिन वचन साह्मो जोय।
म्हौ टेक न परिहरो॥ ८ ॥
शुद्ध श्रद्धा हो हाप न आई थीकार, असल नहीं आचार।
थाप दीस घणा दोष री॥ ९ ॥
जो थे मानो हो सूत्र नीं बात तो थेहज म्हारा नाथ।
नहितर ठीक लागै नहीं॥ १० ॥
म्हे घर छोड्या हो आतम तारण काम और नहीं परिणाम।
तिणसूं बार बार कहूं आपन॥ ११ ॥
आप मांनी हो स्वामी सूत्र नी बात, छोड़ देवो पक्षपात।
इक दिन परभव जावणो॥ १२ ॥
पूजा प्रशंसा हो रुड़ी अमस्ती वार, दुलभ श्रद्धा थीकार।
निणय करौ आप एहवौं॥ १३ ॥
विविध विनय सूं हो भाख्या वयण उदार मान्या नहीं लिगार।
क्रोध करी उलटा पड़्या॥ १४ ॥
भिक्खु भारी हो स्वामी बुद्धि ना भण्डार, मन सूं कियो विचार।
ए हिवड़ा न दीसै समझता॥ १५ ॥
धीरै २ हो समझावस्यूं धर प्रेम आप विचारी एम।
तिण सूं आहार पाणी तोड़्यो नहीं॥ १६ ॥
भिक्खु मार्खं हो मेलो करो चौमास चरचा करस्यां विमास।
साच झूठ निणय करां॥ १७ ॥
साची सरधा हो आदरस्यां सुखदाय झूठी देस्यां छिटकाय।
तब वास्या रुघनाथ जी॥ १८ ॥
म्हारा साधां में हो तूं लेवै फटाय जो चौमासो भेलो थाय।
भिक्खु कहै राखो जद साध नैं॥ १९ ॥
ते चरचा में हो समझै नहीं लिगार, करौ चौमासौ थीकार।
दुलभ सांमग्री ए लही॥ २० ॥

इण विध कीधा हो भिक्खु अनेक उपाय तौ पिण नाया ठाय।
कर्म भमा तिण कारणें ॥ २१ ॥
पछे मिलिया हो भिक्खु दूजी वार, बगड़ी शहर मझार।
आय द्रव्य गुरु नें इम कहै ॥ २२ ॥
स्वामी भूला हो शुद्ध श्रद्धा आचार, मन में करौ विचार।
विविध प्रकार समझाविया ॥ २३ ॥
पिण नहीं मानी हो द्रव्य गुरु बात लिगार, तांण लियो तिणवार।
ए तौ न दिसै समझता ॥ २४ ॥
निज आत्म नौं हो हिव हूं करूं निस्तार एहवी मन में धार।
आहार पाणी तोड़ निसरया ॥ २५ ॥
चौथी ढाले हो आख्यौ चरचा सरूप आखी रीत अनूप।
आगलि बात सुहांमणी ॥ २६ ॥

दुहा

थानक बार निसरया, तजके आहारज तोड़।
जब द्रव्य गुरु मन जांणियौ बात हुई अति जोर ॥ १ ॥
रहिवा जागां नां मिलै, तो फिर थानक आय।
सेवक फिरियौ शहर म जागां म दीज्यो काय ॥ २ ॥
जो रहिवा भिक्खु भणी जागां दीधी जांण।
सब साध सुणज्यो सही संघ तणी छै आंण ॥ ३ ॥
कहली कुबुद्धिज केलवी भाखी पाधा एम।
जब भिक्खु मन जांणियौ करिवौ विचार केम ॥ ४ ॥
पुर में जागां नां दियै, जो फिर थानक जाय।
तौ पाछौ फन्द में पडूं सुखे निसरणौ थाय ॥ ५ ॥
एहवी करे विचारणा, विहार कियो तिण वार।
सूरवीर सिंह नी परै, न डरया मूल लिगार ॥ ६ ॥
आया बगड़ी बारण, बाजन्त अधिक विशेष।
बाजी तब पग थांभिया भिक्खु परम विवेक ॥ ७ ॥
जैतसिंहजी री जिहां छत्र्यां अधिक उदार।
देखी नै आया जिहां बैठा छत्र्यां मझार ॥ ८ ॥
पुर मांहि जाण्यौ प्रगट, सुण्यो द्रव्य गुरु सोय।
आया छत्र्यां में चियै, साथे बहुला लोय ॥ ९ ॥

ढाल ५

(राम कहै सुग्रीव नै रे लङ्का केतिक दूर—ए देशी)

बगड़ी री धर्म्यां मझे रे बहु लोक बांदै इम आय।
टोलो छोड़ी मत निकलो रे, भय धरो मन मांय।
चतुर नर भिक्खु बुद्धि नों भंडार ॥ १ ॥

रघनाथजी इसड़ी कहै रे, थे मानों सीखामणी बात।
सन्नारे आरो पांचमो रे, नहीं निभीला साख्यात। च० ॥ २ ॥

भिक्खु अरज भाखै भली रे म्हे किम मानां तुम बात।
म्हें सूत्र बांचे निर्णो कियो रे शङ्का नहीं तिल मात। च० ॥ ३ ॥

सीख श्रीजिनवर तणी रे, छेहड़ा ताई विचार।
श्री जिन आज्ञा सिर धरी रे, शुद्ध पालस्यूं संजम भार। च० ॥ ४ ॥

ए वचन सुणी द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश तिवार।
मोह आयो तिण अवसरे रे, चिन्ता हुई अपार। च० ॥ ५ ॥

सोमजी ऋष नों साथ थो रे उदैभाण कहै एम।
टोला तणा धणी आपने रे, आंसू पथ करो केम। च० ॥ ६ ॥

किणरो एक आवै तरै रे, आवै फिकर अपार।
म्हारा पांच आवै सही रे, गण में पड़ै बिगाड़। च० ॥ ७ ॥

मोह देखी द्रव्य गुरु तणा रे, दृढ चित्त भिक्खु धार।
मैं घर छोड्यो तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार। च० ॥ ८ ॥

आगलो मेली हूं रहूं रे, तो परभव में पेस।
जिनिय पणे रोवणों पड़े रे पामे दुःख विशेष। च ॥ ९ ॥

कठिन छाती इम चित करी रे, बादै स्वाम विचार।
सेठ रह्या तिण अवसरे रे, उत्तम जीव उदार। च० ॥ १० ॥

इण स्यूं तुरत नर नो जीगै रे, राग व दुख चलाय।
द्रव्य गुरु मोह आण्यो सही रे, पिण कारी न लागी कांय। च० ॥ ११ ॥

फेर बोल्या रघनाथजी रे, जासी केतियक दूर।
आगो थांरी मैं पूठे मांहरौ रे, लोक लगावस्यूं पूर। च० ॥ १२ ॥

परीषह खमण री मुझ मन मझे रे, भिक्खु भाखै विमास।
इम तो डरायो नहीं डरै रे, जीवणु कितोयक काल। च० ॥ १३ ॥

विहार कियो आगी थकी रे, द्रव्य गुरु लार देख।
परचा करी बहुल मझे रे, समझाज्यो सुविशेष। च० ॥ १४ ॥

जैमलजी रै जुक्ति सूं दी सरधा बैसार।
भिक्खु रे साथे भला ते पिण हो गया त्यार ॥ ३ ॥
वात सुणी रुघनाथजी मांग्या तसुं परिणाम।
फकीर वाली दुपटी हुसी नहिं हुवै थांरो मांम ॥ ४ ॥
बुद्धिवन्त साधु साधवी लेसी त्यांनैं लार।
लाई कोड घर छोडिया और होसी निराधार ॥ ५ ॥
थांनैं रोसी सहु जणा थे म विचारौ वात।
थांरै बहु परिवार छै, घणा तणा थे नाथ ॥ ६ ॥
थांरा साधां रा जोग सूं होसी भिक्खु री काम।
टोली भिक्खु री वाजसी थांरो न हुवै नांम ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचनां करी पाड्या तसुं परिणाम।
तब जैमलजी बोलिया सुणो भीखणजी आंम ॥ ८ ॥
गला किती हूं वल गयो थे गुरु पालो सोय।
पंडितां रै आणी वरौ इम बोल्या अवलोय ॥ ९ ॥

ढाल ६

[सुण सुण रे शिष्य सयाणा—ए देशी]

शिष्य भिक्खु ना महा सुखकारी भारीमाल सरल भद्र भारी।
त्यांरो तात कृष्णोजी तास तिहुं घर छोड्यो भिक्खु पास।
सुण सुण रे शिष्य सयाणा स्वामी भिक्खु बड़ा रसीला।
भिक्खु जग रस अमृत भारी शिव सम्पति सुख सहचारी। ॥ १ ॥
आमर दशमैं वय आया भारीमाल सरल सुखदाया।
मेघपाटचा माहि छता सोय सुत तात भिक्खु शिष्य होय। सु० ॥ २ ॥
त्यांर धर्मा तणी छै रीत तिणसूं शिष्य किया धरि प्रीत।
त्यांमें रह्या आमर्ष वश धार पछ निमरिया भिक्खु सार। सु० ॥ ३ ॥
कृष्णाजी री प्रकृति करडी जाणी भारीमाल भणी पद वाणी।
साधम स्वामी भणीं तुम तात तुम तो उत्तम जीव विख्यात। सु० ॥ ४ ॥
आरा मनी दीन्या ऐम्या रोय सागू हाता न्मि बहु लोय।
माग्नर गोगो वचनानि ताय कृष्णाजी मे द्वार अधिराय। सु० ॥ ५ ॥
तुम मन सुन पाग रहिवा रो मैं निज जनर बन्दै आवारो।
इम पृछपी भिक्खु पर प्रेम, भारीमाल उत्तर दियो एम। सु० ॥ ६ ॥

म्हांरै तात पछै काई काम हूं छो माय कन्हें रहस्यूं ताम।
संजम पालस्यूं रूड़ी रीत मोनें आप तणी परतीत। सु० ॥ ७ ॥
कृष्णाजी न भिक्खु कहै तांम थांसूं मूल नहीं म्हारे काम।
चारित पालणो दुक्कर कार, तिण सूं थानें न सेवो लगार। सु० ॥ ८ ॥
किस्तीजी कहै मोनें न रखो तो म्हारो पुत्र मोनें सूंप देवो।
सुत न राखसूं मुझ साथ, इण नें रखावा न देऊं विख्यात। सु० ॥ ९ ॥
भिक्खु कहै पुत्र ए थारो भावै तो नहीं वरजां लिगारो।
जब आयो भारीमाल पास और जागां रेई गयो तास। सु० ॥१०॥
भारीमाल पिता नें भाख कृष्णाजी री थांण मही राखै।
थारां हाथ तणुं अन पांण, म्हारे जाव जीव पचखांण। सु० ॥ ११ ॥
भारीमाल अभिग्रह कीयों भारी दिन दोय निसरया तिवारी।
रह्या सुरगिर जेम सधीरा हलुकर्मी अमोलक हीरा। सु० ॥ १२ ॥
तब बाप थाकी तिण वार, भिक्खु न आण सूंप्या उदार।
थांसूंईज राजी छै एह, म्हांसूं छो नहीं मूल सनेह। सु ॥ १३ ॥
इण न आहार पाणी आंण दीजे, स्वाम जतन करी राखीज।
म्हारी पण गति कांइक कीज, किण ही ठिकाण मोनें मेलीज। सु० ॥ १४ ॥
मे नहीं रिख्यो संजम भारो जितरै करो ठिकांणो म्हांरो।
भिक्खु सूंप्यो जगसजी न आंण जगस्जी हरख्या अति आंण। सु० ॥ १५ ॥
जगस्जी बोल्या तिणवारी देखो भीखणजी री बुद्धि भारी।
सूंप्यो कृष्णोजी म्हांनें सोय तीनां घरां बधांवणा होय। सु० ॥ १६ ॥
कृष्णो हर्ष्यों ठिकांण हूं आयो म्हे पिण हर्ष्या चलो एक पायो।
भिक्खु हर्ष्या टलियो औगालो तीनां घरां बधांवणा न्हालो। सु० ॥ १७ ॥
भारीमाल रो सहूट टलियो मन वाञ्छत कारज फलियो।
छूटी डाल भारीमाल भारी रह्या भविक अचल गुणधारी। सु० ॥ १८ ॥

दुहा

हिव भिक्खु भारीमालजी संत आदि दे तार।
मनमोबा मोटी कियो चारित ऐंणी पार ॥ १ ॥
पहर जोधांणा में सही तरह श्रावक ताहि।
सामायक पोषा करी बैठ्या बाजार र मांहि ॥ २ ॥
पतेचन्द मिया प्रगट दावोण पण दीवांन।
[illegible] ॥ ३ ॥

सामायक पोसा सखर चौमा चोहटे केम।
थानक मे वर्यू नां किया उत्तर आपो एम॥ ४ ॥
तब थानक मन थिर कियो मुझ गुरु महिमावंत।
भिक्खु ऋष भारी घणा परहर दियो कुपंथ॥ ५ ॥
कहै दीवाण किम निसरया बलि श्रावक बोल्या।
बात घणी थिरता हुवं जब सुणजो घर खंत॥ ६ ॥
दीवान कहै थिरता अवहि, कणजो सगली वात।
श्रावक तब आखं सकल विवरा सुध विख्यात॥ ७ ॥
आधाकर्मी आदि दे दूर किया बहु दोष।
सिंघी सुण हर्ष्यो सही पायो परम सन्तोष॥ ८ ॥
साधु नों ओलिन शुद्ध मारग मोटो मांण।
प्रशंसं सिंघी प्रगट, बारू करे बखाण॥ ९ ॥

ढाल ७

[सोई तेरापंथ—ए देशी]

फतचन्द दीवान ते वलि पूछा कर बारू हो।
श्रावक ये केता सही भाखो धम उदारू हो।
शिव साधन सारू हो भिक्खु अस सांभलो बारू हो॥ १ ॥
श्रावक कहै तेरै अछा आतम तारण हारू हो।
सिंघी वलि पूछ सही संत किता सुखकारू हो।
नीका शिव ने सारू हो।॥ भि २॥
श्रावक कहै तेरै सही साधु सखर व्रतधारू हो।
भिक्खु समण शिरोमणि बर मारग विस्तारू हो।
साधण सिव पट सारू हो।॥ भि ३॥
सिंघी कहै आछो मिल्यो वर जोग विचारू हो।
श्रावक पिण तेर सही तेरे संत संत सारू हो।
भिक्खु बुद्धि मा भण्डारू हो।॥ भि ४॥
सिंघी सुन प्रशंसा गुण्यि समण ऊभो सुभारू हो।
सद्गुनिम लिग जोड्यो तुकौ तेरा पंथ ए तारू हो।
विख्यातो नांम वारू हो।॥ भि ५॥

हिन्सा मूठ मवत हरै, मैथुन परिग्रह मिटावै हो।
तीन करण तीन जोग सूं त्याग करी तन तावै हो।
बाद व्रत बसावै हो ॥ १० ॥
इर्या मापा एषणा रूडी रीत रखावै हो।
आयाण मण्ड निखेवणा परठण जैणा करावै हो।
सखरी सुमति सुहावै हो ॥ ११ ॥
अशुद्ध मन नहीं आदरै वच सावज्ज वस लावै हो।
पाडुइ काया परिहरै तीन गुप्त तंत लावै हो।
थिरता पद चित्त चावै हो ॥ १२ ॥
सखर ठाम आ सातमी गुण भिक्खु ना गावै हो।
नाम तेरापन्थ निमळो अब अनुपम भावै हो।
सखरो सुजस सुणावै हो ॥ १३ ॥

दुहा

भारी बुद्धि भिक्खु तणी निर्मल मेल्या न्याय।
अरिहन्त आज्ञा धाप नै श्रद्धा दी ओलखाय ॥ १ ॥
चरचा कर त्यारी हुवा तेर जणा सिणगार।
नाम कहूं हिव तेहना, भिक्खु गण शृङ्गार ॥ २ ॥
थिरपालजी फतेचन्दजी बडा तात सुत बेहु।
भिक्खु आचारज भला ज्ञान कल्प गुण गेह ॥ ३ ॥
टोकरजी हरनाथजी भारीमाल सुविनीत।
सरल भद्र सुखदायका परम पूज्य सूं प्रीत ॥ ४ ॥
वीरभाणजी सातमां लिखमीचन्दजी सार।
बखतरांम नै गुलाबजी दूजो भारमल धार ॥ ५ ॥
रूपचन्द नै पेमजी ए तेरां रा नाम।
नवी दीक्षा स्वा तणा तेरां रा परिणाम ॥ ६ ॥
रघनाथजी रा पांच ई, छः जयमलजी रा जोय।
दोय अन्य टोळां तणा ए तेरह ही होय ॥ ७ ॥
चर्चा केलवा बोन्ह री करी माहोमा ताम।
वन्क आज्ञा बरधिया ऊपर आयो चोमास ॥ ८ ॥
चोमासा सगला मळी भिक्खु दिया भळाय।
आषाढ सुदि पूनम दिन संजम लीध्या ताय ॥ ९ ॥

ढाल ८

[सीहल नृप कहै चन्द नै—ए देशी]

भिक्खु मुख सूं इम भणै, मुणिन्द मोरा चौमासो उतरयां जाण हो।
सरधा आचार मींड्यां पछै, मुणिन्द० भेलो करस्यां आहार पाण हो।
सखर गुणां कर शोभतो स्वाम भिक्खु गुण निलो।
मु० अधिक ओजागर आण हो ॥ १ ॥
जो श्रद्धा आचार मिली नहीं मु० तो भेलो न कर्यो आहार हो।
इम पहला समझाविया मु० आया देश मेवाड़ हो ॥ २ ॥
सम्वत् अठारै सतरै समैं मु० पंचांग लेखे पिछाण हो।
आसाढ़ सुदी पुनम दिनै मु० केलवै दीक्षा विख्यात हो ॥ ३ ॥
अरिहन्त नीं लेई आगन्या मु० पचख्या पाप अठार हो।
सिद्ध साखे करी स्वामजी मु० लीधो संजम भार हो ॥ ४ ॥
हरनाथजी हाजर हुंता मु० टोकरजी भिक्खु पास हो।
परम भगता भारीमालजी मु० पूरो थ्यांरो विश्वास हो ॥ ५ ॥
सतरोतरै केलवा मझै, मु० प्रथम चौमासो पेख हो।
देवल अंधारी ओरी तिहां मु० कष्ट सह्यो सुविशेष हो ॥ ६ ॥
हिवै चौमासो उतरयो मु० भेला हुवा सहु आण हो।
वखतराम नै गुलाबजी मु० कालवादी हुवा जाण हो ॥ ७ ॥
नव तत्व में तर्क उपजी मु० इक जीव आठ अजीव हो।
जे सिद्धा में वस्त पावै नहीं मु० सरधै काल सजीव हो ॥ ८ ॥
थिरपालजी फतैचन्दजी मु० भिक्खु स्वाम जग भाण हो।
टोकरजी हरनाथजी मु० भारीमाल बहु जाण हो ॥ ९ ॥
सातूं चित्त भेला रह्या मु० घर घर संत वदीत हो।
जावजीव लग जोगज्यो मु० परम माह्नोमांहि प्रीत हो ॥ १० ॥
सात जणा भेला नां रह्या मु० भेषधर पुर ही पी प्यार हो।
गोचरी पाछै थ्यारो थयो मु० पेट न पोहता पार हो ॥ ११ ॥
वर विनीत वीरभांणजी, मु० रह्या भिक्खु रै हजूर हो।
अविनय अवगुण आदरी मु० तिण सूं विनय में किधी दूर हो ॥ १२ ॥
पछै श्रद्धा पिण फिर गई मु० वीरभाण री विशेष हो।
इन्द्रियां सावज श्रद्धने मु० कहे द्रव्य भाव जीव एक हो ॥ १३ ॥

भनेक बोल ऊंधा पड्या मु० विगड़ी अविनय थी वात हो।
वर्ष बतीसी गण धारै किन्यो मु० पछे मघा नें सूंप्या साख्यात हो ।।१४।।
पट रह्या तेरा माहिरा मु सात हुवा क्रम सूर हो।
गिण पुण्य प्रबल भिक्खु तणा मु० दिन दिन चढ़ते नूर हो ।। १५ ।।
पूरा सिंह तणी परे मु० सुर-गिर जेम सधीर हो।
अद्भुत ओजागर अति घणा मु० विक्रम निभावम धीर हो ।। १६ ।।
टोली छोडी नें निसरया मु० त्यांरी पिण नहीं तमाम हो।
ग्रन्थ हजारां जोड़िनें, मु० मघवा दीधी ओलखाय हो ।। १७ ।।
अतिशय भारी ओपता, मु० शासण शिरमणि मौड़ हो।
आचाम इण काल में मु० मबर न एहनीं जोड़ हो ।। १८ ।।
सावद्य निरवद्य छोलनें मु० दान दया ओलखाय हो।
व्रत अव्रत वर धारता मु० भिन्न भिन्न भेद बताय हो ।। १९ ।।
उत्पत्तिया बुद्धि आपरी मु आछी अधिक अनूप हो।
दृष्टान्त विविधप दीपता मु० चित्त चरचा अति चूंप हो ।। २० ।।
ढाल भली ए आठमी मु० भिक्खु गुण रा भंडार हो।
उमङ्ग करी चरण आदरयो मु० समण शिरोमणि सार हो ।। २१ ।।

दुहा

स्वाम मारग साचो सिंघो करवा जन्म कल्याण।
कुगुरु कुबुद्धि अति केलवी जन भरमाया जाण ।। १ ।।
मागल भेष भारया तणे, उपनों दुख अत्यन्त।
लोकां मणी स्मावियां विविध वचन विलपन्त ।। २ ।।
कोई सजू मारो कीध्यो मती लाग आर्यका लाल।
निन्हव छ ए निकल्या कोई कहै जमाली गोसाल ।। ३ ।।
यां वेष गुरु मे उत्थापिया दान दया नै उत्थाप।
जीव बचायां तेह में ए कहै अठारै पाप ।। ४ ।।
मगु भिक्खाया पुत्रां मणी साधां मैं चूक बताय।
ज्यूं भिक्खु सूं भिड़काविया लौकिक मिसिघो न्याय ।। ५ ।।
जिहां जिहां भिक्खु विचरता आगूंच जोवै वाट।
कहयो करजै आयज्यो मती, पोथ्यां में होय जाय घाट ।। ६ ।।
केई तो प्रश्न पूछवा कैमक देखण काज।
।। ७ ।।

उपसर्ग अनेक दे रह्या बर वचन विकराल।
पिण क्षमा भिक्खु तणी धारं अधिक विसाल॥ ८ ॥
अधिक नीत आचार नीं अधिक सुमति उपयोग।
अधिक गुप्त गुण आगला अघहारी शुभ जोग॥ ९ ॥

ढाल ६

[ब्रजवासी सखा कान्ह तैं मेरी गागर क्यं मारी—ए देशी]

भिक्खु स्वाम भारी जगत उद्धारक जशधारी। ए आंकडी॥
भारी रे सिम्यां गुण भिक्खु नौं भार २ निर्ममी मुनि निर्मल न्हाल। भि०॥ १ ॥
कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २ निरहंकार रुडी नरमाय। भि०॥ २ ॥
लाघव कम उपधि वर साज २, सत्य वचन स्वामी सुख साज। भि०॥ ३ ॥
वाह रे भिक्खु नौ संजम वाह वाह २, सीधौ मनुष्य जनम नो लाह। भि०॥ ४ ॥
वाह रे भिक्खु नौ तप तहतीक २ रूडै चित्त मुनि महा रमणीक। भि०॥ ५ ॥
वाह रे दान मुनि नैं व प्राण २ नित्य प्रति गौचरी करत प्रधान। भि०॥ ६ ॥
भोर ब्रह्म भिक्खु नौ सार २, सझ रहित तिहुं जोग धीकार। भि०॥ ७ ॥
इर्या धुन भिक्खु मुनिराज २, जाणके चाल रह्यौ गजराज। भि०॥ ८ ॥
भाषा सुमति भिक्खु नीं भाल २, निर्वद्य निमल सुधा सम न्हाल। भि०॥ ९ ॥
एषणा अधिक अनुपम सार २ देखत हारी पामैं चमत्कार। भि०॥ १० ॥
वस्त्रादि लैंतो लैंणा विशेष २, म्हेल्तां अति उपयोग संपेख। भि०॥ ११ ॥
पचमी सुमति भिक्खु नीं पिछाण २, सावचेत भिक्खु सुविहांण। भि०॥ १२ ॥
मन वच काया गुप्त गुणवन्त २, सत दत शील दया निग्रंथ। भि०॥ १३ ॥
अष्ट सम्पदा गुण अधिकार २, आचार्य भिक्खु अणगार। भि०॥ १४ ॥
आचारज ना गुण गुणतीस २ भिक्खु मैं शोभै निश दिस। भि०॥ १५ ॥
पञ्च महाव्रत निमल पालत २, च्यार कषाय भिक्खु टालंत। भि०॥ १६ ॥
वश करै इन्द्रिय पञ्च विचार २, पञ्च सुमति त्रिन गुप्ति उदार। भि०॥ १७ ॥
आचार पञ्च भिक्खु ना अमोल २ बाह सहित ब्रह्म अधिक अतोल। भि०॥ १८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि भिक्खु नीं उदार २ हतुमग जाव दिये ततसार। भि॥ १९ ॥
अन्यमति स्वमति सुण वच सार २ चित्त माहै पामै चमत्कार। भि०॥ २ ॥
वाह रे भिक्खु धारा दृष्टन्त २ आश्चर्यकारी अधिक अत्यन्त। भि॥ २१ ॥
वाह रे भिक्खु शुभ बुद्धि ना जाव २ पूछ्यां उत्तर देवै सताव। भि०॥ २२ ॥
वाह रे भिक्खु वीर्य आचार २ हे विधो उद्यम अधिक उदार। भि०॥ २३ ॥
वाह रे भिक्खु शुभ नीत वैराग २ तूं प्रगम्यो बहु जन मैं भाग। भि०॥ २४ ॥

वाह रे भिक्खु तूं गिरवो गम्भीर २ तूं गुणदधि* गुण पामें तीर। मि० ॥ २५ ॥
वाह रे भिक्खु तुझ मुद्रा ऐन २, पेखत पामें चित्त में चैन। मि० ॥ २६ ॥
सांकडी सूरत दीर्घ देह विशाल २, लाल नयण गज हस्ती नीं चाल। मि० ॥ २७ ॥
जीव घणा तिरणा इण काल २ आगूंच देख्या दीन दयाल। मि० ॥ २८ ॥
त्यां जीवां रे तरण रै साज २ तूं प्रगटयो मोटो मुनिराज। मि० ॥ २९ ॥
याद आवे भिक्खु दिन रैन २, तन मन विकसावे मुझ नैन। मि० ॥ ३० ॥
मरणो लेवर ते चाख्यो शुद्ध माग २, भ्रम भञ्जन मुनि तू महाभाग। मि० ॥ ३१ ॥
अनघ अथग गुण भिक्खु मझार २, में संक्षेप कह्यो सुविचार। मि ॥ ३२ ॥
नवमी ढाले भिक्खु रूप न्हाल २, महिमागर मोटा गुण माल। मि० ॥ ३३ ॥

दुहा

भारी गुण भिक्खु तणा कह्या कठा लग जाय।
मरण भार शुद्ध मग किणी कमिय न राखी काय॥ १ ॥
परम दुर्लभ श्रद्धा प्रगट, आखी श्रीजिन आप।
तीजे उत्तराध्ययन तन्त थिर भिक्खु चित्त थाप॥ २ ॥
बहुलकर्मी जीव बहु, उपजिया इण आर।
तिणमें वैराग्य दोहिली श्रद्धा महा सुखकार॥ ३ ॥
परम पूरी भूर परगियो श्रीजिन श्रद्धा सार।
शुद्ध धरत्यां समकित सही भिक्खु किणी विचार॥ ४ ॥
धर्म तणा द्वषी घणा लागू बहुल्ला लोग।
सममझाया समझै नहीं अधिका मूढ अयोग॥ ५ ॥
जब भिक्खु मन जाणियो, कर तप कर्म निरयाण।
मग नहीं मिले चारस्तो अति घम लोग अजाण॥ ६ ॥
घर छोड़ि मुझ गण मझै, सह्यम गुण रु सोय।
थावर में बसि थाविरा, हुंता न दिसै कोय॥ ७ ॥
एहवी करे आलोचना एकन्तर अवधार।
आतापन बलि आदरी संतां साथ सार॥ ८ ॥
चौविहार उपवास चित्त उपधि प्रही सहु संत।
आतापन रु वन मझै, तप कर तन तावत॥ ९ ॥

---

*गुणदधि = गुणोदधि

ढाल १०

[पूज्यजी पधारो हो नगरी सेविये—ए देशी]

खेतसीजी स्वामी फतैचन्दजी संत दोनूं सुखकार हो। महामुनि।
तात सुत ने दोनूं तपसी भला सरल भद्र सुविचार हो। महामुनि।
ये भला नें अवतरिया हो भिक्खु भरत क्षत्र मे॥ १॥
टोला में छतां बड़ा स्वाम भिक्खु पकै स्यांनें बड़ा राख्या भिक्खु स्वाम हो।म०।
यांनें छोटा करनै हूं बडो होऊं, इन में सूं परमारथ ताम हो। म०॥ २॥
करै एकान्तर भिक्खु रूप भला सेवै आतापन लाम हो। म०।
व्रत अव्रत लोकां में बताक्ता, बन हर्षे सुभ भाव हो। म०॥ ३॥
सरल भद्र फक लागा समझवा बात फेक बुद्धिवांन हो। म०।
ओलखणा आई श्रद्धा आचार नीं पायो धर्म प्रधांन हो। म०॥ ४॥

सोरठिया

पछ वप पहिछांण रे, मन पिण पूरो नां मिल्यो।
अनुप पण पच आंण रे, धी चोपड तो ज्यांहीई रह्यो॥

ढाल तेहिज

निग्य खेतसीजी फतैचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्खु ने सोय हो। म०।
क्यूं सन छोड़ी ये तपस्या करी समझवा विलै बहु लोय हो। म०॥ ५॥
ये बुद्धिवांन थांरी थिर बुद्धि भली उत्पत्तिया अधिकाय हो। म०।
समझावी बहु जीव सैंणा भणी निर्मल बतावी न्याय हो। म०॥ ६॥
तपस्या करां म्हे आतम तारणी अधिक पीछ नहीं और हो। म०।
आप तरो ये तारो अवर ने थांमो बुद्धि नीं जोर हो। म०॥ ७॥
संत बचा री वचन भिक्खु सुणी थांको थर चित्त थोर हो। म०।
न्याय विशेष बताक्ता निमला हरख्यो हिवड़ो हीर हो। म०॥ ८॥
दान दया हद न्याय दीपावता ओलखावता आचार हो। म०।
जिन वच करी प्रभु माग जमावता, समझाया बहु नर नार हो। म ॥ ९॥
प्रगट मेवाड़ मै पूज्य पधारिया मुक्ति आचार नीं जोड़ हो। म ।
अनुकम्पा दया दान र ऊपरै जोडां करी घर कोड हो। म०॥ १ ॥
अति उपकार करी पूज्य आविया सुरधर देस मझार हो। म ।
सहर पणै वर जोडां सुणावता इम करतां उपगार हो। म०॥ ११॥

व्रत अव्रत मैं मोह अनामता समरी रीत सुचङ्ग हो। म ।
श्री जिन आज्ञा मे धर्म अनामता, सुण जन पामैं उमङ्ग हो। म ॥ १२ ॥
अनाचारी भिक्खु नीं जगत मे नाम्यो अश विख्यात हो। म ।
बुद्धि प्रबल गुण पुण्य नौं योरसौ स्वाम भिक्खु साक्षात हो।म ॥ १३ ॥
शिष्य भारीमाल भिक्खु पै सोभता सरल बडा सुविनीत हो। म॰ ।
भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणे भला परम पूज सूं प्रीत हो। म ॥ १४ ॥
दशमी काले पूज दयाल नीं जाम्री कीरति जाण हो। म ।
देश प्रदेश मांहे जश दीपतौ विस्तरियौ सुविहाण हो। म ॥ १५ ॥

दुहा

साधू श्रावक ने श्राविका सखर भला सुविनीत।
समणी न हुई स्वाम रै तप किसा इम बीत॥ १ ॥
जिण ही भिक्खु न कह्यौ तीर्थ च्यारं तीन।
साध श्रावक न श्राविका समणी नहीं सुचीन ॥ २ ॥
तिण कारण छै तीहर मोदक मोटी मांण।
समणी जिम आम्बौ सही प्रत्यक्ष देख पिछांण ॥ ३ ॥
भिक्खु मूरूप भायै इसौ न्याहू आम्बौ लेख।
पण चोगुणी तणो पवर, स्वाद अनूप संपेख ॥ ४ ॥
आछी बुद्धि उत्पात सूं उत्तर दियो अनूप।
दिन केतै हुई दीपती समणी तीन सरूप ॥ ५ ॥
तीन बायां त्यारी हुई, संजम लेवा साथ।
भिक्खु रिप भायै भली सुन्दर सील साक्षात ॥ ६ ॥
संजम लेवो साथ तिण पण तीनां मे पेख।
वियोग एक तणो हुवां त्यूं करिवौ सुविशेष ॥ ७ ॥
संलेषणा करणी सही त्यां दोयां मैं तांम।
करार पकौ इम करी संजम दीधौ स्वाम ॥ ८ ॥
कुशलांजी मट्टू कही ब्रीजी अजबू ताय।
एक साथै अदरावियो साधपणी सुखदाय ॥ ९ ॥

ढाल ११

[स्वामी श्रेय रायचन्द राजा—ए देशी]

गजब गुण ज्ञान करी गाज रे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै।
गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारीमाल छाज ॥ ए आंकड़ी ॥
सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि अनूप रूड़ा राजै।
घन कर्म घर समरथ चित्त सूं भ्रम कर्म भाजै ॥
गजब गुण ज्ञान करी गाज रे। ग ॥ १ ॥
शान्त दांत चित्त शांति सरागम उभय पक्षी छाज।
परम विनीत प्रीत हद पूरण, शिव रमणी साज। ग ॥ २ ॥
जाणै गोयम वीर जिसी वर, शिष्य वारू वाज।
कार्य भलाया वेकर जोड़ी करत मुक्ति काज। ग ॥ ३ ॥
परम प्रीत पूज्य सूं अल पयसी, पण भवदधि* पाज।
कठिन वचन गुरु सीख कहै तो समचित्त मुनि साज। ग ॥ ४ ॥
उत्तराध्ययन छत्तीसे अध्ययन उत्तम छतां अधिकारी।
चार भनक गुणियां चित्त सूं धुर गुरु आज्ञा धारी।
गजब गुण ज्ञान गरव धारी रे। ग० ॥
गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारीमाल भारी ॥ ५ ॥
भिक्खु भारीमाल नै भाखै सांभल सुखकारी।
काई न्हाखो गृहस्थ कोई तो तेलो दंड त्यारी। ग ॥ ६ ॥
भिक्खु भारीमाल नै भाखै साचो कहै सारी।
तब तो तणो तन्त करी पिण इक अगत भारी। ग ॥ ७ ॥
भूठो नाम लियै कोई जन लागू अति भारी।
यूं करिवो ते स्वामी प्रकाश्यो आज्ञा अधिकारी। ग ॥ ८ ॥
भिक्खु कहै जो साचो आप तो तेलो त्यारी।
अणहुंती कोई आल दियै तो सचित सम्भारी। ग ॥ ९ ॥
पूर्व संचित पाप उदय नो तेलो तव सारी।
स्वामी नो वच सत्य कियो कर जोड़ी अंगीकारी। ग ॥ १ ॥
भारीमाल सुवनीत इसा भल, सुगुणा सुखकारी।
पुण्य प्रबल थी भिक्खु पाया ममत मांन मारी। ग ॥ ११ ॥
घोर घटा घन गरजारवसी वाण सुधा उचारी।
भिन्न २ भेद भली पर भाषत, दास्तन दम्भितारी। ग ॥ १२ ॥

---

*भवदधि=भवोदधि

इम वचनामृत सुण जन हुलस, निरखत नर नारी।
नयनानन्दन कुमति निकन्दन पद सूरत प्यारी। ग० ॥ १३ ॥
हिये निर्मल हरनाथ मुनि टोकरजी संत सारी।
परम विनीत भारमलजी भल संत साताकारी। ग ॥ १४ ॥
घर छोड़ी बहु घणा मुनि धन्य ज्ञान गज गारी।
समणी पिण बहु थई सयांणी स्वाम शरण भारी। ग ॥ १५ ॥
दिन २ भिक्खु नौ मग दीपत सासण सिणगारी।
पंचम काल स्वाम प्रगटियौ हूं तसुं बलिहारी। ग ॥ १६ ॥
एकादशमी ढाल अनोपम वाद विस्तारी।
कंठ तिलक भिक्खु गुण कहियै पामत किम पारी। ग ॥ १७ ॥

दुहा

आगम रहिस अनुपम लही, स्वाम भिक्खु सार।
शुद्ध श्रद्धा शोधी सही बलि आचार विचार ॥ १ ॥
दान सुपात्रे दाखियो सत मुनी नै सार।
असंजती नै आपियां एकंत पाप असार ॥ २ ॥
भगवती अष्टमे शतक भल पष्टम उद्देशे आप।
असंजती नै आहार दे, प्रभु कह्यो एकंत पाप ॥ ३ ॥
दै गृहस्थ नै दान ते अनुमोदै अणगार।
निशीथ पनरमै निरखल्यौ दंड चौमासी धार ॥ ४ ॥
सावज्ज दान प्रशंसियां, हिन्सा रो बांधण हार।
सूयगडांग अंग सूत्र मे भाख्यौ मुनि आचार ॥ ५ ॥
श्रावक सामायक मझे, अधिकरण अति जांग।
भगवती सप्तम शतक भल प्रथम उद्देशे पिछांण ॥ ६ ॥
व्यावच गृहिमीं वरजी अणाचार म आंम।
दशवैकालिक देखल्यौ तीजे अध्ययने तांम ॥ ७ ॥
श्रावक नौं खाणो सर्व अव्रत मे अधिकार।
वर्णन उववाई बीस मे, बलि सूयगडांग विचार ॥ ८ ॥
इत्यादिक जिनवर अखी शोधी भिक्खु स्वाम।
बहु संदर्भ बणाई, सूत्र साख सुख ठांम ॥ ९ ॥

ढाल १२

[पुण्यने नहीं शोभो गुरु करें—ए देशी]

पुन्न प्रभु मीं परवरी उत्तराध्ययन उमंग। सुज्ञानी रे।
विप्र जिमायां तमतमा चउदमें अज्झयण सुचंग। सुज्ञानी रे॥
श्रद्धा दुल्लभ देवां कही॥ १॥

भद्रमुनि इम आखियो सुगडांग छट्ठे सम्भाल। सु०।
ब्राह्मण वे सहस जिमावियां नरग तणा फल न्हाल। सु०। श्रद्धा० ॥ २॥

आणन्द श्रावक लियो अभिग्रहो सातमें अंग धीकार। सु०।
अन्यतीर्थी में आपूं नहीं असणादिक च्यारूं आहार। सु०॥ ३॥

प्रत्यक्ष गोशाला ने आपिया, सकडाल सेज्या संथार। सु०।
उपासग सातमें आखियो नहीं धर्म तप लिगार। सु०॥ ४॥

ऐंवी लेवी वर्तमान देखनें मून कही तिणकाल। सु०।
पंचम अध्येने परवरी सूयगडा अंग संभाल। सु०॥ ५॥

दुःखी मृगालोढो देखनें प्रभु नें गोतम पूछन्त। सु०।
किस्यापा दान किस्यो दियो विपाक सूत्र मे वृतन्त। सु०॥ ६॥

भाव अव्रत घर्म भाखियो ठाणाअंग दसमें ठाण। सु०।
कोई अव्रत सेवायां धर्म कहै, जिन मारग रा अजांण। सु०॥ ७॥

नव प्रकारे पुण्य नीपजै नवमा ठाणा में न्हाल। सु०।
समर्थ नवूं ही कह्या सही समर्थ मन वचन संभाल। सु०॥ ८॥

करणी धर्म अधर्म नीं कही जुजूई दोनूं सुजांण। सु०।
आचारंग चौथा अध्ययन में तीजी निसनी करली म तांण। सु०॥ ९॥

आज्ञा माहें धर्म आखियो, दोयमो जुगती म आहार। सु०।
उत्कृष्टी परचा आचारङ्ग म छट्ठे अध्ययन रै दूजै विचार। सु०॥ १०॥

जिन आज्ञा तणा अजाणनें समकित दुर्लभ सुजाण। सु०।
आचारंग चौथे अध्ययन म चौथे उद्देशै पिछांण। सु०॥ ११॥

उद्यम करें आज्ञा बिना आज्ञा म आलस थाय। सु०।
सुगुरु कहै वे बोल होज्यो मती आचारंग पांचमां रै छट्ठा मांय। सु०॥ १२॥

आज्ञा लोपी धर्म थापै मत रै, ज्ञान रहित गुण हीन। सु०।
आचारंग दूजा अध्ययन में, छट्ठे उद्देशै सुचीन। सु०॥ १३॥

प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञा बारें अणगार। सु०।
आचारंग चौथा अध्ययन म पिण धर्म म कह्यो आज्ञा बार। सु०॥ १४॥

साधां छोड्यो उन्मारग सर्वथा, आदर्यो मारग उदार । सु० ।
आवसग चौथा अध्ययन में, साधां छोड्यो ते अधिक असार । सु ॥ १५ ॥
चार मंगल उत्तम शरण चिहुं केवली परूप्यो धर्म मंगलीक । सु० ।
एहिज उत्तम शरणो पिण एहनों सत आवसग में तहतीक । सु ॥ १६ ॥
इत्यादिक बोल अनेक छै, आगम में अधिकाय । सु ।
स्वामी भिक्षु शोध शोधने आछी रीत दिया ओलखाय । सु ॥ १७ ॥
पाखण्डियां प्रभु पन्थ उत्थापियो ओलख्यो जिन वचन अमोल । सु ।
भिक्षु आगम न्याय शोधी भला प्रगट कीधी पाखण्ड्यां री पोल सु० ॥ १८ ॥
सावद्य दान मैं धर्म थापनें मतिहीन म्हांको फन्द मांय । सु ।
स्वामी सूत्र न्याय सम्भालने व्रत अव्रत दीधी बताय । सु ॥ १९ ॥
धर्म आगन्या बारे धारनें भेषधार्यां मांड्यो भ्रम जाल । सु ।
थिर नींव आज्ञा भिक्षु थापनें बाद जिम बध पाम्या विशाल । सु ॥ २० ॥
आगन्या बारे धर्म पाखण्ड्यां आदर्यो धर भिक्षु पूछ्यो धम नाम । सु ।
आगन्या बारे धर्म किण परूपियो इणरो मोनें नाम बताय । सु ॥ २१ ॥
किण कहै म्हांरी माता बांझणी विधी तिणरो दृष्टान्त । सु ।
वेश्या मा पुत्र तणुं बलि खरा न्याय मेल्या धर सन्त । सु ॥ २२ ॥

भिक्खु स्वाम कृत

जिण धर्म री जिन आज्ञा दियै जिन धर्म सिखायो जिनराय । भविक जन हो ।
आज्ञा बारे धर्म केणे सिखावियो इणरी आज्ञा देवें कुण ताय । भविक जन हो ।
श्री जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥ १ ॥
कोई कहै म्हांरी माता है बांझणी हूं छूं तिणरो अंग जात । भ ।
ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा बिना करणी किया धर्म साख्यात । भ ॥ २ ॥
मा बिन बेटा री जन्म हुवे नहीं जनमें तिका बांझ न होय । भ ।
ज्यूं धर्म छै तो जिन आगन्या आज्ञा नहीं तो धर्म नहीं कोय । भ ॥ ३ ॥
वेश्या पुत्र नैं पूछा करै थांरी कुण माय में कुण तात । भ ।
तो नाम बतावै किण तात रो ज्यूं आ आगन्या बारला धर्म री बात । भ ॥ ४ ॥
वेश्या री अंग जात ऊपनों उणरी कुण हुवै उवेरी नैं बाप । भ ।
ज्यूं आगन्या बारै धर्म मे पुण्य तणी जिन धर्मी तो कुण कर थाप । भ ॥ ५ ॥
वेश्या री अंग जात ऊपनों उण लखणी हुवै उवेरीनै बाप । भ ।
ज्यं आज्ञा बारे धम मे पुण्य तणी, भेषधारी करे रह्या थाप । भ० ॥ ६ ॥

इण आज्ञा बारला धर्म री कुण धणी कुण आज्ञा देव जोड्यां हाथ। म ।
देव गुरु मुन साम्र न्यारा हुवा इणरी उत्पति री कुण माथ। म ॥७॥
दुष्ट जीव मजारी नं पोखण छन्य सूं बर पर प्राणीनी घात। म ।
ज्यूं दुष्ट हिंसाधर्मी जीवन छल सूं घात पोतां रे मिथ्यात। म ॥८॥

ढाल तेहिज

इत्यादिक आज्ञा ऊपरं स्वामी न्याय मेल्या मुलगाय। मु० ।
मान्या भिन्न २ भेद रूपी पर्ट बसर न राखी काय। मु० ॥ २३ ॥
बाल बाल कही ए वाग्गी सार्ता दान आज्ञा उपर सार। मु० ।
बलि मद्धा तणी बहु वारता जिणम सूत्र साख सत सार। मु० ॥ २४ ॥

दुहा

पुण्य री करणी परखड़ी श्रीजिन आगम सिन्ध।
भिक्खु तास मन्नी परं प्रगट करी प्रबन्ध ॥ १ ॥
निर्जरा री करणी निमल जिन आज्ञा म जांण।
ते शुभ जोग निर्बद्य त्यां पुण्य बन्ध पहिछाण ॥ २ ॥
किरई आज्ञा बाग्नी सावद्य करणी सोय।
पाप बन्धं तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य न जाय ॥ ३ ॥
पद्ध बहिरावं साध न कहि निर्जरा पुन्न।
भगवती अष्टम शतक मए छट्ठ उद्देसे सुचिन्न ॥ ४ ॥
शुभ लाम्बी आऊ सतर तसु बन्ध तीन प्रकार।
हिन्सा मत रुम मुनी सत भणी दे सार ॥ ५ ॥
बहिरावं बन्दना करि आहार मनोज्ञ उदार।
भगवती पंचम शतक मल छट्ठ उद्देश विचार ॥ ६ ॥
बन्दणा सा पग्न धमस्या नीच गोत्र क्षय माण।
ऊंच गोत्र नों बन्ध हम, उत्तराध्ययन उजाण ॥ ७ ॥
भ्यावच कीधां बन्ध बलि तीथंकर पुण्य नाम।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यो उत्तराध्ययन मांम ॥ ८ ॥
इत्यादिक आज्ञा मिहं पुण्य नी बन्ध पिछांण।
समय नाथ भिक्खु सगर भाख्यो उत्तम भांन ॥ ९ ॥

ढाल १३

[पुन्य निपजै शुभ जोग सूं रे लाल—ए देशी]

दानी थ्यावच दश प्रकार नी रे लाल ठांणां अंग दशमें ठांण हो। भविकजन।
प्रगट कह्यो ही साथ पिछांणज्यो रे लाल तिणसूं पुन्य बन्ध निजरा जाण हो। भ०॥
स्वामी श्रद्धा बताई श्री जिन वयण सूं रे लाल॥ १॥

कालोदाई पूछ्यो कर जोड़नें रे लाल भगवती में भाख्यो भगवन्त हो। भ०।
पाप स्थानक अठारह परहर्यां रे लाल कल्याणकारी कर्म बन्धन्त हो। भ०॥ स्वा० २॥
सेवै पाप स्थानक अठारह सही रे लाल बन्धै पाप कर्म विकराल हो। भ०।
सातं में शतक सम्भालज्यो रे लाल, दाख्यो दशमें उद्देश दयाल हो। भ०॥ ३॥
कर्कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल अठारह पाप सेव्यां असराल हो। भ०।
न सेव्यां अकर्कस भगवती पर रे लाल भगवती सातमा रै छट्ठे माल हो। भ०॥ ४॥
आख्यो ज्ञाता रै आठमा अध्ययन में रे लाल बीस बोलां तीर्थंकर पुन्य बन्धाय हो। भ०।
बोलूं ही निवद्य वणव्या रे लाल, श्री जिन आज्ञा में सोभाय हो। भ०॥ ५॥
सूत्र विपाक में सुबाहु तणो रे लाल गौतम पूछा करी प्रभु पास हो। भ०।
किं दच्चा इण दान किमी किसो रे लाल कहै निवद्य करनी विमास हो। भ०॥ ६॥
अनुकम्पा सब जीवां री आणियां रे लाल प्राणी न दुख नहीं उपजाय हो। भ०।
सातावेदनी तिणरै बन्ध सही रे लाल सातमें शतक भगवती सुहाय हो। भ०॥ ७॥
करणी आठ कर्म बन्धनी कही रे लाल भगवती आठमा रै नवमें भेद हो। भ०।
तिणम निर्वद्य करणी पुन्य तणी रे लाल सावद्य पाप री करणी सवेद हो। भ०॥ ८॥
जयणा सूं साधु आहार करै जिहां रे लाल पाप न बन्धै पिछाण हो। भ०।
दसवैकालिक चौथे देखल्यो रे लाल इहां पिण जिन आज्ञा भगवान हो॥ ९॥
साधु री गोचरी अमावद्य सही रे लाल, दसवैकालिक देख हो। भ०।
अध्ययन पांचमें आखियो रे लाल बाणुंमी गाथा विशेष हो। भ०॥ १०॥
सात कर्म ढीला पड़ै सही रे लाल शुद्ध आहार करतां साध हो। भ०।
पहिलै शतक भगवती नवमें देखल्यो रे लाल इसड़ा श्री जिन वचन आराध हो। भ०॥ ११॥
इत्यादिक बहु बोल अनेक छै रे लाल श्री जिन आज्ञा में सोभ हो। भ०।
तिणमें निजरा हुवै पुन्य बन्धै तिहां रे लाल स्वामी ओलखाया सूत्र जोय हो। भ०॥ १२॥
सावद्य करणी आज्ञा बारै सही रे लाल प्रगट थाप्यो पाखण्ड्यां पुन्य हो। भ०।
भिक्षु आगम न्याय भाखी भला रे लाल ज्यांरी श्रद्धा दिपाई अनूप हो। भ०॥ १३॥
ढाल भणी ए तेरमी रे लाल निर्वद्य करणी पुन्य री निर्णय हो। भ०।
भिक्षु ओलखाई भाव भाव सूं रे लाल भिन्न तिणसूं भविजन भेद हो। भ०॥ १४॥

दुहा

सूत्र मे समचै कही अणुकम्पा अधिकार।
भिक्खु तास भणी पर शोध लीयो तत्सार ॥ १ ॥
जीव असंजती जेहनौ जीवण वान्छै जाण।
सावज अनुकम्पा सही मोहराग महि मांण ॥ २ ॥
मरणौ वछ्यौ द्वेष महि, जीवण राग विचार।
पाप आठारा में प्रगट, भ्रमण करावै मार ॥ ३ ॥
मोहराग अनुकम्प न आज्ञा न दियै आप।
इन कारण सावद्य छै, प्रगट राग है पाप ॥ ४ ॥
तरणो वांछै ते सही भीक्खिम आशा सार।
पाप टलावै पार को ते निर्वद्य इकतार ॥ ५ ॥
निर्वद्य करुणा निमली सावज अधिक असार।
विविध सूत्र निणय सखर, स्वाम कियौ तंतसार ॥ ६ ॥
प्रायश्चित आवै प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार।
अनुकम्पा सावद्य छै, वाप हिय विचार ॥ ७ ॥
गाय भैंस आक थोर नीं मे आकं ही दूध।
क्यूं अनुकम्पा जाणज्यो मन में राखी सुध ॥ ८ ॥
आक दूध पीधां थकां जुदा हुवै जीव काय।
ज्यूं सावद्य अणुकम्पा कियां पाप कर्म बंधाय ॥ ९ ॥

ढाल १४

[दया धर्म श्री जिनजी री वाणी—ए देशी]

अनुकम्पा त्रस जीव नी आणी,, बान्ध छोडै साधु तिण वारोजी।
चोमासा मे अनुमोद्यां चौमासी निशीथ बारमें निरधारो जी ॥
स्वाम भिक्खु निणय कियो सूत्र सूं॥ १ ॥
बाप सिंह हिंसक जीव विलाकि मार न कहै मतिवन्तो जी।
मति मार नहीं कह्यु राग आणी मुनि सूगडांय इकवीस में संता जी ॥
वीर असंजम जीतव वरज्यौ पाम सूगडांग दयाल्यो जी।
दशमें ठांण वलि आचारांग म, मां' वचन अनेक निहाल्यो जी ॥ ३ ॥
उत्तराध्ययन बावीस में भयेने नेम पाछा फिरया जीव न्हारा जी।
इतरा जीव हणीं मम अर्थे ... [illegible] ॥ ४ ॥

मिथिला नगरी बलती आग नमि मुनि स्हामो न जायो सोयो जी।
उत्तराध्ययन रे नवमें अध्ययनें करुणा सावज नोंची कोयो जी॥ ५ ॥
मनुष तिर्यच देव माहों माहीं विग्रह देखी विक्षेपो जी।
शीत हार मोक्षणी वरजी जिन दशवैकालिक सात में देखो जी॥ ६ ॥
वायरो वर्षा शीत तावड़ो कल्ह उपद्रव रहित सुकाग्गे जी।
बोल सातूं ही वांछणा वरज्या दशवैकालिक सात में वयाख्यो जी॥ ७ ॥
चूथे आचारंग अध्ययन दूसरे प्रथम उद्देशे सुपन्यो जी।
मार्गमा गृहस्थ लड़ता देखी नें मुनि मार मत मार म कहे महुन्तो जी॥ ८ ॥
तीन आत्मस्वरूप तीजा ठाणा रैं तीज वणी उपदेश हिंसक देखी जी।
न समझे तो मून राखणी निरमल वलि एकन्त जाणी विशेषी जी॥ ९ ॥
उत्तराध्ययन रे इक्वीस मैं अध्ययनें तस्कर नै मारतो देखी तायो जी।
समुद्रपाल लियो वर संजम मोह करुणा मांणी मन मांयो जी॥ १० ॥
समर्थ अनुकम्पा कही ते साम्भलो एक्षण आज्ञा कहि मींड कीम्यो जी।
प्रभु आज्ञा देवे ततो निर्वद्य प्रत्यक्ष, आज्ञा नहीं ते सावज ओलखीम्यो जी॥११॥
अणुकम्पा सुलसा री आंणी सुर हरणगमेषी सोयो जी।
पुत्र दवकी रा म्हेल्या प्रत्यक्ष, अन्तगड़ मै अवलोयो जी॥ १२ ॥
ए उघाड़ मूरी कृष्ण भावत अणुकम्पा पुण्य नी आंणी जी।
अन्तगड़दशा में पाठ अनोपम, जिन आगम्या नहीं आंणी जी॥ १३ ॥
उत्तराध्ययन बारमें अध्ययनें अणुकम्पा हरकेशी नीं आंणी जी।
छात्रा में ऊभा पाड़्या यक्ष क्षम्कर, प्रत्यक्ष सावद्य पिछाणी जी॥ १४ ॥
रैणा देवी री करुणा करी जिन रिख स्हामी जोयो सासातो जी।
नवमं अध्ययने ज्ञाता माँहि म्हाली अनर्थ दुःख उपातो जी॥ १५ ॥
कोई कहे कलुणरस छै, करुणा, अणुकम्पा नहीं भासी जी।
अणुकम्पा करुणा दया अनुकोस ए, कलुण रसना नाम अमर साखीजी॥ १६ ॥
करी मम जीवां री अनुकम्पा अनुक्रोस पाठ आख्यो जी।
तिम अनुक्रोस नी अर्थ करुणा टीका में सावज निवद्य कलुणरस साखो जी॥ १७ ॥
सम्यक्त्व विन मेघ गज भव साम्प्रत अणुकम्पा सुसला री आंणी जी।
मत संसार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम अध्ययन ज्ञाता मैं पिछांणी जी॥ १८ ॥
निज गज री अणुकम्पा निमर्ल सूंड़ो भोगव्यो भारी राणी जी।
प्रथम अध्ययन ज्ञाता मांही प्रत्यक्ष, जिहां जिन आगम्या किम आंण जी॥ १९ ॥
अभयकुमार नी कर अणुकम्पा दोहलो पूरयो धारणी री देवो जी।
ए तिम ज्ञाता रै प्रथम अध्ययनें साम्प्रत सावज आंणी स्वयमेवो जी॥ २० ॥

शीतल तेजू लेस्या म्हेली स्वामी, अणुकंपा गोशाला री आणी जी।
सूत्र भगवती पनरमैं शतके वृत्ति माहैं सराग बखाणी जी॥ २१ ॥
पन्नावणा सूत्र रै छत्रीस मे पद लब्धी तेजू फोड्यां क्रिया लागै जी।
तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शीतल तेज फोड्यां वीर सागै जी॥ २२ ॥
नहीं साधु री हुवे तेरा बेद नै क्रिया नहीं साधु रै क्रिया निहाली जी।
पिण धर्म अन्तराय साधु रै पाड़ी बेद, भगवती सोऽन्मा रै तीजे भाली जी॥ २३ ॥
इत्यादिक बोल अनेक आख्या छै समचे सूत्र मांही सोयो जी।
जिन आज्ञा नहीं ते सावज जानो आज्ञा ते निर्वद्य अवलोयो जी॥ २४ ॥
नेम समुद्रपाल गज मैं नमि ऋषि आतम ऋषि अवधारी जी।
निरवद्य आगम्यां मैं छै निर्मल सावज भ्रमण सारो जी॥ २५ ॥
स्वाम भिक्खु ए सूत्र शोधी अनुकम्पा आलखाई जी।
विविध हेतु न्याय जुगति बताया कुमति न राखी कांई जी॥ २६ ॥
भेषधारी भ्रम पाड़े भोलां ने दया मोहराग नै दिखाई जी।
सिद्धान्त रा जोर सूं भिक्खु स्वामी असल श्रद्धा ओलखाई जी॥ २७ ॥
बलवंती दाख सुन जन चातुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजो जी।
कमी मासता भिक्खु नीं राखी पाखण्ड मत परहरो जी॥ २८ ॥
दान दया सूत्र साख दिखाई, स्वग प्रथम धर संतो जी।
सूत्र नेत्राय ए ज्ञान स्वाम नों मति ज्ञान नों भेद सुतंतो जी॥ २९ ॥

कलश

जय जय कारण दुख निवारण सुमग धारण स्वाम जी।
गुरु सुमति सारण कुमति वारण जगत तारण नाम जी॥ १ ॥
प्राक्रम मृगपति सखर भर चित्त ज्ञान नेत्रे रिषी गुणी।
जिम मग्ग जन्तु हव सुहृत, नमो भिक्खु महा मुनि॥ २ ॥

द्वितीय खण्ड

सोरठा

प्रथम खण्ड पहिछाण रे रचियो इण रीत सूं।
खण्ड दूजे गुण खाण रे, दृष्टन्त कहूं वयाल ना॥

दुहा

आख्यौ दान दया असल जिम भाख्यो जिनराज।
बुद्धि उत्पत्तिया महाबली साखै जिन पन्थ साज॥ १॥
मतिज्ञान महिमा निलौ बोध भेद तसु देख।
सूत्रे नेश्राय सिद्धान्त छै, सूत्र बिना सम्पेख॥ २॥
सूत्र कहीजे शास्त्र सहु, निमल सूत्र नेश्राय।
बुद्धि सूं निपजी ज्ञान वर, सहु असूत्र नेश्राय॥ ३॥
सूत्र साख ध्याया सखर, स्वाम दिखाई सार।
सूत्र तणी नेश्राय शुद्ध, आगम अर्थ उदार॥ ४॥
चार बुद्धि सूं निपजी दियै विविध दृष्टान्त।
असूत्र नेश्राय ओलखौ वर नंदी विरतन्त॥ ५॥
हिवे असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टांत।
मति ज्ञान महा निमलो स्वाम तणो शोभत॥ ६॥
केवल उतरतो कह्यो मति ज्ञान महाराज।
पन्नवणा सत्र पिछाणज्यो सूत्र भगवती साज॥ ७॥
धसरौ भिक्खु स्वाम नौं महा मोटी मति ज्ञान।
थाभा न्यायज शोभिया दृष्टान्त देई प्रधान॥ ८॥
उत्पतिया बुद्धि सूं अख्या निपता न्याय सुमन्द।
केई ही परै शुद्ध पन्था, दृष्यान्त मति दीपत॥ ९॥

ढाल १५

[धमक मक रायवा इन्दा सु अड़ियो रे—ए देशी]

पाखण्डियां सावज दान परुपियौ त्यांनें भिक्खु पूछ्यौ तिणवार।
सावज मैं पुण्य थापियौ एक धांभलव्यौ हेतु उदार॥
स्वामी बुद्धि सागरू बार मेल्या न्याय विशाल।
अधिक गुण आगरू भल उत्पतिया बुद्धि भाल॥ १॥
पांच सीरी आयौ खेत परवरी जी, चणां तणो चित भार।
नाज पांच सौ मण चणा निपना तब मतौ किन्यौ तिणवार॥ २॥
घर मांहि तौ घन आपारै घणु जी करां दान धम कहि वाय।
एक जणै सौ मण चणा आपिया बहु भिक्षाचरां नै बोलाय॥ ३॥
दिया सौ मण चणां रा दूसरै सेकाय भूंगरा सोय।
त्यांरी गुगरी तीजै करावनै जिमाया भिक्षाचरां नै जोय॥ ४॥
चौथे रोट्यां सौ मण चणा तणी जी कढी पाकसी कराय।
भिखारी रांकादिक भणी जी जुगति सूं दिया जिमाय॥ ५॥
सौ मण चणा पांचमें वोसिराविया, तिणरै हाथ लगावा मा त्याग।
कहो घम पुण्य घणो केहनै सगरी उत्तर देवौ सताव॥ ६॥
भगवन्त री आज्ञा किण भणी कुण आज्ञा बार कहात।
एम सुणने उत्तर आवौ नहीं ऐसी भिक्खु नीं बुद्धि उत्पात॥ ७॥
दान ऊपर दृष्टांत दूसरौ स्वाम भिक्खु दियौ सुखदाय।
हलुकर्मी सांभल हर्ष घणा भारीकर्मी रै दुःख भराय॥ ८॥
भिक्षा मांगतौ डोकरौ मम रह्यौ अभ्यागत दुखियौ एक।
धर्मात्मा भूखा नै धान द्यौ, बिरुआ बोले वचन विशेष॥ ९॥
एक जणै अणुकम्पा आणनै सेर चणा दिया सोय।
गुणग्राम भिखारी करै घणा आशीष देवै अवलोय॥ १०॥
आगै जाई एम बोलियौ सेर चणा दीधा सेठ एक।
पिण दांत नहीं कोई पीस द्यौ बाद छै कोई धर्मी विशेष॥ ११॥
एक बाई अणुकम्पा आण मैं पीस दियो बहुत पांण।
वलि आगै जाई इम बोलियौ जी, छै कोइ धर्मी पिछाण॥ १२॥
एक सेठ चणां सेर आपिया पीस दिया दूजी पुण्यवांन।
भाटौ फाकणौ आवै नहीं तिण सूं रोटी कर दौ धर्म जान॥ १३॥

अनुकम्पा तीजी आणनैं तेर घुणा रा फर्कफाड सोय।
सिन्धो घाल कर दीधा सही जीमी सुप्त हो गयो जोय ॥ १४ ॥
तृषा लागी तिण अवसरें, आगै आई बोल्यौ बान।
सेर चणा दिया एक सेठ जी पीस दिया दूजो पुन्यवान ॥ १५ ॥
मट रोट्यां कर तीजी जीमावियो, अति लागी है तृषा अथाय।
है धर्मात्मा एहवो प्राण जातानै पाणी पाय ॥ १६ ॥
चौथी याई अणुकम्पा चित्त धरी पायौ त्रस सहित काचो पाण।
कह्यौ धम कणो हुवो केहनै पाई कह्या न्याय ही पिछाण ॥ १७ ॥
माशा बारला दान ऊपरै, दियौ स्वामी भिक्खु दृष्टान्त।
प्रत्यक्ष कारण पापना जी किण विध पुन्य कहंत ॥ १८ ॥
हलुकर्मी सांभल हर्ष हियै भारीकर्मी सुणे भिड़कन्त।
सूत्र न्याय साचा सही भारै उत्तम पुरुष घर खंत ॥ १९ ॥
पवर ग्रन्थ कही पनरमी स्वामी थापी है श्रद्धा सार।
उत्पत्तिया बुद्धि ओलखी बलि आगलि बहु विस्तार ॥ २० ॥

दुहा

जाव सुणी बुद्धिवान जन चित्त पामै चमत्कार।
सांभल केइक समझियां पाम्या हर्ष अपार ॥ १ ॥
भेयक बलि इण पर कहै बे दान दया री उथाप।
श्रद्धा किहां ही नां सुणी प्रत्यक्ष श्रद्धी पाप ॥ २ ॥
भिक्खु भाखता इम भयो पज्जुसणा मैं पेख।
आसा आनै भावि दै आपै नहीं अदोप ॥ ३ ॥
पर्व दिवस पज्जुसणा धम्म तणा दिन धार।
अधिक धम्म तिहां आदरै, पाप तणो परिहार ॥ ४ ॥
दान अनेरा मैं दियां ओण धम्म जिवार।
तीजो धम किण कारणे चित्त सूं करो विचार ॥ ५ ॥
एह बात है आगली परम्परा पहिछाण।
कहो ए बात करी किण, बाद करो किनांण ॥ ६ ॥
हूं तो हिवड़ाइज हुवो जद तो नहीं थो जांण।
जाब दियो मति जुगत सूं सुण हरख्या सुविहांण ॥ ७ ॥
सूत्र न्याय गुढ परम्परा, सखर भिक्खु स्वाम ॥ ८ ॥
जग पूर्व भारी जिसा मोटाकार अभिराम ॥ ८ ॥

अपर दान रे अमर दीधा बलि दृष्टान्ति।
विविध न्याय वर वारता सांभलजो चित्त मांहि ॥ ६ ॥

ढाल १६

[घोड़ी री देशी]

पादर खेरवै पधारस्या स्वामी ओटो माल प्रश्न पूछयो एम।
श्रावक कसाई गिणो वे सरीखा कहै ओटो श्रद्धा इसडी थांरी म्हें केम ॥
स्वाम भिक्खु रा दृष्टान्त सुणजो ॥ १ ॥
स्वाम कहै किम गिणां सरीखा, जब ते कहै श्रावक नैं दियां पाप जोयो।
कसाई नैं दिया पिण पाप कहो छो प्रत्यक्ष दोनूं सरीखा इम न्याय पिछाणो ॥ २ ॥
स्वाम कहै इम नहीं सरीखा, श्रावक कसाई वे जुआ संपेख।
ओटो कहै दोनूं थया सरीखा, दोयां नें दियां पाप कही छै लेख ॥ ३ ॥
पूज कहै थांरी माता नें पायो, सचित पाणी री लोटी भर सोय।
कहो तिणमैं थांरै निपनों कांई, ओटो कहै पाप छै अवलोय ॥ ४ ॥
पुनरपि स्वाम ओटा ने पूछयो पाणी लोटी भर वेस्या नें पायो।
धर्म थयो के पाप हुवो थान ओटो कहै तिणमैं पिण पाप थायो ॥ ५ ॥
पूज कहै दोयां मै पाप थायो थांरी माता नैं वेस्या सरीखी थांरै न्यायो।
जो माता वेस्या मैं न गिणो सरीखी तो श्रावक कसाई सरीखा न थायो ॥ ६ ॥
अति कष्ट थयो रोक कहै ओटं जी माता न वेस्या सरीखी मांनी।
चित्त मांहि चमत्कार रहै चातुर, भणहुंता भवगुण थारै अग्यानी ॥ ७ ॥
संवत अठारै पेंतालीसै स्वामी प्रगट चौमासो किधो पीपार।
जनक हस्तु कस्तु नीं जगु गांधी वारू चरचा सूं श्रद्धा चित्त धार ॥ ८ ॥
भेषधारी तिणनैं लागा भरमावा ओटी श्रद्धा भीखनजी री धार।
एक गृहस्थ श्रावक ने वासती आपी पाप कहै तिण मांहीं अपार ॥ ९ ॥
वलि किणहि गृहस्थ री वासती चोर ले गयो तिणरो पिण गृहस्थ ने पाप बतावै।
श्रावक ने चोर गिणैं इम सरीखो, जब जगु स्वामी जी नैं पूछयो प्रस्तावै ॥१०॥
पूज कहै उणनैंज पूछणो चद्दर थांरी एक ले गयो चोर।
एक चद्दर थे श्रावक नैं आपी जद थांनैं रह किणरो आवै जोर ॥११॥
तस्कर चद्दर लेई गयो तिणरो प्राश्चित मूल न सरधै संपेख।
श्रावक नैं दिधां री प्राश्चित सरधै जद तो पैंणीज ओटी ठहर्यो त्यांरै लेख ॥१२॥
जाब सुणी समझ्यो जगु गांधी नमी स्वामीजी री बुद्धि उत्पात।
सिद्धांत री सरधा नै थापण साची न्याय विविध मेलव्या स्वामी नाथ ॥१३॥

सोलमी ढाल मैं भिक्खु स्वामी री ओलखाई बुद्धि घणा उदार।
श्री जिन आगन्या भारी सिर पर सरधा दिपाय दीधी तंत सार ॥ १४ ॥

दुहा

कहै सावद्य दान मे पुन्य मिश्र एकन्त।
पूछ्यां कहै मुझ मून है, केई इसड़ो कपट करंत ॥ १ ॥
पूछ्यां न कहै पापरो पुन्य मिश्र पख एक।
आख्यौ हेतु ओपतो भाख स्वाम विशेष ॥ २ ॥
किण ही पुरुष पूछ्या करी नार भणी पिउ नाम।
थारो धणी रो नाम कुण स्यूं पेमो है ताम ॥ ३ ॥
कहै पेमो कयांमैं हुवै, वलि पूछ्यौ तिणवार।
माधू नाम है तेहनों कन्त तणो अवधार ॥ ४ ॥
कहै नाथू कयांनें हुवै वलि पूछ्यौ सुविशेष।
पाथू है नाम तेहनो तुझ पीतम सपेख ॥ ५ ॥
कहै पाथू कयांनें हुवे इम बहु नाम विचार।
सागे नाम आयां पछे रहे अबोली नार ॥ ६ ॥
सैणो तब जाणे सही, इणरा पिउ रो नाम।
एहिज छै तिण कारणे मून ग्रही इण ठाम ॥ ७ ॥
ज्यूं सावद्य दान मे पाप है कहै कयांनें हुवे पाप।
मिश्र पूछ्यां पिण इम कहै, कयांनें है मिश्र थाप ॥ ८ ॥
पुन्य पूछ्यां सूं मून रहै, न करै तास निषेह।
सैणो जब जाणे सही इणरै श्रद्धा एह ॥ ९ ॥

ढाल १७

[प्रभवो मन मैं चिन्तवै—ए देशी]

पूज्य भीखणजी पधारिया वर इक गाम विमास।
साम अमर सिवजी तणा पूत्र आया त्यां पास ॥ १ ॥
प्रश्न भिक्खु स्वाम पूछियौ, अनुकम्पा मन आंण।
मरता नैं मूंगा दिया, जिणमें सूं हुवौ जांण ॥ २ ॥
तामस वाणी ते कहै, प्रश्न इसौ पूछन्त।
जे मिथ्याती जाणियै भिक्खु वलि भाखंत ॥ ३ ॥
पूछण वाले पूछियौ समकती होवै सोय।
अथवा मिथ्याती मानवी थे पिण पूछे जोय ॥ ४ ॥

उत्तर आप एहनों जो मिथ्याती होय जाय।
उत्तर तो आपो मति नहीं तो आवी न्याय॥ ५॥
तब ते बोल्या सहकर्में मूला माँहे पाप।
पुन्य कहे पुन्य पाप बिहु, के केवल पाप विलाप॥ ६॥
देण वाला नैं दाखियै पुन्य पाप पिछाण।
जाव न देवै जाण नैं वलि भिक्खु कहै वाण॥ ७॥
कई मूला खवायां मिश्र कहै इम पूछ्यां कहै आम।
मिश्र कहै ते पापी सही तब स्वामी कहै ताम॥ ८॥
केई मूलां खवायां पाप कहै, वलि ते बोल्या वाण।
पाप कहै सो पापिया मूढ़ एकन्त जाण॥ ९॥
फिर स्वामी पूछा करी मूला खवायां मांय।
कई एक पुन्य कहै सही जब ते बोल्या जाण॥ १०॥
पुन्य कहै ताही पापिया सुमन स्वाम विचारै।
श्रद्धा पुन्य री दीसै सही वात तीनूंई बारै॥ ११॥
वलि मन भिक्खु विचारियो कहिण वाला नैं कह्यो पापी।
पिण श्रद्धण वाला पुन्य नी थिर पूछा करूं थापी॥ १२॥
पूछ इम चिन्तवी पूछियो अनुकम्पा आंण।
मूला देवै ते मनुष्य नै पुन्य केई श्रद्ध पिछाण॥ १३॥
स्वाम तणी पूछा सांभली वलि बोल्यो ते वाण।
मन आसी ज्यूं सरधसी जब स्वाम लियौ जांण॥ १४॥
इम चिन्तवी स्वामी ऊपरै मूला खवायां मांण।
प्रगट पुन्य प्ररूपै नहीं पिण थया पुन्य री पिछांण॥ १५॥
इत्यादिक जाव अनेक सूं कष्ट किया अधिकाय।
आपा ठिकाण आपणे स्वामी महा सुखदाय॥ १६॥
मोटी मति महाराज नीं वारु वधि सुविचार।
जाब दियो अति जुगत सू, उत्तर सूं अवधार॥ १७॥
सखर दाम कही सतरमीं आगै बहु अधिकार।
स्वाम दृष्टान्त सुणो करी चतुर एहै चिमत्कार॥ १८॥

दुहा

मीखणजी स्वामी भणी किणही पूछा कीध।
दान असंजती नै दियां पाप कहा प्रसिध॥ १॥

कथा फल किण कारणें निर्मल बतायौ न्याय।
कहै भिक्खु किण सेठ रे, नवली कही कथाय ॥ २ ॥
ते नकली रुपयां तणी तस्कर देखी तांम।
सेठ तणें लारे हुवौ रुपया लेवण कांम ॥ ३ ॥
पूठे तस्कर पेखनें साहूकार न्हासंत।
लार तस्कर दौड़्यौ इसलें पग अघुटंत ॥ ४ ॥
पग आखुड़ हेठो पड्यौ चित्त बिलखांणौ घोर।
इसड़ किण ठीक मांनवी अमल खवायौ जोर ॥ ५ ॥
अमल खवाय पायौ उदक सेठो कियौ दूर।
दुस्मन ते तिण सेठ नौ साझ दियौ भरपूर ॥ ६ ॥
अमल खवायौ ते पुरुष बैरी सेठ नौं थाय।
साझ दियौ बैरी मणी अरि थी हुव उपाधि ॥ ७ ॥
ज्यूं सुपात्र ना हिंसक भणी जे नर पोषे आय।
ते बैरी पट काय नौं प्रत्यक्ष हिये पिछाण ॥ ८ ॥
हणण हार पट काय नो तसुं पोषे कियौ शर।
तिण कारण जीवां तणी बैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

ढाल १८

[साता दिये रे धारमकों—ए देशी]

सावज दान अब्रायवा दियौ भिक्खु दृष्टान्त।
खेत वायौ एक करसणी पाक्यौ खेत अत्यंत।
संत दृष्टांत भिक्खु तणा ॥ १ ॥
इसड़ भणी रै बालौ हुवौ दुखणी आयौ वेद।
किण्हिक औषध दे करी सात रौ कियौ विचार। स ॥ २ ॥
ताजौ हुवौ तिण अवसरे, खेत काट्यो धर संत।
साझ दुण बालग ने सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥
कहै पाप हुवै खेत काटियां तौ काटण बालक नें सोय।
साझ देई नें साजौ कियौ तिणनें पिण पाप जोय ॥ ४ ॥
तिमहिज और पापी तणे साता करेंधी विवाय।
तिण माहे धर्म किहां थकी त्रिस मांहे दल ॥ ५ ॥
केइक भेषधारी कहै, धन दीधां धर्म।
बले कहै ममता उतारी मोक्ष रे पाड़े भ्रम ॥ ६ ॥

पुन्य मिनखु तिण ऊपरे, निरमल मेला न्याय।
भ्रम लोकां रो भाजवा स्वामी म्हा सुखदाय॥ ७॥
किणही मनुष्य रे खेती हुंती बीस बिघा विचार।
दस बिघा ब्राह्मण में दिया धम अर्थे धार॥ ८॥
बीस हलां री खेती बिघ दस हल खेती दीध।
ए पिण ममता उतरी तिगरे सम्में प्रसिद्ध॥ ९॥
कह्यो परिग्रह मव प्रकार नो चौपन चौपद देख।
पांच वास्यां दीधी पर भणी पांच गाया संपेख॥ १०॥
ए पिण ममता उतरी तिमर लेखे तहतीक।
धम कहै रुपया दियां तो इणमें पिण धर्म ठीक॥ ११॥
वास्यां खेती गायां दियां पुन्य रो अंग म पेख।
इमहिज रुपया आपियां धर्म पुन्य म देख॥ १२॥
पाप मठारो म पचमो परिग्रह म्हा विकराल।
सेव्यां सेवायां पाप छै, भगवती में सम्भाल॥ १३॥
सावद्य साता करे सही इमहू पाप एकन्त।
जिन आज्ञा बाहिर जाणज्यो सूयगडा अङ्ग धोमंत॥ १४॥
भिक्खु स्वाम मल्ले परे ओलखाया ऐन।
हलुकर्मी हरख्या घणा चित्त म पाम्या चैन॥ १५॥
आखो बाल ब्रह्मचारी बाद स्वामी ना बोल।
बोल सार हो मुहामणा, आछा नें अमोल॥ १६॥

दुहा

किणहिक भिक्खु म कह्यो, असंजती अवलोय।
तिण्में दान दया तणा त्याग करावो मोय॥ १॥
भिक्खु स्वामी इम भण सरध्या मुझ बच सोय।
प्रतीतिया हविया पवर, जिणसूं त्याग सुजोय॥ २॥
वै म्हांन मांहरा भणी, करें इसा पचखांण।
इम कही बह दिन्यो अति हि, सखर स्वाम बुद्धिवान॥ ३॥
किणहिक भिक्खु म कह्यो टोला बाला ताहि।
प्रत्यक्ष पुन्य प्रसपे नहीं सावज दान रै माहि॥ ४॥
स्वाम कहै कार्य मसतरी उल लोटी भर जांण।
म्हारें हाथ सूपज्यो, कही किण म वांण॥ ५॥

नाम पिउ नौ मां लियो पिण सूंप्यो कर सांन।
इम सांनी कर पुन्य कहै, पुन्य री श्रद्धा विशेष॥ ६॥
किणहिक स्वामी नैं कह्यो पडिमाधारी पेख।
दान निर्दोषण तसुं दियां सूं फल कहो विशेष॥ ७॥
स्वाम कहै ते सूमतौ पडिमाधारी विशेष।
तसु फल होवै ते सही देणवाला न जाण॥ ८॥
केइ बाला नैं पाप कहै, पाप त्यागायो धारार।
तिण मैं पुन्य किहां थकी स्वाम जाब श्रीकार॥ ९॥

ढाल १६

[वीर सुणो मोरी विनती—ए देशी]

काची पांणी पायां मांहै पुन्य कहै, स्वामी दीधो हो तेहनें दृष्टन्त।
कोई बाई लूंटाय पारकी धार लेवै हा इणमें पुन्य एकन्त॥
तब दृष्टन्त भिक्खु तणा॥ १॥
बाई लूटायां मो पाप है, पाणी पायां हो किम होसी पुन्य।
दोनूं बरोबर देखलौ सावद्य दानूं हो कग रहित है सुन्य तं॥२॥
अव्रत म मन धन दियां भेषधारी हो थापै धम मैं पुन्य।
स्वाम भिक्खु दियो धामतौ दृद हेतु हो सुणज्यो तन मन॥ ३॥
साथ मां सूं कोई कूबी ग्राम मैं धन न्हांख्यां हो कोम न आव ते धार।
धारा कन्है धन अव्रत में सूंपी, अव्रती न हो दियौ अव्रत मझार॥ ४॥
साय भागां गृहस्थ रौ घर अछै वस्तौ देखी हो किण ही धन काढयो बार।
ते न्हांख्यो कूबी ग्राम मैं तत्खिण आयौ हो सेठ पास तिवार॥ ५॥
कह्यो सेठजी तुम्ह घर आग थी सगरी वस्तु हो धन काढयो म्हैं सार।
सेठ सूणी हरख्यो सही ते धन किहां छै हो आणो वस्तु उदार॥ ६॥
जो कहै न्हांख्यो कूबी ग्राम मैं सेठ आण्यो हो पूरी मूरख सोय।
कायमां सूं काढी न्हांख्यो ग्राम मैं काम न आवै हो तिण लेखै कोय॥ ७॥
अव्रत रूप ग्राम कूंबी आप र, अव्रती नैं हो दीधी औरने धन।
साय उपाई औरै रै, प्रत्यक्ष देखौ हो तिणमें किम हुवे पुन्य॥ ८॥
श्रावक रै त्याग तेतौ व्रत सही अव्रत जाणौ हो बाकी रह्यौ आगार।
अव्रत सेवावै औरै री, तिण माहै हो धर्म नहीं लिगार॥ ९॥
अव्रत व्रत न बोलखै, भेषधारी हो कर भेष संभेल।
दृष्टान्त स्वाम दियौ इसौ जी तम्बाकू हो मेल्या कदेय न मेल॥ १०॥

औषध नीम आंख्यां तणो　आंहमो सांहमो हो घाल्यां दोनूं बिललाय।
ज्यूं अव्रत में धर्म सरधियां　पाप व्रत में हो सरध्यां दुर्गति जाय ॥ ११ ॥
सोरीगर रा घर में घोर बासदी　न्यारा राख्यां हो घर विणसै नांय।
ज्यूं व्रत अव्रत फल जु जूआ　जन जांण्यां हो समकित न जाय ॥ १२ ॥
प्रगट पसारी रै पारखा　न्यारा राखै हो मिश्री सोमल न्हाल।
ज्यूं धर्म अधर्म जाणी जू जुवो　सही समकित हो शुद्ध सरध्यां संभाल ॥ १३ ॥
कोई कहै गृहस्थ रो खान्दो अछै,　दान देवै हो गृहस्थ में देख।
भिक्खु कह्यो खान्दा में तो भूल छै,　घृत तो छै हो कूंपी में संपेख ॥ १४ ॥
मैदो खाण्ड घृत शुद्ध मिल्यां　सखरा कहियै हो स्वाद सरस सवाद।
ज्यूं वित्त चित्त पात्र तीनूं जुड्यां　अति फल रहिय हो भव दधि तिरियै अगाध ॥१५॥
घृत खाण्ड मिठ्ठ शुद्ध बणा　मैदा री जागां हो रपट है मांय।
ज्यूं वित्त चित्त दोनूं चोखा मिल्या　पात्र जागां हो असाधु नैं बहिराय ॥ १६ ॥
घृत मैदो चोखा भला　खाण्ड जागां हो माहै नाखी धूल।
ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जड़्या　चित्त जागां हो असूमतो विष तुल्य ॥ १७ ॥
खाण्ड मैदो चोखा खरा　घृत जागां हो माहै घाल्यो गोमूत्र।
ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जुड़्या　चित्त जागां हो दैणवालो कपूत ॥ १८ ॥
घृत री ठौर गोमूत्र छ्व　खाण्ड ठांम हो नाखै धूल मह्य खार।
मा'' मैदा री जायगां　आखी मिल्यां हो तीनूं अधिक असार ॥ १९ ॥
ज्यूं दैणवाली ही असूमतो　वस्तु दीधी हो असूमती अधून।
अव्रत माहीं सेवास अंगीकरी　प्रत्यक्ष पेखो हो इणमें किम हुवै पुन्य ॥ २० ॥
वित्त चित्त पात्र चोखा मिल्या　कर्म निजरा हो पुन्य बन्ध कहिवाय।
एक अधूरी तीनों मसे　फिर वित्त देखो हो तिणमें पुन्य न थाय ॥ २१ ॥
दृष्टान्त एहा भिक्खु दिया　स्वामी मेल्या हो सूत्र नैं न्याय सिध।
यां विन इसड़ी ग्रुण कथ　पूर्णवारी हो जैसा भिक्खु प्रबन्ध ॥ २२ ॥
पंचम आरै प्रगट्या,　आप ओआगर हो आणूं अनुराग।
हूं पिण हिवड़ा ऊजली　साची श्रद्धा हो पामी ए मुझ माग ॥ २३ ॥
आखी वाल उगणीसमी　चित्त उमग्यो हो भिक्खु भाखा चीत।
याद आयां हो हियो हुलसै,　गुण गावत हो हुवो जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

दुहा

सखरो मारग सोधनैं दियो स्वाम उपदेश।
कुबुद्धि कुचाला केलवी पूछै प्रश्न अशेष ॥ १ ॥

पामैं असाध सरधनैं दीधी मैं तुम्ह दान।
तिणरो तुम्मनें स्यूं हुवो इम पूछयो किण आंन ॥ २ ॥
भिक्खु कहै मिश्री मली किण साभी पिण जांण।
मन सुख पावै के मरै उत्तर एह पिछांण ॥ ३ ॥
ज्यूं ए असाध जांणने दियो सूमक्षो दान।
अजांणपणो घर पोहरै, पात्र उत्तम कम्म जान ॥ ४ ॥
इत्यादिक बहु भाखिया, दांन ऊपर दृष्टन्त।
किंचित् मात्र मैं कथ्या, बधतो जाणी ग्रन्थ ॥ ५ ॥
विविध दया ऊपर वलि हेतु महा हितकार।
आक थोहर रा दूध सम सावज्ज दया असार ॥ ६ ॥
अनुकम्पा छै लोक री जीवणो वांछै जांण।
मोह राग माहैं तिका तिणमें धर्म म तांण ॥ ७ ॥
जे आरम्भ सहित जीवणो असंजती री जांम।
जिम वांछणो ए जीवणो तिण वांछयो आरम्भ ॥ ८ ॥
सूत्र श्री जिन वरजियो असंजम जीतव आस।
भिक्खु स्वाम भली परै, मेल्या न्याय विमास ॥ ९ ॥

ढाल २०

[नगर सोरीपुर राजवी रे—ए देशी]

कोई पाखण्डी इम कहै रे, लाभ बुझावै लोयो।
अल्प पाप बहु निर्जरा रे, दम्भ करी थापै सोयो।
दम्भ करी दोय थापै बेसर्मो तेउ जीव मुआ ते पाप कर्मो।
आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो।
भोला तणे मन पाई भ्रमो जी सहु कोई भी हो ॥ १ ॥
उत्तर भिक्खु भाखियो रे, सांभलज्यो चित्त ल्यायो।
हलुकर्मी बुध हर्खिये रे, भारीकर्मी भिड़कायो।
भारीकर्मी भिड़कै सहु तायो तेउ जीव मुवां रो कहै पायो।
और बच्या तिण रो धर्म थापो कर रह्या मूरख कूड़ मिलापो।
तिणरी श्रद्धा रो लेखो सुण आपो, नाहर मारयां एकलो नहीं पापो जी ॥ २ ॥
नाहर हिंस्यो एक आकरो रे, करै मनुषां रो घेगालो।
मायां मैस्यां भला बाकरा रे, सांभर रोझ सियालो।
सांभर रोझ सियाल पिछाणी प्रत्यक्ष लूंट रह्यो पर प्राणी।
जीव घणां री करै घमसाणी पछै प्रमा उत्कृष्ट पर्यानी जी स ॥३॥

किणही विचार इसो कियो रे, एतो है मांस आहारी।
ए जीवियां जीव मार घणा रे, एहवा अध्यवसाय भारी।
एहवा अध्यवसाय सूं सिंह मारी उणरी श्रद्धा रे लेखे विचारी।
नाहर रो पाप हुवो निरधारी और बकर्‍यां रो धम हुवो भारी जी ।स ।।७।।

बीजो दृष्टन्त भिक्खु दियो रे, छे एक पापी कसाई।
पांच पांच सौ भैंसा नें मारतो रे, करुणा न आणे काई।
मन माहें करुणा आणे नें काई, किण ही विचार कियो मन मांही।
एहमें मार्‍यां बहु जीव बचाई।
एम विचारी नें मारयो कसाई, घणा जीवां में बचावण ताई जी ।स०।।५।।

साथ कुमुद्यां मिश्र कहै रे तिणरी श्रद्धा र लेखो।
कसाई नें मार्‍यां पिण मिश्र छै रे, पोता नीं श्रद्धा पेखो।
पोतारी श्रद्धा पेखो निज नैणी पाप कसाई मीं ए सत्य वेणी।
जीव घणा बच्यां रो धम श्रेणी।
पोता री श्रद्धा लखे कहि देणी कसाई नें मार्‍यां एकन्त पाप म कोई छिणी जी स ।।६।।

तीजो दृष्टन्त स्वामी दियो रे, उरपुर एक अयोगो।
घणा ऊन्दरां ना गटका करे रे, मनुष्य पहुंचावे परलोको।
मनुष्य मार परलोक पहुंचावे घणा पंख्यां ना अण्डा पिण खावे।
सर्प घणा जीवां नं सतावें, उत्कृष्टे धूमप्रभा लग जावे जी ।स ।।७।।

किण ही विचार इसो कियो रे, सप घणा न सतावें।
एक सप मार्‍यां थकां रे, जीव घणा सुख पावें।
जीव घणा सुख पावे सुजाणी अनुकम्पा बहु जीवां री आणी।
सप मार बचाया बहु प्राणी साथ कुमुद्यां कहै मिश्र वाणी।
तिणरै लेखे इणमे मिश्र पिछांणी जी ।स ।।८।।

चौथो दृष्टान्त स्वामी दियो रे, कोई पुरुष नीं एहवो आचारो।
बाप मुंवां पहिली कह्यो रे, काल करतां तिणवारो।
काल करतां सुत नहीं थी माणो सुणे तुम्हारा निसरो प्राणो।
थां लार अठ्यादिक धारस्यूं मांणो घणा ग्राम नगर बाल करस्यूं धमछांणो जी ।स०।।६।।

मनुष्य ढांढा घणा मारस्यूं रे, बाप में एहवो सुणायो।
पिता पहुंतो परलोक मं रे, पछ करवा लागो सहु तायो।
करवा लागो छै जीवां रो घमसाणो किणहिक मन में विचार्‍यो जाणो।
एक मार्‍यां सूं बचे बहु प्राणो, इम चिन्तव ते पुरुष न मार्‍यो बचाणो जी ।स०।।१ ।।

साध बुझायाँ मिश्र कहै रे, तिणरै लेखै ए पिण मिश्र होयो।
एक मारयौ पाप तेहनौं रे, बहु बचिया तिणरो धर्म जोयो।
बचियां री धम त्यांरे लेखै जाझै, अल्प पाप बहु पुन्य फल राजे।
एक मारयौ घणा राखण काजे, इणमें पिण मिश्र कहितां कांय लाजे जी।स ॥११॥

पून्य कह्यौ वलि पांचमो रे, दृष्टान्त अधिक उदारो।
कोई तुरकादिक आकरो रे, साथ सेना ले अपारो।
सेना लेई देश ऊपर आयो ग्राम नगर कतल करवानें ध्यायो।
मनुष्य नियम मारण उम्हायौ सेन्य अधिकारी ना हुकम थी थायो जी।स०॥१२॥

किण ही विचार इसौ कियौ रे, करसी घणा जीवां रो संहारो।
सेन्य अधिकारी नै मारियां रे, सब जीव बचै इणवारो।
जीव बचे कतल नहीं हुवै तायो इम जाण अधिकारी नें परभव पहुंचायो।
मारयौ ते पाप बच्यौ पुन थायो तिणरे लेखै इणमें पिण मिश्र कहिवायो जी।स०॥१३॥

बचियारो धर्म बतायनें रे, कहै छाय बुझायां धम।
जीव अग्नि रा जीवियां रे, तिणसूं घणा मरै ते अधम।
अग्नि जीव्यां घणा मरे ते पापो इण विध कर राख्या कूड किलापो।
अग्नि जीव हणियां मिश्र थापो तेहनौं न्याय सुणो चुप चापो।
तिणरै लेखै गायां मारयां केवल न पापोजी।स०॥१४॥

गायां भैंस्यां आदि जीवसी रे, तेपिण घणी छकाय हणंतो।
मनुष्यादि पञ्चन छतीस छै रे, मच्छादिक जलचर जन्तो।
जन्तु मच्छादिक जलचर जांणी ते पिण हण छःकाय ना प्रांणी।
भमि जीव ने हण्यां मिश्र मांणी तिणरै लेखै ए सर्व हण्यां मिश्र जाणी जी।स ॥१५॥

ससार मांहैं साधु बिना रे, सर्व हिंसा रा त्याग न दीसैं।
पन्नवणा पद बीस मै रे, भाख्यो श्री जगदीसैं।
श्री जगदीश भाखी इम रेसो प्राणातिपात वेरमण सु क्षेपो।
मनुष्य बिना और रे न कहेसो बुद्धिवन्त जोव विचारज्यो रेसो जी।स ॥१६॥

साधु बिना ससारी सहु रे, हिंसक जीव कहायो।
त्यां सगनं ने मारियां रे एकन्तो पाप न थायो।
किण ही ने मार्यां एकन्तो पापो जिणमें मारयो तिणरो महा तापो।
और बच्या तिणरो पुन्य मिलापो साधु नें मारयां रो एकन्त पापो।
सोधी श्रद्धा रा लेखा री ए थापो जी।स ॥१७॥

सुणने कष्ट हुवौ घणो, बाव दैन असमथ।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी उर मैं अधिक ओपत॥ ६ ॥

ढाल २१

[पर नारी संग परिहरो—ए देशी]

सावद्य उपकार ससार तणा छै, तिणमें म जाणज्यो संतो।
पूज्य भिक्खु ओलखायवा प्रगट दियौ इसो दृष्टन्तो॥
स्वाम भिक्खु रा दृष्टांत सुणज्यो॥ १ ॥

एक नृपति चोर पकड़्या इग्यारह, हुवौ मारण रो दीधौ।
साहूकार एक अरज करी इम सांभलज्यो प्रसिद्धो। स्वा ॥ २ ॥

पच पच सौ सौ रूपया प्रगट, इक इक चोर ना लीजै।
आप कृपानिधि अरज मानी नै पार इग्यारा छोडीजै। स्वा ॥ ३ ॥

राजा भाख महा अपराधी दुष्ट घणाई दुख दाता।
छोड्या जोग नहीं छै तस्कर, मान मछर मद माता। स्वा० ॥ ४ ॥

सेठ कहै वश मूंकी स्वामी लाभ रूपयां रो लीजो।
तौ पिण नृप नहीं छोडै तस्कर, कहै चोरां री पख नहीं कीजै। स्वा० ॥ ५ ॥

नव तस्कर मूंकी कृपानिधि आठ सात आदि जांणी।
इण पर अरज करी अधिकेरी महिपति तौ नहीं मांनी। स्वा० ॥ ६ ॥

रावक पांच सौ देई राजा नै चोर एक छोडायौ।
तै पिण विनती अधिक करी तब तस्कर मूंक्यौ तायौ। स्वा० ॥ ७ ॥

पुर ना लोक करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहु कोयो।
धन्य धन्य लोक कहै ओ धर्मी हय हियै अति होयो। स्वा ॥ ८ ॥

भवी छोड़ लाखां मैं बाजै, अधिक कियौ उपगारो।
तस्कर पिण गुण गावै तेहना सुजस फैल्यौ संसारो। स्वा ॥ ९ ॥

महिपति दश चोरां न मराया इम निज स्थानक आयौ।
समाचार न्यातीलां नै सुनाया परियण दुख अति पायौ। स्वा० ॥ १० ॥

तस्कर दश ना न्यायतीला ते भारी द्वेष भरांणा।
बैर बाल्ण न भेला हुवा, बहु प्रत्यक्ष ही प्रगटांणा। स्वा ॥ ११ ॥

चोर सारा मै साथै लई चाल्यौ पुर दरवाजे निछाणी।
चिट्ठी बांध लोकां नै चलायी सांभलज्यो सहु वांणो। स्वा० ॥ १२ ॥

मुझ तस्कर दश मारया निगरो इग्यारे गुणो बैर गिणस्यूं।
मनुष्य एक सौ दश मारया स्य पछ बिराजसी करस्यूं। स्वा ॥ १३ ॥

साहूकार ना पुत्र सगा नें मित्र मणी नहीं मारै।
अवर न छाडू उठाण आयो पग रह्या पिण पाछ। स्वा० ॥ १४ ॥
एम कही जन मारण उमग्यो, सुत किण ही री सहारै।
किण ही री बाप भाई हुण किण री, माता किण री मारै। स्वा० ॥ १५ ॥
किण री नार हुणें अति कोप्यो बहिन कोई री विणसै।
किण ही री भूवा भतीजी किण री इम्कर इम जन मारै। स्वा ॥ १६ ॥
प्रकट भयंकर नगर म प्रगट्यो हाय रह्यो हा हा कारो।
सेठ नें निंदवा लागा सहु जन प्राभव वचन प्रहारो। स्वा० ॥ १७ ॥
साहूकार र घर जाई सगला रावै लोग लुगाई।
कोई कहै मुझ माता मराई, कोई कहै प्रिय भाई। स्वा ॥ १८ ॥
रे पापी तुझ घर धन बहु थो तो कूला मैं क्यां नहीं न्हांख्यो।
चार छोड़ाई म्हारा मनुष मराया इम्कर जीवतो राख्यो। स्वा ॥ १९ ॥
सठ सातरियो शहर छोडीनें बीजें गाम वस्यो जाई।
इण भव फिट २ हुवो अधिको परभव दुर्गति पाई। स्वा० ॥ २० ॥
जे जन गुण करता था तेहिज अवगुण करत अथागो।
संसार नों उपगार इसो छ, मोक्ष तणो नहीं मागो। स्वा० ॥ २१ ॥
मोक्ष तणो उपगार है मोटो मुग मित्र पर संभरियें।
जिम भगन्या तिण माहें जोणी उग्ट परी आदरियें। स्वा ॥ २२ ॥
भिक्खु स्वाम भली पर भाख्यो दया ऊपर दृष्टान्ता।
उगणिसा बुद्धि अधिक अनोपम हलुकरमी हरषन्ता। स्वा ॥ २३ ॥
एम बीसमी ढाल में आख्यो अघ हलु उपगारा।
प्रत्यक्ष ही फल मठ पाया आगलि बहु अधिकारो। स्वा ॥ २४ ॥

दुहा

निव संसार तणा सही कह्या दाय उपगार।
भिक्खु तिण ऊपर भला दृष्टान्त दिया उदार ॥ १ ॥
उत्पुर गायो एक न उबार म अवतार।
तिण मारो दई करी, ताजो लियो निसार ॥ २ ॥
पिता कहै मुझ सुत लियो, मार्ग दर्शन भावर।
त स्नाम मार्ग लियो पी कर्म गियो फल ॥ ३ ॥
पूनी पूंन्यो अमर रनी न मागी उपगार।
न्म क म महन्तार म न्यारा गगा परिवार ॥ ४ ॥

ए उपगार संसार नों तिण में नहीं ततसार।
कम्म बंध कारण कह्यौ नहीं धम्म पुन्य लिगार॥ ५ ॥
उरपुर सावो एक नैं सावां में कहै सोय।
यन्त्र मन्त्र बूंटी जड़ी औषध आपी मोय॥ ६ ॥
शठ कहै कम्म नहीं वलि बोल्यौ ते बांम।
करामात ह्वौ तो कह्यौ क किय्यो भेष तुफांन॥ ७ ॥
करामात मुनि कहै इसी दुखी करे नहीं थाय।
ते कहै गुरु ते पिण कह्यौ अगगण मुनि उवराय॥ ८ ॥
धारणा सूध दिया भणा शिवगांमी सुर थाय।
मोक्ष तणौ उपगार ए, स्वाम दियो ओलखाय॥ ६ ॥

ढाल २२

[क्षम मु आदिक नीं छोरी—ए देशी]

दूजी दृष्टान्त भिक्खु दीधो सांभलज्यो प्रसिद्धो।
लोक मोक्ष नें मग नहीं मले तेतो कठ ही न थावै मेल॥ १ ॥
साहूकार र त्रियां दोय एक श्राविका शुद्ध अवलोय।
वैराग अत्यंत वखांण किया रोवण रा पचखांण॥ २ ॥
दूजी धम्म में समझै नांहीं चित्त काम भोग री चाहि।
केतलाइक काल विचार, परदेश माहें भरतार॥ ३ ॥
काल कर गयौ ते किण वार बात सांभली दोनूं नार।
तिणरै रोवण रा छै त्याग ते तो रोवै नहीं धर राग॥ ४ ॥
समताधार बैठी सोय किण्यो भेम न मांगे कोय।
शुभ अशुभ कम्म स्वभावै प्रत्यय भोक्तस्त लियो प्रभावै॥ ५ ॥
दुःख पाप प्रभावै दले, वलि कम्म बांधू किण लेखै।
उदै बांध्या जिसाईज आय इम चित्त न दियौ समझाय॥ ६ ॥
बीजी रोव करत विलाप कहै कवण उन्य हुवा पाप।
छाती माथो कूटै तन मांहै, अति रोवती बांगां पाड़॥ ७ ॥
हाहाकार हुवो तिण वारां लोक हुवा सैंकड़ा भेला।
रोवै तिणम अधिर सराव पतिव्रता य दुःख पावै॥ ८ ॥
मन बोलै घणा लाग लुगाई धन्य धन्य य मार सुगाई।
प्यार प्रीतम स्यूं अति प्यार तिणस्यूं रोव छै बांगां पाड़॥ ६ ॥
नहीं रोव तिणन जन निन्दै आ तो पापणी थी भगउंदे।
आ तो मुखेज बांदणी पण आंख म आंसू नहीं आवंत॥ १० ॥

ससारी रे मन इम माव मोह कर्म्म वसे मुरझावै।
साधु कह्यो किणनें सरावै परमारथ बिरला पावै ॥ ११ ॥
मोक्ष नैं लोक री मग न्यारो बुद्धिवंत हिया में विचारो।
दियो स्वाम भिक्खु दृष्टांत प्रत्यक्ष देखाया दोनूं पथ ॥ १२ ॥
इम ही संसार नौं उपगारो मोक्ष रा मारग सूं न्यारो।
कार्य मोक्ष तणों उपगार, संसार नौं छेदणहार ॥ १३ ॥
ऐसा भिक्खु उजागर भारी न्याय मेल्विया तंतसारी।
कही ढाल बावीसमी सार, भिक्खु रा गुणा रो नहीं पार ॥ १४ ॥

दुहा

मध्या उपर स्वामीजी दिया घणा दृष्टांत।
कहि २ नें कितरो कहूं, न्याय मिलाया तंत ॥ १ ॥
वलि आचार रे उपर न्याय मिलाया सार।
ग्रन्थ वधती जाणनें म किया बहु विस्तार ॥ २ ॥
इग्यारादी उपरे, कालवादी पर सोय।
दृष्टांत पुन दिया घणा मैं बहु न कह्या जोय ॥ ३ ॥
प्रस्ताविक प्रगट पणे हेतु हद हितकार।
भास्या भिक्खु ओपता उत्पतिया अधिकार ॥ ४ ॥
कथा नंने सूझे कही भार बुद्धि पहिछांण।
तिण कारण दृष्टांत सुण समझो मति सुजांण ॥ ५ ॥
केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतु सार।
इमहिज भिक्खु जाणज्यो पंचम काल मझार ॥ ६ ॥
मूरख जन दृष्टांत सुण, उलटा बांध कर्म्म।
खबर नहीं जिन धर्म्म री मूला अज्ञानी भ्रम ॥ ७ ॥
हलकर्मी दृष्टांत सुण पामैं अधिको प्रेम।
भारीकर्म्मा सांभली, बोलै भावै नेम ॥ ८ ॥
विचरत विचरत आविया दाहर कैलवै स्वाम।
ठाकुर मोहकम सिंहजी बांभण आया ताम ॥ ९ ॥

ढाल २३

(भागै पाला भटवी—ए देशी)

सहु परपदा सुणतां सिरदार सुहायो रे।
मोहकम सिंहजी बोलै इम वायो रे ॥
भिक्खु मुप मणी ॥ १ ॥

गाम गाम री किसरयां अति आपनैं आवै रे।
जन बहु देस नो सहु आपनैं चहावै रे। मि० ॥ २ ॥
नर नारी आपमे देखी हुवै राजी रे।
कर जोड़ि करै, मन कीरत आसी रे। मि ॥ ३ ॥
पुण्यवंता प्रत्यक्ष नर नारी निरख रे।
सूरत देखनैं हिवड़े अति हर्षे रे। मि ॥ ४ ॥
घणा लोक लगायां मैं आप बल्लभ लागो रे।
ते कारण किसो मांरै हर्ष अथागो रे। मि ॥ ५ ॥
इसी गुण कांई आपमे ते मुझ नें बतावौ रे।
सखरपणे सही दिल में दरसावौ रे। मि ॥ ६ ॥
भिक्खु इम भाखै एक सेठ प्रदेशी रे।
वर्ष बहु बीतिया प्रिय छै निज देशी रे। मि० ॥ ७ ॥
ते नार पतिव्रता शीलें गह गहती रे।
निज प्रीतम थकी प्रेमे अति रहती रे, मिसु अनूप मर्णे। मि ८ ॥
घणा महीना हुवा कागद नवी आयौ रे।
त्रिय चिन्ता करै मन प्रीतम माह्यो रे। मि० ॥ ९ ॥
ते सेठ प्रदेश थी कासीद पठायो रे।
दरची वे करी तिण पुर ते आयो रे। मि० ॥१० ॥
सेठ तणी हवेली आय ऊभो तायो रे।
किणहिक पूछियो किण पुर थी आयो रे। मि० ॥ ११ ॥
लियो नाम ते पुर नों नारी सुण हरखी रे।
आवी बारणें नैणां सगु निरखी रे। मि० ॥ १२ ॥
कासीद न देखी हिवड़े हरखाणी रे।
सुखसाता सुणी रं रं विकसाणी रे। मि ॥ १३ ॥
उन्हां पाणी सूं उण रा पग धोवै रे।
आनन्द जल भरया नेत्रां सूं जोवै रे। मि० १४ ॥
वर भोजन करनैं कन्है बेस जीमावै रे।
पूछै बलि बलि समाचार सुहावै रे। मि ॥ १५ ॥
साम्जी किण मैं, रिमाईक छै जांणी रे।
सुण साता अति, पूछै हरखांणी रे। मि० ॥ १६ ॥
साम्जी करै पौतै तिण जागा वसै रे।
वात सारी कही सुणनें अति उम्गे रे। मि० ॥ १७ ॥

कोई कारण नहीं छै, साहुकी रै तन में रे।
उत्तर सांभली त्रिय हर्षे मन में रे। मि० ॥ १८ ॥
साहुजी म्हौ मुझने समाचार कह्या छै रे।
यहां आसी कदे, धर्मउद्योत थया छै रे। मि०॥ १९ ॥
दिन रात्रि हूं सौ दिल अति चिन्ता करती रे।
कागद मां दियो मन में दुख धरती रे। मि० ॥ २० ॥
कासीद कहै सुणो साहुजी रा आयो रे।
एम कह्यो सही अबां छां सतावो रे। मि० ॥ २१ ॥
पिण कोइक कारण सूं अल्प दिन री भेजो रे।
मुझनै मेलियो सुण बाध्यो हेजो रे। मि० ॥ २२ ॥
समाचार आपनें, साहुजी कहिवाया रे।
म्है ताकीद स्यूं आया कै आया रे। मि० ॥ २३ ॥
परदेस घणी छै, सुख सूं सुम रहिज्यो रे।
किण ही बात री मन फिकर मकीज्यो रे। मि० ॥ २४ ॥
समाचार ज्यूं ज्यूं कहै, त्यूं त्यूं मन हरषै रे।
राणी हुवै घणी कासीद में निरखै रे। मि० ॥ २५ ॥
कासीद में देखी हर्षे अति भारी रे।
ते कहै पिउ तणी अटका अति प्यारी रे। मि ॥ २६ ॥
पहुलो विरतन्त देखी कहै अजांण एमो रे।
इण दसिनी धणी पतिव्रता नौं पेमो रे। मि० ॥ २७ ॥
मुण बोल्यौ सेणो नहीं इण स्यूं प्यारो रे।
पिउ समाचार थी हरषी है भारो रे। मि ॥ २८ ॥
ओर भ्रम मति राखौ आ महा गुणवन्ती रे।
सत्यवती सती शुद्ध मारग चाली रे। मि ॥ २९ ॥
समाचार प्रभोगे पतिव्रता हरषाणी रे।
ओर भ्रम नहीं तिमहिज म्है आणी रे। मि ॥३०॥
भगवान रा गुण म्है जिम रीत बतावां रे।
तिम ससार नौं मारग ओलखावां रे। मि ॥ ३१ ॥
भीणी मीणी म्है, सूत्र रहिस बतावां रे।
लोभ रहित पणें, भिन्न २ दरसावां रे। मि ॥ ३२ ॥
दु:ख नरक निगोद मा, दूरा टल जावै रे।
ते बातां कहां तिण कारण चाहवै रे। मि० ॥ ३३ ॥

घणा लोग दुखाई, इण कारण राखी रे।
गांमो गाम थी विनतियां सामी रे। मि ॥ ३४ ॥
म्हारी नहीं मांगां शिव पथ बतावां रे।
नर नारयां भणी इण कारण सुहावां रे। मि० ॥ ३५ ॥
कासीद निर्गुण थो पिण पित्त समाचारो रे।
तिण मुख स्यूं कह्या तिण स्यूं हरखी मारो रे। मि ॥३६॥
म्हे महाव्रत भारी जिण वेण सुणावां रे।
बहु प्रकार थी नर नारयां नैं सुहावां रे। मि० ॥३७॥
नरपति सुरपति पिण राच्यां स्वामी रे।
ते मुनिवर भणी, निरखे हरषांणी रे। मि ॥ ३८ ॥
मुनि नौ अमरोसौ कोई नहीं राखै रे।
वण समर्भू तिको मन आवै ज्यूं भाखै रे। मि० ॥ ३९ ॥
ठाकुर मोहकमसिंह, सुणनें हरखांणी रे।
सत्य वचन आपरा स्वामी वण सुहांणो रे। मि ॥ ४० ॥
ऐसा भिक्खु स्वामी बुद्धि अधिक उदारी रे।
उत्तर अति भला सुणतां सुखकारी रे। मि० ॥ ४१ ॥
भिक्खु ना जबाब स्यूं, अनुरागी हर्षे रे।
भिक्खु गुण भला गुणग्राही परखै रे। मि० ॥ ४२ ॥
द्वेषी अगुणी जन सुण मुह मचकोड़ै रे।
ते अवगुण थकी आतम नैं ओडै रे। मि० ॥ ४३ ॥
संत साल तेवीसमी सुणतां सुखदाई रे।
स्वाम भिक्खु तणी बतरा मन भाई रे। मि ॥ ४४ ॥

दुहा

जिण ही भिक्खु नैं कह्यौ, थांमूं तुम बहु लोग।
अवगुण काढ़ै थांहरा स्वाम कहै तव लोग ॥ १ ॥
अवगुण काढ़ै मांहरा छोंनीं काढ़ता लोग।
म्हांरे अवगुण काढ़णा मांहे न राखणा कोय ॥ २ ॥
कायर तप संयम करी अवगुण काढ़ां आप।
कायर जन अवगुण करै, सम रहि काढ़ां पाप ॥ ३ ॥
मवाजी वैवी स्वामजी इम बहु बात अनेर।
देसूरी जातां मिल्यौ द्वेषी महाजन एर ॥ ४ ॥

तिण पूछ्यौ र्ह नाम तुम्ह, भीक्खण नाम कहीज।
तिण कह्यौ तेरापंथी ते स्वाम कहै तेहीज॥५॥
तब कहै तुम्ह मुख देखियां जावै नरक मझार।
पूज कहै तुम्ह मुख देखियां किहां जावै कहो धार॥६॥
मुझ मुख देख्यां शिव स्वर्ग तब बोल्या महाराय।
म्हे तो इसडी नां कहां मुख थी नरक शिव पाय॥७॥
पिण मुख देख्यौ थांहरौ म्हारै तो शिव स्वग।
म्हारो मुख देख्यौ तुम्हें तुम कहिणी तुम्ह नर्क॥८॥
सुण्न कष्ट हुवौ घणो ऐसी बुद्धि अधिकाय।
वलि उत्पत्तिया बुद्धि करी निर्मल मेल्या न्याय॥९॥

ढाल २४

[कहै छ रूपसी नार सुगण्यो—ए देशी]

स्वाम भिक्खु सुखदाय मणिधारी महा मुनिराय हो।
भिक्खु बुद्धि भारी।
मति मति मति पयव अथाय असु गुण पूरा कह्या न जाय हो॥
भिक्खु बुद्धि भारी।
बुद्धि अति अधिक अपारी ऐ तो स्वाम सदा सुखकारी हो। भि ॥१॥
धर देव गुरु ने धम्म, पद तीन दिखाया पम्म हो। मि।
शुद्ध सरध्यां समकित सार, धुर शिव पावड़ियो धार हो। मि० ॥२॥
दियौ गुरु ऊमर दृष्टन्त तकडी रो डांडी रो तत हो। मि।
तीन बेंच डांडी र समीच बिहु पाडै मै इक बीच हो। मि ॥३॥
विचले छ फरकज बांण कहियै तसु अन्तर जाण हो। मि।
तसु विचली बेच हुवै तत कोई अन्तर कांणी म कहत हो। मि० ॥४॥
ज्यूं देव गुरु धर्म जांण्ये पद गुरु नौं बीच पिछांणी हो। मि०।
गुरु होवै शुद्ध गुणवंत, तौ देव धम्म कहै तत हो। मि ॥५॥
होवै गुरु हीन अचारी बलि थया भ्रष्ट विचारी हो। मि।
पाडै देव मांहै पिण फर धर्म मे पिण कर दै अंधेर हो। मि ॥६॥
गुरु मिले ब्राह्मण तत् खेव तौ देव कहै महादेव हो। मि०।
जन धर्म्म बतावै एहु, जम विप्र जमावै जेह हो। मि ॥७॥
भोपा गुरु मिलै भरमाजा देव कहै देव धर्म्मराजा हो। मि०।
सुरह गायनों बाइस्सालो धर्म्म पातीस्यौ भोपा जिमावौ हो। मि ॥८॥
गुर मिलै कांवरिया कहे जी देव बताय देवै रामदेजी हो। मि।
धर्म्म कहै कांबर जिमावौ, क्ले जमारी रात्रि जगावौ हो। मि० ॥९॥

अरु गुरु मिल आवै मुक्ख तो देव बताय दै अल्ला हो। मि०।
धम्म जव करण जलपता एर चरंति आदि कहता हो। मि ॥ १०॥

दुहा

एर चरति मैरू चरति, खेर चरति मकुतेरा।
हुकम आया अल्ला साहिब रा गला काटूंगा तेरा ॥ ११ ॥
ए साखी पढ़ पापिया कसी करै पर जीव।
ते पाप उदय आयां छतां पामै दुःख अतीव ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज

जो गुरु मिलै हिंसा धर्म्मी कहै निगुणा देव कुकरमी हो। मि०।
धम्म फूल पांणी मै थापै सूत्रां रा वचन उत्थाप हो। मि ॥ १३॥
गुरु मिलै असल निग्रन्थ देव बताय देव अरिहंत हो। मि ।
धम्म जिन आज्ञा मे बताय छतां अन्तर कांण न आवै हो। मि० ॥ १४॥

दुहा

गधी मैमूदि बासती तीनूं एकण गोत।
जिणनैं जैसा गुरु मिल्या तिसा वाकिया पोत ॥ १५॥

ढाल तेहिज

इण दृष्टान्त गुरु हुवे जैसा तिकै देव बतावै तसा हो। मि ।
वलि धर्म्म इसौज बताव नर समझू न्याय मिलावै हो ॥ १६॥
उत्तम पुरुष आचारी गुरु सत वीस गुण धारी हो। मि ।
निमल धम्म देव निर्दोष मन सूं धारयां लहै मोख हो ॥ १७॥
वर सैंरा भिक्खु बताया दिस्मै भिन्न २ दरसाया हो। मि ।
ए कही चोवीसमीं ढाल भिक्खु मत अधिक रसाल हो ॥ १८॥

दुहा

भगवांण कबार इम कहै, म्हारै करणी सूं नहीं काम।
म्हेमो ओघी मुहपति बांनां छां सिर नाम ॥ १ ॥
भिक्खु कहै माया भणी बंदणा नित्यां निरंत।
तो ओघो हुवै उंदरो उन गाडर उपजंत ॥ २ ॥
पग गाडर ना पकरना जो तिरै माया थी तास।
[illegible] माता तू गही गा आया करै पैदास ॥ ३ ॥

मुहपति हुवे कपास नों कपास बणि नों होय।
जो विरै मुहपति बांदियां तो बणि नै वदनी जोय ॥ ४ ॥
जिन है बणि सा साहरी हुवे मुहपति एह।
भेष भणी इम बांदियां मत दधि केम तिरेह ॥ ५ ॥
गुण न्यारै पूजा कही तो निगुण पूजता जाय।
भोई भूला मानवी किम आगीजै ठाय ॥ ६ ॥
जिन मारग में वेसास्यौ गुण लारै पूजाइ।
निगुणा नें पूज तिके ते मारग दुजाइ ॥ ७ ॥
गुण गोलमी सीर भरी पुरस्यां पांत बपाय।
गुण बिन ठाली ठीकरी देस्यां भूख न जाय ॥ ८ ॥
एक व्रत भांगा छतां बोपण थाप जाण।
इम इक व्रत भागां छतां पाछूं जाय पिछाण ॥ ९ ॥

ढाल २५

[कामण गारी छै कुरा—ए देशी]

किणहिक स्वाम भणी कह्यौ रे, किम ए वात मिलाय।
एक महाव्रत भांगा छतां रे, पच व्रत किम जाय।
सुणज्यो दृष्टंत भिक्खु तणा रे ॥ १ ॥
स्वाम कहै तुमे सामलो रे, पाप उदै थी पिछाण।
इण भव में पिण दुःख उपजै रे सुण एक हेतु सयाण।
छत दृष्टंत भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥
एक भिखारी भीख मागतौ रे फिरतो फिरतो पुर मांहि।
पच रोटी री आटौ पांमियौ रे, भन्तर भूख अथाय। सं ॥ ३ ॥
रोटी करण लागो तदा रे भिख्याचर भागहीण।
एक रोटी ने उतारने रे चुल्हा न्यारै मन्नी दीन। सं ॥ ४ ॥
एक रोटी तबे सेक रही रे, एक पीर्र सकै आंम।
एक रोटी रो लोया हाथ मै रे, लोयो एक कठोती में ताम। सं ॥ ५ ॥
स्वान एक आयो तिण समै रे पाप तणा प्रमाण।
लोयो कठोती रो ले गयो रे, जद ते स्वाम न्यार न्हाखी आंण। स ॥ ६ ॥
स्वान लारै भिख्याचर न्हासतां रे आतुर पड़ियो अजाण।
हाथ माहै जे लोयो हुंतो रे ते धूल में भिलगियो पिछाण। स ॥ ७ ॥
तसुंकिण पाछो आवी तदा रे, देखण लागो तिवार।
धूण न्यारै रोटी पड़ी हुती रे स गई ताम मजार। सं ॥ ८ ॥

तवा तणो तवे बल गई रे, खीरां री खीर हुय गई छार।
पोषू बिलखाई इण रीत सूं रे, पाप तणा फळ धार। त ॥ ९ ॥
इमहिज एक मागो थका रे, पांच मास परवार।
दायग चोपें बे जोणनें रे, भव भव होवें खुवार। तं० ॥ १० ॥
दोष सेव्यां इम संपजें रे, इम जिलोई भाषत।
नवी विरूया आवें जेह थी रे, ते दोष सेव्यां सव आस्वत। तं० ॥ ११ ॥
भिक्खु स्वाम भली परे रे दीघो बारु दृष्टन्त।
हलुकर्म्मी सुण हरषियें रे भारी कर्म्मा भिडकन्त। तं० ॥ १२ ॥
पचीसमी ढाल परवरी रे, भिक्खु बुद्धि भरपूर।
नित्य प्रति हूं वन्दना करूं रे, पोह ऊगतें सूर। तं० ॥ १३ ॥

दुहा

आधाकर्म्मी जायगां थानक तिणरो नाम।
एहवा थानक भोगवे करे कहे निरदोषण ताम ॥ १ ॥
वलि कहे म्हें मुख सूं कद कह्यो जद बोल्या भिक्खु स्वाम।
जाय जमाई सासरे से पिण न कहे ताम ॥ २ ॥
मुज निमतें खीरो करो इम तो न कहे तेह।
पिण कीधी ते भोगवे जब दूजी बार करेह ॥ ३ ॥
जो खीरा नां सूंस करे तो न करे दूजी बार।
त्याग नहीं तिण सूं करे भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥
ज्यूं भेषधारी रहे थानक मझे, वलि कहे मुख सूं ताम।
थानक मुझ निमतें करो इम म्हें कद कह्यो आंम ॥ ५ ॥
त्यां निमतें कियो भोगवे फिर करें दूजी वार।
त्याग नहि थानक तणो तो आरम्भ टले अपार ॥ ६ ॥
वले डावरो कद कहे, करो सगाई मोय।
पिण सगपण कीधां पछे, कुण परणीजे सोय ॥ ७ ॥
वलि वहू बाजे तेहनी घर किणरो मंडाय।
डावड़ा तणोज आंणज्यो थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥
थानक बाजे तेहनों माँहि पिण रहे तेह।
न कह्यो थानक नो तिणां पिण सहु काम करेह ॥ ९ ॥

ढाल २६

[कपि रे प्रिया संदेशो कहेय०—ए देशी]

गच्छवास्यां रै उपासरै रे, मथेण तणा पोषाल।
फकीर रै तकियो कहै रे, नाम में फेरे निहाल रे।
जीव स्वाम बुद्धि विसाल ॥ १ ॥
स्वाम बुद्धि अति शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे। जी० ॥ २ ॥
कान फाड़ां रै आसण कहै रे, मसजं रै मस्तल भाल।
मत्त फुटकर तेहनें रे, मंत्री नाम निहाल ॥ ३ ॥
सन्यासी रै मठ कहै रे, रामसनेह्यां रै गेह।
राम दुवारो केइक कहै रे राम मोहलो कहै केह ॥ ४ ॥
घर राय नी रै घर कहै रे, सेठ रै हवेली सुहाय।
कहै गांम धणी रै कोटरी रे, किहांएक रावली कहाय ॥ ५ ॥
राजा रै महिल कहै सही रे, कांयक ठोर दरबार।
साधां रै थानक बाजतो रे, नाम में फेर विचार ॥ ६ ॥
सगलाई घर रा घर अछै रे, कठैएक बुरा कौदाल।
किहांयक कह्यो बुरो सही रे, आधाकर्मी असराल ॥ ७ ॥
आरम्भ तो षटकाय नीं रे, हुवो ज्यूं री ज्यूं जाण।
अरिहंत नीं नहि आगन्यां रे, छकाय नीं घमसाण ॥ ८ ॥
घर छोड़्या मुख से कहै रे, गांम २ रह्या घर मांड।
तिण घर री नाम थानक दियो रे रह्या भेष में भांड ॥ ९ ॥
आधाकर्मी थानक भोगव्यां रे, महा सावज किरिया समाल।
दूजे आचारंग देखल्यो रे, कह्यो दूजे अध्ययने दयाल ॥ १० ॥
आधाकर्म्मी आदर्यां रे, चौमासी डंड पिछाण।
निशीथ दस में निहालज्यो रे, वीर तणी एह वाण ॥ ११ ॥
आधाकर्म्मी भोगव्यां रे, रुले अनन्तो काल।
पहले शतक भगवती में पेखल्यो रे, नवमें उद्देशे निहाल ॥ १२ ॥
इत्यादिक बहु वारता रे, आखी आगम मांहि।
भिक्खु साध भली परे रे, इसी रीत दीधी ओलखाय ॥ १३ ॥
उत्पतिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर आप।
निश दिन भजतो मांहरो रे, जस रह्यो आपरो जाप ॥ १४ ॥
स्वप्नें सूरत स्वाम नीं रे, देखत ही सुख होय।
प्रत्यय नीं कहिवी किसूं रे, धारण भावनीं मोय ॥ १५ ॥

आदि जिणन्द तणी परै रे, ओलखायो म्हां आचार।
जन्म जन्म किम विसर रे, तुझ गुण अनघ अपार॥ १६॥
बार बार समीसमी रे, भिक्खु गुण मुझ चित्त।
यारा आर्या हियौ हुलस रे, परम आपसूं प्रीत॥ १७॥

दुहा

भारीमाल शोभै भला पूज भीखणजी पास।
भारूं मल्ला मसाण की वन जिम शब्द गुजास॥ १॥
मिल्य मसाण व निरमलो ठमर भिक्खु आप।
वान दया दीपाक्ता सुणतां टलै संताप॥ २॥
हलुकर्म्मी हरपे घणा भारीकर्म्मी भिक्कन्त।
अल गाही अवगुण करै, विकल वचन विकम्पन्त॥ ३॥
किणहिक भिक्खु में कह्यो वर तुम करो मसाण।
निन्दक ऐ निन्दा कर अलगा बैठ अजांण॥ ४॥
भिक्खु उत्तर दे भलो स्वान तणूंज स्वभाव।
माझर री मिणकार सुण रोवण करै राव॥ ५॥
नीच हती जांणै नहीं ए माखर अधिकार।
न्याय तणी बाजे आछ्, कै मुवां मी थार॥ ६॥
ज्यूं ऐ पिण जांणै नहीं साचै ज्ञान मसांण।
रागी झूठो ज्यांही रह्यो अवगुण करै अजांण॥ ७॥
उल्टी निन्दा ऐ करै निन्दा तणींस न्हास।
स्वभाव यांरो छै सही भूंठी कर मसांस॥ ८॥
ऐसी बुद्धि उत्पात री निमल अपूब न्याय।
मेरी मुनि महिमा निणा स्वाम घणा सुखदाय॥ ९॥

ढाल २७

[हो म्हारा राजा रा—ए देशी]

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई, भारीमाल शिष्य अति भारी।
अमृत वांण सुधा सी अनोपम हद देता ना महा हितकारी।
हो म्हारा शासण रा सिणगार स्वामी जी भिक्खु भारीमाल सूप भारी॥ १॥
हद वांण सुणी हलुकर्म्मी हरषे, द्वपी बोल्या धर्म्म द्वय धारी।
सवाईन पीहर रागि आद सी यांने कर्म्म नहीं हणवारी॥ २॥

भिक्खु कहै दुःख नीं रात्रि मूंघी झट सुख निशा सोझरी जाव।
सभी सांझ माहै मनुष्य मूंआं सूं लोकां में रात्रि मोटी लखावै ॥ ३ ॥
संत मसाण देवै ते न सुहावै, ज्यांने रात्रि घणीज जणावै।
दंभ मिथ्यात्वी तो अधिक न दीसै आठी पोहर रे आसरै आवै ॥ ४ ॥
दोहा सहित दिया दृष्टन्त दोनूं पैंताळीसे शहर पीपार।
संत चौमास में सोजत तेपनें उठै हुवौ घणौ उपगार ॥ ५ ॥
किणहिक स्वाम भिक्खु नें कह्यौ इम उपगार तो आछो कीधो।
जीव घणां में समझाया जुगति सूं लाभ धम्म रो लीधो ॥ ६ ॥
भल्ला भिक्खु कहै खेती तो चाखी पिण गांमरै गोरवै पेखी।
सो चर नहीं आय पड़या है तो टिकसी बाकी कठिन है अधिक विशेषो ॥ ७ ॥
गधा समान पाखण्डी गिणिये, जिहां चोरी विशेष जिणांरी।
सती समान धम्म सम धर धू, तिणसूं संग न करणो तिणांरी ॥ ८ ॥
किणही कह्यौ देवो दृष्टन्त करला स्वामीनाथ बोल्या सुण वायो।
करड़ो रोग उठ्यौ गंभीर केरो मृदु कुवास्यां केम मिटायो ॥ ९ ॥
हलुवांनी रा कांम लागां हुवै हलको गंभीर रो रोग गिणायो।
करड़ो मिथ्यात रोग मिटावण काजे करड़ा दृष्टन्त कहायो ॥ १ ॥
किणही स्वामीजी नें पूछा कीधी कण्वी बुद्धिवालो समझै न कांई।
मुनि भिक्खु कहै दाल मूंग मोठां री फिर दाल चणां री पिण थाई ॥ ११ ॥
पिण गोहां री दाल हुवै नहीं प्रत्यक्ष ज्यूं भारी करमा न समझै जांणी।
हलुकर्म्मी बुद्धिवान हुवै ते पक्ष छोडै जिण धम्म पिछांणी ॥ १२ ॥
शुद्ध भाव चूको देवै तिणमें न समझै, आपरी माया रो ही अजोग।
दृष्टन्त स्वाम ते ऊपर दीधो समझावण काज सयोग ॥ १३ ॥
एक बाई बोली म्हारो भरतार एहवो आखर लिखै ते अधिक अजोग।
बीजा सूं आखर बचै नहीं किणमा, मोन ठोठरो मिल्यो सयोग ॥ १४ ॥
इतरै दूजी कहै मुझ पिउ इसड़ो पोता रा लिख्या आखर पिछांणो।
ते पिण पोता सूं वंच्या नहीं आवै, अति ही मूर्ख एहवो अजांणी ॥ १५ ॥
ज्यूं आपरी भाषा में आप न जांणे, केवली भाख्यो धम्म किम आवै।
सरधा तो परम दुलभ कही सूत्र परवीण हलुकर्म्मी पावै ॥ १६ ॥
पाखण्ड्यां री मन गम्यां री पगडांडी दूर थोड़ी तो मारग दीसै।
आगे उजाड़ मोटी अटवी में दुष्ट कांटा विषम दुखदीसै ॥ १७ ॥
ज्यूं दान शील्यादिक अम्य दिखाई, पाखण्डी पछै हिंसा पमावै।
आगे चाले नहीं ये उन्मारग आय माहै घणा भटका जावै ॥ १८ ॥

पातशाही रस्ता जिम पंथ प्रभु नीं नहीं अटकै कठेई ते न्यायो।
दृष्टान्त पाग तणौ स्वाम दीधौ पार पेट ताँई पोंहचायो ॥ १९ ॥
पाग चोरी न्यायो पूछ्यां न पूरौ मुखो पेठ ताँई न मिलाई।
साखी कही मोल लियौ उण सेठी रखी अमलदियां पाघ रंगाई ॥ २० ॥
इम साची सरधा न्याय किहाँई न अटकै, झूठी सरधा अटकै मेलन साव।
दृष्टान्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा दान दया आज्ञा वरताय ॥ २१ ॥
एहवा भिक्खु स्वाम बाप उजागर, ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै।
इद न्याय सुणी हरषै हलुकर्मी भारी कर्म्या सांभल भिड़कावै ॥ २२ ॥
सखर ढाल कही सतसीसमीं दृष्टान्त भिक्खु रा दिखाया।
मति सुत सूं वर न्याय मिलाई, स्वामी जीव घणा समझाया ॥ २३ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ सुंस करावौ सोय।
ते लेई मांगै तिकौ पाप आपनैं होय ॥ १ ॥
स्वामी भाखै सांभलो कोयक साहूकार।
वस्त्र किणनैं बेंचियौ सौ रूपयां रौ सार ॥ २ ॥
नफौ मोकलो नीपनो, बेंच्यौ तास विचार।
वलि वस्त्र लेवास रा सांभलजो समाचार ॥ ३ ॥
कसमौ कीधौ तिण किया एक एक रा दोय।
तौ पिण नफौ उण तणौ बेंच्यौ तास न होय ॥ ४ ॥
कस्मौ जो लेई करी भाले भमि मझार।
तोटौ पिण उणरै तिकौ बेंच्यौ तसु न विचार ॥ ५ ॥
समझाई म्हे सूंस द्यां तिणरौ नफौ वर्माय।
हमनैं तौ ते हो गयौ तोटा मैं नहीं ताम ॥ ६ ॥
सूंस पालसी अति सखर, बिर फल तेहनैं थाय।
भांग्यां दोषण उण भणी पिण म्हानैं नहीं पाप ॥ ७ ॥
वलि दूजो दृष्टान्त वर, वमि नैं किण कृत दीध।
मुनि नै बहराई जिम गुँमा पायस तास प्रसिध ॥ ८ ॥
अथवा मुनि अन्य साध नैं घृत दे बन्दे जिन गोत।
तौ पिण फल ते मुनि तणैं हिव गृही नैं नहिं होत ॥ ९ ॥

ढाल २८

[भाज शहर में बाई०—ए देशी]

वैरागी री वाणी सुण्यां वैराग आवै दियो स्वाम भिक्खु दृष्टान्तो रे लो।
कसुंबो आप गल्यां गाल्हे कपड़ो आव रंग अत्यन्तो रे लो।
स्वाम भिक्खु तणा दृष्टन्त सुणजो ॥ १ ॥

गांठ कसुंबा री गाभे बांधे, पोते गलियो पिण रग न पमावै रे लो।
ज्यूं वैराग हीण तणी वाणी सूं अति वैराग किम विम आवै रे लो ॥ २ ॥

भेषधारी कहै म्हे जीव बचावो जीवणमी नांहि बचाव रे लो।
भिक्खु कहै थारा रह्या बचावणा मारणाम छोड्या मन स्यामो रे लो ॥ ३ ॥

थानक मांहि रह्यो किंवाड़ जड़ी ने जीव घणा मर जावै रे लो।
किंवाड़ जड़वारा सूंस किया सूं, घणा जीवां री घात न थावै रे लो ॥ ४ ॥

चोकीदार हुंतो सो चोकी तणी तो छोड़ी चोरी करवा लागो छानें छाने रे लो।
कहै लोकां नें चोकी सूं करू आखता मंनत रा पैसा देवो थे म्हांने रे लो ॥ ५ ॥

चोकी रही थारी चोरयां छोड़ तू बोल्या लोक विचारे रे लो।
दिन रा तो घर हाट देखी आवै, पछै रात्रि समै आय फाड़ै रे लो ॥ ६ ॥

पइसो पइसो लोनें देसां परही घर बैठा नें गिणायो रे लो।
ज्यूं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां मारणा छोड़ो भिक्खु फुरमायो रे लो ॥ ७ ॥

किणही पूछ्यो अणुपपाल मुनि कह्या रिख्या कर किम री तो रे लो।
भिक्खु कहै ज्यूं छै तिमहिज राखणा आथा पाछा न करणा अनीतो रे लो ॥ ८ ॥

पणु निरलोही घरता में मुनि पेसै किम अणुपपाल कहीजै रे लो।
त्रिविध त्रिविधे हणवो त्याग्यो ते रखक अभय सर्व नें भाखीजै रे लो ॥ ६ ॥

कोई कहै हिवड़ां पंचम काल छै, पूरो साधपणो न पलायो रे लो।
तब पूज कहै चौथा आरा मैं तेल्लो किसरा दिना रो कहायो रे लो ॥ १० ॥

तब ते बोल्यो तीन दिन रो तेल्लो चोथे आरै किस बाह्यो रे लो।
भिक्खु पूछ्यो एक मूग रो भोगव्यो तेलो रहै के भागे ताह्यो रे लो ॥ ११ ॥

तब ते बोल्यो परही भागै तेलो, इम चोथा आरा रो तेलो उलझायो रे लो।
फेर स्वामी पूछै पंचम आरै, कितरा दिवस रो तेलो कहायो रे लो ॥ १२ ॥

तब ते बोल्यो तेल्लो तीन दिनां रो पंचम आरै पिछाणी रे लो।
भिक्खु कहै एक मूग रो खायां शुद्ध रहै कै भागै सो जांणी रे लो ॥ १३ ॥

तब ते बोल्यो परही भागै तेलो, बलि पूज बोल्या वायो रे लो।
मूग रा सूं ई तेल्लो परही भागै दोष थाप्यां संजम किम ठहरायो रे लो ॥ १४ ॥

काउ दुसम रे मांयें कांय न्हांखी नेमेंठै छठू चरण ते नींकी रे लो।
पचम चौथा आरा में प्रत्यय सहु रे त्याग है एक सरीखो रे लो ॥ १५ ॥
दोष लागां री ख दोनूं आरा में ख लीधां चारित्र दोनूं मारौ रे लो।
दोनूं आरां माहै दोष थाप्यां सूं चारित दोनूं आरां मैं हुवै खारो रे लो ॥१६॥
भिक्खु स्वाम दृष्टन्त भली पर चार भिन्न भिन्न भेद बताया रे लो।
ज्यां पुरुषां जिम भाग अभागी स्वामी चार तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥
एहवा पुरुषां रा औगुण बोलै दुलभ कर्म्म रेख नाखै रे लो।
दुल्लभ बोध अवर्णवाद सूं दाख्यौ सूत्र ठाणांग लीजो समाखी रे लो ॥ १८ ॥
अष्टवीस मीं बल अनोपम, भिक्खु रा दृष्टन्त माखी रे लो।
उत्पत्तिया भेद मति री है आछी नन्दी मे पाठ निहाली रे लो ॥ १९ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नें कह्यो संजम लेऊं सार।
मन उठै है मांहरौ स्वाम कहै सुखकार ॥ १ ॥
घर मे पुत्रादिक घणा रुदन करै घर राग।
तुम्ह कानी हियो तेहथी अति ही कठिन अथाग ॥ २ ॥
न्याती रोता निरखनै मोह बरौ मन मांहि।
तूं पिण रुदन करै तथा कोम कठिन कहिवाय ॥ ३ ॥
तिण कह्यो स्वामी सहुत वच आंसू तो आम जाय।
परियण रोता पेखनै म्हारैं पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोइ सासर, आय जमाई जोय।
आंणौ ले भाता छतां त्रिय तो रोवै तोय ॥ ५ ॥
पिण उणरी देखा देख पिउ जेह जमाई जोय।
रुदन करै मोह राग सूं हांसी जग में होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवै पीयर तणौ वियोग पड विशेष।
वर रोवै किण वासतै, उगनम कहूं अशेष ॥ ७ ॥
ज्यूं संयम लेवै जर, स्वाम रुदन स्वजन।
तत चारित लेव तिको मोह धरै किम मन ॥ ८ ॥
तिणनूं संयम कठिन तुम, न्यो दखो दृष्टान्त।
बलि हेतु माण्या विविध स्वाम भला गोर्मत ॥ ९ ॥

ढाल २६

[भरत जी भूप०—ए देशी]

जगत तो मोह म दया जाणें छै, दया ओलखणी दोहरी।
प्रत्यय राग अठारै पाप में साबी ग्रन्था नहीं सोहरीरी।
भविकजन भिक्खु ना दृष्टन्त भारी ॥ १ ॥

पुन मोह ओलखायो प्रत्यय दियो एहवो दृष्टान्तो।
परण्यां पछै कोई परभव पौंहतो बाल अवस्थावन्तो ॥ २ ॥
मुंओ देख हाहाकार मांड्यो, त्रिया रोवै तिण वेला।
प्रत्यय हाय हाय कष्ट पुकारे भय पाकजन हुवा भेला। भ० ॥ ३ ॥
कहै बापरो आहरी री घाट कांई होसी इणरी देखो अवस्था ऐसी।
बारह वय री विधवा होई सो किण विध दिन काढसी। भ ॥ ४ ॥
एम विलाप कर लोक अधिका जगत इणनै दया जाणे।
करुणा दया एह सोहरो री करै छै, मूरख तो भ्रम माणें ॥ ५ ॥
पण भीला इणरी नहीं पेखै ऐ बधै इणरा काम भोगो।
जाणें जो रह्यो हुंतो जीवतो तो सखर मिल्यो थो संजोगो। भ ॥ ६ ॥
दोय चार होता डावरा डावरी भोग भला भोगवती।
पिण न जांणे आ काम भोगां थी माठी गति माहि पड़ती ॥ ७ ॥
तिणरी चिन्ता तो नहीं तिणनें तथा पिउ किम गति पांगरियो।
ते पिण मूल चिन्ता नहि त्यांने जगत माया मोह जुड़ियो। भ० ॥ ८ ॥
ज्ञानी पुरुष मरण जीवण सम गिणें, उत्कृष्ट सोग नहि आंण।
मूढ़ मिथ्याती मोह राग ने जीवण नें दया जाणें ॥ ९ ॥
अथवा राग द्वेष रे ऊपर, दृष्टान्त दूजो दीधो।
डावरां रै किणही माथा म दीधी साम्प्रत द्वेष प्रसिद्धो ॥ १० ॥
उणनें सहु कोई देवें ओलूंमा डावरां र माथा म कांई देवै।
प्रेम भरि दियां द्वेष कहै सहु, कोई आछो नहीं कहवै ॥ ११ ॥
डावरां मे किणही ल्याड़ दीधी अथवा भूखी दियो आणी।
कोई न कहै इणनें कांई ल्यावै प्रत्यय राग पिछांणी ॥ १२ ॥
भी राग ओलखणी दोहरी, अति ही इणन दया कह छै अजांणो।
पुन्य राग दमम तांइ वेजी वीर्तां वीतराग कहांणो ॥ १३ ॥
इम राग द्वेष भिक्खु ओलखाया, मोह राग पारंभि दया माण।
स्वाम भिक्खु न्याय सूत्र शोधी निरवद दया आज्ञा मैं जांणें ॥ १४ ॥

भरत क्षेत्र में दीपक भिक्खु, दीपा समान दीपायो।
जिहाज तुल्य भिक्खु भवतारी प्रत्यक्ष ही पेखायो ॥ १५ ॥
याद आवै भिक्खु मुझ अहनिश तन मन शरण सुधारो।
त्यां पुरुषां नी वासना लीधी जिमरो है सफल जमारो ॥ १६ ॥
गुणतीसमी ढाल जाणी गण मां चारु वचन वताया।
कठा तसुक भिक्खु गुण कहियो चिर जश कस्तुर चढायो ॥ १७ ॥

दुहा

विहरत पूज पधारिया काफरलै किण वार।
संत गोचरी संचरया आशा लेई उदार ॥ १ ॥
एक जाटणी रै उदक, आण्यो साधां जाय।
ते धोवण नहिं छै तिका कह्यौ देवै सो पाय ॥ २ ॥
साधां आय कह्यौ सही स्वाम पास सुविहांण
एक जाटणी रै अधिक पण नहीं देवै पांण ॥ ३ ॥
तब स्वामी आया तिहां बाई जल वहिराय।
अब ते कहै देवै जिसी परभव मैं फल पाय ॥ ४ ॥
जी धोवण द्यूं आपने परभव धोवण पाय।
जे जल पीधो जाय नहीं मुझ सेती मुनिराय ॥ ५ ॥
पूज तास पूछा करी गाम भणी रै वास।
तिणरो स्यूं है स गढ़, आसै पूग उजास ॥ ६ ॥
इम मुनि नें जल आपियां परभव सुख फल पाय।
निर्दोषण मा फल निफल स्वाम वदै समझाय ॥ ७ ॥
अब आज्ञा दी जाटणी वहिरी ते शुद्ध वार।
आप ठिकांणै आविया एसी बुद्धि उदार ॥ ८ ॥
मति ज्ञान महा निर्मलो भिक्खु नौ भरपूर।
सील चरण पालण निपुण स्वाम सिंह सम शूर ॥ ९ ॥

ढाल ३०

[भगवन्त भाख्या०—ए देशी]

आज म्हारा पूज सूं पाखंड परहर्या, सुरगिर आप सधीरोजी।
पाग्या साचा रे भिक्खु प्रगटया हद स्वाम अमोलक हीरो जी। आ० ॥ १ ॥
पादु शहरे रे पूज पधारिया उतरया उपासरे आणो जी।
शिष्य हेम संघात रे गोचरी उठ्या इसलै सुगुण अवसानो जी ॥ २ ॥

आया दोय जणा तिण अवसरै, सांमदासजी रा साधो रे।
खांधै पोथ्यां तणां भोटा खरा मैला वस्त्र मर्य्यादो रे। आ० ॥ ३ ॥
विहार करन्ता उपाधै आविया बोलै मुख सूं बोलो रे।
कठे भीखणजी रे भीखणजी कठै, तव भिक्खु बोल्या सोलो रे। आ० ॥ ४ ॥
भीखण नांम म्हारो स्वामी मणै वलि ते बोल्या विशेषो रे।
थांनें देखण री मन मे हुती तव स्वाम कहै तुम देखो रे ॥ ५ ॥
वलि उवे बोल्या थे सगली वारता आछी मिसी अमोमो जी।
एक बात आछी नहीं आपरी तव पूछ कहै कही सांमी रे ॥ ६ ॥
वलि ते कहिवा रे लागा वारता म्हे बावीस टोलां रा साधो रे।
त्यां सगलां नें असाध कही तिरा विरुई बात विराधो रे ॥ ७ ॥
मुनि भिक्खु कहै तुम टोला मझे, लिखत इसो अवलोयो रे।
इकवीस टोला री तुम गण आवियां सयम दणो सोयो रे ॥ ८ ॥
ऐसी लिखत थांरा गण में मही जांणो कै थे म जांणो रे।
जद उवे बोल्या रे म्हे जाणां अछां छै मुझ लिखत अछांनो जी ॥ ९ ॥
भिक्खु पमणै इकवीस टोला मभी यइज प्रत्यय उमाप्या रे।
गृही नें दीख्या देई नौ गण मझे, थे गृही तुल्य त्यांनेई थाप्या रे ॥ १० ॥
इकवीस टोलां रा तुम गण आवियां दीख्या दे लेखो मायो रे।
गृही न दीख्या देई नौ गण विषै, गृही तुल्य तास गिणायो रे। आ० ॥ ११ ॥
इकवीस टोला इम थेइज उथापिया तुम टोलो राखो तेहा रे।
तिणरी लेखो बताऊं तो भणी सांभलज्यो ससनेहो रे। आ० ॥ १२ ॥
इक बेला री थावै जिण भणी छेदो देवै तहतीको रे।
तेला री दंड भावै तिण भणी श्री जिन वच सधीको रे ॥ १३ ॥
इकवीस टोला नैं साध श्रद्धी अछो, वले नबी साधपणो देवो रे।
तिण लेखै दीख्या रे तुम भाव नवो बिवेर लाघव सूं वेवो रे ॥ १४ ॥
थांरो टोलो तिण इण लेखा थकी ऊपर गयो उवेगो रे।
इम बावीस टोला ऊपर गया दम्भ तजीन देखो रे ॥ १५ ॥
एम सुणीने ते बोल्या इण विधै, बात वचन विचारी रे।
सुणो भीखणजी रे साची वारता, बुद्धि तो थांरो भारी रे ॥ १६ ॥
इम कहि जावा रे लागा उण सम स्वाम कहै सुखकारी रे।
थांरो तो थापां करां म्हे हां न्याय तणो निर्धारी रे ॥ १७ ॥
तब उवे बोल्या रे मुझ रहिया तणी फिकर्या फिरता न होमो रे।
तद स्वाम एम कही नें तिहां थकी, रस्ता बान्धा दोयो रे ॥ १८ ॥

ऐसी बुद्धि अनोपम आपरी बुद्धिवन्त पामैं विनोदो रे।
चिमत्कार अति पाम चित्त मर्भ्हे, प्रगट पर्णे प्रमोदो रे॥ १९॥
रागी सुणनैं रे चित्त में रलि रहै, द्वषी द्वषज धारै रे।
उल्ट बुद्धि नर अवगुण आदरे, वच सुण मुंह बिगाड़ै रे॥ २०॥
वर भिक्खु री सुन्दर वारता सांभलतां सुखकारी रे।
हलुकर्म्मी जन सुण हर्षे घणा पूज वारता प्यारी रे॥ २१॥
संत तीसमीं ढाल' तमास मीं अति बुद्धि भिक्खु मीं एनी रे।
अतर्म्यमी रे माद आयां छतां चित्त में पामैं चैनो रे॥ २२॥

दुहा

विचरत पूज पधारिया, खिरियारी में सोय।
प्रश्न बौहरै पूछिया, जाति बीवसरा जोय॥ १॥
जीव नरक में जाय तसुं, कारण वालो ताम।
कुण है कही कृपा करी इम पूछयो अभिराम॥ २॥
भिक्खु उत्तर इम भणें सखर जाव सुखकार।
पथर कुवा में न्हाखियां कुण तसु पांचणहार॥ ३॥
कठिन पत्थर भारे करी आफेई तल जाय।
कम्म भार सूं कुगति मर्है, स्वाम कहै इम वाय॥ ४॥
वाहुरी पूछा वलि करी जीव स्वर्ग किम जाय।
कुंण लेजावणहार तसु, बारू अर्थ बताय॥ ५॥
भिक्खु कहै बोहरा भणी प्रत्यप पांणी मांय।
काष्ट न्हाखै नर प्रही ते किण रीत तिराय॥ ६॥
तिण काष्ठ रै तल कहो किण मांड्या है हाथ।
हल्कापणा स्वभाव सूं ऊपर तिरनैं आत॥ ७॥
हलको कम्म करी हुवां जीव स्वर्ग में जाय।
सगला कम्म रहित सो परम मोक्ष गति पाय॥ ८॥
ऐसा उत्तर आपिया, बाद बुद्धि विनांण।
वलि उत्पतिया बुद्धि धणी सखर जाव सुबिहांण॥ ९॥

ढाल ३१

[देवे मुनिवर देसना—ए देशी]

पूज भणी किम पूछियो हल्को जीव किम होय। सज्जना।
दृष्टान्त स्वामी दियो इसो सांभल जो सहु कोय। सज्जना॥
संत दृष्टान्त भिक्खु तणा॥ १॥

शुद्ध व्यवहार आलोचियां असम्य पिण सम्य थाय ल० ।
ते कामी नहीं तिण दोष नौं शुद्ध साधु नीं रीत सुहाय ल० । तं० । १८ ॥
उत्तम ए पाठ ओलखी कोई बोल रौ भ्रम कम्म योग ल० ।
सौ भिक्खु री आसता राखियां पामैं सुख परलोग ल० । तं० । १९ ॥
भाखी ढाल इकतीसमी भिक्खु बुद्धि भंडार ल० ।
दृष्टान्त न्याय में देखतां चित्त पामैं चिमत्कार ल० । त । २० ॥

दुहा

किण ही भिक्खु न कह्यौ जीव छोड़ावै जांण ।
सूं फल तेहनौं सपज वर भिक्खु कहै वाण ॥ १ ॥
कट में ज्ञान थारी धरी हिंस्या छोड़ायां धम्म ।
जीवण बचे जेहनौं कटै नहीं तसुं कम्म ॥ २ ॥
ऊंची कर बे आंगुली आखै भिक्खु आम ।
सौ बकरौ रजपूत भौ कह्यौ बांधे कुण पाप ॥ ३ ॥
मरणहार डूबै महा क डूबै मारणहार ।
सो कहै मारणहार सो आखी मरक मझार ॥ ४ ॥
भिक्खु कहै कुमता भणी तारै संत तिवार ।
समझावै रजपूत में शिव मार्ग श्रीकार ॥ ५ ॥
जे बकरा रौ जीवणु, बांछै नहीं लिगार ।
तिण ऊपर दृष्टान्त ते थांमल्यो सुखकार ॥ ६ ॥
साहूकार रै दोय सुत एक कुसुत बदकार ।
ऋण करवी आगां तणुं, माथै करै अपार ॥ ७ ॥
दूजो सुत जग दीपतौ यश संसार मझार ।
करवी आगां रौ करज उतारै तिण वार ॥ ८ ॥
कहौ बेटन वर्ज पिता दोय पुत्र मैं देग ।
करजे भार धरै तसुं ऋण मेटत पेम ॥ ९ ॥

ढाल ३२

[समता रस विरला—ए देशी]

काम माथे पुन भणिर कन्धो बार बार पिता बर्जमा रे ।
समझ नर विरला ।
करवी आगां रा माप थाय थी प्रत्यय तुण पामीज रे । सम० ॥ १ ॥

अधिक माया री जे कर्ज उतारै, जमक ताम महिं बार रे। सम०।
पिता समान साधुजी पिछाणो बकरो रजपूत ने सुत मांणो रे ॥ २ ॥
कम्म रूप ऋण मार्यै कुण करतो आगलाकम्म कुण अपहरतो रे। सम०।
कम्म ऋण रजपूत मार्यै करै छ, बकरा संचित कम्म भोगवै छै रे ॥ ३ ॥
साधु रजपूत नं मर्जे मुहाय कम्म करज करै कांय रे। सम०।
कम्म बंध्यां घणा गोता खासी परभव में दुख पासी रे ॥ ४ ॥
सत्तरपम तिणनें समझायी तिरणो तिणरो सझयो मुनिरायो रे। सम०।
बकरा जीवावण नहीं दे उपदेश कही आरूनें बुद्धिवत रेस रे ॥ ५ ॥
इमहिज कसाई सौ बकरा हणता शुद्ध उपदेश दे ताख्यो सतो रे। सम ।
कसाई गुणग्राम साधु रा करन्तो मुझ तारक आप महंता रे ॥ ६ ॥
बकरा हर्ष्या जोव बचिया बिचय यांरै काज न दियो उपदेश रे। सम०।
ज्ञानादिक सिद्ध कसाई पर माया पिण बकरा तो मुत्र न पाया रे ॥ ७ ॥
कहै कसाई दोनूं कर जोड़ सौ बकरा कर छोड़ रे। सम०।
कहो तो नीरो चारो यांनै चराऊं, पछ काचो पांणी त्यांनै पाऊं रे ॥ ८ ॥
आप कहो तो एवर में उछरूं कहो तो असंग्यिा करेरूं रे। सम ।
आप कहो तो मूंप आसन आंणी पाडगा धोवण उन्हो पांणी रे ॥ ९ ॥
तुम सूको चारो निरजो बहुतरो एवर साधो रो उछेरो रे। सम०।
साधु कहै सूंस सबरा पालीजे जासता सूंसां री कीजे रे ॥ १० ॥
सूंसां री एम भगवान दव, बकरां री मूल न मर्म रे। सम०।
उपदेश देवै जो बकरा बचावण तो बकरां री व्रत भलावण रे ॥ ११ ॥
समझ्यो कसाई सकर मिव साई इणरी मुनि नं दलाली आई रे। सम ।
तेहिज धर्म्म साध न जोय पिण बकरां री धर्म्म न कोय रे ॥ १२ ॥
कसाई अज्ञानी री ज्ञानी कहायो पिण बकरां तो ज्ञान न पायो रे। सम ।
कसाई मिथ्याती रो समकती कहियै पछ तत्त्व बकरा न सर्व्हियै रे ॥ १३ ॥
हिंसा री दयावान हुवो कसाई पिण बकरां नै दया न आई रे। सम० ।
तिरियो कसाई बकरा नहीं तिरिया दुर्गति मूं नहिं डरिया रे ॥ १४ ॥
कसाई तिरियो ते धर्म्म इण काज तारक महामुनि राज रे। सम ।
निरण तारण कसाई रा तमामो बार छिया में विमामो रे ॥ १५ ॥
तस्कर नो दृष्टो दृष्टान्त तर गोभगगा समन्त र। गम०।
तिण ही मथी मी हाथ तिण बार, उर्रा ना अणगार रे ॥ १६ ॥
तस्कर गधि मर्म निगार गाम्या है आय तिमा रे। गम०।
तब मुनिवर कहै जागीन नाम कुण मो आया तिण काम रे ॥ १७ ॥

कहै तस्कर म्हे तो चोर कहाया इहां चोरी करणनैं आया रे। सम०।
सहंस रुपयां री थेली महली सेठ, निडर लेजावस्यां नेठ रे॥ १८॥
तब साधु उपदेश देवै तिण बार, कह्या चोरी रा फल दुःखकार रे। सम०।
भाग नरक निगोद ना दुःख अधिकाया भिन्न २ भेद बताया रे॥ १९॥
धन तो न्यातीला सहू मिल खासी परभव दुःख तूं पासी रे। सम०।
इम उपदेश देई मुनिराया त्याग चोरी ना कराया रे॥ २०॥
तस्कर कहै मुझ कुवतां ने ताख्यो विषम कर्म्म सूं राख्यो रे। सम०।
बारु विविध गुण करत विख्यात प्रगट थयो प्रभात रे॥ २१॥
खोल दूकान तणो धणी आयो ज्ञान नहीं घट माह्यो रे। सम०।
पेढ़ी में नमस्कार करि प्रसिद्धो कांयक लटको साधू नैं ही कीधो रे॥ २२॥
तस्कर नैं पूछा करी तिवार कुण हो खोल्या किण दुवार रे। सम ।
तस्कर बोल्या म्हें चोर छां ताम अब तो त्यागे दीधी आम रे॥ २३॥
कुंची कटायनैं रुपया हजार, थेली मांहे मेहली थे तिवार रे। सम ।
सो म्हे सांझ देखता था सोय आया लेवण अवलोय रे॥ २४॥
साधां उपदेश देई समझाया चोरी ना लक्षण छोड़ाया रे। सम ।
साधां री भलो होयजो कारज सारया तुरत कुवतां नै तारया रे॥ २५॥
मेसरी सुणनै हरख्यो मन माह्यो पड़ियो साधां रै पायो रे। सम०।
आप म्हारी हाट मर्माई उधरिया सकल मनोरथ सरिया रे॥ २६॥
थेली म्हारी आप राखी थिर थापी प्रत्यय लेजावता चोर पापी रे। सम०।
हिवड़ा लेजावता रुपया हजार निपट हुंतो निराधार रे॥ २७॥
चार पुत्र मुझ चतुर विचारा कर्म्म वश रहिता कुंवारा रे। सम ।
सुत चार्रूई परणाव सूं सार, श्री आप तणी उपगार रे॥ २८॥
इम कहै मेसरी वचन अथागो ऋषजी तणो तो रागो रे। सम०।
धन राखण उत्पन्न भ धार तेतो तस्कर तारणहार रे॥ २९॥
कसाई समझ्यां बकरा कुकर्मे कथा श्री तस्कर समझ्यां धन री धनी गामी रे। सम०।
कसाई चोर तारण रिष नामी धन बकरा राखण नहीं धामी रे॥ ३० ॥
दीक्षा दृष्टान्त कहूं तंत सार, एक पुरुष लेन्ट अधिकार रे। सम ।
सो पुरुष परणारी भी नयणतार अति ही वधांगी प्रीत अपार रे॥ ३१॥
ले संग आयो मुनि तन पाय तारी न्यो सममाय रे। सम०।
घर गो मौ पात मुणी मन गाथो अधिर वैराग्य आयो रे॥ ३२॥
त्याग जाण और दीक्षा न ठाम गाय मुनि ना गुणग्राम रे। सम ।
भार मीन न्याग न उचारयो निरूप विमन ना निगारयो रे॥ ३३॥

शील आदरियो सुण्यो तिण नार, उसनें द्वेष अपार रे। सम ।
उणनें कहे म्हें घाल्यो इकसार, धुर ही थी थां पर भार रे ॥ ३४ ॥
काम औरां सूं नहीं मुझ कोय इसड़ी धारी अफसोस रे। सम ।
कहे तो म्हारो कह्यो मानलें सास, म्हारूं करीं गृहवास रे ॥ ३५ ॥
कह्यो न मान्यो तो कूवे पड़ सूं मोत कुमोते मरसूं रे। सम ।
जद ते कहे मोनें मिलिया जिहाज प्रत्यक्ष मक-ऋषि पाज रे ॥ ३६ ॥
थां परनारी नों पाप छतायो म्हैं त्याग किया मन लायो रे। सम० ।
तिणसूं म्हारें थांसूं मूल न कार, करे अनेक प्रकार रे ॥ ३७ ॥
इम सुण वो कूवें पड़ी आम तिणरो पाप साधू न न थाय रे। सम ।
समझ्यों कसाई बकरा बच्या ताय तस्कर समझ्यां रह्यो धन जोय रे ॥ ३८ ॥
नर लम्पट समझ्यां कूवें पड़ी नारो चतुर हिया में विचारो रे। सम० ।
तस्कर कसाई लंपट नें तारण साधां उपदेश दियो सुधारण रे ॥ ३९ ॥
ए तीनूं तिरिया साधु तारणहार त्यांरों धर्म्म साधां में उगार रे। सम० ।
मुक्ति मारग यां तीनां रे बताया, घणा जनम मरण मिटाया रे ॥ ४० ॥
बकरा बच्या धणी रे धन रहियो तिणरो धर्म्म साधु रे न कहियो रे। सम०।
नार कूवा पड़ी तिणरो न पापो अदल विचारो आपो रे ॥ ४१ ॥
केई अज्ञानी कहे गूण्ण भरमी जीव धन रह्यो तिणरो है धर्म्मो रे। सम ।
उणरी सरधा र लेखें इम थापो प्रत्यक्ष नार मुवारो है पापो रे ॥ ४२ ॥
नार मुवारो पाप दिए मांण जीव बचियां रो धर्म्म कांय आंण रे। सम० ।
बले धन रह्यां रो धर्म्म कांय धारो बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ ४३ ॥
भिक्खु स्वाम इम भेद बताया असल न्याय ओलखाया रे। सम० ।
कसाई तस्कर लम्पट केरो भिक्खु दृष्टन्त दियो भलेरो रे ॥ ४४ ॥
ऐसा भिक्खु रिष महा अवतारो त्यां श्रद्धा शोभी तत सारी रे। सम ।
ज्यां पुण्यां री जे प्रतीत करसी त्यांरो जीतव जन्म सुधरसी रे ॥ ४५ ॥
ऐसा भिक्खु याद आव मोय हरष हियें अति होय रे। सम ।
स्मरण आप तणो नित्य सार्वू भिक्खु पारस साधो म्हैं लावूं रे ॥ ४६ ॥
सुर गिर सांप्रत आप सधीरा मोनें मिलिया अमाम्क हीरा रे। सम ।
पंचम आरा मै किध्यो प्रकाश सखरी फैली है वास सुवास रे ॥ ४७ ॥
दोय तीसमी ढाले दृष्टन्त बगन बहु विरतंतो रे। सम ।
स्वाम भिक्खु ओलखायो विशेष तिण म्हें पिण भाख्यो सु अशेष रे ॥ ४८ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नें कह्यो जीव बच्या ते जाण।
दया कहीजै तेहनैं जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
भिक्खु कहै कीडी भणी कीड़ी जाणै कोय।
ज्ञान कहीजै तेहनैं कै कीड़ी ज्ञानज होय ॥ २ ॥
तब ते कहै कीडी भणी जे कोय कीड़ी जाण।
ज्ञान कहीज तेहनैं पिण कीडी नहिं ज्ञान ॥ ३ ॥
वलि भिक्खु कहै कीडी भणी कीड़ी सरधै कोय।
समकित कहीज तेहनैं कै कीड़ी समकित होय ॥ ४ ॥
तब ते कहै कीडी भणी कीड़ी सरधै सत।
समकित ते सरधा सही पिण किड़ी नहिं समकीत ॥ ५ ॥
त्याग कीडी हणवा तणां दया तेह दीपाय।
कै कीडी रही तिका दया भिक्खु पूछी वाय ॥ ६ ॥
तब ते कहै कीडी रही तिका दया कहिवाय।
खोटी सरधा थापवा बोल्यो झूठ बणाय ॥ ७ ॥
भिक्खु कहै पगने करी कीडी उड़ गई ताहि।
तुझ लेखे दया उड़ गई, निरमल निरखो न्याय ॥ ८ ॥
जब ते कहै विचारने कीडी हणवा रा त्याग निपाय।
दया तेहिज दीसै खरी पिण कीडी रही न दयाय ॥ ९ ॥

ढाल ३२

[कर्म्म भुगत्यांईज छुटिये—ए देशी]

कल्ला भिक्खु बोलिया कीडी मारण रा पचखाण खास रे।
तेहिज दया साची कही बारु गुणी इक वाग रे लाल रे।
ओपमो रे बुद्धि भिक्खु तणी ॥ १ ॥
कही दया निज घर म रही न कीड़ी पास कहाय लाल रे।
तब ते कहै पोता कन्ने कीडी पास न थाय लाल रे ॥ २ ॥
पूज कहै घर म दया कीड़ी प दया नहिं थाय लाल रे।
निमग मखन करणा कही साचो आव भुराय लाल रे ॥ ३ ॥
करणी जतन दया तणी कै कीडी रा जतन कराय लाल रे।
उ कहै घर दया तणा दम लाभ थाली आयो दावणाय रे ॥ ४ ॥

त्रिविध त्याग हणवा तणा दया संवर रूप देख लाल रे।
त्याग बिना ही हणें नहीं सम्बर निर्जरा संपेख लाल रे॥ ५॥
ग्रसन छुड़ाय हणें नहीं दया तेहिज दीपाय लाल रे।
अगत हण जीवां भणी निज पोता रो दया न आय लाल रे॥ ६॥
भारी बुद्धि भिक्खु तणी सखरी सिद्धंत संभाल लाल रे।
न्याय मिलाया निरमला मांज्या भ्रम मयाल लाल रे॥ ७॥
किणहिक इम पूछा करी महा मोटी मुनिराय लाल रे।
मति ही थाकी उजाड़ मे चाल्यण शक्ति न कांय लाल रे॥ ८॥
तेहजेई गाडी आवती तिण गाडा ऊपर बैसांण लाल रे।
गाम मांहि आण्यो सही तेहनें कांई थयो जांण लाल रे॥ ९॥
भिक्खु कहै गाडी नहीं पूणिया आवत पेख लाल रे।
गय चढ़ाय आण्यो गाम मैं तिण में स्यूं थयो तुम लेख लाल रे॥ १०॥
तब ऊ बोल्यो तड़क नें गधा री स्यूं करो बात लाल रे।
स्वाम कहै साधु भणी दोनूं अकल्प देखात लाल रे॥ ११॥
गाडे बैसांणे आण्यो गाम मैं थे धर्म तणो करो थाप लाल रे।
तो गधे बैसांण्यां ही धर्म है, पाप छै तो दोयां में ही पाप लाल रे॥ १२॥
उत्पत्तिया बुद्धि आपरी निरमल चारित नीत लाल रे।
सरधा शुद्ध दीपती सही चारु स्वाम वदीत लाल रे॥ १३॥
पांणी अणगल पाविया केई पाखण्डी कहै पुन्य लाल रे।
केयक मिश्र कहै तिहां ते दोनूं ई सरधा जबून लाल रे॥ १४॥
पुन्यवादय कहै पूत्र मै सुणो भीखणजी बात लाल रे।
महा खोटी सरधा मिश्र री किहांई मेल न खात लाल रे॥ १५॥
भिक्खु स्वामी इम भणें चिणगरी फूटी एक लाल रे।
चिणगरी दोय फूटी सही चारु करलो विवेक लाल रे॥ १६॥
मिश्र कहै छै मांनवी त्यारी फूटी एक लाल रे।
पुन पक्षी पाथरो दोनूं फूटी देख लाल रे॥ १७॥
जाब दियो इम जुगत सूं अहो अहो बुद्धि अनूंप लाल रे।
अहो अहो भिक्ष्या भारी भिक्ष चरचा हद चूंप लाल रे॥ १८॥
तुम चिन्तामणि सुरतरु, पदमें भिक्खो प्रकाश लाल रे।
आशा पूरण आप छो चारु तुम विश्वास लाल रे॥ १९॥
तंत वाण तेतीसमी भिक्खु गुण भंडार लाल रे।
अंतर्यामी आंतरा, सुगुण संपति दातार लाल रे॥ २०॥

दुहा

पचावनें वर्ष पूज्य जी शहर कांकरोली सार।
सेहलोतां री पोल में ऊतरिया तिण वार ॥ १ ॥
प्रत्यय चारी पोलरी अठी हुंती जिण वार।
ऋष भिक्खु रहितां थकां एक दिवस अवधार ॥ २ ॥
बारी खोली बारणें दिशा आवण देख।
निसरिया भिक्खु दिशा पूछै हेम संपेख ॥ ३ ॥
स्वामी बारी खोलण तणो नहीं काई अटकाव।
तब भिक्खु बोल्या तुरत प्रत्यय ते प्रस्ताव ॥ ४ ॥
पाली शहर तणो प्रत्यय नांम चौथमी म्हाल।
दर्शण करवा आवियो ए देखें इण काल ॥ ५ ॥
अति शंकिलो एह छै, तिण इण बात री तांम।
शंका इणरें मां पड़ी केम पड़ी तुम आंम ॥ ६ ॥
हेम कहै म्हारें हियें कांई शंका री कांम।
पूछण रूप म्हें पूछियो नहिं शंका रो नांम ॥ ७ ॥
पूज कहै पूछै इसी इणरो मांहि अटकाव।
अटकाव हुवै तो एहनीं म्हें खोलां किण न्याव ॥ ८ ॥
हेम सुणी धार्यो हिये किंवाड़ियो खोलाय।
आहार लियां में दोष नहीं खोल्यां दोष किम थाय ॥ ९ ॥

ढाल ३४

[सुणजो भरनाथ—ए देशी]

स्वाम भिक्खु रा दृष्टन्त सुहाया, भव्य उत्तम जीवां मन भाया।
सुणजो चित्त शांति भिक्खु मा भारी दृष्टन्त ॥ १ ॥
वचन सुधा सागरें स्वामी सार, बुद्ध भविजन तारण सार।
सुणजो सुखदाया स्वामी मा दृष्टन्त सुहाया ॥ २ ॥
असल न्याय भिन्न २ ओलखाया प्रभु पंथ भिक्खु हद पाया ॥ ३ ॥
भेषधारी सरधाहीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला ॥ ४ ॥
समकत हीण पे अधिक भार वांरो असल नहीं आधार ॥ ५ ॥
धोया बणी री भनारी थी एक साबती बणो मूरख म पेल ॥ ६ ॥
ऊंदरा ऊपडा कीधी आनी रात एक बण पिण नाख्यो हाथ ॥ ७ ॥
सांग धार्यां माहैं समरत नांहि पेट उदर सम नर पाय ॥ ८ ॥

कह्यो साध श्रावक रत्नां केम कहाय ऐ तो दोनूं सरीखा देखाय ॥ ९ ॥
समकित रहित दोनूंई तत्त दियो स्वाम भिक्खु दृष्टन्त ॥ १० ॥
कोयलां रो तो राब अति कालो काला बासण म रांधी कराली ॥ ११ ॥
अमावस नीं रात्रि आंधा जीमण वाला परूसण वालाई आंधा पयाला ॥ १२ ॥
जीमतां बोल कुंआरा करंता कालो कूतो टालजो कहिवता ॥ १३ ॥
कहै खबरदार होय जीमजो सोय रखे आय आयगा कालो कोय ॥ १४ ॥
सूझ पड़े नहीं आंखे अंधेरो, कालोहिज कालो हुवो भेलो ॥ १५ ॥
ज्यूं सरधा आचार री नहीं ठिकाण सगलो मिलियो सरीखो घाण ॥ १६ ॥
साध श्रावकपणा रो अश नहीं सारो सवर ऐसो दोयां र अमारो ॥ १७ ॥
न्याय री वात नहीं गुरु नीति करे बोलै वचन विपरीत ॥ १८ ॥
वस्त्र पात्रा अधिका राखै विशप, आधाकर्मादि दोष अनेक ॥ १९ ॥
वले कहै भीखणजी कालो एणरो तार, गुरु स्वाम बोल्या सुखकार ॥ २० ॥
तव गुरु कहै काई तार कांई, थानें आंख ही सूझे नाहीं ॥ २१ ॥
सबल आधाकर्मी आदि न सूझे, कह्यो नान्हा दोष किम बूझे ॥ २२ ॥
दोष री थाप थांरै दिन रैणो कठिन काम सरधा रो तो कैहणो ॥ २३ ॥
बाय रै संग घरटी मांहि आई, पीसती आवे ज्यूं उन्ची जाई ॥ २४ ॥
आखी रात्रि पीसी डाकणी में उसारयो ऐहवो दृष्टन्त भिक्खु उतारयो ॥ २५ ॥
ज्यूं दोष लगाय नें दड न सेवें कुमति दोष री थाप करेवें ॥ २६ ॥
थांरे थांरे थयू ही नहीं रहु कांई देवा सबे दृष्टन्त देखाई ॥ २७ ॥
ऐसा भिक्खु रूप आप उजागर, शरणागत महा बुद्धि सागर ॥ २८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अमामी धुर जिन आज्ञा परमति धामी ॥ २९ ॥
जिन आगन्या मांहैं धम्म जतायो आज्ञा बारे अशुभ सहु आयो ॥ ३० ॥
सगला न्याय मेल्या सूत्र देख वाह वाह भिक्खु बुद्धि विशेष ॥ ३१ ॥
थारे आयां तन मन हुल्साय रस वर्णिवा तूं महपराय ॥ ३२ ॥
स्यं उपमा तुमने कहूं सार, अभिनव जिण सरिसा उदार ॥ ३३ ॥
उववाई में उपम एह अनूंप समर पिवरां न दीपी सरूप ॥ ३४ ॥
शान्तिनाथ ज्यूं कीधी धर्म मांवि सगरी उगरां भार समाधि ॥ ३५ ॥
बारु धारण आरती मुविनाश म्हार तूं निज दीन दयाल ॥ ६ ॥
स्वाम भिक्खु गुण गावत ममरियो म्हारो हियो हरष सूं भरियो ।
चौवीसमी ढाले भिक्खु चित्त भाया बारु परमानन्द वरताया ॥ ३७ ॥

दुहा

कालूवादि करली भणी नहिं समकित शुद्ध नींव।
सिद्धां में पावै नहीं आवे तास अजीव ॥ १ ॥
बखतरामजी नाम तसु, पुर मांहे पहिछांण।
कुकरमा कुबुद्धि केलवी विहार करि गया जांण ॥ २ ॥
पाछै भिक्खु आविया चरचा करत पिछांण।
भेष मात्र मुनि नैं कहै, बखतांजी री वांण ॥ ३ ॥
कालूवादि इसड़ी कहै, अति घन बात अतीव।
भीखणजी गाथा भणै, कहै एकलड़ो जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा

एकलड़ो जीव खासी गोता, भव मांझा नहीं आवै बेटा पोता।
नरक मांहि खातां मारी पाथी मनुष जमारो मत हारो ॥

दुहा

इण विध भीखणजी कहै, गाथा में इक जीव।
वलि नव तत्व में पांच कहै, विरुद्ध बात अतीव ॥ ५ ॥
जो पांच जीव नव तत्व में तो कहिणी पांचलड़ो जीव।
एकलड़ो ते किम कहै, इम पूछ्या तिण कीव ॥ ६ ॥
पूज कहै तसु पूछणो सिद्धां में सुखकार।
कह्यो आत्मा केतली तब कालूवादि कहै चार ॥ ७ ॥
फिर स्वामी इम पूछणो, ते च्यारूं जीव कै नांहि।
जब कहै च्यारूं जीव है, चार जीव तसु न्याय ॥ ८ ॥
चोकड़ो जीव स्यादि कह्यो मुझ मत अधिको एम।
सामान्य ते समभियो भेदो भाव विशेष ॥ ९ ॥

ढाल २५

[राजा दशरथ दीपतो रे—ए देशी]

पूज भीखण जी पधारिया रे देश ढूंढार दीपायो रे।
अति घणा श्रावगी आविया रे चरचा करण चित्त चाह्यो रे।
भारी बुद्धि भिक्खु तणी रे ॥ १ ॥
स्वाम भणी कहै श्रावगी रे नग्न मुद्रा मुनि मार्ग रे।
तार मात्र वस्त्र न राखणो रे, राखै ते परिग्रह थी भाग रे।
तब उत्तर भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥

वस्त्र राखो पीस टाल्या रे, तो भागा शीत परीषह थी साझ्यो रे।
तिण सूं वस्त्र नहिं राखणो रे, जद पूज बतावै न्यायो रे॥ ३॥
स्वाम कहै किसरा सही रे, परीषह भेद प्रकाशो रे।
ते कहै परीषह बावीस छ रे, वलि पूछै पूज विमासो रे॥ ४॥
कह्यो प्रथम परीषहा किसो रे, ते कहै क्षुध्या रो साझ्यो रे।
पूज कहै थांरा मुनि रे, आहार कर कै नाझ्यो रे॥ ५॥
यावणी कहै करै सही रे, इमर्टक आहार ते जागां रे।
पूज कहै तुम लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे॥ ६॥
ते कहै क्षुध्या लागां छतां रे, आहार करै अणगारो रे।
स्वाम कहै सी लागां सही रे, वस्त्र ल्हे राखो विचारो रे॥ ७॥
पूज वलि पूछा करी रे, प्रगट तुम मुनि पहिछांणी रे।
पांणी पीवै कै पीवै नहीं रे उत्तर आपो सुजांणी रे॥ ८॥
याकणी कहै पीव सही रे, इमर्टक उदक ते जांगा रे।
स्वाम कहै तुम लेखै तिके रे, दूजा परीषह थी भागा रे॥ ९॥
ते कहै तृषा लागां छतां रे, उदक पियै अणगारो रे।
स्वाम कहै सी टालिवा रे, वस्त्र आंडा ल्हे विचारा रे॥ १० ॥
भूख लागां अन्न भोगवै रे, प्यास लागां पियै पाणी रे।
इम निर्दोषण आचरयां रे न भाग परीषह थी जांणी रे॥ ११॥
तिम सीत ममाण्यि राख्या रे, मूर्च्छा रहित मुनिरायो रे।
वस्त्र मोनापेत बावर रे, ते परीषह थी भागे किण न्यायो रे॥ १२॥
इत्यादिक उत्पात सूं रे, उत्तर दीधा धर्मायो रे।
स्वाम गुणां रा सागरू रे, ऊंधी बुद्धि अभिरामा रे॥ १३॥
एक दिवस बहु भाविया रे, याकणी स्वामी पासो रे।
कहै वस्त्र न राखो तो तुम तणो रे, वार करणो विमासो रे॥ १४॥
स्वाम कहै दवेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छाड थया अणगारो रे।
तिण माहैं तीन पछेवडी रे, चोल पट्टादि कह्या सुविचारो रे॥ १५॥
जिण वारता राखां जिण रे आमता तुम शास्त्र नीं भावां रे।
नग्न होय आसां वस्त्र नै म्हांगसै रे, प्रतीत दिगम्बर मी पावां रे॥ १६॥
भाव ल्यिा अति गुण सूं रे, बहिर्मन हर्षे विशेषो रे।
स्वाम सीम धारै निरमली रे, पग रहित मतिगो रे॥ १७॥
बार बार भिक्खु मुनिवरू रे, अन्तर्यामी भारो रे।
दोरा नं दान पात्र में र अहूं तमागे भाग रे॥ १८॥

पैंतीसमीं ढाल परवरी रे, परचा दिगम्बर नीं संणी रे।
भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय जश सुख हद जांणी रे॥ १६॥

दुहा

दया धर्म्म अति दीपतौ श्री जिन आण सहीत।
भिक्खु स्वाम भली परै, प्रवर परख्यौ अति प्रीत॥ १॥
केई हिंस्या धर्म्मी कहै, दया दया पुकारो कोय।
दया रांड लोटै पडी उकरडी रै मांहि॥ २॥
भिक्खु भूप माखै भली दया मात दीपाय।
उत्तराध्ययन चौबीस मैं कहि आठ प्रवचन मांय॥ ३॥
किण सेठ आउ पूरौ कियौ स्त्री रही लारै सोय।
सपूत सुत हुआं ते सही यत्न करै ते जोय॥ ४॥
कपूत हुआं ते मात नै बदै वचन विकराल।
रडकार नीं गाल द, बोलै वाल पपाल॥ ५॥
धणी दया ना दीपता महावीर महाराज।
ते तौ मात सिखाविया कीधा आतम काज॥ ६॥
श्रावक साधां सपूत ते दया मात इम जांण।
यत्न करै अति जुगत सूं, विरूई न थव बाण॥ ७॥
प्रगट्या कपूत थां जिसा बोलावौ कहि रांड।
दया मात नें गाल दे, ते भव भव होवै भांड॥ ८॥
जिन मत एम जमावता पाखंड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहां संचर्या तिमर हरण तिरकार॥ ९॥

ढाल ३६

[जोगीडौ कपट करै छै —ए देशी]

विगहित भिक्खु म कह्यौ रे श्रे जावौ जिण गांम रै मांहि।
वसका पर्दै मोटो तणं तिणरौ कांई कारण कहिवाय।
भिक्खु भवतारक भारी रे, भाप प्रगट्या भवतारी रे।
उत्पत्तिया बुद्धि भभिरारी रे दृष्टन्त दिया सुविचारी रे॥ १॥
स्वाम कहै सुण्ह सांमली रे गारडु आवै गांम।
सारणियो न कारण भणी जद कहो टर कुंण तांम॥ २॥
प्रमान मीठा कांटा भर्दै र पाकस्यां सारणियां म बोलाय।
तौ धणरा पर्ग सारणिया लग लगा स्वामीरा है पर्ग ताहि॥ ३॥

पूजा तो लोक राजी हुवै रे त्यांरे तो चिन्त न काय।
आगै उपद्रव शहर तणो मिटै, तिणसूं और तो हर्षित थाय ॥ ४ ॥
ज्यूं गाम मे साध आयां छतां रे, भेषधारयां रै धसका पड़ंत।
त्यांरा श्रावकां रै धसका पड़ै मारीकर्म्मा तो इम मिथ्यात्व ॥ ५ ॥
साधु सरधा आचार बतायनैं रे, देखो म्हांनै ओलखाय।
त्यांरै धसका पड़ै तिण कारणे, हलुकर्मी तो मन हरषाय ॥ ६ ॥
उत्तम मन इम चिंतवै रे, सुणसां साधां रा बखांण।
दान सुपात्र देई करी करस्यां आतम तणा कल्यांण ॥ ७ ॥
कुगुरां रा पक्षपाती भणी रे, संत मुनि न सुहाय।
दृष्टन्त स्वाम दियो इसो, ते तो सांभलज्यो सुखदाय ॥ ८ ।
जुरवाली गयो जीमवा रे, जीमणवार म जांण।
पकवान तो कडुवा घणा बद बद कहै लोकां नें जांण ॥ ९ ॥
लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान।
तुझ शरीर मे ताव है, जिणसूं कडुवा लागै छै जान ॥ १ ॥
ज्यूं मिथ्यात्व रोग जाड़ो हुवै रे, संत तास न सुहाय।
हलुकर्मी हिये हुलसा चित्त म मुनि दरशण चाहि ॥ ११ ॥
भूखां मरता रोटी वासतैं रे, सांग साधू नो धारत।
त्यांनें कहै चारित चोखो पालज्यो जद स्वाम दियो दृष्टन्त ॥ १२ ॥
बलवन्त बाल्यै बांधनै रे, तिणनें कहै सिर नाम।
सती माता तेमरा तोडजे ते कांई तोड़ै तेमरा ताम ॥ १३ ॥
ज्यूं भेष पहिरै रोटी कारणें रे, तेहनें कह्यो चोखो चारित्र पाल।
ते कठिण चारित्र पालै किण विधै, दुक्कर कह्यो है दीन दयाल ॥ १४ ॥
चोखा खोटा गुरु उपरै रे, दियो नावा नों दृष्टन्त।
काठ की नाव साजी सही एक फूटी नावा सिद्धान्त ॥ १५ ॥
तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार।
शुद्ध संत साजी नाव सारिखा तिरै आप तिरै पर तार ॥ १६ ॥
सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे, भाग हुय औरां नें डबोय।
पत्थर नावा जिसा कह्या पाखंडी जे तीन सौ तेसठ जोय ॥ १७ ॥
उत्तम तास न आन्नै रे, भाग्या हुवै तौ छोड़णा सुलभ।
सांगधारी फूटी नावा सारिखा, त्यांनें छोड़णा घणा दुर्लभ ॥ १८ ॥
इम भिक्खु ओलखाविया रे, पाखण्डियां ने पिछांण।
सूं बुद्धि करहियै स्वाम नी बाट रिहा सग कर्म क्यांण ॥ १९ ॥

ऊभी तुम्ह आलोचना रे, तीरथ चक्खुल तांम।
शासण नायक स्वाम मैं करू बारम्बार सलाम॥ २०॥
तंत बाम पद्य तीसमी रे, दाख्या स्वाम दृष्टन्त।
भिक्खु भजन थी भय मिटै, वरु जय जस सुख उपजंत॥ २१॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ टोला वाला ताहि।
शीत उष्ण अति कष्ट सहै, कठिण लोच कराय॥ १॥
तप छठ अठमादिक तप खतरी करणी सोय।
पूछी आखी यां तणी एहना फल अवलोय॥ २॥
स्वाम कहै इम सेठ री पड़यौ वेबाळौ पेख।
सुरत लाख रुपयां तणौ बिगड़ी बात विशेष॥ ३॥
पछै एक पइसा तणौ आंण्यौ तेल तिवार।
पइसौ तसु दीधौ परही तौ पइसा रौ साहूकार॥ ४॥
रुपया रा गहु आंणनै लीयौ पाछौ दीध।
तौ साहुकार लीया तणौ प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध॥ ५॥
इम पइसा लीया तणौ साहूकार भवधार।
पिण वेबाळौ लाख नौं तेहू नौं नहीं साहुकार॥ ६॥
ज्यूं पच महाव्रत पचखनै आधाकर्म्मी आदि।
भाप निरन्तर दोष नी मेट दीधी मर्य्याद॥ ७॥
श्री वेबाली अति तणो लोच तपादिक कष्ट।
तेह थी किण विध उतरै, साधपणा री भिष्ट॥ ८॥
मास खमणादिक पचखनै शुद्ध पाल्यां तसु साहुकार।
पिण महाव्रत भाग्यां तेहनौं साहुकार मत धार॥ ९॥

ढाल ३७

[बिंदिया नीं—ए देशी]

किणहिक स्वाम भणी कह्यौ सांगधार्यां रै साधू री सांग रे।
उन्हौ पाणी धोवण ए पिण आपरै मान भूखी रोटी लावै मांग रे।
तुम्हें सुणज्यो दृष्टन्त स्वामी तणा॥ १॥
वर्षां बर्षे लोच करावता शीत तापादि सहै साक्षात रे।
विहार मव कल्पी विचरता तौ ऐ क्यूं नहीं साध कहात रे॥ २॥
स्वाम कहै तुम्हें सांभली थिर चारित्र इम किम थाम रे।
जैहवी बणी बणाई ब्राह्मणी तिणरा साथी ते पिण नहिवाय रे॥ ३॥

कृष्ण वणी बणाई ब्राह्मणी सब स्वाम कहै सुविशेष रे।
मेरां री इक गांम धाटा मझै, उठै उत्तम घर नहीं एक रे॥ ४॥
महाजन आवै सो दुख पावै घणा, जब कह्यो मेरां नें जाम रे।
थठै उत्तम घर नहीं एक ही तिणसूं दुख पावां छां तांम रे॥ ५॥
भणी लागत देवां छां थां भणी उत्तम घर विण छहां अवधार रे।
पांणी रोटी तणी भक्खाई पड़ै, गुद राखो उत्तम घर सार रे॥ ६॥
जद मेरां शहर माहैं आयनें महाजनां नें कह्यो मन ल्याय रे।
उत्तम बसो म्हारी गांम आयनें तिणरी ऊपर राखसां ताय रे॥ ७॥
इम कह्यो पिण कोई आयो नहीं एक बेठा रो गुद मुओ आम रे।
तिणरी स्त्री गुरुड़ी तदा तिणनें मेरां आंणी तिण ठांम रे॥ ८॥
बणाई मेरां तिणमें बाह्मणी ब्राह्मणी जिसा वस्त्र पेहराय रे।
भाणां कराय चकल राखी जिहां सुखसी री पांणी रोप्यो ताहि रे॥ ९॥
दोय रुपयां रा गेहूं आणे दिया, अधेसी रा मूंग दिया आंम रे।
एक रुपया तणो घृत आपियो जद मेरा तेहनें इम भाख रे॥ १०॥
पइसा लेई महाजन रा पासा थकी आवै ज्यांनें रोटी कर आप रे।
वय पूछयां बतावजे ब्राह्मणी थिर जाति फलांणी थाप रे॥ ११॥
जाता आता महाजन आवै जिके उत्तम घर पहिछांण रे।
ब्राह्मणी री घर मेरा थापियो इम काल कितोयक जांण रे॥ १२॥
इतरे चार व्यापारी आविया बगा कोसां रा थाका ते गांम रे।
आय पूछयो मेरां न इण तरै, उत्तम घर बतावो आंम रे॥ १३॥
तब मेरा कहै जावो तुम्हे, तिण ब्राह्मणी रे घर तास रे।
जद आया व्यापारी चार्ड जणा प्रगट वचन कहै तिण पास रे॥ १४॥
बाई रोटियां कर म्हां रीत सूं मट काल थाका आया जांण रे।
जद इम गोहां री रोट्यां जाडी करी सुरही घृत भास्यो सुविछांण रे॥ १५॥
कीधी दाल तिणमें घाली काचरयां जीमवा लागा च्यारूं जांण रे।
करड़ी मूख रोट्यां पिण करकड़ी वणिक जीमता करैं बखांण रे॥ १६॥
रांधण देखो फलांणा गाम री भमकडिया नगर मीं अवलोय रे।
रांधणा देखी बड़ा बड़ा शहर मीं इसड़ी चतुराई नांहि देखी कोय रे॥ १७॥
कहै देखो रे दाल किसी करी अति चोखी है स्वाद अत्यन्त रे।
मांहें काचरियां किसी स्वाद है, घणी करै प्रशंसा श्रीमंत रे॥ १८॥
जद आ बोली बोरां बात सांभली सीखण मिश्री हूंती तो तांम रे।
खबर पड़ती काचरियां रे स्वाद री, पिण ते मिल्यो नहिं अभिरांम रे॥ १९॥

जब यां पूछयो तीखण कहै केहनैं तब आ कहै तीखण छूरीताम रे।
काचरियां बनावा कारणैं छूरी मिली नहीं अभिराम रे ॥ २० ॥
तब यां पूछयो छूरी तोनें नां मिली तौ किणसूं बनारी तेह रे।
आ कहै दांतां सूं बनार २ नैं इण थाल मांहि न्हांखी एह रे ॥ २१ ॥
तब ये बोल्या तडकनै हे पापणी म्हांनैं भिष्ट किया तैं जिमाय रे।
इम कहिनै लागा थाली पटकवा तब आ बोली उतावलीताय रे ॥ २२ ॥
रे वीरां थाली मांगजो मती अमकडिया धूंमरी आणी मांग रे।
जद ऐ बोल्या हे पापणी तू कुंण वात री कुण तुझ सांग रे ॥ २३ ॥
जब आ बोली वीरां वात सांभली थांणी जमाई ब्राह्मणी सूं ताहि रे।
असल बात री तौ गुरुजी अछूं मेरा ब्राह्मणी दीधी बणाय रे ॥ २४ ॥
मूर सूं बात सारी कही मांडन सांभलनें भ्यारूंई पछताय रे।
भिक्खु कहै साधी ब्राह्मणो तणा, सांगधारी सव साक्षात रे ॥ २५ ॥
ऊ न्हों पाणी धोवण नित्य आचरै, पिण समकित चारित्र नहीं काय रे।
तिणसूं थांणी जमाई ब्राह्मणी तिणरा साधी कह्या इण न्याय रे ॥ २६ ॥
दृष्टान्त स्वाम इसी दियो शुद्ध हेतु मिलाया सार रे।
भारीकर्म्मा सुण द्वेष माहि भरे चित्त पामैं उत्तम चिमत्कार रे ॥ २७ ॥
स्वाम सावद्य निवद्य शोधिया व्रत अव्रत जूआ बताय रे।
आज्ञा अण आगन्या ओलखायनैं दीधी दाम दया दीपाय रे ॥ २८ ॥
भिक्खु स्वाम प्रगटिया भरत मे आप कीधी अधिक उद्योत रे।
ऐसो उपगारी कुण इण काल मैं जिन ज्यूं घम घट धाली जोत रे ॥ २९ ॥
इसा उपगारी गुण आगला त्यांरा दृष्टान्त सांभल संत रे।
हलुकर्म्मी हरष हिवडै धरे, भारीकर्म्मी रौ मुंह बिगडंत रे ॥ ३ ॥
तंत दाल कही सात तीसमी स्वामी मेल्या है न्याय साक्षात रे।
रखे शंका कंखा भ्रम राखनैं मत पडिवजजो मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु मैं कह्यौ पाखंडी पडिछांण।
सूत्र सार जिन वच सरस बाचै सखर बखांण ॥ १ ॥
स्वाम कहै तम्हे सांभली वाचै सूत्र बखांण।
जीव बचायां पुण्य मिश्र थोर्पइ इम करै छांण ॥ २ ॥
जिम बायां राती अर्ज संसार सेरौ जान।
गीत भला भणा गावती तीनें मन घर तान ॥ ३ ॥

गीता छेड़ई गावती मोख्यौ मार्ह मन्त्र।
ज्यूं प्रथम सूत्र प्रगमायने छेड़ई सावद्य फन्द॥ ४॥
दीपाव सावद्य दया दान्य सावद्य दांन।
मोख्या मारू नीं परे, सर्व बिगाड़ै तान॥ ५॥
किणहिक भिक्खु नें कह्यौ बुद्धिहीन इक बाल।
माल्य सूं कीड़्यां मणी कचरती तिण काल॥ ६॥
उभरौं पथर सै उरखौ खोसी करी कपाय।
कह्यौं तिणनें का सूं थयौं अव स्वाम कहै सुण बाय॥ ७॥
तसु पासा थी खोसलें तसु कर में स्यूं आस।
तव ओ बोल्यौ उण तण माठौ आयौ हाथ॥ ८॥
माखै पूज विचार नौ धर्म जिन आज्ञा मांहि।
मवरी को बिण नां कह्यौ इम सव वस्तु गिणाय॥ ९॥

ढाल ३८

[सत्य कोई मत रासज्यो—ए देशी]

किणहिक भिक्खु नें कह्यौ टोला वाला ताह्यो रे।
आप साध न सरधौ थां मणी तौ साध कहौ किण न्यायो रे।
संत दृष्टन्त भिक्खु तणा॥ १॥
ऐ साध अमकडिया टोला तणा फलांणा टोला रा साधो रे।
इम साध कहौ बेण उचरयां सत्य कै मृषावादो रे॥ २॥
स्वाम कहै किणहि शहर में किरियावर किणरै थायो रे।
नहुता फेरें नगर में बदे इसी पर वायो रे॥ ३॥
अमकडिया रै नेहतौ अछै पंमा साहरा घर रौ आंणौ रे।
अमकडियां रै नेहतौ अछै, पेमा साहरा घर रौ पिछांणौ रे॥ ४॥
देवाल्यौ त्यां काडे दियो तौ पिण बाजै साहो रे।
लेवौं देवाल्यौ बाजै नहीं द्रव्य निखेपौ देखायो रे॥ ५॥
ज्यूं संजम नहीं पालै जिके नांम धराव साधो रे।
द्रव्य निखेपै साधू कह्यां मूए न मृषावादो रे॥ ६॥
फलांणी रा भोळा मणी मस्त कह्यां दोष नांह्यो रे।
नाम अमडद्भाव थापना कहिण मात्र कहिवायो रे॥ ७॥
किणहि भिक्खु नें कह्यौ टाला बाला नैं ताह्यो रे।
कहो साध नाम कवण छ अमाघु कण थां मांह्यो रे॥ ८॥

स्वाम कहै इक शहर में ओस आसम पूछै आयो रे।
नागा किरता इण नगर में, किरता हकिम्या कहिवायो रे ॥ ९ ॥
वैद विचक्षण इम कहै औषध तुम ओळख्यां माह्यों रे।
घास सूमतौ तो भणी हूं कर देसूं ताझ्यो रे ॥ १ ॥
नागा हकिम्या तूं निरखल वैद बोल्यो इम वायो रे।
स्वाम कहै साध असाध री ओळखणा देस्यां बतायो रे ॥ ११ ॥
पछै साध असाध तू परखल, कहै नाम लेई कोयो रे।
कबियो पहिली विणसूं कर, जिणसूं कहणो मक्सर जोयो रे ॥ १२ ॥
किणहिक बलि इम पूछियो कुण थांमें साध असाधो रे।
स्वाम कहै तुम्हें सांभलो किश्ओ सम विधवादो रे ॥ १३ ॥
संजम लेई पाळे सही ते साधु सुखदायो रे।
महाव्रत आदरे मूंकव असाधु ते असुहायो रे ॥ १४ ॥
दृष्टान्त भिक्खु दियो इसो किणहिक पूछ्यो विचारो रे।
साहूकार कुण शहर में कुण है देवाल्यो विकारो रे ॥ १५ ॥
लेई पाछो देवे लोक में साहूकार कहै सोयो रे।
देणो न देवे देवाळियो मगळा उलटा मांहै जोयो रे ॥ १६ ॥
ज्यूं संजम लेई पाल्यां साध है, चोप पाल्यां नहीं साधो रे।
अथवा व्रत न आदरे बरतो नें देवे विराधो रे ॥ १७ ॥
भिक्खु इसा न्याय भाखिया स्वाम बिना कुण सोधे रे।
पूज गुणां नी पिसरो पूज भविक प्रतिबोधे रे ॥ १८ ॥
भिक्खु है दीपक भरत में भिक्खु भली भव तारण रे।
साहेब भिक्खु सापलो भिक्खु है विघ्न विडारण रे ॥ १९ ॥
याद आयां हियो उल्से अन्तर्यामी आयो रे।
स्मरण सूं सुख संपजै थिर चित्त म्हैं करी थायो रे ॥ २ ॥
स्वाम जिसो इण भरत में दीन दयाल न दूजो रे।
भविक जीवां तुम्हें भाव सूं प्रवर भिक्खु गुण पूजो रे ॥ २१ ॥
तन मन सेती तुम्ह भणी हृदय मोलेख हरख्यो रे।
आशा पूरण भाव हो म्हैं तो प्रत्यक्ष भिक्खु परख्यो रे ॥२२॥
आसी बाल्ह अठ्नीसमी समरयो है भिक्खु सनूरो रे।
जय जश सम्पत्ति मिले दारिद्र दुःख गया दूरो रे ॥ २३ ॥

दुहा

उपयोग री स्वांमी ऊपरे दियो स्वाम दृष्टन्त।
निरमल नीकी नीत सूं शुद्ध मांगो तसु सत ॥ १ ॥
कुण्को देखी गुरु कह्यो ए कुणको शिष्य जोय।
ऊपर पग दीजो मति सहृत किन्यो शिष्य सोय ॥ २ ॥
थोड़ी वार थी शिष्य तिको फिरतो फिरतो आय।
पग दीधी तिण ऊपर तब गुरु बोल्या ताहि ॥ ३ ॥
तुभ म्हैं बरज्यो थो तदा मत दीजो पग साक्षात।
शिष्य कहै उपयोग शुद्ध चूको स्वामी नाथ ॥ ४ ॥
बीजी वेलां शिष्य वलि फिरता फिरता फेर।
पग दीधो कण ऊपर गुरु निषेध्यो घेर ॥ ५ ॥
आगे तुभ बरज्यो हुंतो, कहै शिष्य कर जोड़।
महाराज उपयोग मुझ, चूक गयो इम ठोड़ ॥ ६ ॥
गुरु कहै अबकै चूकियो तो काए विगैरा त्याग।
फिरता फिरता शिष्य फिरी वलि चूक्यो ते आग ॥ ७ ॥
इम वार वार स्वांमी पछी ते विगय टाल्ण थी ताहि।
वलि कण ऊपर पग दण थी राखी नहि मन मांहि ॥ ८ ॥
कर्म्म योग उपयोग में, स्वांमी तो अभिराम।
पिण नीत शुद्ध अरु पाप नहि, साधपणो त न्याय ॥ ९ ॥

ढाल ३६

[जाओ वे राव तू बाल—ए देशी]

स्वाम भिक्खु नै सोय ए, किण ही पूछा करी इम जोय ए।
साध साधवियां रै माहि ए, अवगुण दीसै अधिकाय ए ॥ १ ॥
त्यारे नहीं दया रो ठिकांण ए, माया सुमति में पिण दिसै हांण ए।
केई करै चारित्र बात ए, सून्य उपयोग री साक्षात ए ॥ २ ॥
सुमति एषणादिक मै सोय ए, अधिक फेर दिसै अवलोय ए।
तीन गुप्त नहीं तंतसार ए, अति हि दिसै है फरक अपार ए ॥ ३ ॥
कैकांरी प्रकृति करडी धार ए, खेद्रिया सूं करै पूंकार ए।
मान माया लोभ में मत ए, किम कहियै तिणांनं संत ए ॥ ४ ॥
करडी प्रकृति देख्यां साध ए, कोई बोल्यो वचन विराध ए।
यांमे साधपणा रो न श्रद्ध ए, अवगुण री करो नेम प्रसध ए ॥ ५ ॥

चर बोल्या है भिक्खु वाम ए, सुण दृष्टान्त एक सोभाम ए।
एक साहुकार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए॥ ६॥
रुपयां हजारां लगाविया ए, जाली झरोखा अधिक मुकाविया ए।
ओप मालिया महिल अनेक ए, सुध सोभता सखर संपेख ए॥ ७॥
चार रूप विविध चित्राम ए, अति कोरणियां अभिराम ए।
सुखदाई रूप सुचिह्नांण ए, पुतलियां मनहरणी पिछांण ए॥ ८॥
आवे लोक अनेक ए, देख देखने हरखे विशेष ए।
नरनारी हजारां आवता ए, घणा देस देस गुण गावता ए॥ ९॥
महिल मालिया महा श्रीकार ए, तिके जू जूआ देखे तिवार ए।
कहै देखो कोरणियां ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए॥ १॥
साहुकारादिक सहु आय ए, ऐतो सगलाई रह्या सराय ए।
मठै भंगी देखण आयो जान ए, धुन खेतखाना सूं ध्यान ए॥ ११॥
महिल मालिया सोहमी न दिष्ट ए, जाली झरोखा सूं नहीं इष्ट ए।
तिणरै खेतखानां सूं काम ए, तिणसूं तेहिज छै परिणाम ए॥ १०॥
कहै सेठखानां सी आछी नहीं ए सेठ सुणतां अवगुण भासै सही ए।
जब सेठ कहै सुण वाम ए, ताहरखानो किण वासतै ताय ए॥ १२॥
सेतखानों आछो किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माहि ए।
निन्दनीक वस्तु ए निदान ए, तूं पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए॥ १४॥
झरोखा आस्यां भावि ऐ जांण ए, प्रग आछा है अधिक प्रधान ए।
स्वाम कहै सुविचार ए, कहूं उपनय ए अवधार ए॥ १५॥
संजम तप तो हवली समान ए सतखानां ज्यूं अवगुण जान ए।
साहुकारादिक देवमहार ए से सम उत्तम जीव उदार ए॥ १६॥
त्यांरी दिष्ट संजम ऊपर ताम ए, पिण अवगुण सूं नहीं काम ए।
गुणग्राही उत्तम गुणवंत ए, तेनो संजम तप जांण तत ए॥ १७॥
संजम गुण जांण पद मान ए, पिण अवगुण सूं नहीं ध्यान ए।
छिद्रपेही भंगी सम धार ए, संजम न नहीं जांण सिणगार ए॥ १८॥
छट्ठो गुणठांणो इण विध जाय ए त्यांन ते पिण गवर न वाय ए।
छट्ठो गुणठांणो न्म ठहराय ए त पिण जांणणो नहीं ताहि ए॥ १९॥
अवगुण न कर्म आचार्य ए महानिन्दक मारंग मांय ए।
कर अवगुण आछा नहीं ए तिणनै कम्यो न्यारो करिगी वाय ए॥ २०॥
अवगुण नो करा आप न हाय ए न नो प्रगट ही अवलाय ए।
प नो निरता जांण निरे ए, न्याय नो नहीं कान्ही भद ए॥ २१॥

इम बिहं पख चन्द समान ए, क्षमादिक गुण में फेर जान ए।
किहां एकम किहां पूंनम चन्द ए, त्यूं धर्म एम वृद्धि मंद ए॥ ३८॥
चौथे ठाणें चौभंगी उपन्न ए, शील सम्पन्न नो चरित्र सम्पन्न ए।
दूजी शील सम्पन्न न देख ए, चारित सहित कह्यौ विशेष ए॥ ३९॥
तीजी शील सम्पन्न स्वभाव ए, चिले[1] चारित्र सम्पन्न साव ए।
चौथी शील चारित्र नहीं तांम ए, शील शीतल स्वभाव नौं नाम ए॥ ४०॥
शीतल प्रकृति तौ नहिं कोय ए, दूजे भांगे चारित कह्यौ जोय ए।
वर न्याय हियैं सुविचार ए, प्रकृति देखी म भिड़कौ सिगार ए॥ ४१॥
गिरीष धीस म न्हाल ए, बार बार री बंद विशाल ए।
इम सांभल छांडौ अनीत ए, राखौ सूत्र नी प्रतीत ए॥ ४२॥
भारीकर्मा सुणी भिड़काय ए, बोलै ऊंधमति इम वाय ए।
करैं ऐसी परूपणा काज ए, हियैं दोष तणी कांई लाज ए॥ ४३॥
इम बोल मूढ़ गिंवार ए, ज्यांरा घट मांहै घोर अन्धार ए।
पिण इतरी म जांणै सास्यात ए, सर्व कही सूतर नी बात ए॥ ४४॥
स्थिर राखणा समगत सार ए, अति मेटण भ्रम अन्धार ए।
आगम रहीस बसावै अमांम ए, तेतौ एकन्त तारण कांम ए॥ ४५॥
अति मांनणो तसु उपगार ए, चिर समगत राखणहार ए।
रह्यो गुण मानणो तौ त्यांहीज ए, उलटी क्यूं करौ त्यां पर खीज ए॥ ४६॥
परम दुल्लभ समगत पाय ए, रखे शंका राखौ मन मांहि ए।
शंका राख्यां स समकित जाय ए, तिणसूं बार बार समझाय ए॥ ४७॥
पञ्चखां नै हिण पाडे काय ए, मुक्स पडिलेहणादिक जोय ए।
तौ तिणरी तिणनें मुस्कल ए, पिण पोतै क्यूं चालौ सल ए॥ ४८॥
कोइ उठ री ऊठनें होय ए, ज्यूं पञ्चखाहीण तसु सोच जोय ए।
म फिर चढौ गुणठांण ए, तठा तांई असाध म जांण ए॥ ४९॥
श्रावक कह्या मात तात समांन ए, चवर चौथे ठांणे पहिछांन ए।
हुत सूं कहै कही रीत ए, पिण अतरंग में अति प्रीत ए॥ ५०॥
स्वाम भिक्खु तणें प्रसाद ए, पांमी समकित चरण समाधि ए।
दीधो हुवेली रौ तौ दृष्टन्त ए, संपेख चंची चित्त शांत ए॥ ५१॥
त्यांरा प्रसाद थी मनसार ए, सांभी न्याय कह्या जय सार ए।
सूत्र मे जिम न्याय बताविया ए, लेस मात्र अणहूंता न साविया ए॥ ५२॥

---

१ चिले = मात्र

२—तिम चारित्र तणो अभाव ए। —ऐसा भी पाठ है।

धिन धिन भिक्खु स्वाम ए, साझ्या घणा धर्म रा काम ए।
त्यांरी आसता राखौ तहतीक ए, तिणसूं होवै मोक्ष नजीक ए॥५३॥
स्वामी दान दया दीपाय ए आज्ञा अण आज्ञा ओलखाय ए।
त्यांरा गुण पुरा कह्या न जाय ए, प्रत्यक्ष पार्श्व भिक्खु पाय ए॥५४॥
स्वामी याद आवै दिन रैण ए, चित्त में अति पामैं चैन ए।
ऐसा भिक्खु ओजागर भाप ए, स्मरण सूं मिटै सोग सताप ए॥५५॥
नव तीसमी ढाल निहाल ए, भ्रम भजण समय संभाल ए।
हवेली रो हेतु कह्यो स्वाम ए, सुण साख गीत कही ताम ए॥५६॥

दुहा

विचरत पूज्य पधारिया पादु शहर मझार।
शिष्य हेम साथे सखर, सत जवर पम सार॥ १ ॥
ऐक मायौ इह अवसरे भिक्खु भणी भणेह।
हेम चवर हाथे करी अभिकि दीसैं ऐह॥ २ ॥
चतुर स्वाम ते चवर ले माप दिखायौ मांम।
लांबपणे चौड़पणे अधिक नहीं उनमांन॥ ३ ॥
पूम कहै देखो प्रगट, पहौंचवी परमांण।
ते कहै अभिकी तो नहीं ऐ तौ छै उममांन॥ ४ ॥
तूं अभिकी कहींतौ तदा तव ते बोल्यौ ताम।
मुझ सूझी शंका पछै तव थणो निपच्यौ स्वाम॥ ५ ॥
चार अगुल रै वासते संजम खोवां सार।
मुझ मोला जाण्यां इसा आंण्यौं भ्रम अपार॥ ६ ॥
ऐती प्रतीत न तो भणी तो मारग रै माहि।
पद कायौ पीवै तदा तो तोनें खबर न काय॥ ७ ॥
इत्यादिक वचने करी, अधिक निपेध्यौ आम।
कर जोड़ीनें ते कहे, कुड़ी शंका फिलाय॥ ८ ॥
खरी इण पर सीख द्, खोड मिटावण काम।
फिर शंका हसु मा पछी पवर स्वाम परिणांम॥ ९ ॥

ढाल ४०

[आसपमुं का दोहेलो—ए देशी]

स्वाम भिक्खु गुण सागरु रे लाल सदा भिक्खु मिथ्यावान सुखकारी रे।
संजमी सर्व स्वामजी रे लाल सुणो सूरत दे कांन॥ सु ॥
सुणजो गुण स्वामी तणा रे लाल॥ १ ॥

सोभाचंद सेवग हुंतो रे लाल नांदोलाइ मौं मेवाल । सु ।
आयो पाली में एकदा रे लाल तिणनें कहै पारखो ते काल । सु ॥ २ ॥
तूं विस्तर जोड़ भीखणजी तणा रे लाल तोनें देसां बहु रुपया तांम । सु ।
भीखणजी सूं वार्ता कर जोवसूं रे लाल इम कहै सोभाचन्द आम । सु ॥ ३ ॥
इम कहि करवे आवियो रे लाल जिहां पूज विराज्या जांम । सु० ।
ऊभो भिक्खु रै आगलै रे लाल वंदणा कीधी आंण । सु० ॥ ४ ॥
पूज कहै वच परवडा रे लाल तुम्ह नांम सोभाचन्द तांम । सु ।
सोभाचन्द कहै हां सही रे लाल एहिज नांम कहाय । सु ॥ ५ ॥
भिक्खु वलि तसु इम भणैं रे लाल सुत रौड़ीदास नौं सोम । सु ।
सेवक कहै स्वामी भणी रे लाल सत वच तुम्ह अवलोय । सु० ॥ ६ ॥
वलि सोभाचन्द बोलियो रे लाल आप आखी न कीधी एक । सु ।
उथापी श्री भगवांन नैं रे लाल विरुई बात विशेष । सु० ॥ ७ ॥
वस्ता भिक्खु बोलिया रे लाल म्हैं बयानें उथापां भगवांन । सु ।
म्हैं भगवंत रा वचनां थकी रे लाल घर छोड़ साधु थया जाण । सु ॥ ८ ॥
वलि सोभाचन्द बोलियो रे लाल आप देवरी दियो उथाप । सु ।
बाल देख स्वामी जुगत सूं रे लाल चतुर सुणै चुपचाप । सु० ॥ ९ ॥
हजारां मण पत्थर देवल तणी रे लाल कही उथापियै केम । सु ।
म्हे तो सेर दो सेर प्रयोजन विना रे लाल आघो पाछो करां नहीं एम । सु ॥ १० ॥
फेर सोभाचन्द पूछतो रे लाल आप जिन प्रतिमा दी उथाप । सु ।
प्रतिमा मैं कह्यो पाषांण छै रे लाल ए आखी न करी आप । सु ॥ ११ ॥
स्वाम कहै तूं सांभल रे लाल म्हे प्रतिमा उथापां किण कांम । सु ।
म्हार त्याग है मूठ बोलण तणा रे लाल इणरो न्याय कहूं अभिराम । सु ॥ १२ ॥
सोना री प्रतिमा भणी रे लाल सोना री प्रतिमा कहंत । सु ।
रूपा री प्रतमा भणी रे लाल म्हे रूपा री कहां धर खंत । सु ॥ १३ ॥
सर्वधातु नीं प्रतिमा भणी रे लाल, सर्वधातु नीं कहां सोय । सु० ।
पाषांण री प्रतिमा भणी रे लाल कहां पषांण री जोय । सु ॥ १४ ॥
पाषांण री प्रतिमा भणी रे लाल सोना री कह्यां लागै मूठ । सु० ।
तिणसूं कह्यो छां प्रतिमा पाषांण री रे लाल म्हे तो दीधी है मूठ नै पूठ । सु ॥ १५ ॥
सोभाचन्द इम सांभली रे लाल हर्ष्यो घणो हिया मांय । सु० ।
इमडा उत्तम महा पुरुषां तणा रे लाल किम अवगुण कहिवाय । सु ॥ १६ ॥
गुण साहिज ए पुरुष मा रे लाल बारु इसड़ी विचार । सु ।
दोय छन्द जोड्या दीपता रे लाल सांभल्यां सुखकार । सु ॥ १७ ॥

स्वामी नैं छन्द सुणायनै रे लाल पाछो आयो पाली मांहि। सु०।
पाखंडमतियां पूछियो रे लाल यै छन्द बणाया के नांहि। सु० ॥ १८ ॥
ते कहै छन्द बणाविया रे लाल पाखण्डमति बोल्या फेर। सु०।
भीखणजी रा श्रावकां रैं आगलै रे लाल छन्द कहिजे होय सेर। सु० ॥ १६ ॥
स्वामीजी रा श्रावकां कनैं रे लाल आया सेवक लेई साथ। सु ।
पाखण्डमति कहै श्रावकां भणी रे लाल बात सुणी मुझ वास। सु ॥ २० ॥
सेवक औ निरापेक्षी सही रे लाल अवल कहिसी अकलोय। सु ।
थांरे म्हारैं श्रद्धा पक्ष नी रे लाल इणरै तौ पक्ष नहिं कोय। सु० ॥ २१ ॥
शोभाचन्द नै इम कहे रे लाल भीखणजी साधु किसाएक। सु०।
शुद्ध छै किवा अशुद्ध छै रे लाल सत्य सेवक कहै सुविशेष। सु० ॥ २२ ॥
उभरी श्रद्धा उर्णा केनें रे लाल आंपांरी आंपां पास। सु०।
तौ पिण पाखंडमतिया कहै रे लाल, सू तौ निराक प्रकास। सु० ॥ २३ ॥
जब शोभाचन्द कहै सांभली रे लाल गुण अवगुण भीखणजी में होय। सु ।
कहिसूं मोनें दरसी जिसा रे लाल सत्य ऐ कहै दरसी जिसा लोय। सु० ॥ २४ ॥
शोभाचन्द सेवक इम सांभली रे लाल शुद्ध कह्या त्यां छन्द श्रीकार। सु ।
ते छन्द दोनूं ई गुण तणा रे लाल सांभलजो सुखकार। सु० ॥ २५ ॥

शोभाचद् सेवक कृत छन्द

अनमय कथणी रहिणी करणी अति भारूई कर्म जीपै अधिकाई।
गुणवस अनत सिद्धन्त कला गुण प्राक्रम पौष विद्या गुण भारी।
शास्त्र सार बत्तीस जांणै सहु, केवलज्ञानी का गुण उपगारी।
पचेन्द्री कूं जीत म मोमत पाखंड, साम मुनिन्द्र बड़ा व्रतधारी।
साधु मुक्ति का वास बंधा सहु, भीखम स्वाम सिद्धन्त है भारी ॥ १ ॥
स्वामी परभव के स्वार्थ साच है, बांचै सूत्र कला विस्तारी।
तेरापंथ पंथ साचा तिहूं लोक मै नाग सुरेन्द्र नमैं नर नारी।
सुणियैं सत्य वात सिद्धन्त सुज्ञान की बहुत गुणी करणी बलिहारी।
पृथ्वी के तारक पचम आरा मैं भीखम स्वाम का आरग भारी ॥ २ ॥

ढाल तेईज

शोभाचन्द छन्द कह्या इसा रे लाल सांभल ते गया सरम। सु ।
मन माहिं मुर्झाणा घणा रे लाल स्वामीजी रा श्रावक होय गया गरम। सु ॥२६॥
पुन्य जिम्या रा प्रताप सं रे लाल पाडी पाखंडियां री आब। सु ।
ऐसा भिक्खु गुण आगला रे लाल सुजश भिमतरियो सताव। सु ॥ २७ ॥

ऊठी पूज आलोचना रे लाल बाद बुद्धि मा जाव। सु।
चोरी धम तणी चूरा रे लाल दियो पाखंड मत दाव। सु० ॥ २८ ॥
अक्षरिया इण भरत में रे लाल खरै मारग रह्या खेल। सु०।
सूज बुद्धि समसेर सूं रे लाल पाखण्ड मत दियो पेल। सु ॥ २९ ॥
स्मरण तुम्ह गुण संभरू रे लाल आवे निश दिन याद। सु०।
रोम रोम सुख रति लहूं रे लाल पामूं परम समाधि। सु० ॥ ३ ॥
चाढ इसम चालीसमी रे लाल मन भ्रम भंजन स्वाम। सु०।
जय जश सम्पत्ति दायको रे लाल आशा पूरण आम। सु० ॥ ३१ ॥

दुहा

कूंकी में कूमड़ करी सवाई रोमजी सोय।
बखाण सम्पूण हुवां पछै, आप मैहल मांगी अवलोय ॥ १ ॥
नेंहल चाल सौगंध करी इसड़ी नहीं छी आण।
कांई आपरै ई तोटी मछे ते तोटी पूरण चाण ॥ २ ॥
सुता परणाई सेठ तिण न्यात जिमाई न्याल।
तोटी पूरण मैहल लै ज्यूं सूं तोटी तुम माल ॥ ३ ॥
स्वाम कहै एक सेठ तिण सुता परणाई सोय।
बोलाया बहु गाम रा न्यात मित्र अवलोय ॥ ४ ॥
जीमण कर जीमाविया सगलां नै पकवान।
दिवस घणा राख्या पछै, सीख दीधी सन्मान ॥ ५ ॥
एक एक पकवांन री साथे कोथली दीध।
रसवंत मूक भोजन भणी इम सुखे पुगाता कीध ॥ ६ ॥
ज्यूं म्हें पिण बहु दिवस लग बखाण में विस्तार।
वारां विविध वराग नी संभलाई सुखकार ॥ ७ ॥
हलुकर्मी सुण हरखिया कर्म काट्या अधिकाय।
छेहड़ एक पकवान री कोथली इम कहाय ॥ ८ ॥
त्याग करावां तेहना सुखे मोक्ष में जाय।
इम तोटी मेटण अवरनु, म्हांरा मांगां इण न्याय ॥ ९ ॥

ढाल ४१

[धीज करै सीता सती रे लाल — ए देशी]

स्वाम भिक्खु बुद्धि सागरू रे लाल निर्मल मेल्या न्याय रे। सुगुण नर।
सुविनीत सुण हर्षे सही रे लाल अवनीत मैम मुहाय रे। सुगुण नर।
सुणजो दृष्टान्त स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥

अवनीत साधु ऊपरे रे लाल दीधो स्वाम दृष्टान्त रे । सु० ।

एक साहुकार नीं स्त्री रे लाल पाणी काजै गई घर सत रे । सु० ॥ २ ॥

बेहड़ो तो माथै पाणी सूं भरयो रे लाल पोता रै घर आवता पेख रे । सु० ।

मार्ग मैं तिणरी साहिली मिली रे लाल वातां करवा लागी विशेष रे । सु० ॥ ३ ॥

एक घड़ी तांई तो ऊभा थका रे लाल हिल मिल वातां करी हर्षाय रे । सु० ।

पछै घर आवी निज पिउ भणी रे लाल तिण हेलो पाड़यो ताहि रे । सु० ॥ ४ ॥

तूं घड़ो उतारो मुझ सिर तणु रे लाल जो किंचित बेलां थी भरतार रे । सु० ।

बेहड़ो उतारयो तिण वरनीं रे लाल तो क्रोध मे आवी अपार रे । सु० ॥ ५ ॥

कहै म्हारै माथै तो बेहड़ो उन्क नौं रे लाल सो हूं मारयां मुई भणी सोय रे । सु० ।

थांनै तो मूझ सूझे नहीं रे लाल जिणसूं बेलां इतरी लगाई जोय रे । सु० ॥ ६ ॥

संसार तणे लेखे सही रे लाल नार इसथी अविनीत रे । सु ।

रस्तै एक घड़ी बेहड़ो छतां रे लाल पोतै वातां करी धर प्रीत रे । सु० ॥ ७ ॥

किंचित बेल पिउ करी र लाल तड़का भड़का करवा लागी ताम रे । सु० ।

इसड़ो सजोग ते स्त्री रे लाल अवनीत जग कहै आम रे । सु० ॥ ८ ॥

अविनीत साधु एहवो रे लाल गोचरियादिक माहि र । सु० ।

किणही बाई भाई सूं वातां करै रे लाल एक घड़ी तांई ऊभा ताहि रे । सु ॥ ९ ॥

अथवा वसन देवा कोई भणी रे लाल झट पग्गाई नें पछो धाम रे । सु ।

तिहां ऊभा घणी बेलां लगी रे लाल वातां करै बणाय रे । सु ॥ १० ॥

वा पोथी ई काम भलाइयो रे लाल करतां कठ मठाठ करै जेह रे । सु० ।

तथा पाणी राख्यो ते लेवा भणियां रे लाल टाल्न टोली कर देवै तेह रे । सु० ॥ ११ ॥

अथवा आती दोहरी हुवै रे लाल मल देवै मुह बिगाड़ रे । सु० ।

गुरु सीख दिये चूक थी पड़यो रे लाल तो करे उलटी फुंकार रे । सु० ॥ १२ ॥

अवनीत साधु नैं दीधी उपमा रे लाल अवनीत स्त्री नीं भिक्खु भास रे । सु० ।

इम सांभल उतमां नरां रे लाल थिर चित सुविनय धार रे । सु० ॥ १३ ॥

वलि वनीत अवनीत री चौपई किधे रे लाल भाख्या दृष्टान्त अनेक । सु० ।

संखेप थकी कहूं छूं सही रे लाल सांभलजो सुविवेक । सु० ॥ १४ ॥

अवनीत नै चावरिया नीं उपमा रे लाल गर्भवंती नैं कह्यो आखोय रे । सु ।

पुत्र होसी पुन्य आगलो रे लाल पाड़ोसण नैं कहै पुत्री होय रे । सु ॥ १५ ॥

गुरु भगता श्रावक श्राविका कनै रे लाल गावै गुरु रा गुणग्राम । सु ।

आपरै वस आणी तिण कनैं रे लाल अवगुण बोलै ताम । सु ॥ १६ ॥

कनै रहै साधु ते थकी रे लाल वैर बुद्धि ज्यूं आग । सु० ।

और अलगा रहै ते भणी रे लाल हेत राखै सुविहाण । सु ॥ १७ ॥

कुहया कांनां री कुत्ती सणी रे लाल काढ़ै घर सूं सहु कोय*।
ज्यूं अवनीत जिहां जावै तिहां रे लाल आदर मांन न होय* ॥ १८ ॥

सैंसुरी कण छांडिनैं बीष्टो भखै रे लाल हरिया वन छांडे मृग पड़ै पास।
ज्यूं अवनीत विनय छांडी करी रे लाल अविनय मांहै उलास ॥ १९ ॥

गलो बोदो गलियार अवनीतड़ो रे लाल कूट्यां बिन चाली नहीं चालै कोय रे।
ज्यूं अवनीत ने कांम भलावियां रे लाल कहां नीठ नीठ पार होय रे ॥ २० ॥

कुम्हने गध मांमे कलदमैं रे लाल मरायो कुबुद्धि सीखाय।
ज्यूं अवनीत री संगत कियां रे लाल भव भव मैं दुःख पाय ॥ २१ ॥

वेस्या मुजरा की पुरुषां रिझवती रे लाल स्वार्थ न पूगां तुरत देवै छेह रे।
ज्यूं अविनीत मुतलब विनय करै घणु रे लाल स्वार्थ नहीं सर्यां तोड़ै सनेह रे ॥ २२ ॥

बांध्यो दाला री पातली गोरियो रे लाल बण मावै तो पिण भक्षण भाय रे।
ज्यूं अवनीत री संगत करै रे लाल तो उवै अविनय कुबुद्धि सीखाय रे ॥ २३ ॥

सौक रा सौक लोकां कनैं रे लाल अवगुण बोलैनै बांधे पाल।
ज्यूं अविनीत करतो गुरु तणी रे लाल अवगुण ग्राही सामभाल ॥ २४ ॥

कुजाति री त्रिया पिउ सूं लड़ी रे लाल तातै कुवै कै उठ और साथ रे।
करै अविनीत क्रोध सूं खलेपणा रे लाल के गण छोड़ न्यारो होय जाय रे ॥ २५ ॥

चोर ठगो हुवै मुख मैं चासियां रे लाल तातो अग्नि मैं गालियां हुवै ताय।
ज्यूं स्वाभाविक त्यों अवनीत राजी रहै रे लाल स्वार्थ अण पूगां अवगुण गाय ॥ २६ ॥

चोर चोरीगर रा चर कनी रे लाल पूरा रहै बुद्धिवान रे।
ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहै रे लाल ते डाह्या चतुर सुजांण रे ॥ २७ ॥

आछी वस्त घाले जो अग्नि मैं रे लाल ते छिन मांहै होय जावै छार रे।
ज्यूं अविनय अग्नि सूं गुण बलै रे लाल अवगुण प्रगटै अपार रे ॥ २८ ॥

नाग छिछावै नान्हो जाणनैं रे लाल तो भा घात पामै तत्काल रे।
ज्यूं नान्हा गुरु नीं पिण निंदा कियां रे लाल आपदा पामै असराल रे ॥ २९ ॥

नाग्यो नाग कोप्यो करै रे लाल जीव घात सूं अधिक न जाण रे।
पण गुरु ना अप्रसन्न हुआं रे लाल अबोधि कुगत दुख खांण रे ॥ ३० ॥

कदा अग्नि न बालै मंत्र जोग सूं रे लाल कदा कोप्योई सर्प न खाय।
कदा तालपुट विष पिण मारै नहीं रे लाल पिण गुरुहेलणा सूं मुक्ति न जाय ॥ ३१ ॥

कोई बांधे सिर सूं गिरि फाड़वो रे लाल सूतो ही सिंह जगाय।
कोई भाला री अणीनै मारै ठाकरां रे लाल ज्यूं गुरु नीं असातना थाय ॥ ३२ ॥

*प्रत्येक गाथा के द्वितीय और चतुर्थ चरण के बाद 'सुगण नर' पढ़ें।

कदा गिरि शिर फोड़े कोई मस्तक रे[1] कदा कोप्यौ ही सिंह न खाय[1]।
कदा माली न भेदे ठाकर मारियां रे[1] पण गुरु हेलणा सूं शिव नांहि ॥ ३३ ॥
ज्यूं काष्ठ बलो जाय अल भष्म रे, ज्यूं अवनीत तणीजै ससार।
कुशिष्य क्रोधी अभिमांनी आत्मा रे, कूड़ मायाविमी धार ॥ ३४ ॥
गुरु सीख दियां अविनीत नैं रे, तौ क्रोध करै तिण वार।
ते डांडे कर ठेल लिछमी आवती रे सांची सिख न धारै लिगार ॥ ३५ ॥
केई हाथी घोड़ा अविनीत छै रे दीसै प्रत्यक्ष दुःख।
तौ धर्माचार्य ना अविनीत नैं रे, कही दुःख किम सुख ॥ ३६ ॥
अविनीत नर नारी इण लोक में रे विकलेन्द्री सरीसा विपरीत।
ते डांडे सस्त्रे करी ताडेजता रे अति दुःख पामे गुरु नौं अविनीत ॥ ३७ ॥
वले देव दानव अविनीत छै रे, दुखिया त पिण देख।
गुरु ना अविनीत नैं दुख अति घणो रे, काल अनन्त संपेख ॥ ३८ ॥
विनीत अवनीत जाता वाट में रे दोनूं जणा हथिणी नो पग देख।
अविनीत कहै पग हाथी तणु, इणनें ऊभी सूझ अभेष ॥ ३९ ॥
विनीत कहै हथिणी पण काणी डावी आंख री रे ऊपर राजा री राणी सहित।
वले पुत्र रत्न तिणरी कूख में रे, विवरा शुध बोल्यो सुविनीत ॥ ४० ॥
एक बाई प्रश्न आगे पूछियौ रे, ऊभी सरवर पाल।
म्हारो सुत प्रदेस ते मिलसी कद रे, कहै अविनीत उण कियौ काल ॥ ४१ ॥
हूं काहूं बाई घीघड़लो तांहि री रे, तूं मिलसी बोल्यो येम।
घड़ो गयो म्हारा पाणी एहवो रे जब विनीत कहै छै एम ॥ ४२ ॥
पुत्र थारो घर आवियो रे आज मिलसी तोसूं निशंक।
इणरौ वचन न मानें ओ मूढो पशु रे, इणरे जीव वैरण रो अंक ॥ ४३ ॥
ए दोनूं बोलां में अविनीत मूढो पड़्यो रे, पछे गुरु सूं झगड़्यो आय।
कहै मोनें न भणायो कपटे करी रे, गुरु पूछे निरणू कियौ ताहि ॥ ४४ ॥
इह लोक में गुरु ना अवनीत री रे, अकल बिगड़ गई एम।
तौ धर्माचार्य नां अवनीत री रे, ऊभी अकल री कहिवौ केम ॥ ४५ ॥
ज्यूं मकड़ी छूटी कुल हीणी नार ने रे, पाहुरी मिल भरतार।
जोगी भसरादिक तिणने आन्ने रे ऊभा पिण जाय उणा स्यार ॥ ४६ ॥
मकड़ी सरीषी अविनीत री रे तिणसूं मिल गुरु न धरै प्यार।
तिणनें आप सरीषो मामी मिले रे तब पामे हरख अपार ॥ ४७ ॥

१—प्रत्येक गाथा के प्रथम और तीसरे चरण के अन्त में 'काय' पढ़ें।
२— दूसरे और चौथे चरण के अन्त में 'सुगुण नर' है।

नकटी तो जोवै महाराज्जि मणी रे, अविनीत जोवै अजोग।
जो अशुभ उदै हुव अविनीत रे, मिल जावै सरीषौ संजोग ॥ ४८ ॥
सौ बार पाणी सूं कांदो धोवियां रे, बिरई न मिटै बास।
घणूं उपदेश दै गुरु अविनीत नै रे, पिण मूंल न लागै पास ॥ ४९ ॥
अविनीत उजिया भोगवती जिसौ रे, म्हापिया रोहणी जिसौ सुवनीत।
गुरु गण सूंपे सुविनीत नै रे, पूरी तिणरी प्रतीत ॥ ५० ॥
किणही गाय दीधी चार विप्रां भणी रे, ते वारै वारै दूहै ताहि।
पिण चारो न नीरै लोभ थकी रे, तिण सूं दुःखे २ मूंई गाय ॥ ५१ ॥
गाय सरिषा आचाय मोटका रे, दूध सरीषौ ज्ञान अमोल।
शिष्य मिल्या ब्राह्मण सारिषा रे, ते ज्ञान लियौ दिल खोल ॥ ५२ ॥
आहार पाणी आदि व्यावच तणी रे, नकरै सार संभाल।
एहवा अविनीतां रै वश गुरु पड्या रे, त्यां पण दुःखे २ कियौ काल ॥ ५३ ॥
ब्राह्मण तो एक भव मर्क्षे रे फिट फिट हुवा इहलोक।
गुरु ना अविनीत रो कहिवौ किसो रे, पीड़ा विविध परलोक ॥ ५४ ॥
गर्ग आचाय नै मिल्या रे, पांच सौ शिष्य अविनीत।
तिणरो विस्तार तो छ घणूं रे उत्तराध्ययन माहि सगीत रे ॥ ५५ ॥
एकल थकी पिण बुरौ अवनीतड़ौ रे, साधां रा गण माहै आण रे।
सामद्रोही सबग सारीषौ रे, दुमनु चाकर दुस्मन समान रे ॥ ५६ ॥
छक्कल चलै चोर ज्यूं रे, छिद्री थकौ रहै टोला माहि।
चर्चा उपदेश तिणरौ अति बुरौ रे, फघड़ा तोड़ा कामै करै ताहि ॥ ५७ ॥
ओर साधां रा भाई गृहस्थ सूंपणा रे, तिणसूं वात करै दिल खोल।
अतरग मैं आणै आपरौ तिणनै सिखाव चर्चा बोल ॥ ५८ ॥
गुण ग्राम गावै सुविनीत रा रे, तौ अविनीत सूं सहा नहीं जाय।
मिज आपौ प्रगट करै रे, म्हानै तौ स्यम्पल न सुहाय ॥ ५९ ॥
ओर सघां री वासता उतारवा रे, आपौ प्रगट करै भूड़।
गुरु सीख देवै स्वामी मेल्या रे, तो साहमौं मंड जावै करै खोटी रूढ़ ॥ ६ ॥
जिण नै आप लघु करै रागियो रे, थांका ओरां री चाल।
अभिमानी अविनीत नीं रे, एहवी छै ऊंधी चाल ॥ ६१ ॥
सुविनीत रा समझाविया रे, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय।
अविनीत ना समझाविया रे, कोकला ज्यू कांनी थाय ॥ ६२ ॥
समझाया सुविनीत अविनीत रा रे, फेर कितोयक होय।
न्य साबजो न छांहड़ी रे, इतरो अतर जोय ॥ ६३ ॥

अविनती नैं अविनीत मिलै रे, ते पांमें घणो मन हरष।
ज्यूं डाकण राजी हुवै रे, चढवानें मिलियां जरख ॥ ६४ ॥
डाकण मारै मनुष नें रे, ओ करै समकित री घात।
डाकण चोर रात्री तणी रे, ओ तीर्थंकर नों चोर विख्यात ॥ ६५ ॥
संकट स्यगृद्धि फिट फिट हुवै रे जे न गिणै जाति कुजाति।
ज्यूं अविनीत गृद्धि घणो खावरो रे विकलां में मूंढे विख्यात ॥ ६६ ॥
ए अविनीत साधु ओलखावियो रे, इमहिज साधवी जांण।
वले श्रावक नें श्राविका तणी रे, तिमहिज करजो पिछांण ॥ ६७ ॥
साध साधवियां री निन्दा करै रे, अवगुण बोलै विपरीत।
सूस करावै गृहस्थ भणी रे, त्यांरी मौला मानें प्रतीत ॥ ६८ ॥
केई श्रावक लावै घर तणूं रे, केयक मांगे साथ।
पिण अविनीतपणो छूटै नहीं रे, तो गरज सरै नहीं काय ॥ ६९ ॥
त्यांनें वीधां में पुन्य परूपियां रे, स्वान ज्यूं पूंछ हिलाय।
साधु पाप परूपे त्यांरा दांन में रे, तो लागै अभ्यंतर लाय ॥ ७० ॥
कोई अविनीत हुवै साध साधवी रे, कह्या गुरु रै लोकां में जताय।
जो अविनीत श्रावक सांभलै रे, तो पुल कढ्ढ़ तिणनें जाय ॥ ७१ ॥
साधां नें भाव वंदणा करै रे, साधवियां नें न करै इसी रीत।
त्यांनें श्रावक श्राविका न जांणजो रे, ते तो मूंढ मति छै अविनीत ॥ ७२ ॥
तिण थी जिन धर्म न ओलख्यो रे, वले मण मण करै अभिमान।
भाव थोडी मांहि मति उपजै रे, तिणनें लागो नहीं गुरु कान ॥ ७३ ॥
मोटो उपगार मुनि तणूं रे, कृतघ्न कीयो न गिणंत।
एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै रे, भिक्खु आख्यो एक दृष्टान्त ॥ ७४ ॥
कोई सप पड्यो उजाड में रे, चेत नहीं शुभ काय रे।
तिण सर्प री अनुकंपा करी रे, दूध मिश्री पाणी मुख मांय रे ॥ ७५ ॥
ते सर्प सचेत थयां पछै रे, मारो फिरियो आय।
जो जो मूंठी हुवै तो उणनें दाव दै रे, काचो हुवै तो द डक लगाय ॥ ७६ ॥
सप सरीषा अविनीत मांनवी रे, एकल फिरै ज्यूं ढोर गल्यिा रे।
त्यांनें समकित चारित्र पमायनें रे, कीयो मोटो अणगार रे ॥ ७७ ॥
एहवो उपगार कियो तिणे रे, तिणरा भूलै अविनीत।
उल्टा अवगुण बोलै तेहना रे, उगरै सप नासी छ रीत ॥ ७८ ॥
आहार पांणी वस्त्रादि कारणे रे ते निज मूंढे मगाड़ी जोय।
इणनें जरूरको हुवै तो दाव इण दे रे, मापी काडै तो उल्टो मांडे सोय ॥ ७९ ॥

सर्प में मिश्री दूध पायां पछे रे, डक दे ते गैरी सर्प देख।
ज्यूं औ समकित चारित्र लियां पछे रे, हुवौ सामां रौ वैरी विशेष॥८०॥
वले खाणा पीणा रो हुवौ लोलपी रे, आपरो दोष न सूझै मूढ।
केइवियां सूं स्हामो मण्डे रे, बलि क्रोध करै प्रतिकूल॥८१॥
तिणनैं दूर करै तौ दुस्मण थको रे, बोलै घणु विपरीत।
अवगुण पकस्यैं सगला साधनैं रे, तिणरैं गैरी सर्प री रीत॥८२॥
सुगुरा सांप नैं दूध पायां थकां रे, औ करै पाछो उपगार।
तिणनैं मन देई भगवंत करै रे, वले वीटां हुवै दूध अपार।
भाव सुणो सुविनीत रा रे लाल॥८३॥
केई आप छांदे फिरै एकला रे, पिण सरल प्रणांमी शुद्ध रीत रे।
तिणनैं समझाय समकित चारित दियौ रे, ते आज्ञा पालै रूडी रीत रे॥८४॥
तिणरै समकित नैं संजम विहुं रे, दुविया अभ्यंतर सार।
चलावै ज्यूं चालै छान्दो रूपनैं रे, ज्यांसूं करै पाछो उपगार॥८५॥
मोटो उपगार त्यांरो किम विसरै रे, सूंप सब देही त्यारै काज।
त्यांरौ दर्शण हर्षत हुवै रे, सर्व कांम में धोरी ज्यूं समाज॥८६॥
वले गांमां नगरां फिरतां थकां रे, सदा काल करै गुणग्राम।
ते सुविनीत गुणग्राही आतमा रे, त्यांनै वीर वखाण्या तांम॥८७॥
शिष्य सुविनीत नैं सोमती रे, उपमा दीधी अनेक रे।
सूत्र न्याय भिक्खु स्वामजी रे, सामलज्यो सुविशेष रे॥८८॥
भद्र कल्याणकारी घोड़े चढ़्यां रे, असवार रै हर्ष आनन्द।
ज्यूं सीख दियां सुविनीत न रे, गुरु पांमें परमानंद॥८९॥
सुविनीत हय देखी चावखी रे असवार रै गमती चालंत।
चाबका रूप वचन लागां बिना रे सुविनीत वर्तै चित शान्ति॥९०॥
अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवे अग्नि नैं रे, ते घृतादिक सींची करे नमस्कार।
सुविनीत सेवै इम गुरु भणी रे, केवली हुवौ पिण अविकार॥९१॥
सुविनीत हय गय नर नारी सुखी रे सुखी देव दानव सुविनीत।
ते तौ पूर्व पुन्य रा प्रभाव सूं रे, दीसै लोक म विनय सुरीत॥९२॥
केई पेट भराई शिष्य कारणैं रे, संसार ना गुरु कनै सोय।
राजादिक ना कंवर हाथादिक सहै रे करड़ा वचन सहै मर्म होय॥९३॥
तो सिद्धान्त भणावै ते सत गुरु तणो रे किम लोपै विनयवंत कार।
समगत चारित्र पमामियौ रे, औ उत्कृष्टौ उपगार॥९४॥

धर्म रूप वृक्ष री विनय मूल छै रे, बीजा गुण शाखादिक सम जांण।
तिणसूं शीघ्र बुद्धि कीरत सूत्र मीं रे, दशवैकालिक नवमा रै दूजे वांण ॥ ९५ ॥
वृक्ष री मूल सूकां छतां रे, शाखा पांन फलादि सूक जाय।
ज्यूं विनय मूल धर्म विणसियां रे, सगलाई गुण विललाय ॥ ९६ ॥
एहवौ विनय गुण वर्णव्यौ रे, सांभल नैं नर नार।
अविनय नैं अलगो करी रे, करो विनय धर्म अंगीकार ॥ ९७ ॥
अविनीत रा भाव सांभली रे, अविनीत बहु दुख पाय।
केई कुगुरु सुण दुख बाहिरा रे, ते पिण हरषत थाय ॥ ९८ ॥
विनीत रा गुण सांभली रे, विनीत रै आनन्द ओछाव।
तौ पिण कुगुरु हर्षंत हुवै रे, विनय करावण चाव ॥ ९९ ॥
ते समझै नहीं जिन धर्म में रे आज्ञा अणआज्ञा ओलखै नांय।
ते व्रत बिहूंणा नागडा रे प्रत्यक्ष प्रथम गुणठांणो पेखाय ॥ १०० ॥
हंस देखी हसणी सणी रे, बुगली पिण करी चाल।
पिण बुगली सूं चाल आवै नहीं रे, ऐ दृष्टान्त लीजो संभाल ॥ १०१ ॥
कुगुरु साधां नैं देखी करी रे ते पिण करवा लागा अभिमान।
आडंबर कर विनय करावता रे, नहिं श्रद्धा आचार नुं ठिकांण ॥ १०२ ॥
कोयल रा टहुका सुणी करी रे करै कां शब्द कर काग।
सोभाग गुणी सतियां तणा रे, कूड कुसतियां अभाग ॥ १०३ ॥
सांगधारी कुसतियां काग सारीखा रे, अशुद्ध श्रद्धा आचार रै मांहि।
ठस्या बाम्भ ज्यूं थोथा गाजता रे विनय करावता लाजै नांहि ॥ १०४ ॥
पैंबर नी गति देखनै रे मूर्ख स्वान ऊंचा कर कान।
ज्यूं भेषधारी देखी साध न रे, स्वान ज्यूं कर रह्या तांन ॥ १०५ ॥
ते पिण विनय करावणा रा भूखा घणा रे, साधी सीप सिरोल्यां रा सोच।
मिथ्यादृष्टि ते मूरखा रे, त्यांनै ओलखै बुद्धिवंत लोय ॥ १०६ ॥
त्यां ठाम २ थानक बांधिया रे, थापै जीव बचायां पुन्य।
ते पिण नाम धराव सामरो रे, सबणी न सूझै समकित सुन्य ॥ १०७ ॥
पोपां बाई रा राज में रे, नव टूंका सेरै भेगसार।
ज्यूं विकट सबग स्वामी भिख्खा रे, ऐहवो भेषधारयां रै अधार ॥ १०८ ॥
वस्त्र पात्र अधिका राखता रे, आणा नहीं विचार।
मोक्ष स्थिया थानक मांहै रहै रे, हमेशा थाप निरन्तर धार ॥ १०९ ॥
भाषा बारै पुन्य थापता रे भाषा न पाप समाज।
काचो पांणी पायां पुन्य थापता रे, प्रत्यक्ष पोपां बाई री राज ॥ ११० ॥

ते समझ न पड़ै थावरां भणी रे, ज्यांरा मन माहै मोटौ पाल।
पिण आंधां नै मूल सूझै नहीं रे, तांना ऊपर मोल ॥ १११ ॥
कुगुरु निपज्यां अविनीतड़ी रे, ऊंधा अर्थ कर किरीत।
ते सत गुरु नै कुगुर कहै रे, नहिं विनय करण री नीत ॥ ११२ ॥
उणसूं विनय किग्यो आवै नहीं रे, तिणसूं बोल वचन सहित।
कहै विनय कह्यौ छ मुद्ध साव नीं रे, इणर म्यन्तर खोटी नीत ॥ ११३ ॥
साचां नै असाच सरचायवा रे, बोलै माया सहित।
तिणनै बुद्धिवंत हुवै ते ओलखै रे, भी पूरे मते अविनीत ॥ ११४ ॥
कहै आचार में चूकै घणा रे, म्हांसूं विनय किग्यो किम जाय।
ते बुद्धिहीण जीव बापड़ा रे, न जांणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥
कुकस पड़िलेवण भेला रहै रे, अवधि मनपर्यव केवल अथक।
ते भेला आहार करता शंक नहीं रे, इणन विनय करता आवै शंक ॥ ११६ ॥
देखौ भयारो भवनीत रै रे, निज अवगुण सूझै नांय।
विनय नीं तो गुण पोतै नहीं रे, तिणसूं पर तणो औगुण देखाय ॥ ११७ ॥
दर्शण मोह उदय घणु रे, पूरो विनय किग्यो नहीं जाय।
ओलखै अवगुण आपरो रे, ए उत्तमतणो सुहाय ॥ ११८ ॥
ते कहै केवली कुकस भेला रहै रे, मोह कस्यौ तिणसूं नावै स्हेर।
स्हेर आवै चित्त थिर नहीं रे, ते जांणै निज मन री लहर ॥ ११९ ॥
कुकस पड़िलेवण करै नहिं मिलै रे, तीनं ही काल रै मांय।
दोष सौ छोड सूं घटै नहीं रे, चित्त अथिर सूं ते न मिटाय ॥ १२ ॥
ज्यांरै सूत्र तणी नहीं धारणा रे, मति प्रकृति भणी अजोग रे।
ते बोहा में रंग विरंग हुवै रे, मोटो दर्शन मोह रोग रे ॥ १२१ ॥
कै कोरै दर्शन मोह तौ रिसै जणो रे, पिण सैंणा घणा बुद्धिवान।
ते गुरु मे सुणाम निर्शंक हुवै रे, ज्यांरै समकित री जोखौ मति जाण ॥ १२२ ॥
दोष री थाप गुरां रै नहीं रे, दोष रा डंड री बात।
और री कीधी बात हुवै नहीं रे, इम जांण निशंक रहै आत ॥ १२३ ॥
इम सांभल उत्तम नरां रे, राखौ देव गुरां नी प्रतीत।
आसता राख आगै भणा रे, गया अमारी जीत ॥ १२४ ॥
कर्म नाग मतुमा तणी रे, मित्र तखौ प्रतीत सूं पेख।
इम उत्तम पुरुषां री प्रतीत सूं रे, तिण्या तिरैं तिरसी अनेक ॥ १२५ ॥
निकलंक स्वाम कह्या मला रे, दीपता बर दृष्टान्त।
केवल तौ सूत्रे करी रे, केवल बुद्धि उत्पात ॥ १२६ ॥

उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, स्वाम भिक्खु नीं सार।
स्वाम गुणां नीं पोरसी रे, स्वाम शासण सिणगार ॥ १ ७ ॥
स्वाम दिसावांन दीपती रे, स्वाम तणी वर नीत।
आछता तास न आदर रे, ते अपछंदा अविनीत ॥ १२८ ॥
भिक्खु दीपक भरत में रे, प्रगटयो बहु जन भाग।
स्वाम भिक्खु गुण संभरू रे, भावे हर्ष सभाग ॥ १२९ ॥
बाल भणी इकचालिसमी रे, आख्या दृष्टन्त अनेक।
भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, जय जश करण विशेष ॥ १३० ॥

दुहा

इत्यादिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय वलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी भिक्खु बुद्धि भण्डार ॥ १ ॥
अणुकम्पा रे ऊपरे, करणी पद्म गुण ठांण।
इन्द्रीवादी ऊपरे बहु दृष्टान्त बखांण ॥ २ ॥
पांत्याकच ऊपर प्रत्यप प्रत्याख्यावादि पिछांण।
कालवादी नि चौपई, दृष्टान्त त्यां बहु जांण ॥ ३ ॥
व्रत अव्रत री चौपई, अग श्रद्धा आचार।
जिण आज्ञा पर युक्ति सूं सखरा हेतु सार ॥ ४ ॥
टीकम डोसी कच्छ नीं सूक्ष्म पूछा सोय।
जाब दिया अति युक्ति सूं भूप भिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥
भिक्खु नाम कह्यौ भलो सूत्रां में बहु ठाम।
भेदे कर्म भणी भलो गुण निष्पन्न शुभ नाम ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत अंक पच बार व्रत ना बार।
अव्रत बारे अक घर त्रि करण जोग प्रकार ॥ ७ ॥
इम विध मांड बतावता हेतु न्याय अनेक।
आप दिखाया अधिक ही बणव केम विवेक ॥ ८ ॥
वाख्या ते दृष्टान्त नीं सखरा सुविलास।
कहूं छूं संक्षेपे करी सुणजो मान उल्लास ॥ ९ ॥

ढाल ४२

[छाव मुगादिक नी छोरी०—ए देशी]

पांच सौ मन चणा पिछांण पच सिरखा हतू त मांण।
दोवरा ने चणा भर दीधूं पीस पोय अन्न सूं तृप्त कीधूं ॥ १ ॥

साहूकार मीं स्त्रियां दोय एक रोवै न रोव से जोय।
कह्यो साधुजी किण नैं सरावै ससारी रै मन कुंण भाव[३४] ॥ १८ ॥
मोहकर्मसिंहजी पूछयो महाराज, आप गमता लागो किण काज।
मारी हुयें कासीद मैं निरख तिम दिव मग मीं यार हुय[३५] ॥ १६ ॥
मुझ अवगुण काढ़ै है साय[३६] थांरी मुहड़ो देख्यां मर्क जाय[३] ।
साकरि बांदि री दृष्टान्त[३८] कहै उभा भणी बावत[३] ॥ २ ॥
गुण गोरुी सीरा सूं धोमाय[४] ऐक मांगा पांचूं किम जाय[४१] ।
करी थांनक मैं कव आस्यो सीरी करो जमाई न दास्यो[४] ॥ २१ ॥
ससरी मुझ करो सगाई, डाबरै कन कह्यो छै ताहि[४३] ।
जति री उपासरी कहाय मथेण रै पोषाल है साय[४४] ॥ २२ ॥
माजर सुण स्वान रुदन करत विहाय री मुंवा री न जांणत[४५] ।
दुख नीं रात्रि मोटी दिखाय सुख नी रात्रि छोटी दीसै साय[४] ॥ २३ ॥
गांम रै गोरवैं खती बाढ़ी गधा न पड्यां है तो ठहराई ।
करड़ा दृष्टान्त कह्यो जिण न्याय करडी रोग फूंमाल्यां न जाय[४] ॥ २४ ॥
गोहां री तो वाल हुवै नांहि अल्प बुद्धि न समझै ताहि[४६] ।
भापरी भाषा नांहि ओलखाय पोत लिख्यो वाच्यो नहि जाय[५] ॥ २५ ॥
गौ पगडांडि पाखंड मग ताहि, जिण माग रस्तो पातसाही[५१] ।
पाग चोरी मुवो न पौंचाय मूठो ठांम ठांम अटक जाय[५] ॥ २६ ॥
साधां सूंस करायो सोय भाग्यां साध न पाप न होय।
कपड़ा बेच नफो लियो सार[५३] साधु नै फल दियो उधार[५] ॥ २७ ॥
बैरागी बैराग चढ़ावै कसूंबो गलियां रंग चमावै[५५] ।
कहै म्है जीव बचावां ऐ ठगी, चोरी छाड़ चोरयां करवा लागी[५६] ॥ २८ ॥
अल्पमाल जिम छै तिम राखै पूरो न पचै पचम काल माप।
तेलो तीन दिनां रो त काल हिवड़ा तिण तीन दिवस मीं न्हास[५] ॥ २६ ॥
दीक्ष्या सऊ पिण आंसू तो आय जमाई रोयां शोभ न पाय[५] ।
मात विधवा देखी सोग रोय तिणरा काम भोग वांछै साय[६] ॥ ३० ॥
बावरा रै माथै ल्यिां रूप लाडू ल्यिो है राग सपेम[६] ।
बाम्भी री उन्र जाब्यो जाय चारो मिल्यो दूध दे गाय[६] ॥ ३१ ॥
मौर गण री थारै मांय माय जिणमें दोष्या देखै सबो मांय[६३] ।
मरक मैं जाय कुण तमु ताग पयर न मुवे तज्जि कुम माग[६] ॥ ३२ ॥
कुण स्वर्ग से जाव ताय काष्ठ जल पर कुण ठरराय[६५] ।
पदमो दूधे बाम्भी तिराय संजम तप सूं हलको थाय[६६] ॥ ३३ ॥

पात्रां रै रग कुपथा दोहरा काल्प शास्त्र सूं देखणा सोहरा[१०] ।
म्हारै केलु सूं रङ्गवा रा भाव कच्ची केलु छोड़े किण न्याय[१] ॥ ३४ ॥
कुमार्गां रा करै एक मार्ग एक कन्न मेटै निज हाथै[११] ।
चोर हिंसक कुशीलिया तीन त्यांरा तीन दृष्टान्त सुचीन[१२] ॥ ३५ ॥
कोड़ी मे मीढी जांणै ते नाण पिण मीढी ज्ञान मति जांण[१३] ।
साधु थाका नें गाडै बैसाण किणही गधै बैसाण्यो जांण[१४] ॥ ३६ ॥
पुन्य मिश्र ऊपर अवलोय किणरी एक फूटी किणरी दोय[१५] ।
पोल बारी खोली दोसां बार, देखी हेम में उत्तर उन्नार[१६] ॥ ३७ ॥
चोथा वर्णां री भवारी विश्वास ऊंमरा रखवा की सारी रात[१७] ।
कोयलां री राव ब्राह्मण कास्ता बलि आंधा जीमन परसण वास्ता[१८] ॥ ३८ ॥
तार काठो काई तार कोड पानें बांधा ही सूझै नाहीं[१९] ।
मास वस घरठी उठ जाय दोष बाप्यां संजम किम ठहराय ॥ ३९ ॥
एकलड़ो जीव कह्यो किण लेख त्यांरै लेखै ही चोलड़ो देख[१] ।
वस्त्र राख्यां सी परसीह थी मांगै तो अन्न सूं प्रथम रहै किम त्यागै[१] ॥ ४० ॥
श्वेताम्बरी शास्त्र थी पर छद्म तिणसूं राखां छां तीन सुखम[२२] ।
अनाथ कहै दया नें रोड़ कर कपूत माता न मोड़[२४] ॥ ४१ ॥
शाकनियां डरै गारडू आयां साधु आयां पाखण्डी भय पाया[१] ।
कड़वा पकवान गुर सूं कहाय मिथ्या गुर सूं साधु न सुहाय[२१] ॥ ४२ ॥
चांची बाल्यां किम तेभरा तोड़ै, चारित्र बैराग विण किम जोड़ै ।
दियो तीन माला रो दृष्टान्त सुगुरु कुगुरु ऊपर धामन्त[२६] ॥ ४३ ॥
भवधारी पिण तर करै ताय, मोटी देवाली कम मिटाय[१] ।
बणी बगाई ब्राह्मणी री बात साम्प्रत तिणरा साखी साक्ष्यात ॥ ४४ ॥
सूत्र बाधे ऐसे हिंस्या धारै, ऐहड़े मोरचा मारू म्यू किसाप[१] ।
पत्थर खोस्यो तिणरा काई होय तिणरै हाथ आयो ते तूं जोय ॥ ४५ ॥
सेमा साहरा पर रो नेहुतो होम द्रव्य साध धान कह्यो सोम[१] ।
साध अमाय बंध कह्यो बाय माणा हणिया किहरा गांम मांय ॥ ४६ ॥
बगे मूग दबाल्यो साहुकार, स्याम बताबूं करसी विचार[१] ।
दियो कुगरो पर पग तीन बार सामी छै पिण तिणसूं न प्यार[१] ॥ ४७ ॥
दियो समगांमा रो दृष्टान्त छिद्र पणी ऊपर दामन्त ।
इम पदरनी कहि अभिराम तिग न कठिन सीर समझाय[१] ॥ ४८ ॥
सोमापन्न में कह्या शुद्ध न्याय पाषाण में सोनूं न कहाय ।
मैत्र मांगो आर तिण न्याय गुणा न्याय मैं मिश्र बोल्या[illegible] ॥ ४९ ॥

अविनीत त्रिया नों पिछांण अविनीत साधु ऊपर आण[1]।
कह्या संपेख थी अल्प मात पाछै वर्णवी सगली वात ॥ ५० ॥
चौथी विनीत अवनीत री तास आसरै ढिणसू हेतु पचास[11]।
ते एकतालीसी ढाल में आख्या तिण कारण इहां न भाख्या ॥ ५१ ॥
इत्यादिक कह्या हेतु अनेक पूरा कह्या न आय विशेख।
हुवा भिक्खु उजागर ऐसा साम्प्रत काल में श्रीजिन जैसा ॥ ५२ ॥
तसु भजन चिंतामण सरखो प्रत्यक्ष पारख भिक्खु में परखो।
म्हारे प्रबल भाग्य प्रमांण इणकाल अवतरियां आंण ॥ ५३ ॥
नित्य स्मरण कर नर नार, सुख सम्पति कारण सार।
दुःख दोहग टालणहार, इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥
निर्मल ज्ञान नेत्रे करी निरखो पूज भिक्खु विविध कर परखो।
कर पूरो है तसु विश्वास अति अधिक पूरण आस ॥ ५५ ॥
बयालीसमी ढाल विमास शुद्ध सूनी सुण सुप्रकाश।
स्वामी जय जश करण सुहाया प्रबल भाग बले भिक्खु पाया ॥ ५६ ॥

कलश

दृष्टन्त धार अधिक धार, स्वामनाम सुहामणा।
भव उदधि तारण जग उद्धारण भार भिक्खु रलियामणा ॥ १ ॥
गुण वृद्धि सम्पत्ति दमन दुर्मति भ्रम भंजन अति भणो।
हद बुद्धि हिमागर सुमति सागर नमो भिक्खु गुण निमो ॥ २ ॥

तृतीय खण्ड

सोरठा

आख्यो द्वितीय खण्ड रे, भसि आठ सा मैं प्रथम।
मुनि वर्णन महिमण्ड रे, तीजो खण्ड निसुणो सुम्हें ॥ १ ॥

वेणीरामजी स्वामी कृत

दुहा

चारित्र लीधो भूप सूं, पाखण्ड पन्थ निवार।
भविमण रे मन मोवता हुआ मोटा अणगार ॥ १ ॥
उर्द उव पूजा कही समण निर्ग्रन्थ नी जाण।
तिणसूं पूज प्रगट थया ए जिन वचन प्रमाण ॥ २ ॥
उपम तो भाखी कही समण निर्ग्रन्थ नैं थीकार।
चोरासी अति दीपती कही सूत्र अनुयोग द्वार मझार ॥ ३ ॥
वले दसमा अंग अधिकार में, कही तीस उपमा तंत।
समण भिक्षु नैं गोमती भाख गया भगवंत ॥ ४ ॥
वले पटस्ल उपमा बहुश्रुति नैं थीकार।
उत्तराध्ययन इग्यार म, थी वीर कह्यो विस्तार ॥ ५ ॥
इण अनुसारे ओलख्यो भिक्षु मैं भली भंत।
उपम गुण भाख्या घणा, त्यांरो पार न कोई पामत ॥ ६ ॥
गुणवन्त गुरु ना गुण गावतां तीर्थंकर नाम गोत बन्धाय।
हिवे ओपम सहित गुण वर्णवूं ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

वृषभ सिंह खग मारी जी सिरदारी गायां गण मर्फे।
चेट मार कहै भली मंता।
ज्यूं थे गण मार चेट मिभाया जी चलाया तीरथ चूंप सूं।
सहु सर्षा में शोभंत ॥ ७ ॥

सिंह मृगादिक माँ राजा जी तप ताजा मला तेज सूं।
जीव न जीपै जोय।
ज्यूं आप केसरी नी परै गुम्या जी घूम्या पाखण्डि थाक सूं।
थांने गज सकै नहीं काय ॥ ८ ॥

वासुदेव बल आंगो जी वखाण्यौ वीर सिद्धांत में।
शंख चक्र गदा धरणहार।
ज्यूं थारा ज्ञान दर्शण चारित्र तीखा जी नहीं फीका रत्नाकर तेज सूं।
पूज पाखण्ड दियौ निवार ॥९॥

माला भरत माँ राजा जी अति ताजा सेन्या सझ करी।
आण वरतां माँ अन्त।
य पाखण्ड सहु ओलखाया जी हटाया बुद्ध उत्पात सूं।
तत्त्व बताया दृढ ॥ १० ॥

शक्रेन्द्र सिरदारी जी वज्रधारी सुर में शोभतो।
ब्रह्मादिक ने जीपे आप।
जिम सूत्र वच धीकारी जी ब्रह्मचारी बुद्ध उत्पात सूं।
पूज पाडी पाखण्ड री हांण ॥ ११ ॥

आदित्य उग्यो आकाशे जी विणासै तिमिर तेज सूं।
अधिको करै उद्योत।
ज्यूं थे अज्ञान अंधारो मिटायो जी बतायो मारग मुगत रो।
घण घण चाली जोत ॥ १२ ॥

चंद सदा सुखकारी जी परिवारी ग्रह ना गण मर्फे।
सोमकारी शोभंत।
ज्यूं च्यार तीरथ सुखदाया जी मन भाया भविजण जीव रै।
भिक्खु भला जयवन्त ॥ १३ ॥

कोठ घणा भाघारी जी अति भारी धानाकर भरयो।
ते कोठागार कहाय।
ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरिया जी परवरिया पूज्य प्रगट घणा।
आधारभूत अथाय ॥ १४ ॥

सव वृक्षा में अति सोहै जी, मन मोहै दीसै दीपतो।
जम्बू सुदर्शन जांण।
ज्यूं संता में सिरदारी जी मतधारी भिक्खु भरत में।
उपना इधकारी जांण ॥१५॥

सीता नंदी सिर आंणी जी वखांणी वीर सिद्धान्त में।
पांच से जोजन प्रवाह।
ज्यूं तप तेज अति तीखा जी नहीं फीका रह्याम फावता।
सदाकाल सुखदाय ॥ १६ ॥

मेरु नीं ओपमा आछी जी नहीं काची कही कृपाल जी।
ते ऊंचो घणु अत्यन्त।
ओषध अनेक छाजै जी विराजै गुण स्वामि घणा।
ज्यूं औ बहुश्रुति गुणवन्त ॥ १७ ॥

स्वयंभूरमण समुद्र कह्या जी पूरो पाव राज पहुलो पवगो।
प्रभूत रतन भरपूर।
सागर जेम गम्भीरा जी धुरा धीरा गुण कर गाजता।
सूत्र भरया में नूर ॥ १८ ॥

ऐ पटदश आपम आछी जी कांई साची सूत्र मे कही।
बहुश्रुति नै श्रीकार।
इण अनुसारै जांणो जी पिछांणो कर स्यो पारीखा।
भिक्खु गुण भण्डार ॥ १९ ॥

उपमा अनेक गुण छाज्या जी विराज्या गादी वीर नीं।
पूज्य पाट लायक गुण पाय।
समुद्र जेम अथागा जी जस धागा जिन कह्यो नहीं।
ज्यू गुण पूरा केम कहाय ॥ २ ॥

पाट लायक शिष्य भारमै जी सुंहामी प्रकृति सुन्दरु।
भारमलजी गैहर गम्भीर।
पन्थी थिर कर थापी जी आ आपी आचरज तणी।
जांण सुविनीत सधीर ॥ २१ ॥

दुहा

भाग बली भिक्खु तणै सव हुवा गण माहि।
बगन संदापे पवर, मार्ग धर उछाहि ॥ १ ॥

केयक पण्डित मरण कर जीवी अल्प कल्याण।
कम जोग केइयक टल्या सुगण्यो चतुर सुजांण॥ २॥
बड़ा संत भिक्खु घणी जनक सुतन वर जोड़।
पिता स्वाम थिरपाल जी फतैचन्द सुत मोड़॥ ३॥
बड़ा टोला में था बिहुं, रह्या बड़ा सुरीस।
सरल भद्र बिहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत॥ ४॥
तपसी तप करता बिहुं सीत उष्ण बरसाल।
वड वयरागी विनय वर, रूड़ा मुनि गुणपाल॥ ५॥
निर अहंकारी निर्मला निरलोभी निकलङ्क।
हलुआकर्मी उपधि करे, आवच उभय अवङ्क॥ ६॥
सीतकाल अति सीत सहै, पछेवड़ी परिहार।
वन निधि देखी जांणिज्यो ऐ तपसी अणगार॥ ७॥
कार्ड आप पधारिया महिपति आवणहार।
साम्भल में ते संत बिहुं, तत्क्षण कियो विहार॥ ८॥
निज आतम तारण निपुण बारु बेपरवाह।
तप मुद्रा तीखी घणी चित्त इम शिवपद चाह॥ ९॥

ढाल ४४

[राणी भाखै हो दासी साम्भल बात०—ए देशी]

संत दोनूं हो सोभ गुणवन्त नीत २, त्यांसूं प्रीत पूर्ण भिक्खु तणी।
भिक्खु सेती हो त्यांरै पूण प्रीत २ गुणग्राही आत्म घणी॥ १॥
पद आचाय हो भिक्खु बुद्धि नां भण्डार २, जन बहु देखतां युक्ति सूं।
आप मूंके हो पद नीं अहंकार २, कर जोरी वन्दना करै भक्ति सूं॥ २॥
तिण टोला मा हो तुम्हें संत कहिवाय २, इण विध लोक पूछ घणा।
मौन मूकी हो बोलै बिहुं मुनिराय २ म्हे भीखणजी रा टोला तणा॥ ३॥
प्रश्न करचा हो त्यांनें कोई पूछन्त २ ती संत दोनूं इम भाखता।
भिक्खु भाखै हो तेहिज जांणज्यो संत २, रूड़ी आसता भिक्खु नीं राखता॥ ४॥
म्हांनें तो हा पूरी खबर न कांय २, भीखणजी नै पूछी निर्णय करी।
शुद्ध जांणी हो तेहिज सत्यवाय २, प्रगट कहै इम पाधरी॥ ५॥
त्यांरा तप नी हो अधिको विस्तार २, कायर सुण कम्पै घणा।
अनि पांमें हो पूरा तप अपार २, संत दोनूं ई सुहांमणा॥ ६॥
संजम पाल्यौ हो घड़ वर्ष सीरार २ विचरत बहलू आविया।
धम मूर्त्ति हा शामी मदा गुणधार २, हलुकर्मी हर्षाविया॥ ७॥

शुद्ध तपस्या हो फतैचन्दजी सैंतीस २ अधिक कियो तप आकरौ।
यारु करणी हो ज्यांरी विश्वावीस २, क्षान्ति गुणे मुनिवर खरौ॥ ८ ॥
पिता दीधी हो तसु पारणौ आंण २, ठण्डी घाट बाज री तणी।
फता करलै हो पारणौ पहिछांण २ सरल पणें कहै सुख मणी॥ ९ ॥
निरममती हो सुत सन्त सिहाम २ प्रगट अपथ्य कियौ पारणौ।
कर गयौ हो तिण जोग सूं काल २ सुमति जन्म सुधारणौ॥ १० ॥
एकवीसे वप हो सम्वत अठार २, फतैचन्द फतै कर गया।
निरमोही हो तात निमल निहार २, थिर चित संजम अति थया॥ ११ ॥
मुनि मासौ हो सेरवा सहर मांहि २, सलेखणा मझिमा सही।
चिहु मासे हो पारणा चित्त चाहि २ आसरै चवदे किया कही॥ १२ ॥
थिर चित्त सूं हो मुनिवर थिरपाल २ वप बतीसे विचारियो।
कर तपस्या हो मुनि कर गयौ काल २, जीतव जन्म सुधारियो॥ १३ ॥
जोड़ी जुगली हो तात सुतन जिहाज २, स्वाम भिक्खु रा प्रसाद थी।
पण्डित मरणौ हो ओ तो भवदधि पाज २ पाम्या है धर्म समाध थी॥ १४ ॥
सखरी भाषी हो चौमाल्‍िसमी ढाल २, स्वाम भिक्खु गुण सागरु।
याद करवे हो जय जस सुविशाल २, अधिक गुणां रा आगरु॥ १५ ॥

दुहा

समत अठारह बतीस में भिक्खु बुद्धि भण्डार।
प्रकृति देख साधु तणी लिखत कियौ तिणवार॥ १ ॥
सहु साधां ने पूछनैं बांधी इम मर्याद।
सुखे संजम पालज्‍यो सगी टालण क्लेश उपाधि॥ २ ॥
पद युवराज समापियौ भारीमाल नैं जाण।
सव साध न साधवी पालज्यो योंरी आंण॥ ३ ॥
भारमलजी री आज्ञा थकी विचरवो धापे वास।
चौमासौ करिवो तिको आज्ञा से सुविमास॥ ४ ॥
दीक्षा दणी भवर न भारीमाल रै नांम।
भिण आज्ञा लीधां बिना शिष्य न करणौ तांम॥ ५ ॥
इच्छा हुवै भारीमाल री शिष्य गुरु भाई सोय।
पदवी देवे तेहनें तसुं आज्ञा अवलोय॥ ६ ॥
एक तणी आज्ञा मभै, रहियौ रूडी रीत।
एहवी रीत परम्परा बांधी स्वाम वदीत॥ ७ ॥

टोलामां सूं कोई टलै एक दोय वे आदि।
धूत बगुल ध्यानी हुवै तिणनें न गिणवो साध॥ ८॥
तीर्थ में गिणवो न तसु, चिउं संघ नौ निन्दक जाण।
एहवा नें वान्द तिके, आज्ञा बार पिछाण॥ ९॥

ढाल ४५

[पाछ्या बोलै न बोल—ए देशी]

एहवो भिक्षु अभिराम सखर मर्यादा हो बांधी स्वामजी।
मीठे साधां रा गाम, कठिन संजम नैं पाळण काम जी॥ १॥
मेटण कलेश मिथ्यात थिर चित्त पालण हो मर्यादा धुरी।
बारु बुद्धि विख्यात सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामें सुणी॥ २॥
अपछन्दा अवनीत दोषण काढ़ै हो इम मर्याद में।
कुबुद्धि कहै कुरीत अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि में॥ ३॥
बिगड़्यो पछै वीरभाण, आज्ञा लोप्यां सूं स्वामी अलगो कियो।
पाछै कह्यो प्रबन्ध पहिछाण दर्शन मोह विष तिणनें दगा दियो॥ ४॥
टोकरजी व्रतसार, हाजर रहिता हो स्वामी हरनाथ जी।
संत दोनूं सुखकार, वर अवसर बारु हो तासू विख्यात जी॥ ५॥
भारीमाल ने भाल पद युवराज हो पूज्य समापियो।
संत सबै सुविशाल वन्दन भेटीनें हो थिर चित्त थापियो॥ ६॥
सौम्य मूर्ति सुखकार स्वाम प्रशस्या हो अंत्य समय सही।
साझ थी संजम सार, कीर्ति भिक्खू हो आप मुखे कही॥ ७॥
बगड़ी शहर विशेष स्वाम टोकरजी हो संथारो कियो।
देश ढूंढार में देश रे, हद संथारो हरनाथजी कियो॥ ८॥
स्वाम भिक्खु रे प्रसाद, संत दोनूं हो जन्म सुधारियो।
उपजे मन अहिलाद, स्मरण सांभी अति सुखकारियो॥ ९॥
भारीमाल युवराज, सेवा स्वामी नी अन्त ताई थिरै।
पदवीधर अब पाज अणपाम आयो वर्ष अठन्तरै॥ १०॥
खिवमेजी संजम लोप कर्म प्रभावै गण सूं न्यारो थयो।
पडिमाई कह्यो बन्द सिद्ध, देसुण अध पुदगल हो उत्कृष्ट जिन कह्यो॥ ११॥
अखैरामजी सु भण्ड स्वाम भिक्खु पैहो संजम आदर्यो।
भेषधार्यां में घद, सुद्ध मन सतो हो पवर चरम धर्यो॥ १२॥
पारख जाति पिछाण, पारस साधी हो ये पूण करी।
सोहाम्ट मा सुजाण चरण अराध्यो हो थिर चित्त आदरी॥ १३॥

घर तप छेहड़े दिन छत्तीस तेला हो चौला मे चरुता रह्या।
अश्व दिवाली दिन चप इकसठे परमव में गया ॥ १४ ॥
अमरीजी छत्रक धार, पष कामा थी अभवी अनन्त गुणा।
अभवी थी अधिकार, ज्ञानी देखो भाख्या पहियाई अनन्त गुणा ॥ १५ ॥
संत बड़ा सुखराम वासी लोहाकर नां हो पोरवाल सही।
समझाया भिक्खु स्वाम सुर तरु सरीया हो चरण लियौ सही ॥ १६ ॥
देख मूर्त्ति सम देख मुनि इर्या नीं हो निमल धारणा।
बाद घण विशय सोम्य सुप्रकृति महासुख कारणा ॥ १७ ॥
बासरै बयालीस बास निर्मल चारित्र हो स्वामी गुण मिलो।
बासठे वर्ष विमास विकस पचोसे अणशन अति भलो ॥ १८ ॥
स्वाम भिक्खु साख्यात तत्त्व ओलखाई बहुजन तारिया।
कर्मविधे स्यूं बात स्वाम सोभागी हो महा सुखकारिया ॥ १९ ॥
समरू हूं दिन रैण याद आयां सूं हो हियड़ो उलसै।
चित्त माहिं पामूं चैन वंछित पूण सूं मुझ मन बसै ॥ २० ॥
पांच चालीसमीं वास श्रमण शोभाया हो मयन वंछित फलै।
बस कहा करण विशाल स्मरण सम्पति हो मन चिन्तत मिलै ॥ २१ ॥

सोरठा

छुटक तिलोकचन्द रे वासी चेलावास रा।
चन्द्रभाण बर फन्द रे, जिणी बांध में फन्दाविया ॥ १ ॥
मौजीराम गण माहिं रे, शुद्ध मन सूं संजम लियौ।
कर्मा दियौ धकाय रे, ते पिण छुटक भोगव्यौ ॥ २ ॥

दुहा

शिवजी स्वामी सोभता स्वाम तणा सुवनीत।
पण्डित मरण कियौ पवर गया जमारो जीत ॥

सोरठा

जाति चौरड़िया जाण रे पुर ना वासी पिछाणज्यो।
चारित्र चन्द्रभाण रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो ॥ १ ॥
मण्या बुद्धि भरपूर रे, पिण प्रकृति अहंकार नी।
अविनय अवगुण भूर रे, आज्ञा कठिन आराधवी ॥ २ ॥
जिणी बांधियौ जाण रे, तिलोकचन्द सूं तुरत हो।
मन म अधिको मान रे, साथ फंदाया अवर ही ॥ ३ ॥

संत भवर समभाय रे, स्वाम भिक्खु सिंह सारिया।
एक एक मैं ताहि रे खोल्या भिड़ु नैं जु जुआ ॥ ४ ॥
अवगुण अधिक अजौर रे, त्यां बोल्या भिक्खु तणा।
प्रत्यक्ष न्याय प्रयोग रे, असाध प्रख्या स्वाम नैं ॥ ५ ॥
भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सूं समभ्रावियां।
प्रायश्चित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मभे ॥ ६ ॥
सहु नैं किया मिथाडू रे, आया दंड अंगीकरी।
तिरभी यामें वंक रे, प्रत्यक्ष छोडी पेखिजौ ॥ ७ ॥
श्रमणी सत समाधि रे, जिणनें दंड न ठहरावियो।
सहु नै कह्या असाध रे, त्यांराहिज पग बांदिया ॥ ८ ॥
मांन घणो घट माहि रे, बिगडी तिणसूं बातडी।
प्रायश्चित गहीं लै ताहि रे, भिड़ु नैं साथे छोड़िया ॥ ९ ॥
वर्णन बहु बिस्तार रे, रास माहिं भिक्खु रच्यो।
अल्प इहां अधिकार रे, दाख्यो मं प्रस्ताव पी ॥ १० ॥
भगन्द बिना विचार रे, संथारो भीखो सही।
चौविहार चित्त धार रे, गाम बिठौरे पूज्य गण ॥ ११ ॥
उपनीं तृषा अपार रे सतरै दिन सूं निसरयो।
सेवा करे सधार रे, तिणसूं पहिलो तोल नैं ॥ १२ ॥
पनजी क्षुल्लक पेख रे, संतोकचन्द सिवरांम नैं।
चन्द्रभांणजी देख र दोनं भणी फंटाविया ॥ १३ ॥
केई पोते हुवा न्यार रे, केइकां न दूरा किया।
अपछन्दा अणगार रे त्यामें चारित्र दोहिलो ॥ १४ ॥

ढाल ४६

[करकसा नार मिली०—ए देशी]

नीत निपुण नगजी नीं निमल कुवर्या ना बखांन।
संथारो कर कारज साज्यो किन्यो अमम किल्याण।
सुवनीत शिष्य आय मिल्या धन्य धन्य हो भिक्खु थांरा भाग्य।
सुखदाई शिष्य आय मिल्या ॥ १ ॥
स्वाम रांम कुन्दी ना बासी जाति थावकी जांण।
जुगम जोडलो दोनूं जाया सोम्य भद्र सुविहांण। सु ॥ २ ॥
करि मनसोबो भाया केल्वे पूज भिक्खु पै तांम।
आज्ञा रांम मगी मातीनैं संजम बिरायो स्वाम। सु ॥ ३ ॥

इह अवसर मैं थीजी द्वारै साह भोपौ सुत सार।
नांम खेतसी निमल नीको थयौ संजम में त्यार। सु० ॥ ४॥
दोय व्याह पहिली कर दीधा तीजो करता त्यार।
उत्तम जीव खेतसी अधिको इणरे वंछा न सिणगार। सु० ॥ ५॥
बहिन दोय रावलियां व्याही आय सिहां किण वार।
वेन बैनोई न्यातीलां नें समझावै सुखकार। सु० ॥ ६॥
विमल करत मुख मयणा विध सूं, वर वैराग बणाय।
चित्त चारित्र लेवा सूं चढ़ती आज्ञा मांगी नहीं आय। सु० ॥ ७॥
इसा विनीत तात ना अधिका, इसलै तिण पुर माहीं।
संजम ले रंगुजी सती सांमल्या भोपै साह। सु० ॥ ८॥
भोपौ साह कहै खेतसी भणी रे, चित तुझ लेण चारित्र।
कहै खेतसी वेकर जोडी मुझ मन अधिक पवित्र। सु० ॥ ६॥
आज्ञा हुए घरी में आपी करै भोपौ साह जाय।
रंगुजी मेला करी रे, इणरा महोछव अधिकाय। सु० ॥ १ ॥
अठ्ठीसें संजम आदरियौ भिक्खु आप रै हाथ।
विहार करी कोठारया आया लारै तो बल गयौ तात। सु० ॥ ११॥
भिक्खु पूछयां सत जोगी मालै मन चिन्ता किम मोय।
पहिली उवे अबै आप मिलिया पिव विरह पड्यो नहीं कोय। सु०॥१२॥
परम विनीत खेतसी प्रगट्या स्वाम भणी सुखकार।
कार्य भलायां वेकर जोडी तुरत करण में त्यार। सु ॥ १३॥
कोमल कठिन वचन करि भिक्खु, सीख दियै सुखकार।
क्षान्ति हुए कर धरै खेतसी तहत वचन ततसार। सु० ॥ १४॥
हुए घरी रहै भिक्खु हाजर अन्तरग प्रीत अपार।
सेवकरी रिझाया स्वामी सो ओप लिया ततसार। सु० ॥ १५॥
सतजुग सरिया प्रकृत विनय सूं निमए सतजोगी नाम।
गण आधार खेतसी गिरवो सरायौ भिक्खु स्वाम। सु० । १६॥
सतजुगी चरित्र माहीं छै सगलौ विवरासुध विस्तार।
इहां संक्षेप करी मैं भाख्यौ सत वण्न माहिं सार। सु । १७॥
पांच पांच मा पचर चोकड़ा वर किया बोहली वार।
उत्कृष्टो तप दिवस अठारह एकटंक उन्क आगार। सु ॥ १८॥
ऊष्मा रहिवारी तपस्या अति, एक पहोर उन्मान।
जे बहु चय सम आणथ्यो रे, खेतसी जी गुणखांन। सु ॥ १६॥

सीत उष्ण मुनि सह्यौ अधिको सकल संघ सुखकार।
स्वाम सतजुगी संमक्ष्यां रे, भाव हुए अपार। सु० ॥ २० ॥
सतजुगी तणा प्रसंग थी रे, अधिक हुवौ उपगार। —
ते वहिन भाणेजे चारित्र लीधौ ते आगै चलसी विस्तार। सु० ॥ २१ ॥
वप बासीस स्वांम नीं सेवा छेहड़ा लग सुविचार।
भारीमाल नीं छह लग भक्ति आसरै वप अठार। सु० ॥ २२ ॥
संलेखणा छेहड़ करी सतरी मवरोई संथार।
भिक्खु भारीमाल पास परभव में असीय वप उदार। सु० ॥ २३ ॥
भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, सतजुगी संजम भार।
पछै स्वामजी सजम पचख्यौ ओ भिक्खु तणो उपगार सु ॥ २४ ॥
भिक्खु भोग्या भ्रम पणारा भिक्खु भव-दधि पाज।
भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र में, जगत उद्धारण जिहाज। सु० ॥ २५ ॥
भाग भले भिक्खु भूप भारी शिष्य मिलिया सुविनीत।
भिक्खु याद आवै निशदिन मुझ, धर्म भिक्खु सूं प्रीत। सु ॥ २६ ॥
पवर ढाल कही छयालीसमीं सतजुगी नौं विस्तार।
सेव करी स्वामी नीं सतरी जय जश करण उदार। सु ॥ २७ ॥

दुहा

सोम राम साधु सरल संतां नैं सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी भणी नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥
वप पैसठै उपवास में भिक्खु पाळी भाळ।
पाळी मैं परभव गया निर्मल सोम निहाल ॥ २ ॥
रांम ऋषि रलियांमणा इन्दुगढ़ मे आय।
चौला मं चलता रह्या सितरै वर्ष सुथाय ॥ ३ ॥
वेणगढ़ दीक्ष्या ग्रही समुझी सुविचार।
वार वार शंका पड़ी छेद दियौ तिण वार ॥ ४ ॥
तो पिण गण बारै हुवो करै साधां नीं सेव।
साध आहार मोल्या पछै, आप ल्यावै नित्यमेव ॥ ५ ॥
पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गांम मझार।
आवै दर्शण करण नैं, पिण शंका थी हुवी खुवार ॥ ६ ॥
संघजी थी गुजरात रौ, धर्म लियौ चित्त चाहय।
शिरियारी मे भिक्ख्यौ कुवर व्रत दिखाय ॥ ७ ॥

तदनन्तर संजम लियौ धरस्या बोहरा गाँम।
एकचालीसे आसरै, नाम नानजी सोय ॥ ८ ॥
स्वाम भिक्खु पासे सही एकोतेरे अवलोय।
तेला म चलता रह्या धर्म ध्यान में जोय ॥ ९ ॥

ढाल ४७

[परम गुरु पूज्य जी मुझ प्यारा रे—ए देशी]

नानजी पछे चरण निहाली रे मुनि नाम मोटो गुण माली रे।
वासी रोयट नौं सुविशाली।
हर्ष भारमाल नित्य वन्दौ रा ॥ १ ॥

पवर चण भिक्खु पास पायौ रे, संजम बहु वर्ष शोभायौ रे।
मुनि जिन शासन दीपायौ।
भिक्खु शिष्य शोभता निम्य वन्दौ रे ॥ २ ॥

शहर नेणवे कियौ संथारौ रे, पाम्यौ भवसागर नौ पारौ रे।
ओ तौ भिक्खु तणो उपगारौ ॥ ३ ॥

तदनन्तर चप चौमालौ रे, वेणीरामजी अधिक विशालौ रे।
निकलंक चरण चित्त निहालौ ॥ ४ ॥

दीक्ष्या भीखण जी स्वामी दीधी रे, वर्धमान कार्य रा प्रसिद्धि रे।
मुनि गण माँहि शोभा लीधी ॥ ५ ॥

हुवौ वेणीराम ऋषि नीको रे, प्रबलपण्डित चरचावादी टीको रे।
मुनि लियौ सुजश नौ टीकौ ॥ ६ ॥

बारे बाधत सखर वखाणो रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजाणो रे।
मत में प्रगट्यौ जिम भाणो ॥ ७ ॥

हद वारमा मे हुंशियारी रे, श्रोता नै लागै अधिक सुप्यारी रे।
चित्त माँहे पामै चमत्कारी ॥ ८ ॥

जाय मालव देश जमायौ रे, वर्षीसूं चरचा कर तायौ रे।
बहु जन ने लिया समझायौ ॥ ९ ॥

त्यांरी घाव सूं पाखण्ड धूज रे, वेणीराम केसरी जिम गुंजे रे।
प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुझे ॥१० ॥

उत्पातिया है बुद्धि उदारी रे, समझाया घणा नरनारी रे।
हुवौ जिण शासण शिणगारी ॥११॥

घणां न दियौ संजम भारो रे धर्म बुद्धि-मूर्त्त सुखकारी रे।
ए तो भिक्खु तणो उपगारो ॥१२॥

सीधी स्वाम भिक्खु पछै चालौ रे शहर चासटू मैं सुविशालौ रे।
संवत् अठारह सित्तर निहालौ ॥ १३ ॥

भिक्खु तारचा चमा नर मारो रे भक्तितारक भिक्खु विचारी रे।
स्वामी भय भस कर्म भीकारो ॥१४॥
सैंतालीसमीं ढाल सुहायो रे, भिक्खु शिष्य मोटा मुनिरायो रे।
स्वाम संग धर्म सुख पायो ॥१५॥

दुहा

तिण अवसर कोटा तणा दौलतरामजी वेष।
आया तसु टोला थकी सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

सोरठा

दोय रूपचन्द वेश रे, बारह ब्रुत वद्धमानजी।
सूरतीजी सपेश रे स्वाम गणे संजम लियो ॥ १ ॥
रूपचन्द वद्धमान रे, छूटी तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछाण र सूरतो पिण छूटक थयो ॥ २ ॥

दुहा

बड़ा संत वद्धमानजी संजम सरस सुधार।
विचरत विचरत आविया देश ढूंढाड़ मझार ॥ २ ॥
न रा कारण थी लियौ मारग मैं संथार।
सम्वत् अठारह पचावनै लीधो संजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामगण, माधोपुर रै माहि।
अणसण रो थयो लियो वेणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछै परिणाम थया पड़्या बोल्यो एहवो वाय।
हूं थारै नहीं काम को, रत्न कांकरौ थाय ॥ ५ ॥
इम कहीनै अलगौ थयो अणसण लियौ इम वाय।
एक चेलो कीधो पछै, आयो इन्द्रगढ मांय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कहै गृहस्थां भणी संत सूंप मुझ तांम।
भिक्खु न बहिरावज्यो मुझ गुरु भिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साधांणी पचख लियो सथारो ठाम।
पांच दिवस रै आसरै परभव पहोतौ जाम ॥ ८ ॥

सोरठा

अति भेष मैं जाण रे मयारामजी मुनियो।
प्रत्यक्ष ही पहिछाण रे भवपारख्यां मं आवियो ॥ १ ॥

भेषधारी नें छंड रे, संजम लीधो स्वाम पै।
बहु वप चरण सुमण्ड रे, निकल कालवादी थयो ॥ ४ ॥
कितो नांम विचार रे, वासी बोरावड़ तणो।
संजम ले सुखकार रे, कर्म प्रभावे निकल्यो ॥ ५ ॥

ढाल ४८

[बाजोटे पर नहीं बेसणो मुनि पग ऊपर पग मेल०—ए देशी]

तदन्तर टुगचना वासी सुखजी नांम सुखकार।
स्वाम भिक्खु पै संजम लीधो आंणी हर्ष अपार रा॥
भिक्खु स्वाम उजागर आपरा।
सुविनीत भला शिष्य जिन मार्ग जमायो रे।
सुगुणा परम पूज रे, प्रसंग सुजानी जय जश छायो रे।भि०।१॥
स्वाम भिक्खु पछै चोसठे, काई शहर देवगढ़ सार।
अणशण कर आतम उजवालियो तो शुद्ध दश दिन सधार। भि०। २ ॥
वय तेपन शिरियारी वासी हेम आछा हद जाति।
संजम स्वाम समाप्यो सुगुणन हेम नवरसै विख्यात। भि०। ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला स्वामी हेम सखर सुविनीत।
प्रबल बुद्धि धन्य पोरसा काई गुण पुण्य सुं प्रीत। भि०। ४ ॥
परम विनयवन्त परखिया बारु बुद्धि भारी सुविचार।
हद किधो सिंघाड़ो हेम नों भारी ज्ञानी गुणां रा भण्डार।भि०। ५ ॥
हेम सुनिर्मल हीया तणा अरु हेम स्वामी हितकार।
हेम सुमति ना सागरु अरु हेम गुप्ति गुणकार। भि०। ६ ॥
हेम विसावान दीपतो मुनि हेम मोटो महाभाग।
हेम उजागर ओपतो, वर हेम हीये वैराग। भि०। ७ ॥
हेम ईर्या पुनि ओपती गति जांणें चाल्यो गजराज।
हेम गम्भीर गैहरो घणो, भो तो हेम गरीब निवाज। भि०। ८ ॥
हेम दया दिल में घणी, शुद्ध सत दत हेम सधीर।
हेम शील माहीं रम रह्यो, बारु कर्म काटण बड़ बीर। भि०। ९ ॥
हेम संग रहित सुरतरु, काई हेम मेरु जिम धीर।
हेम चिन्तामणि सारीपो भो तो हेम जांण पर पीर। भि०। १० ॥
सुन्दर मुद्रा हेम नीं अरु अतिशय भारी तन।
पेखत चित्त प्रसन्न हुवै चित्त माहें पामै चन। भि०। ११ ॥
सम्वत् अठारह से तपन पाई, धन बुद्धि अधिकाय।
बर पूरिया म बार्ता भा तो प्रत्यक्ष भिक्खु ठहां आय।भि०।१२॥

बारह सत तो आगै हुंता काई स्वाम भिक्खु पै सोय।
हेम हुवा संत तेरमा, त्यां पछै न घटियौ कोय। मि०। १३ ॥
मागबली भिक्खु तणों शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार।
पाखण्डी पग माण्ड नहीं पड़ हेम नीं धाक अपार। मि०। १४ ॥
चौथे आरै सांभल्या, एहो क्षमा शूरा अरिहंत।
प्रत्यक्ष आरै पंचमे, एहौ हेम सरीखा सन्त। मि ॥ १५ ॥
भिक्खु भारीमाल ऋषराय रै, करता म हेम कवीत।
चर्चावादी सूरमां क्रिया क्या पालवा में जीत। मि ॥ १६ ॥
घणां घणां मै सज्म दियौ देश व्रत घणां नै सुलम्भ।
बहु मपम पंडित किया हेम जिम शासन रो थम्भ। मि ॥ १७ ॥
हेम नवरसा मे कह्यौ वर हेम तणु विस्तार।
ग्रन्थ बधती जांणनें इहां संक्षेप्यौ अधिकार। मि ॥ १८ ॥
भिक्खु भारीमाल चलियां पछै, ऋषराय तणें बार।
उगणीसै चौके समें सिरियारी मे हेम सन्थार। मि० ॥ १९ ॥
भाग प्रबल भिक्खु तणा हुवा सन्त शासण सिणगार।
हेम गजेन्द्र समो गुणी बलि भारू अवर अणगार। मि ॥ २ ॥
आठ चालीसमीं शोभती आखी ढाल रसाल अपार।
स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ओ तो मन वंछ करण उदार। मि ॥ २१ ॥

दुहा

तदनन्तर तपसी भलौ वर चपलोत विचार।
वासी कांकरला तणो पवर उदैराम अधिकार ॥ १ ॥
पचावनं पारखी मर्म, पूज भीखणजी पास।
थावण में संजम लियौ, अधिको धर्म उजास ॥ २ ॥
बलि उग्र तप आदर्यो वर आंकरा वर्द्धमान।
छयालीस ओली करौ चडपौल चढ़ते ध्यान ॥ ३ ॥
अवर तप कीधी अधिक छठ छठ आदि विचार।
आठ सौ इकतालीस आसरै आंबिल किया उदार ॥ ४ ॥
साठ स्वाम पछ सही सतरो वर संथार।
पेसावास चलतौ रह्यौ, भारीमाल उतार्यो पार ॥ ५ ॥

सोरठा

सदनन्तर विस्तार रे, सुशालजी संजम लियौ।
प्रकृति कठिन अपार रे, कम जोग थी निकल्यौ ॥ १ ॥
मोटी जाति सोनार रे, वासी सारचियां तणो।
स्वाम कनें समाचार रे, आप कही इह रीत सूं ॥ २ ॥
अति कायो हुवो बाप रे, आज्ञा दी मुझ इण परैं।
यूं मुझ क्यूं दै ताप रे, कर तुझ दाय आवै जिसी ॥ ३ ॥
म्हारी जांनी सूं जाण रे, जोगी अति हूं जूझियौ।
इक नर सुणतां कहि वांण रे, स्वामी सब सजम दियौ ॥ ४ ॥
प्रकृति तणैं प्रताप रे, संजम पालणौ दोहिलौ।
कठिन परीषा ताप रे, छूटो छे सब छिनक में ॥ ५ ।
माघो जी पोरवाल रे, वासी देसुरी तणो।
सुत गृह छांडी सार रे संजम सतरैं स्वाम पैं ॥ ६ ॥
सीमा लोल्पी जांण रे मुनि बांधी मर्याद नैं।
छूटो तेह पिछांण रे पिण श्रद्धा सनमुख रह्यौ ॥ ७ ॥

ढाल ४६

[जै जै जै गणपति रे नम — ए देशी]

समत अठारै बय सतावनैं गोम रावलियां गुणियैं
रुघु वेस आप राय दीख्या ली थिर चित्त सेती सुणियैं।
जै जै जै गणपति रे नमुं ॥ १ ॥
वंश जाति चतुरी साह सुतवर, नाम रायचन्द नीको।
वर्ष इग्यारह आसरैं वय में संजम सखर सधीको। जै ॥ २ ॥
हरखिणी होवै हप हुओ अति मातु कुशालां बाह ।
साधे संजम पूज समाप्यो चैत्री पुनम थाह। जै० ॥ ३ ॥
प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखनैं पर्म पूज फरमायो।
पट लायक ए पुन्य पोरसो वचनामृत बरसायो। जै० ॥ ४ ॥
विमलांग अपराम दीपतो भाग्य घणी बुद्धि भारी।
हस्तमुखी मूर्ति हद रूपत पेखत मुद्रा प्यारी। जै० ॥ ५ ॥
पाट तीजै भागुण परख्यो स्वाम वचन सुहामा।
जम्बू स्वाम जैसा जैवन्ता, आम्ब ठाठ जमाया। जै० ॥ ६ ॥

अन्तकाल भिक्खु नैं अधिकी साझ सकर सुखदाया।
भारीमाल र पास मुआगल रायचन्द बच राया। जै० ॥ ७ ॥
गुणंतरै बप भारीमाल नीं आज्ञा ले अगवाणी।
प्रथम शिष्य बच जीत किन्यौ, निज पाट लायक सुविहाणी। जै० ॥ ८ ॥
भारीमाल नैं साझ दियौ अति अन्त समय अधिकायी।
आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन दयाल दीपायी। जै० ॥ ९ ॥
तस उपगार तणौ कथन करतां अति ग्रन्थ बधियी।
भिक्खु तणौ सम्यक्त्व छूटां, तिण कारण संक्षेपियौ। जै० ॥१०॥
संसारी लेखैं मामा सतजुगी महा मतिवन्ता।
मल मागेज रायचन्द मनियैं बलधारी जैवन्ता। जै० ॥११॥
भिक्खु बप अति भाग बली शिष्य मिलिया रायचन्द नीका।
गिरवा गैहर गंभीर गुणागर, पूज्य प्रथम ही परीक्षा। जै० ॥१२॥
बहु वर्षा लग भाग नीं वृद्धि, जिनश्री आगुं वाणी।
भिक्खु रै अति भागबली बपराय मिल्या शिष्य आंणी। जै ॥१३॥
ऐसा भिक्खु आप उजागर, शिष्य पिण मिल्या सरीखा।
तस पग छेहड़े सन्त हुवा ते सामलिया सुबुद्धिका। जै० ॥१४॥
ए गुणपचासमीं ढाल अनुपम मिल्यौ संत मन मान्यौ।
कहियै धम वृद्धि नो कारण, जय जश कण गुणांण्यौ। जै० ॥१५॥

दुहा

समत अठारै सतावनें जेठ मास मैं जोम।
पिता पुत्र बर चरण पद, हय बणो अति होम ॥ १ ॥
तारोचन्दजी तात सुत, डूंगरसी महा मण्ड।
पिता भार्या परहुरी सुतन सगाई छण्ड ॥ २ ॥
वड बैरागी संत बिहुं सखरौ कर संथार।
भिक्खु स्वाम पछै उभय समचित अन्त सुमार ॥ ३ ॥
अणसण इकताळीस दिन तारोचन्द उवेल।
दस दिन अणशण दीपतौ डूंगरसी मैं देल ॥ ४ ॥
तदन्तर संजम लियौ, चरल्या बौहरा ताहि।
जीवौ मुनि तासोम नीं महा मोटौ मुनिराय ॥ ५ ॥
सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन पाट नीं ताम।
सेव करी साचै मनैं धुन सुविनय मे धाम ॥ ६ ॥

भिक्खु भारीमाल पाछै भली मेउए वर्ष निहाल।
गोधुर अणगण गुणी महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

ढाल ५०

[चेत चतुर नर कहे तने सत गुरु—ए देशी]

जोगीदासजी स्वामी जोरावर तदनन्तर त्रिया त्यागी।
स्वाम भीखणजी संजम दीधौ बाल्यपणे बड वैरागी।
भ्रम छोड भिक्खु शिष्य भजलै सज मिथ्या मति तासम्।
कम बाल काटी करणी कर, धम ध्यान धर्मात्मा ॥ १ ॥
शहर कस्वा रा वासी शुद्ध जोगीदास साची जोगी।
सखर सौभागी ममता त्यागी मल सुमति पिण नहीं भोगी ॥ २ ॥
अल्प काल में अर्थामथकरी शहर पीसांगण में गुणियौ।
चौविहार संथारौ चोखौ थिर चित्त सूं मुनिवर थुणियौ ॥ ३ ॥
गुणसठे वप मुनि गुणवंती पुण्य छता परभव पहुंतौ।
आत्म ताज्यौ जन्म सुधार्यौ हिये निर्मल अपराज हुंतौ ॥ ४ ॥
तदनन्तर जोधौ मारु ते गांम केरवा माँ गुणियौ।
स्वाम भिक्खु स्वरूप संजम शुद्ध भारी तपसी तप भणियौ ॥ ५ ॥
छत्री मास तप आछ आगारै, तप उत्कृष्टपणौ तपियौ।
सरल भद्र मुनिवर सौभागी जाप विविध तन मन जपियौ ॥ ६ ॥
दिन बत्तीस कोचल दीघौ संथारो सखरौ गुणियौ।
स्वाम पछै परभव सुमति शुद्ध जोधौ जिन माता जणियौ ॥ ७ ॥
शहर केरवा रा भगजी शुद्ध वर आज्ञा री बहिन बड़ी।
संजम भिक्खु स्वाम समाप्यौ सखर विनय री थोम बड़ी ॥ ८ ॥
जाति वैद मूंहता जश भारी भगजी भक्ति करी भारी।
भिक्खु भारीमाल अपराय तणी मल पेकत ही मुद्रा प्यारी ॥ ९ ॥
अपराय तणे परतापै स्यौ पंडित मरण मुनि पायौ।
निर्माणुखे आत्म नें निन्दी शुद्ध परिणामे शोभायौ ॥ १० ॥

सोरठा

जोधड जाति सुजांण रे, वासी बीदासर तणु।
पुत्र समीप पिछांण रे मामचन्द आखी करी ॥ १ ॥
बार गुणसठे वासरे, चारित्र पाल्यौ चूंप सूं।
वप कितेक विमास रे, कर्म जोग री निखम्यौ ॥ २ ॥

चन्द्रभाणजी माहि रे, रह्यौ पच मास आसरै।
मारीमाल पै आय रे, कहै मुझनैं ल्यो गण मर्मै॥ ३ ॥
हु रह्यौ चन्द्रभाण माहि रे त्यांनें माव न श्रद्धियौ।
थे मोटा मुनिराय रे, साधु म्हारी स्वाम गण॥ ४ ॥
मारीमाल ऋषराय रे, छेद दियौ षटमास रौ।
लियौ तास गण माहि रे, अवलोकी भिक्खु लिखत॥ ५ ॥
आपां माहिली जांण रे, जाय चन्द्रभाणजी मर्मै।
अल्पकाल पहिछांण रे, आहार पांणी भेलो करै॥ ६ ॥
पिण आपांनें साध रे श्रद्धै शुद्ध मन सूं सही।
श्रद्धै तास असाध रे, नवी दीख्या वृणी न तसु॥ ७ ॥
जथा जोग दण्ड जांण रे, दे लगु तस गण मर्मै।
बम सैंतीसै बांण रे, लिखत भिक्खु ऋषनौं किण्यौ॥ ८ ॥
पहुवो लिखत अवलोक रे, नवी दीख्या दीधी न तसु।
छेद दे मेल्यौ दोष रे, मारीमाल व्यवहार थी॥ ९ ॥
पासत्था पास पिछांण रे, आहार आद लेवै देवै तसुं।
निशीष वीस म जांण रे, डंड चौमासी दाखियौ॥ १० ॥
चौमासी डंड स्थान रे, बार बार सेव्यां छतां।
व्यवहार प्रथम कही वांन रे, चौमासी प्राछित तसु॥ ११ ॥
इम बहु न्याय विचार रे, बलि मर्याद विमास मे।
वाव देख व्यवहार रे, छेद देई माहैं लियौ॥ १२ ॥
दीन्यौ कितोयक काल रे, फिर फूटक थयौ एकल्यौ।
इण शिष्य कीधौ न्हाल रे नांम भवानजी तेहनौं॥ १३ ॥
डंड ले आया माहि रे, तसनौं अभिग्रह आदर्यौ।
मायौ पालणो ताहि रे तिण कारण थयौ एकलौ॥ १४ ॥
काल कितोक वदीत रे, फिर आयौ मारीमाल पै।
सन्त सत्यां मे सुरीत रे कर जोड़ी वंदना करी॥ १५ ॥
बोलै बे कर जोड़ रे, मुझनैं लेवौ गण मझे।
भड़ी ढील ना चौर रे, त्यांसुं हूं भपिनी थयौ॥ १६ ॥
छठ छठ तप पहिछांन रे, जावजीव अदराय बौ।
कहो तो करूं सधार रे तिण मुझनै ल्यौ गण मझे॥ १७ ॥
मारीमाल बहु जांण रे, दीख्या दे माहि लियौ।
मंचन अग्रै पिछांण रे, गुरो तरै गण आदर्यौ॥ १८ ॥

मास खमण बहु वार रे विकट तप मुनिवर कियो।
सताणुंव सुखकार रे जन्म सुधारी जश लियो ॥ १६ ॥

ढाल तेविस

भारी तपसी मोप हुवो भल कोसीथल वासी कहियो।
जाति तणो चपलोत जाणिजे, लाभ स्वाम हाथ लहियो ॥ ११ ॥
पाली में सप्तम लै प्रत्यक्ष, मुनि तपसा करवा मंडियो।
कदहिक छासठ कदहिक अडसठ, चढ़त चढ़त अधिको चढ़ियो ॥ १२ ॥
कदहिक चार मास में कीधा सतर पारणा सुमति सहु।
अत्य बहुल मय तप वरणन गुण तिण कारण सहु से न कहूं ॥ १३ ॥
साझ्झी चार पहोर संथारो स्वाम पछे शुद्ध गति सारु।
पाली धर्म उद्योत प्रगट हुव तप छासठे मुनि वारु ॥ १४ ॥
मुनि महिमागर अधिक उजागर गुण सागर नागर ज्ञानी।
वचन सुधा सागर भ्रम जागर भ्रम धुनि घर महा ध्यानी । १५ ॥
भञ्जन मञ्जम चन्दन अञ्जन शिव शञ्जन रञ्जन सामी।
भ्रम भञ्जन भिक्खु गुरु भेटी अरि गञ्जन मसि आराधी ॥ १६ ॥
स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम भ्रम हरण स्वाम तरणी।
शिव वधू वरण चरण सुधर सम कहा कहूं मुनि नीं करणी ॥ १७ ॥
सुर गिर धीर गमीर समीर सबा सुम सीर सुतार सजै।
तोड़ जंजीर धीर वड तुम हो आप भिक्खु गुण हीर रजै ॥ १८ ॥
धम प्रतीत रीत प्रभु वच से लोक वदीत अनीत लजै।
ज्ञान संगीत नीत हुव गुणियण मल भिक्खु भूप जीत मजै ॥ १६ ॥
वाण विमल अति निमल कमल वर, अमल अमल शिव मग जाणी।
समल तमल मिथ्या मति सोपी आप सुरति अमदल ठाणी ॥ २ ॥
आप तण प्रसाद अनोपम संत मुनीश्वर बहु तरिया।
आप सुरतरु आप गुणोदधि आप थया मा अब हरिया ॥ २१ ॥
स्मरण स्वाम तणो नित सार्मू स्वाम तणो मुझ नित शरणी।
आशा पूरण स्वाम अनोपम निमल चित्त कीधी निरणी ॥ २२ ॥
सतरा स्वाम मुनि गुण साथा म्हे संक्षेप करी गुणिया।
कर सागर किम मावै गागर, गुण अनन्त अथग अनथ गुणिया ॥ २३ ॥
निमल पचासमी ढाल निहालमी मल भिक्खु गुण सूं भरिया।
जय जन सम्पति करण जाणजो हुम लण्ड भिक्खु अनुसरिया ॥ २४ ॥

दुहा

अड़तालीस मुनि अछ्या, पूज छतां पहिछाण।
चारित्र लीधौ चित्त धरी उगमण अधिकौ आंण॥ १ ॥
अट्ठावीस गण में सही सखर रह्या सुजगीस।
गुरु छत्र गिरवा गुणी अलग रह्या छै बीस॥ २ ॥
बीसा मांहि एक बर, रूपचन्द शुद्ध रीत।
छेहड़ै अणशण पण लियो पूज आण प्रतीत॥ ३ ॥
पूज थकां चारित्र प्रगट, अब सतियां अधिकार।
केईक बारै नीकली पहोंती केईक पार॥ ४ ॥
एक साथ व्रत आदरया तीन जण्यां तिण बार।
कुशालां जी बड़ी करी कुशल क्षेम अवतार॥ ५ ॥

ढाल : ५१

[सम्यावंत जोय भगवन्त रौ ज्ञान—ए देशी]

पवर चरण शुद्ध पाल्यताजी कुशलांजी नैं विचार।
दीप पृष्ठ गुंदाच में जी ते डंसियो तिण वार।
सिम्यावंत षिम सतियां अवतार॥ १ ॥
जत्र मत्र झाड़ा मणी जी वछयौ नहीं तिण वार।
शुद्ध परिणाम महासती जी पोंहती परलोक ममार॥ २ ॥
मटूजी मोटी सती जी स्वाम आण शिर धार।
पद आराधक पामियौ जी औ भिक्खु नौ उपगार॥ ३ ॥

सोरठा

अजब प्रकृति अजोग रे क्रम जोग सूं नीकली।
प्रकृति कठिन प्रयोग रे चारित्र ल्याव छिनक में॥ १ ॥

ढाल तेहिज

नाम सुजांणा निरमली जी देऊ जी गैणाय।
स्वाम तण गण म सती जी परभव पोहती जाय॥ ४ ॥

सोरठा

तदनन्तर तिण बार रे साधुपणो लेवौ नहीं।
नव नाम [illegible] रे क्रम प्रयाग [illegible]॥ ॥

ढाल तेहिज

सती गुमांना धोमती जी सजम वर संधार।
समत फतूवांजी असी जो अणशण अधिक उदार॥ ५ ॥
बीजरूजी बले जांणियै जी स्वाम तणें गण सार।
पोत मतु सुत परहरी जी बासी रीयां रा विचार॥ ६ ॥
श्याम दिलैक पछै किम्यो जी बाहर पीपाड संधार।
रामाली संधे मोपती जी मांडी करी सिंगार॥ ७ ॥

सोरठा

फतु अजूजी न्हाल रे, अजबू चतूजी अजा।
भेषधार्यां में भाल रे, पछै चरण लियो पूज पै॥ ३ ॥
समत अठारै सोय रे, वर्ष तेंतीसै वारता।
निरखत करी अवलोय रे मुनि लीधी टाला मर्म॥ ४ ॥
थाग मती अवधार रे, मन खंच रही मोकली।
अति तसु कठिण अपार रे छांडे गुरां रै चालमी॥ ५ ॥
अशुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जांणी स्वामजी।
शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तसु थाप्यो तेहनें॥ ६ ॥
तुम्हनें कल्पै तेह रे, ते तसु लेवी तुम्ह।
इम कही कमडौ देह रे, फतु आदि पांचां भणी॥ ७ ॥
पूछयो तास प्रमांण रे, कहै मुझ अधिको को नहीं।
पूज करै पहिछांन रे, निगुणो निरमय निर्मलो॥ ८ ॥
अखैराम अणगार रे मेल्यो कमडौ मालवा।
तस चोनक तिणवार रे, माप्यां अधिको निकल्यो॥ ९ ॥
इम तंतु अति रास रे मूठ बोलो बले जांणनें।
शुद्ध नहीं सजम सास रे, नीत चरण पालण तणी॥ १ ॥
त्यारूं ते पहिछांन रे, चैमां मेली पचमी।
मट पांचूं में जांण रे, छोडी चहावन मर्म॥ ११ ॥

ढाल तेहिज

मनाजी माटी सतो जी बासी पुरना विचार।
स्वाम कनें संजम लियो जी छांडी निज भरतार॥ ८ ॥
पछै भणी पंडित थई जी बहु सूत्रां नीं रे जाण।
मार्ग मेंयाणे वर जा मोधो ग्रन्थ विन्याण॥ ९ ॥

ढाल तेहिज

सतजुगी री बहिन सुखवासी रूप रायचंदजी री मासी।
पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी रूपांजी महा रलियांणी हो॥४॥
सजम बाल मैं समीको सतावनें संथारो सीको।
सुजानांजी री लघु बहिन कहियै रूपांजी जग जश लहियै हो॥५॥
सरूपांजी कंटालयै संथारो अग्रवाल जाति सबधारी।
माधपुर मा वसवांनो, सुत तीन तज्या व्रत थ्यांनो हो॥६॥
बरजूजी बदीत विमासी रूड़ी शील गुणां री रासी।
तिपरी भिक्खु तोल बधायौ सती सुजश शासण में पायौ हो॥७॥
बीरांजी महा सुखकारी धर चरण शील सुखकारी।
करड़ौ तप छेहड़ै कीधौ सती जग मोहि जश लीधौ हो॥८॥
बनांजी सुविनयवंती शुद्ध चरण पालण चित शंती।
सुखदायक गण सुविशाली सती आतम में उजवाली हो॥९॥
शुद्ध मां तीनां मैं शिख्या दीधी भिक्खु एक दिन दीख्या।
सखरो छेहड़ै संथारो समणी हद मुद्रा सारो हो॥१०॥

सोरठा

बीरां जाति कुंभार रे, सजम लीधो स्वाम पैं।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली॥२॥

ढाल तेहिज

उदांजी उद्यमवंती सती जाति सोनार सोहंती।
बहु बर्षां चरण सुविचारो आंबेट मांहि संथारो हो॥११॥
मुन्नांजी जाति पोरवाल धीजी द्वारा ना सार।
घरन बय संजम लीधौ स्वाम पछै संथारो सिद्धौ हो॥१२॥
बय सतावनें सविचारी अपराय चरण हितकारी।
तिण बहुत हुवो उपगारो, तिणरी सांभळजो बिस्तारो हो॥१३॥
संसार सेत्र पाभाया सजराती ल्होड़ै सजनाया।
मतिवंत हस्तु महि मधी सीधौ चरण पिउ सुत संधी हो॥१४॥
दुल्य परवां बहुलो दीधौ, सती अभिगमणे व्रत लीधौ।
सगाणूबै गढ़ बै मंथारो, हस्तु गुण माल मंझारो हो॥१५॥
कुन्नांजी रायलियां रा कहियै सतजुगी री बहिन व्रत लहियै।
अपरायचन्दजी मीं माता, संजम ले पांमी साता।
मौतो जिन शासन में सुख्याता हो॥१६॥

मत्त हृस्तुजी नीं मम्मी सती कस्तूरांजी शुभ रुमी।
सुत पिउ छांड व्रत धारी सतवर उजेण संथारी हो ॥ १७ ॥
म्हासा पी संजम लीधो पिउ छांड पम रस पीधो।
घणी बुद्धि अकल्ल गुणवन्ती जोतांजी म्हा जगवन्ती हो ॥ १८ ॥
धिरियारी रा सुमगन मं छोड्यो पिउ सुत निण छिन मैं ।
संथारो चकुबरे सिद्धी नोरांजी जग जश लीधो हो ॥ १६ ॥
गुरु एक वप मैं भिक्षा दुमति तज लीधी दीक्षा।
पांचां ही पिउ नें छूमी त्यारी प्रीत मुक्ति सूं मंडी हो साछ ॥ ०॥
गुणसठे वर्ष गुणखली, वडु चरण भार बुद्धिवती।
त्यांमैं सोल जण्यां एक माथे हुए दीक्षा भिक्खु नैं हाथे हो ॥ २१ ॥
कुशालांजी नार्मांजी मीरांजी पाली ना तिहुं भ्रम भांजी।
तीनूं पीलामूत कूंपी भिक्या देईनें वजुमी नें सूपी हो ॥ २२ ॥
सवंतरे कुसाल्लांजी संथारी भारीमाल मेला सुविचारी।
माधोपुर मास कातिक मैं परलोके पोंहता छिनक मैं हो ॥ २३ ॥
मार्यांजी गांम मसोल न्हाली घर संथारो सुविशाली।
संसार लेखें महिमती समणी शुद्ध प्रकृति सोहंती हो ॥ २४ ॥
तप दिवस बतीस सु तपियो जिन जाप वीर्यांजी जपियो।
तीन दिवस तणो सन्थारो वर्ष छियासीयें अवधारो हो ॥ २५ ॥
सत्त्व गोम नीत मा ताप्ती कल्प भाखे कहिवायो।
गुणसठे दीक्षा गुणवंती गोमांजी मेवुर्यं पार पहोंती हो ॥ २६ ॥
कमोदा सेरपा निवासी बाहीजी नोमांजी विमासी।
सजम भिक्खु छत्ता सारो बहु वर्ष पाछ संथारो हो ॥ २७ ॥
ए स्वांम तणी गण साध, छतन गम घण प्रकार।
सतरै छण्ण हुई आजा छाडी गेविन गोमोसर एजा हो ॥ २८ ॥
ष्ठी गुण चालीस गण राखी पिउ छांड सात व्रत आखी।
दोय बहिन मायां रा जोड़ा सतजोगी बेणीराम सु होडा हो ॥ २६ ॥
श्रप रायचन्द मा साथ संजम लीधो पुत्र हाथे
आस्वी समणी नीं अधिकारो श्री तो भिखु तणो उगारी हो ॥ ० ॥
मार्गे संत बड्डा मस्ताणी भजा ध्यान इत्यां माणी।
सहु थया एक सो चार स्वामी गण लीधी घण सुखकार हो ॥ ३१ ॥
बीस धतरे गण बारी मस्तीस गुण चालीस सुधारी।
वीस मैं रायचन्द गुरु रीत, रागी स्वाम तणी प्रतीत हो ॥ ३२ ॥

दुहा

बालूजी बगडी तणा वर कुल जाति सकेत।
हीरां हीर कमी जिसी भारीमाल ना नेत॥ ६ ॥
नाम नगी गुण निमलो, वेणीरामजी री बहेन।
एक दीक्षा तीनूं भजा पण मार चित्त चैन॥ ७ ॥
चौमासीमें वर्ष स्वामजी सजम दे इक साथ।
मूंप्या रगूजी भणी बाई जग विख्यात॥ ८ ॥
ए तीनूं भिक्खु पछै संथारा कर सार।
महियल मोटी महासती, पामी भवनो पार॥ ९ ॥
सजम भीम भूप जीत नीं अजबू मुणा सुजोग।
चौमाले चारथी पण, अठासीयै परलोग॥ १ ॥
गिरियारी ना महासती पन्नाजी पहिछाण।
संजम पाल्यौ स्वाम गण, संथारौ सुविहाण॥ ११ ॥

सोरठा

कांकरोली री बहाय रे, रूपांजी संजम लियौ।
परवस सील सुपाय रे, इण कारण गृह भाखिया॥ १२ ॥
बहु वर्षां सुविचार रे, श्रावक धर्मज साधियौ।
तप जप कियौ उदार रे फिर चारित्र नहीं पचखियौ॥ १३ ॥

ढाल ५२

[ज्यारां हुं प्र भन्न रसवाला—ए देशी]

गुमांना महा गुणवंती तासोल तणी विख्यातो।
जीवा मुनि री बड़ी मा जांणो सती सजम लियौ सुखदांणी हो लाल।
सतियां मां मन मोटी॥ १ ॥
एक मास कियौ अति भारी दोय मास छेहड़ै दिन धारी।
मुद्ध राजनगर संथारौ, सती सरस भद्र सुखकारी हो॥ २ ॥
वर शहर बूंदी रा वासी बाल श्राविका कुल सुविमासी।
तेरवै संथारौ ठंती तेमां की तेम करंती हो॥ ३ ॥

सोरठा

जूं परीषह पी जाण रे, छूटी अनु दिनां में।
मोटी टमी पिछाण रे, तारोमी री बिहु सही॥ १ ॥

ढाल तेहिज

सतजुगी री बहिन सुखवासी रूप रायचंदजी री मासी।
पिउ पुत्र तज्या पहिछांणी रूपांजी महा रलियांणी हो ॥ ४ ॥
संजम बाकनें सधीकनै समावने संथारौ कीधौ।
कुशालांजी री रूपु बहिन कहियै रूपांजी जग जश लहियै हो ॥ ५ ॥
सरूपांजी कटाल्यै संथारौ अग्रवाल जाति अवधारौ।
माधापुर ना वासवानी सुत तीन तज्या व्रत ध्यांनो हो ॥ ६ ॥
वरजूजी बरीत विमासी रूडी शील गुणां री रासी।
तिणरो भिक्खु तोल बधायो, सती सुजश शासण में पायो हो ॥ ७ ॥
बीजांजी महा वृद्धकारी वर चरण शील सुखकारी।
करड़ी तप छेहड़ै कीधौ, सती जग मोहें जश लीधौ हो ॥ ८ ॥
वनांजी सुविनयवती शुद्ध चरण पाल्या चित्त रती।
सुखदायक गण सुविशाली सती आतम नैं उजवाली हो ॥ ९ ॥
मुद्ध यां तीनां मैं सिरस्या दीधी भिक्खु एक दिन दीस्या।
सखरो छेहड़ै संथारो, समणी हद मुद्रा सारो हो ॥ १० ॥

सोरठा

धीरां जाति कुंभार रे, संजम लीधौ स्वाम पैं।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली ॥ २ ॥

ढाल तेहिज

उदांजी उद्यमवंती सती जाति सोनार सोहंती।
बहु वर्षां चरण सुविचारी आंबेट मझें संथारो हो ॥ ११ ॥
कुसांजी जाति पोरवाल दीक्षा द्वारा मा सार।
सासनैं बय संजम लीधौ, स्वाम पछै संथारो सिद्धौ हो ॥ १२ ॥
बय सताकनैं सुविचारी ऋषराय चरण हितकारी।
तिण बहुत हुवी उपगारी तिणरी सांभल्ज्यो विस्तारी हो ॥ १३ ॥
संथार सेखै सोभाया, रूड़ामती रहोई सखनाया।
मतिवंत हस्तू महि मंडी लीधौ चरण पिउ सुत छंडी हो ॥ १४ ॥
पुत्र चरखो बहुली दीधौ सती अडिगपणै व्रत लीधौ।
सताणूंवें रगाहवै संथारो, हस्तू गुण ज्ञान भंडारो हो ॥ १५ ॥
कुन्नणांजी रावलियां रा कहियै सतजुगी री बहिन व्रत लहियै।
ऋषरायचन्दजी नीं माता संजम ले पांमी साता।
जीतो जिन शासन मैं सुखदाता हो ॥ १६ ॥

छन्द भुजगी

थया संत मोटा बड़ा सु थिरपाल[1] भलूं नद मीको फतेचन्द भाल।
विनयवंत बारु सु टोकर[2] विचाल निजानन्दकारी हरनाथ[3] न्हाल॥ १ ॥
भला धर्म धोरी मुनी भारमाल[4] चल्या आप चारू बड़ां नी सुचाल।
भल स्वाम राजै अखैराम[1] आछा सन्तनंदकारी सुखाराम साचा॥ २ ॥
निजानन्द सारू थिरो स्वाम सीधो भगो[1] स्वाम नीको मगेन्द्र नमीधो।
भल्या स्वामजी[1] संत हुवा सुभारी सही खेतसीजी[11] सदा शांतिकारी॥ ३ ॥
ऋषिराम रूड़ो भिक्खु सीस राजै, भलि नानजी[12] स्वामी स्वामी निवाजै॥ ४ ॥
निमै नेम आछा मुनि नेम[1] नामे बड़ो संत ज्ञानी भल्या बेणीरामें[13]॥ ५ ॥
भलि संत मोटो बड़ो बर्द्धमान[14] सुखो[1] स्वाम साचो सुभ ध्यान सुजानं॥ ६ ॥
हदां हेम जैसा सु हेम[1] हजारी उदैराम[1] आछो तपेस्वी उदारी॥ ७ ॥
ऋषि पाट थाप्यो मुनि रायचन्द दीपै तेज तीखो सुमेरु दिनन्दं॥ ८ ॥
भलो संत तारा सुचन्द[1] भणीजै गिरेन्द्र समो संत डूंगर[1] गिणीजै॥ ९ ॥
भयो जीवराजं[1] वर जोगीदासं[1] यमीस्वर जोधो[14] तपे देह त्रास॥ १० ॥
भगो नाम[1] नीको भिक्खु प्रीत भारी सही भामचन्द[1] पधीहि सुधारी॥ ११ ॥
थयो मोप भारी तपे ध्यान थापी पका संत पूरा भिक्खु नें प्रतापी॥ १२ ॥
रह्या स्वाम आग पुरां छेह रूड़ा, सही केल्मी नैं थया फेर धूरा॥ १३ ॥
आख्या संत नाम मउग्नीस भाखा भिके सीस ताखा भिक्खु स्वाम आखा॥ १४ ॥

छप्पय

इसा भिक्खु अणगार, सार जिण मारग सोधी।
अधिक किनो उपगार बहु भवि नें प्रतिबोधी।
समणी संत सुजांण, सखर कीधा सुखकारी।
धर्म धर्म पहिछांण सुगम जिन आणा धारी।
अद चेरा व्रत धारक अधिक नित्य कृत्य भजन तूं नामको।
सुख करण तरण हद जग सुजस सखर मीखणजी स्वाम को॥ १ ॥

दुहा

गुणतीस मुनिवर अख्या सखरा गण सिणगार।
बीस थया गण बाहिरे तास नाम अवधार॥ १ ॥
बीरमांण निभमो वलि अमरोजी[2] अभिधान।
तिलोक मोजीरामजी[1] चन्द्रभाणजी[1] जांन॥ २ ॥

ढाल तेहिज

भिक्खु हुवा उजागर भारी हद करणी री बलिहारी।
नित याद आवै मुझ मन तन मन अति होय प्रसन्न हो ॥ ३३ ॥
सुमतागर शासण स्वामी जशधर अन्तरजामी।
सखरी कृण स्वामी सरणो पूज गुण सुखम रग परणो हो ॥ ३४ ॥
आशा पूरण जाणी, जयू आय सणी नित वाणी।
पूर्ण मुझ आपसू मीठी, निरमल मुद्रा आपरी नीठी हो ॥ ३५ ॥
कही ए वाक्नमीं ढालं वर जय जश कर्ण विशालं।
मोन मास प्रमाण मिलिया, मननाज मनोप फलिया हो।
मुद्र मांग्या पासा ढलिया ॥ ३६ ॥
तीजी खण्ड कह्यो तहतीको, निमल भिक्खु गण नीको।
शासण सुखदाय सधीको जय जश वृद्धि शिव नीं टीको हो लाल ॥ ३७ ॥

कलश

मुनि सुगुण माला वर विशाला सुमति पाल सुजाणियें।
तम कुमति ताला भ्रम ज्वाला परम दयाल पिछाणियें ॥ १ ॥
सुख सद्गम सत महंत सुन्दर, भ्रान्त भंजन अति भली।
सुमति सुसागर अमल आगर, निमल मुनि गण गुण मिली ॥ २ ॥

●

चतुर्थ खण्ड

सोरठा

समक्ष गोयम स्वाम रे, सुधर्म जम्बू आद मुनि।
जले भिक्खु गुरु नाम रे, चौथो खण्ड कहूं चूंप सूं॥ १ ॥
मुरधर देश मेवाड़ रे, हाड़ोती ढूंढाड़ में।
थाया देवाज थार रे, समचित विचरया स्वामजी॥ २ ॥
गेरूलालजी व्यास रे, श्रावक तेरा मांहिलो।
ते कच्छ देशे गयो तास रे टीकम नें समझावियो॥ ३ ॥
टीकम डोसी नाम रे, देश कच्छ में दीपतो।
तेपनें गुणसठें ताम रे, पूज्य कनै आयो प्रगट॥ ४ ॥
प्रगट सेहु प्रयोग रे, कच्छ देशे धम वाधियो।
स्वाम तणें संजोग रे जीव हजारां उद्धरया॥ ५ ॥
धर्म कल्याण पिछांण रे, इण भव आथी जांणजो।
सुणजो चतुर सुजांण रे, पूज भिक्खु नो प्रगट हिव॥ ६ ॥

दुहा

पांचूं इन्द्रयां परवरी, न पड़ी कांई हीण।
वृद्ध पण पिण पूज नीं धीम चाल शुभ चीन॥ १ ॥
थांणें बठेंई नां थया उद्यमी अधिक अपार।
चाह धरया करम चित्त पूज तण अति प्यार॥ २ ॥
ऊठे गोचरी आप नित अतिशय भारी नेम।
पूज्य मुमुक्षु पखतो चित्त म पाम चैन॥ ३ ॥
छमुरा छमुस धाम कल्याणा खेमुलाई करत विहार।
कांणोद सूं पांपाड़ लग विचरया स्वाम उदार॥ ४ ॥

ढाल ५३

[सरल मारुना गीत नी—ए देशी]

भ्रम मय भञ्जन हो जन रञ्जन गुण निहाल सुमति सुमंडन स्वाम शोभाविया।
कुमति विहंडन हो मिथ्या खण्डन काज, विचरत विचरत सोजत आविया॥ १ ॥
चोछुटे चारु हो धमी थे सुविचार, आज्ञा लेईनें स्वाम तिहां उतरया।
जन मन हर्ष हो निरख्यो पूज्य दिदार, जाण के श्रीजिन आप समवसरया॥ २ ॥
दर्शण कारण हो धारण चर्चा बोल संत सती बहु स्वाम पे आविया।
आज्ञा लेवा हो चौमासा री अमोल पन पूज्य पै आवी सुख पाविया॥ ३ ॥
दम सम सागर हो स्वामी धर्म दयाल भलाया चौमासा संत सत्यां भणी।
एटले आयो हो हुकमचन्द भाछो न्हाल पूज दर्शण कर प्रीत पामी घणी॥ ४ ॥
बेकर जोडी हो मांन मरोड़ी बोलेत विविध विनय करि कर रह्यो विनती।
स्वामी चौमासो शिरियारी करो सत सुकृती थें चौकी हाट मुझ शोभती॥ ५ ॥
गुण निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गम्भीर, अपपति अर्ज करूं हूं रीत सूं।
बारु वचने हो विनती कीधी वजीर सुगरु प्रसन्न हुवे शिष्य सुविनीत सूं॥ ६ ॥
स्वामी मांनी हो विनती तसु सार, विहार करी में क्रमशः आविया।
निमल चित सूं हो धर्म करे नर नार शहर कंटालिये अगाड़ी सुशोभाविया॥ ७ ॥
गति गयवर-सी हो ध्यां मुन गुण जिहाज प्रवर सतां कर मुनिवर प्रवरया।
प्रत्यक्ष कहिये हो ऋषि मन दधि नी पाज शहर शिरियारी में स्वाम समवसरया॥ ८ ॥
मधुर शिरियारी हो शोभै कांठा नी कोर, दोलो नगरी गढ कोट ज्यूं दीपती।
जन बहु वस्ती हो महाजनां री जोर, जूना जूना केई पुर भणी जीपतो॥ ९ ॥
निर्भय नगरी हो ऋद्धि समृद्धि निहोर, ज्यां धर्म ध्यान घणी तप आपनों।
राज कर छे हो दौलतसिंह राठोड़, कूंपावत कहिये करड़ी छापनों॥ १० ॥
तिहां मुनि आया हो सत ऋषि तेव सार, जय जश धन धर्म मन जीपता।
स्वामी शोभै हो गण नायक सिरदार दमीश्वर पूज्य भीखणजी दीपता॥ ११ ॥
भरत क्षेत्र में हो भिक्खु साम्प्रत भांण आज्ञा लेईनें पक्को हाट उतरया।
जन बहु हर्ष्या हो पूज पधारया जांण धर्मानुराग करि तन मन भरया॥ १२ ॥
अस्ताण वांणी में हो आगेवांण विशाल थिर पद पूज भीखण जी थापियो।
भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल पद युवराज पहिलां ही समापियो॥ १३ ॥
सखर सेवा म हो खेतसीजी सुविनीत सतजुगी नाम अपर शोभावियो।
पूण प्यारे हो पूजजी री प्रतीत चार तीर्थ माहि जश तसु छावियो॥ १४ ॥
उदैरांम जी तपसी अधिक उदार प्रथम रायचन्दजी बालक वय राजता।
जीवो मुनि हो भगजी गुण नां भण्डार, स्वाम तणी हद सेवा सुसाझता॥ १५ ॥

ए तो आसी हो तीन पचासमी ढाल धारियारी मैं स्वाम आया सुख कारणा।
स्वी निसुणो हो आगल वात रसाल जय जश करण भिक्खु जन तारणा॥ १९॥

दुहा

श्रावण मासे स्वामजी पूनम रूमी पिछांण।
सखरी गोचरी शहर में आप करी अगवाण॥ १॥
आवसग अर्थ अनोपम लिख लिखनैं अवलोय।
शिष्य नैं आप सिखावता क्षमा धारी मुनि जोय॥ २॥
श्रावण सुद छेहड सही मुनि तणै तन माहीं।
कांईक कारण ऊपनो फेरा लागोत ताहीं॥ ३॥
तो पिण उठै गोचरी गांम मांहि मुनिराय।
दिसा बाहिर जावै सही कांयी गिणती न काय॥ ४॥
औषध लियो जणायनैं कारण मेटण कांम।
पिण कारण मिटियो नहीं पून समा परिणाम॥ ५॥

ढाल ५४

[कैते पूजी गोरज्या कैते ईस—ए देशी]

धन कल्याण बसुर सुणी माम भाद्रवा मांयो ए। सुखदायो ए।
धर्म वृद्धि अति धर्म नीं क भवियण ए॥ १॥
पजुसणां में परवडा वारहूवें वखाणो ए। सुविहांणो ए।
दरशे तीन टंक देशना क मुनिवर ए॥ २॥
सुन्दर वांण सुहांमणी निसुणें बहु नर नारो ए। सुखकारो ए।
चौथत भाई बांदणी क। मु०॥ ३॥
पिजर तन हीणो पड्यो धर्म पुन्य पहिछांण्यो ए। मन जाण्यो है।
आउ नेंड़ो ऊनमानथी क। मु॥ ४॥
स्वाम कहै सतजुगी भणी थे सखर शिष्य सुविनीतो ए। धर प्रीतो ए।
साझ दियो संजम तणो क। मु०॥ ५॥
टोकरजी दीक्षा हुन्ता विनय वंत सुविचारी ए। हितकारी ए।
भक्ति करी भारी घणी क। मु०॥ ६॥
भारमल्जी सूं मेल्प भणी रहीज कही रीतो ए। अति प्रीतो ए।
जांण के पाछल भव तणी क। मु०॥ ७॥
सखर तीनां रा साझ सूं बर संजम उजवाल्यो ए। नहीं पाल्यो ए।
प्रत्यग ही पूरणपणें क। मु०॥ ८॥

चित्त समाधि रही घणी म्हारा मन ममझारा ए। हुंशियारो ए।
यां तीनां रा साम्ह थी क। मु० ॥ ९ ॥
शिष्य सुविनीत हुवै सही गुरु रै रहै आणंगे ए। चित्त चढ़ो ए।
देव जिनेंद्र दाखियौ क। मु० ॥ १० ॥
गुणग्राही एहवा गुणी पूज्य भीखणजी पेखी ए। दिल देखी ए।
स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क। मु ॥ ११ ॥
ऐसी कीजै प्रीतड़ी जैसी भिक्खु भारीमाल्गे ए। सुविशालो ए।
सतजुगी टोकरजी सारिषी क। मु० ॥ १२ ॥
जोड़ी वीर गोयम जिसी पवर स्वाम शिष्य प्रीती ए। हद रीती ए।
चाल सखर चौपा तणी क। मु० ॥ १३ ॥
ए चौपनमीं ढाल मे सखरो कह्यो संबंधो। ए प्रबंधो ए।
स्वाम भिक्खु मीं शोभतौ क। मु० ॥ १४ ॥

दुहा

साध श्रावक मैं श्राविका बहु सुगणां तिणवार।
सीखामण दे स्वामजी हद सखरी हितकार ॥ १ ॥
वीर भी मोटा विराजतां चारु किघी बखांण।
सोल्हू पहोर रे आसरै, सीख दीधी सुविहांण ॥ २ ॥
इण दुखम आरा मझै, स्वाम भीखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नीं परै, आखी सीख उदार ॥ ३ ॥
सखर बुद्धि बांणी सखर सखर कला सुखकार।
गीत सखर चित निरमलै वचन वदे सुविचार ॥ ४ ॥

ढाल ५५

[भागे जाता घटवी भावै—ए देशी]

जिम मुझनें बांणता म्हांरी प्रतीतो रे।
तिमहिज राखज्यो भारमालजी री रीतो रे।
सीख स्वामी तणी ॥ १ ॥
सहु सन्त सत्यां रा भारीमालजी नाथो रे।
आज्ञा आराधज्यो मत लोपज्यो बातो रे ॥ २ ॥
यांरी आण लोपी नै निकलै गण बारो रे।
तसु गिणज्यो मति चिहुं तीर्थ मझारो रे ॥ ३ ॥
यांरी आण आराधै सदा रहै सुविनीतो रे।
तसु सेवा करो ए जिन मत रीतो रे ॥ ४ ॥

मैं पदवी आपी भारमलक जांणी रे।
भारमल्ल जी गणी शुद्ध प्रकृति सुहांणी रे॥ ५ ॥
नीत वर्ण पालण री मल अल्प भारीमालो रे।
दीध म राखज्यो शुद्ध साधु नीं चालो रे॥ ६ ॥
शुद्ध धमम सेवजो अमाभारघां सूं दूरा रे।
सील दोनूं चरचा हुवै मुग्ति हजूरा रे॥ ७ ॥
अरिहंत गुरु आज्ञा लोपे कर्म जोगो रे।
अपछन्दा तिके नहीं वंदण जोगो रे॥ ८ ॥
उसन्ना मैं पासत्था कुशील्या प्रमाणी रे।
अपछंदा इणां जिण आण विराधी रे॥ ९ ॥
यां नैं वीर निषेध्या, आज्ञा मैं बिचालो रे।
संग करणी नहीं बांधी जिनपालो रे॥ १० ॥
आणंद लियो अभिग्रह, जिण गण थी न्यारा रे।
तसु बांदूं नहीं पहली वचन उचारू रे॥ ११ ॥
अन्यमति ना देव गुरु, अथवा उमाल्यी रे।
तास नमूं नहीं नहिं बदूं न्हाली रे॥ १२ ॥
वलि किरार बोलायां बोलण रौ नेमो रे।
आहार आपूं नहीं अभिग्रह लियो एमो रे॥ १३ ॥
अभिग्रह जिन आगम आणंद ए लीधो रे।
सप्तम अंग मैं, शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे॥ १४ ॥
रीत एहिज राखणी छिद्रं संग मैं चारु रे।
एकलीकाज तणी संग दूर निवारु रे॥ १५ ॥
ए रीत आराध्यां पांमै भव पारो रे।
श्रीजिन सीखामी तज्यां सुख सारो रे॥ १६ ॥
सहु साध सामयी बर हेत विशेषो रे।
रूडी राखजो धरणुं नहीं द्वेषो रे॥ १७ ॥
वलि जिग्यो न बांमणी, गुरु आण सुगांमी रे।
सीख प्रथम सही दी भिक्खु स्वामी रे॥ १८ ॥
गुरु आज्ञा लोपी बांधे जे जियौ रे।
मति अविनीत ते दियो धर्मां टिलो रे॥ १९ ॥
एकल सूंई खोटी, इसड़ौ अविनीतो रे।
तसु समझायनै, राखणी शुद्ध रीतो रे॥ २० ॥

दिन देख देखनै दीक्ष्या शुद्ध दीजो रे।
वलि जिण तिण भणी गण में म मूंडीजो रे॥ २१॥
मर्यादा आचार री कल्पसूत्र मो बोलो रे।
गुरु बुद्धिवंत री राखो प्रतीत अमोलो रे॥ २२॥
कोई दोष न देखे तेहनैं अविस्मियां न मम्मी रे।
ताण करीजो मती मन मैं समझायो रे॥ २३॥
अपछंदे विस आज्ञा नहिं पालणो बोलो रे।
गुरु आज्ञा धर्म तीको गण तोलो रे॥ २४॥
एक दो तीन आदि, निकलै गण बारो रे।
साव म सम्मजो शुद्ध सील धीमारो रे॥ २५॥
एक आज्ञा मैं रहिवो ए रीत परंपर रे।
लिखत आगै किधौ सहू धरजो खरा खर रे॥ २६॥
कोई दोष स्वामी वलि बोलै कूडो रे।
प्रायश्चित मां सिमै तिणनै कर दीज्यौ दूरो रे॥ २७॥
सासण प्रकर्तक, सिख दीधी स्वामी रे।
और कारण नहीं मन अन्तर जामी रे॥ २८॥
सुणतां सुखदाई, स्वामी ना बोलो रे।
बहु सुणतां कहा आज्ञा मैं अमोलो रे॥ २९॥
ऐसा स्वाम अनोपम गण तारक ज्ञानी रे।
कहा कहियै तसु बलाका सुखिज्ञानी रे॥ ३०॥
पचासनमी बाल कहि ढाल रसालो रे।
बात सुणी वलि जय जश सुविशालो रे॥ ३१॥

दुहा

सीखावण वी स्वामजी आखी अधिक अनूप।
हलुकर्मी धारै हिये सखरी सीख सरूप॥ १॥
नीर गंगा ज्यूं निर्मला पूज तणा परिणाम।
निमल ध्यान निकलंक चित समता रमता स्वाम॥ २॥
पद युवराज सु आदि मुनि पूछा करै सुजोग।
अर्द्ध लोक सूं आपरै स्वाम कहै नहिं कोय॥ ३॥
निर्मल वर्ण वर कर्ण निज, विमल सुधा सम वोण।
अमम दियै उपदेश अरु सुणजो चतुर सुजाण॥ ४॥

ढाल ५६

[सायर लेहर सू जाणे मोंडक—ए देशी]

भारीमाल शिष्य भारी जी आदि सायां भणी।
स्वाम कहै सुविचारी जी वांण सुहांमणी ॥ १ ॥
परभव निकट पिछांणी जी वीसे मुझ तणु।
मुझ भय मूल म जाणो जी हर्ष हिये घणो ॥ २ ॥
घणा जीवां र घट माह्यो जी सम्यक्त रूपियो।
मैं बीज अमोलक वाह्यो जी, मग ओलखावियो ॥ ३ ॥
देवा व्रत दीपायो जी लाम अधिक लियो।
सावणो सुखदायो जी कछु जन न दियो ॥ ४ ॥
म्है मांडी करी सूत्र न्यायो जी शुद्ध जांण सही।
म्हारे मन र मांह्या जी उणायत ना रही ॥ ५ ॥
ये पिण थिर चित्त थापी जी प्रभु पथ पालज्यो।
कुमति कदाग्रह न कापी जी आतम उजवालज्यो ॥ ६ ॥
रायचन्द ब्रह्मचारी म जांणो जी सील दे चोमती।
यूं बालक छै बुद्धिमांनो जी माह कोज मती ॥ ७ ॥
ब्रह्मचारी कहै वांणा जी शुद्ध वच सुदरु।
आप करो जन्म री कल्याणो जी हूं मोह किम करूं ॥ ८ ॥
कल स्वामी सील दै सारो जी, सहु सतां भणी।
आरामजो आचारो जी मत चूको भणी ॥ ९ ॥
इरिया भाषा उचारो जी अधिकि एषणा।
वस्त्रादि सतां विचारो जी परठव पखणा ॥ १० ॥
सखरी पांच सुमति जी गुप्त गुणी धरो।
वय सत सील सुवती जी ममता मत करो ॥ ११ ॥
क्षिप दिपणी पर सोयो जी उपग्रण ऊपर।
मूर्छा म कीज्यो कोयो जी प्रमाद नै परहरो ॥ १२ ॥
पुग्गल ममत प्रसंगो जी तन मन सूं तजी।
सजम सखर सुचंगो जी भल भाव भजी ॥ १३ ॥
आछी सील अनूपी जी अति अभिरांम जी।
अमृत रस मीं कूपी जी दीधी स्वामजी ॥ १४ ॥
भाखी ढाल उदारा जी पट पचासमी।
जय जश करण जीकारो जी स्वामी मति समी ॥ १५ ॥

दुहा

सीख सखर दे स्वाम जी हद वाणी हितकार।
स्वाम वचन सुणतां छतां चित पामे चिमत्कार ॥ १ ॥
समता समता सखर चित वमता रमता देस।
नमता जमता निमल मुनि समता संक विशेष ॥ २ ॥
भव समुद्र तिरवा भणी भिक्खु भलीं भाव।
वृद्धि भाव हद धीर रस जाणे तिरण रो दाव ॥ ३ ॥
भर वायक वाणी विमल दायक अभय दयाल।
पद लायक भिक्खु प्रगट, मायक स्वाम निहाल ॥ ४ ॥

ढाल ५७

[धन धन जंबू स्वामी न—ए देशी]

शिष भारीमाल सोहामणा पम मरम पहिछांण हो। मुणद।
पण्डित मर्ण पेखी पूज रो बोले एहवी वाण हो। मुणद।
चिन चिम भिक्खु स्वाम मे ॥ १ ॥
धन धन निमल ध्यान हो मु० धन धन पवर सूरापणु।
धन धन स्वामी नो ज्ञान हो ॥ २ ॥
सखर स्वाम ना संग थी मन हुसियारी माहि हो। मु ।
भर्व बिरहो पड आगरा जोण थी जिणराय हो ॥ ३ ॥
प्रभु गोयम री प्रीतथी चोथे आरे पिछाण हो। मु ।
प्रत्यक्ष आरे पंचमें भिक्खु भारीमाल री जोण हो ॥ ४ ॥
तिण कारण भारीमालजी आख्यो अल्प सी वात हो। मु०।
बिरह तुमारो दोहिलो जोण थी जगनाथ हो ॥ ५ ॥
भिक्खु वल्या इम भण, थ सजम पाल्सो सार हो।
गिर अतिचारे निमलो होसी दव उगारो हो ॥ ६ ॥
मग विचर धन मम मुझ पछी माटा अणगार हो। मु०।
अरिहंत गणधर आगे देखता सगु विचार हो ॥ ७ ॥
सनमुखी भाग स्वाम म वाल जाता इसी मन माहि हो। मु ।
स्वामी बदे गुणो गायजी चित में मन तणा मद्दीं चाहि हो ॥ ८ ॥
गुण स्वर्गादिक मा गढ़ पुदगल मन विश्राम हो। मु०।
पांपण मुग पाना पणा, ध्यान आणूं जैनर रामान हो ॥ ९ ॥

धार अनंती भोगव्या अधिका सुख अहमद हो। मु०।
ती पिण नहीं हुवो तृपती तिण कारण ए सुख फन्द हो ॥ १० ॥
तिणसूं म्हारै मन्न तणी वंछा नहीं लिगार हो। मु०।
मुझ मन एकंत मोक्ष में शाश्वता सुख श्रीकार हो ॥ ११ ॥
वैरागी एहवा मुनिवरु, जांण्यो पुद्गल जहर हो। मु०।
स्वाम सम्वेग सुण्या छतां आवै संवेग नीं लहर हो ॥ १२ ॥
सखर सतावनमीं सोभती ढाल रसाल अपार हो। मु०।
स्मरण भिक्खु स्वाम नौं जय जश कर करण श्रीकार हो ॥ १३ ॥

दुहा

सुख कारण तारण सुजन कुगति निवारण काम।
विघ्न विडारण अति पवर सील समाधी स्वाम ॥ १ ॥
पंडित मरण सुकरण पर, धरण आराधक धांम।
शिव वधू वरण द तरण मुद्र, पूज्य पम परिणाम ॥ २ ॥
निर्मल नीत मुद्र रीत नीज, पूज्य प्रथमहि पेख।
अंत काल आयां छतां वारु अधिक विशेष ॥ ३ ॥
समय जांण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार।
आतम शुद्ध करै आपरी ते सुणज्यो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ५८

[कोसी पन नहिं मैं तिम प्यारे—ए देशी]

स्वाम भिक्खु तिण अवसरें रे, आउ नेड़ो आयो जांण।
करैं आलोवण किण विधे रे, सखर रीत सुविहाण।
भविक रे भिक्खु गुण रा भंडार ॥ १ ॥
तस थावर जीवां तणी रे, हिंसा करी हुवै कोय।
त्रिविध त्रिविध कर तेहनों रे मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ २ ॥
क्रोध मांन माया करी रे, लोभ वले अवलोय।
झूठ लागो हुवै जेहनों रे, मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ ३ ॥
अदत्त जे कोई आचर्यो रे, त्यांरा भेद अनेक सुजोय।
हद जिन आज्ञा लोपी हुवै रे मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ ४ ॥
ममत धरी हुवै मैथुन सूं रे, गुप्ता जाणता सोय।
मन वचन काय मात्र तणो रे, मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ ५ ॥
परिग्रह नव प्रकार नौं रे, शिष्य शिष्यणी उपधि पर सोय।
त्रिविध २ ममता तणुं रे, मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ ६ ॥

किणहि सूं क्रोध कियो हुवै रे, वलि क्रोध करो वच कोय।
करड़ी सीख किण नैं कही रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय॥ ७ ॥
मांन माया लोभ मन में धर्यो रे, विल धरया राग द्वेष दोय।
इत्यादिक पाप अठार नौं रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय॥ ८ ॥
राग कियो हुवै रागी थकी रे, द्वेषी सू धरयो हुवै द्वेष।
मन साचै हिवै मांहरै रे, वर मिच्छामि दुक्कडं विशेष॥ ९ ॥
पांचू आस्रव पाडुवा रे, लागी ओप्यो किण वार।
समाल समाल स्वामी जी रे, आलोया अतिचार॥ १० ॥
पंच सुमति तीन गुप्ति म रे, पंच महाव्रत मझार।
याद करे अतिचार नैं रे, आलोवै भिक्खु अणगार॥ ११ ॥
बहु जीवाजोनि संसार म र चउरासी लख सुचिन्त।
ज्यांरा भेद ज जुआ जांणजो रे, खमावूं धर खंत॥ १२ ॥
वडा शिष्य सुविनीत छै रे, अंतेवासी अमोल।
आगै अन्तर आई हुवै रे, खमावै दिल खोल॥ १३ ॥
भले सत भने सतियां मर्भ रे, केना नैं करड़ा देख।
कठिण सीख कह्यो कही रे, खमावूं सु विशेष॥ १४ ॥
श्रावक में वल श्राविका रे केई कठिण प्रकृति रा कहाय।
कठिण वचन कह्यो हुवै रे, खोत करी नं खमाय॥ १५ ॥
केई गण बारै निकल्या रे, साध साध्वी सोय।
करड़ी वाणी कही हुवै रे ज्यां सूं खमत खामणा मोय॥ १६ ॥
चन्द्रभाणजी चली मर्भ रे, तिलोकचन्दजी ताम।
कहिजो खमत खामणा मांहरा रे, त्यांसूं पडियो बोहलो काम॥ १७ ॥
चरचा चाली चूप सूं रे, घणा जणा सूं बहु ठाम।
वच कठण कह्या आप्या तसु रे खमावै ले नाम॥ १८ ॥
वलि धर्म तणा द्वेषी हुवा रे, छिद्रग्राही अध्यवसाय।
त्यां ऊपर गठ आई हिया रे, मनन्ं म देऊं खमाय॥ १९ ॥
चऊं आप गुरु पमायवा रे, खोमियामण देता सोय।
कठिन वचन जो कह्यो हुवो रे, मुझ खमत खामणा ओय॥ २० ॥
इम विध करी आलोयणा रे, निरखा मगन गुणवंत।
स्वाम भीखणजी खामणा रे, पन्नीधर गुण महन्त॥ २१ ॥
एहवी आलोवना करता गुण्यां रे भावै अधिक वैराग।
करे त्यारो करिजे तिम्हूं रे त्यांरे भाग्य मोटा भाग॥ २२ ॥

अठावनमी गोमती रे, आखी ढाल सुऐन।
अब जश करण भिक्खु भजा रे, चित्त सुणतां पांमै चैन ॥ २३ ॥

दुहा

इण विध करी आलोयणा निर्मल निरतिचार।
स्वाम हुवा शुद्ध रीत सूं अब अणसण अधिकार ॥ १ ॥
भाद्र सुक्ल पंचम भली सम्वत्सरी नों सार।
स्वाम कियौ उपवास शुद्ध चित्त उज्ज्वल चौविहार ॥ २ ॥
अतुल तृषा मीं ऊपनी अधिक असाता आंम।
सखर भाव शूरापणो समचित सहित स्वाम ॥ ३ ॥
पूज कियौ छठ पारणो औषध अल्प आहार।
पिण ते सर्मीं न परगम्यौ वमन हुवौ तिण वार ॥ ४ ॥
तिण दिन तीनूं आहार ना त्याग किया तहतीक।
पुद्गल स्वरूप पिछाणियौ निर्मल स्वाम निरभीक ॥ ५ ॥

ढाल ५६

[राजा राघव रायारा राय—ए देशी]

सातम आठम भिक्खु स्वाम जी अल्प सो लियौ आहारो।
ततखिण त्याग कियौ मन हीलै हद पूगरो मन हुसियारो।
भिक्खु स्वामी आप जिन मत अधिक प्रमाणौ ॥ १ ॥
खेतसीजी स्वामी कहै सांच कर, तरकै न करणा त्यागो।
पूज कहै वेही पतली पाणी बार विशेष चाहियै वैरागो ॥ २ ॥
भाद्र शुक्ल नवमी दिन भिक्खु, कहै कर्ख आहार ना पचखांण।
कहै खेतसीजी मुझ कर केरो, धर्म आहार ली पिछांण ॥ ३ ॥
अशन आहार खेतसीजी आणियौ चास किया पचखांणो।
बार मन राखी शिष्य सुविनीत री पिण अतुल इच्छा मत मांणो ॥ ४ ॥
दशम दिन भारीमालजी विनवै स्वामी आहार कीजै सुविहांणो।
पाखी पावल कण मींठ रे आसरै, चास किया पचखांणो ॥ ५ ॥
इग्यारस आहार त्याग दियौ मुनि अमल पांणी उपरतो।
मुझ हित आहार कैसी मत मांगजो कह्यौ वयण अमोलक सतो ॥ ६ ॥
बारस दिन बेली कियौ पूज तीन आहार तणा किया त्यागो।
सखर संथारो करण सूं स्वामी नीं, चाह चतुरी वैरागी ॥ ७ ॥
सोमसी हाट सूं उठ मुनीश्वर, पलिया पसिया धामो।
पक्की हाट नैं पका मुनीश्वर, पक्को संथारो सुहांमो ॥ ८ ॥

संयम लिव्यां कीधौ सुखदाई, चार पूज लियौ विसरामो।
इतलें रूप रायचन्दजी आयनें ज्वा वचन वदै अभिरामो ॥ ९ ॥
स्वामी कृपा कीजै दर्शन दीजिय वद सुखकारी थी विस्यातो।
पूज स्हामु जोतें नेत्र खोल्नें हद मस्तक दीधौ हाथो ॥ १० ॥
पूज में कहै प्राक्रम हीण पड़िया अपराम लणी सुण वायो।
भिक्खु पहिल्ं तन तोल त्यारी था सुण सिंह ज्यूं उठ्या मुनिरायो ॥ ११ ॥
भिक्खु कहै बोलावो भारीमाल नै मले खेतसीजी नं विचारो।
याद करंताई संत दोनूंई, झट आय ऊभा है तिवारो ॥ १२ ॥
नमोथुणो कियौ अरिहंत सिद्धां नं तीखे वच बोल्या तांमो।
बहु नर नारी सुणतां में देखतां सथारो पचख्यौ भिक्खु स्वामो ॥ १३ ॥
शिष्य पम भगता कहै स्वामी नें क्यूं न राख्यौ अमल रो आगारो।
पूज कहै आगार किसो हिवं, किधी करणी काया मीं सारो ॥ १४ ॥
भाद्रवा सुदि बारस भली तिथी सोमवार सुविचारो।
अणसण आदर्यो वराग आणीनें शुद्ध छेहलो धुर्मकियो सारो ॥ १५ ॥
घणा जन आवंता गुण गावंता बोल्या बे कर जोड़ो।
धिन धिन हो थे मोटा मुनीश्वर, कीधी बड़ा बडेरा री होड़ो ॥ १६ ॥
केई सनमुख आया में प्रणमें पाया विकसत होवै विल्हासं।
वात करीनें स्वामी नें समाधता हिवड़े आंण हुल्लासं ॥ १७ ॥
धिन धिन पूज री धीरापणु धिन धिन पूजरो ध्यानो।
धिन धिन स्वाम धूरा धणा सदरा मन कियौ मेरू समांनो ॥ १८ ॥
आसी ए गुणसठमी ओपती शुद्ध वाले स्वाम संथारो।
जन जय जन कर स्वाम भिक्खु नीं स्मरण महा सुखकारो ॥ १९ ॥

दुहा

करो अभिग्रह एहवो किय़ो या धुर मत कास्यौ सार।
छेहडै अणसण आवसी पसै उतरसी पार ॥ १ ॥
इण विध अभिग्रह आदर्यो भीखण लोधो तांम।
बात सुणी कहै पचखियो, अणसण भिक्खु स्वाम ॥ २ ॥
हृषी था जिन धम ना चित्त पाम्या चिमत्कार।
आंम्यो ए भारत करो कई बोद बारंबार ॥ ३ ॥
भ्रमि नर नारी भावना गावता मुनि गुणग्राम।
बाजार मांहि ममावता सराबता धिन स्वाम ॥ ४ ॥

ढाल ६०

[राम को सुजश घणो—ए देशी]

स्वाम तणी संथारो सुणी हो आवै लोक अनेक।
कोइ करीनें करै घणा हो बारु वैराग विशेष।
स्वामी नों सुजश घणो ॥ १ ॥
कोई कहै संथारो सीझसी स्वामी नों हो त्यां त्याग काचा पांणी ना त्याग।
कोई करै त्याग कुशील रा हो बर चित आण वराग ॥ २ ॥
केई धम आरम्भ नहिं आदरै हो केई कर हरी ना पचखाण।
कोई रात्रि भोजन तज्यो हो इत्यादिक वराग वखांण ॥ ३ ॥
केई धर्म घणा द्वेषी हुंता हो ते पण भभरज पाम्या तिणवार।
अनमी कई आवी नम्या हो, स्वाम तणें संथार ॥ ४ ॥
पडिकमणो कीयां पछै हो स्वाम भिक्खु सुविहांण।
भारीमाल आदि शिष्य भणी हो कहै बारु करी वखांण ॥ ५ ॥
शिष्य सुविनीत कहै सही हो संथारो आपरै सोय।
वखाण नौं सू विशेष छै हो सब पूज्य बोल्या अवसोय ॥ ६ ॥
किणहि आरम्भियां भणागण कियो हुव हो तौ करी वखांण त्यां जाय।
मुझ अणशण माहें वेदना हो नहिं करी पे विण न्याय ॥ ७ ॥
वखांण कियो विस्तार सु हो शिष्य सुविनीत श्रीकार।
भगवन्ती भिक्खु तणो हो भिल्स्यो जोग उदार ॥ ८ ॥
परिणाम चढ़ता पूज रा हो क्षण दिन निकल्यो रात।
दिन तेरस दिव दीपतो हो प्रगटियो प्रभात ॥ ९ ॥
गांम गांम रा आवे घणा हो दरशण करवा देश।
लोक मेली मंडियो हो बारु हुए विशाल ॥ १० ॥
गुण स्वामी ना गावता हो आवता अति जन वृन्द।
दिखाई हृष्ट हुलसावता हो पामता परमानन्द ॥ ११ ॥
जन करमी था जीवड़ा हो जय जय करता जन।
पम पूज मुख पतनैं हो, तन मन होय प्रसन्न ॥ १२ ॥
पूर ही पी धम छाणमें हो शुद्ध मग लियो सार।
अंत ताई उजवाल्यो हो जिन मारग जयकार ॥ १३ ॥
चोरी थे जिन धम ना हो भ्रम मोसै नर नार।
पूरसो सागरो कियो हो, स्वामी य संथार ॥ १४ ॥

ऐ साठमी गुण आमली हो, कही ढाल रसाल।
अम कन करम स्वामी तणो हो बारु गुण विसाल ॥ १३ ॥

दुहा

पाणी पीवी पूज जी आफे चित उजमाल।
पोहर दिवस आसरै प्रगट, आयो थो तिण काल ॥ १ ॥
साध बैठा सेवा करै, जांणी हुए भपार।
श्रावक श्राविका स्वाम नों देख रह्या दिदार ॥ २ ॥
भिक्खु स्वरूप शुद्ध भाव सूं ध्यावत निर्मल ध्यान।
संकै तौ जांणू स्वाम नें उपनों अवधि सुजान ॥ ३ ॥
साध श्राविका होवै सही वैमानिक विख्यात।
अवधिज्ञान तसु उपजै, आगम वचन आख्यात ॥ ४ ॥
दिन चढ़्यो पोहोर पौन आसरै, सांभलतां सहु कोय।
वचन प्रकासै तिण विधे मन सुणियै भवि लोय ॥ ५ ॥

ढाल ६१

हेमराज जी स्वामी कृत

[नमो अरिहंताणं नमो सिद्ध निरवाणं—ए देशी]

साधु आवै साहमां आवो मुनि प्रकास वांण।
कले साधवियां आवै वारै, स्वामी बोलै वचन सुहांणं ॥
भवियण नमो गुरु गिरवाणं नमो भिक्खु चतुर सुजाणं ॥ १ ॥
कै तो कह्यो अटकल उनमानें कै कह्यो बुद्धि प्रमाणं।
कै कोई अवधिज्ञान उपनों ते जांणै सब माणं ॥ २ ॥
केई नर नारी मुख सूं इम भाखै स्वामी रा जोग सावां मैं वसिया।
इतलै एक मुहूर्त आसरै, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥
विकसत विकसत साधु वांदै चर्ण लगावै शीसं।
नर नारी जांणै अवधि उपनौं साची विस्वावीसं ॥ ४ ॥
स्वामी साधु आया जांणी मस्तक दीधौ हाथं।
एम्लै दोय मुहूर्त आसरै, आयो साधवियां रो साथ ॥ ५ ॥
वणीरामजी साध वनेचंद सायै सुखाल जी आया।
साधवियां वगतूजी जुमां डाही जी प्रणमै भिक्खु पाया ॥ ६ ॥
परचा ज्यूं ज्यूं आय पूगै छै, नर नारी हर्षत थावै।
धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुलै कुण आवै ॥ ७ ॥

आमा ते साधु गुण गाव मात भात प्रणाम चतुर्मैं।
म मोद्य उपगारी महिमा भारी, सखरो सुजस सुणाव ॥ ८ ॥
ये पका पका पाखण्डी हृटाया सूत्र न्याय बताया।
दांन दया आछी दीपाया बुद्धिवता मन भाया ॥ ९ ॥
सावद्य निरवद्य भला निवेड़ा कीधा बुद्धि प्रमाण।
सूत्र न्याय श्रद्धा शुद्ध कीधी धारी अरिहंत आण ॥ १ ॥
साधां भाख्यो स्वामी सुता नें घणी हुई छै बार।
भाप कहो तो बैठा करां हिम, जब भरियो नांय हुंकार ॥ ११ ॥
बैठा कर साधु च्यार बैठा गुण स्वामी रा गावै।
बहु नर नारी दर्शण देखी, मन मे हर्षत थाय ॥ १२ ॥
भायो भाउखो भण चिन्तवियो वठो बैठां जाण।
सुखे समाधे बाह्य विसत चट द छांड्या प्राण ॥ १३ ॥
जगस्तम्भ आयो सात भगत में तीन भगत सथार।
सात पोहोर तिण माहै वरत्या, पको उतार्यो पारं ॥ १४ ॥
मांडवी सीवि दरखी पूगा कहै सूई पग मे चाली।
अपरज लोक पाम्या अविको चट स्वामी गया चाली ॥ १५ ॥
सम्वत अठारै साठ वर्ष, भाद्रवा सुद तेरस मगलवार।
पूज पोंहता परलोक शिरिमारी गुण गाव नर नारं ॥ १६ ॥
दिन पाछलो दोढ पोहर आसरे, उण वेला भाउखो आयो।
सिवसे मरणो रात्रि जनमणो कहै विरला न थायो ॥ १७ ॥

दुहा

संथारी कीधो सखर, सखर स्वाम धीकार।
शूरपणे सिझ्यो सखर, सखर सुजश ससार ॥ १ ॥
साधां तन बोसिरामनैं चिर्ड च्यागस चित्त धार।
कियौ तदा शुद्ध काउसग्ग अरु तिण दिन तज आहार ॥ २ ॥
पूज तणो बिरही पड़यो कठिन अधिक कहिवाय।
याद किया अरिहत मैं समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥
कहो अथिर ससार ए, सजोग जठै विजोग।
पूज सरीषा पुरुष था पोंहता आज पर लोग ॥ ४ ॥
देख्या भिक्खु दिसकरी बाद निसुणी वांण।
याद करें ते अति घणा जन गुणग्राही जांण ॥ ५ ॥

बिहुं तीर्थ आवी भिख्या स्वाम तणें संथार।
मास महत्त्वा रै मर्म, अचरज ए अधिकार ॥ ६ ॥
प्रबल पुन्य ना पोरसा प्रबल गुणागर जाण।
पूज हुंता प्रगट पर्णे परभव कियो पयाँण ॥ ७ ॥

ढाल ६२

[धानंदा रै—ए देशी]

स्वाम संथारो सीभियो गुणधारी रे, म्हेस्या मांहि रै माँहि। स्वाम सुखकारी रे।
तेरह् वर्ष मांहली तणी गुणधारी रे, महिमा कीधी अथाय स्वाम सुखकारी रे ॥ १ ॥
स्वया सैकडा समाविया गुणधारी रे, अनेक उद्यमस्या रुार भिक्खु रिष भारी रे। स्वा०।
ए सावद्य किरतब संसार मा गुणधारी रे, तिणमें नहीं तंतसार। स्वा० ॥ २ ॥
बात हुई जिसी बरणवे गुणधारी रे, सममावे सुविचार। स्वा०।
तिण माह पाप म तांणजो गुणधारी रे, दम तणो दिलधार। स्वा० ॥ ३ ॥
अति जन जन वृंद आविया गुणधारी रे, आदरै सूंस अनेक। स्वा०।
विविध वैराग वधावता गुणधारी रे, बाम आंण विवेक। स्वा० ॥ ४ ॥
पूज सधारो पेखनें गुणधारी रे, गावै जन गुण ग्रांम। स्वा०।
दिन दिन भिक्खु स्वामनो गुणधारी रे नित्य प्रत लीजै नाम। स्वा० ॥ ५ ॥
आदेश वचन सु आपतो गुणधारी रे, स्वामी सिध सरूप। स्वा०।
सिन्धासन स्वामी खरा गुणधारी रे, सखरा स्वाम सरूप। स्वा० ॥ ६ ॥
शील स्वाम नीं निरमली गुणधारी रे, प्रीत स्वाम गुण पूर। स्वा०।
शील स्विया जन दुरमती गुणधारी रे स्वाम बदती सनूर। स्वा० ॥ ७ ॥
स्वाम बुद्धि मा सागरू गुणधारी रे, निरमल मेल्या न्याय। स्वा०।
प्रत्यक्ष भारै पांचमें गुणधारी रे, जिम मग दियो जमाय। स्वा० ॥ ८ ॥
उद्यमी स्वामी अति घणा गुणधारी रे स्वाम सुमति सुखदाय। स्वा०।
स्वाम गुपति हद शोभती गुणधारी रे, निरमल स्वाम नरमाय। स्वा०। ९ ॥
मणिधारी स्वाम महा मुनि गुणधारी रे, स्वाम प्रबल संतोष। स्वा०।
जग तारक स्वाम जांणजो गुणधारी रे, पूरण स्वाम नीं पोष। स्वा०। १० ॥
निधान स्वाम दीपतो गुणधारी रे, अधिकी बुद्धि उत्पात। स्वा०।
मिथ्या तिमिर सुमेटवा गुणधारी रे, सूर्य स्वाम साख्यात। स्वा०। ११ ॥
सगर भिक्खु नाम सोभतो गुणधारी रे पाखण्ड भय पामंत। स्वा०।
जग भिक्खु नी जगत में गुणधारी रे, दश दश में दीपंत। स्वा०। १२ ॥
स्वाम तिण्रा शासन तणो गुणधारी रे, स्वाम आज्ञा सु उजम। स्वा०।
स्वाम तणो हद शोभतो गुणधारी रे, स्वाम दमीसर देर। स्वा०। १३ ॥

स्वाम सुदर्शन दीपावियो गुणधारी रे, स्वाम सुजान सधर। स्वा०।
स्वाम सुजस शोभावियो गुणधारी रे, स्वाम सुगुन मरद। स्वा०। १४ ॥
भव्य मात स्वाम देखाविया गुणधारी रे, स्वाम आतम ओलखाय। स्वा०।
पुन्य पाप नैं परखनैं गुणधारी रे, स्वाम दिया सरधाय। स्वा०। १५ ॥
स्वाम संवर अरु निरजरा गुणधारी रे, बंध मोक्ष पहिछाण। स्वा०।
स्वाम औदयिक जूजुआ गुणधारी रे, स्वाम दिखाया सुजाण। स्वा०। १६ ॥
स्वाम दया ओलखायनैं गुणधारी रे, अति घन कीध उद्योत। स्वा०।
स्वाम सावद्य निरवद्य सोधनैं गुणधारी रे, घण घट घाली जोत। स्वा०। १७ ॥
शुभ जोगां में स्वाम श्री गुणधारी रे, ओलखाया हद रीत। स्वा०।
आसता स्वाम नीं आदरयां गुणधारी रे, आप अमारी मीत। स्वा०। १८ ॥
इग्यारसी ओलखावियो गुणधारी रे, कर कालवादी निकंद। स्वा०।
मध्यापक्षी पिछाणियो गुणधारी रे, स्वाम साचेलो चन्द। स्वा०। १९ ॥
आचार सरधा ऊपरै गुणधारी रे स्वाम चोख्या शुद्ध न्याय। स्वा०।
सुध बच थिर करी गुणधारी रे, व्रत अव्रत बताय। स्वा०। २० ॥
लेख्या थी कार्य मही गुणधारी रे, स्वाम सरीपा साथ। स्वा०।
कर्म धर्म पख्या परख्या सणो गुणधारी रे, भावेला भिक्खु नाथ। स्वा०। २१ ॥
स्वाम मोचण श्री सारीसा गुणधारी र, भरत क्षेत्र रे मांहि। स्वा०।
इण नें होसी कल गुणधारी रे, दिखतां नहिं देखाय। स्वा०। २२ ॥
ऐसा भिक्खु ऋष भोपता गुणधारी रे, भाव करै नर नार। स्वा०।
पूज गुणां रो पसारो गुणधारी रे, स्वाम सकल सुखकार। स्वा०। २३ ॥
स्वाम तणो नाम सम्भरयां गुणधारी रे, भाव हर्ष अपार। स्वा०।
थौ प्रत्यक्ष नीं कहिवो भिक्खू गुणधारी रे पामें तन मन प्यार। स्वा०। २४ ॥
परिपाटी में स्वामजी गुणधारी रे साठे तप संथार। स्वा०।
मास माहरा में मत्ती गुणधारी रे, जीत गम में विचार। स्वा०। २५ ॥
पंचम काल हूं जनमीं गुणधारी रे, पिण इक मुझ हर्ष धर्म। स्वा०।
थारा सुखमग चालता पहं गुणधारी रे जन्म थई पायो धर्म। स्वा०। २६ ॥
आसा पूरण भाव छी गुणधारी रे, मेटण सकल संताप। स्वा०।
स्मरण नित्य प्रति स्वाम नो गुणधारी रे, जपू तुम्हारो जाप। स्वा०। २७ ॥
गणपती काल भोपती गुणधारी रे समरया स्वाम सुजाण। स्वा०।
जय जन करण भिक्खु भजन गुणधारी रे, पूरण प्रीत पिछाण। स्वा०। २८ ॥

जन्म किल्याण कहास्यो जांभी शरियारी चरम किल्याण।
द्रव्य दीक्षा महोत्सव बाढी मैं मोटे ए मिट्टु जाण॥२६॥
स्वाम भिक्खु हिवड़ै समरियो हियो तन मन हुलसाय।
सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचारयो विमल कमल विकसाय॥२७॥
भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्खु, परमव किन्यो पयाण।
तिथि चउदस धरती पूजी अति न्याय आणै बुद्धिवान॥२८॥
तीन प्रकारे धरती पूजै आगम तीजै ठांग।
भेद भूकम्पा भी जिन भाख्या समझै सखर सयाण॥२९॥
घर में वर्ष पचीस आसरै, आठ भेख में तास।
पछै सजम ले परभव पौहता बावन्नीस में बास॥३०॥
सर्व आठ सत्तर बरस आसरै साध्वी भिक्खु स्वाम।
जीव घणा समझाविया रै, कीधो उत्तम काम॥३१॥
साथ सावधी स्वाम तणां आसरै, एक सौ चार बोहि।
वैरायत पीधो बहु ने सतरै रीत सुधोम॥३२॥
मरुधरी सहंस आसरै कीधी युक्ति न्याय सूं जोड़।
मुरधर मेवाड़ ढूंढार हाड़ोती विचरया शिरमणि मौड़॥३३॥
राम नाम ज्यूं रटै स्वाम नै मुझ मन अधिक निहोर।
हंसा मानसरोवर हरष चित्त जिम चन्द चकोर॥३४॥
चातक मोर पर्पईया घन बिन गरजी ध्यान गगन।
राग विरागी राम मन्तर्मै मुझ भिक्खु में मन॥३५॥
पतिवरता समरै जिम पिउ नै गोप्यां रै मन कान्ह।
संजोगी रा पाप तणी पर, पर्व स्वाम नीं ध्यान॥३६॥
आशा पूरण आप तणा गुण, कह्या कठा लग जाय।
सागर जल गागर जिम मावै जिम आकाश मिणाय॥३७॥
श्री वीर तणं पट स्वाम सुधर्मा भिक्खु पट भारीमाल।
रायचंद भूप तीजै पाटै, दास्यी आर्युष दयाल॥३८॥
आप तणा गुण हूं किम विसरूं आप तणो आधार।
स्मरण आप तणो नित्य समरूं आप दयाल उदार॥३९॥
नाम भाषरो घट भीतर मुझ, ज्यूं भारी जान।
तुझ नाम दुग दोहग दूरा घटै पार संताप॥४०॥
मन वंछित मिलियें तुझ स्मरण, साध्यां सेती सोष।
भजन तुम्हारो भय भव भंजन हुए मनोपम होय॥४१॥

मन्त्राक्षर जिम स्मरण मोटौ परख्यौ म्हैं तन मन ।
इहभव परभव में हितकारो भिक्खु तणो भजन ॥ ४२ ॥
नमो नमो भिक्खु भूप निरमल मोक्ष तणा दातार ।
स्मरण स्वाम तणो शुद्ध साम्यां शिव सुख पामैं सार ॥ ४३ ॥
हुस घणा दिन सू मुझ हुंती आज फली मन आश ।
भिक्खु जश रसायण नामैं, ग्रंथ रच्यौ सुविलास ॥ ४४ ॥
विस्तार रच्यौ भिक्खु मुनिवर नौ सुणियौ तिण अनुसार ।
भिक्खु दृष्टान्त हेम लिखाया दखी ते अधिकार ॥ ४५ ॥
वणीरांमजी हेम कृत वर भिक्खु चरित सुपेख ।
इत्यादिक अवलोकी अधिको ग्रंथ रच्यौ सुविशेख ॥ ४६ ॥
अधिको ओछो जे कोई आयौ मिच्छा आयो हुवै कोय ।
सिद्ध अरिहंत देव री साखे मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ ४७ ॥
संवत उगणीसै आठै आसोज, एकम सुदि सार ।
शुक्रवार ए जोड़ रची बीदासर शहर मझार ॥ ४८ ॥
तेसठमी ढाले स्वामी समरया कर्म काटण रै कांम ।
कर जोड़ी भूप जीत कहै नित्य लेऊ तुम्हारो नांम ॥ ४९ ॥

कलश

मतिवंत संत महंत महा मुनि संत भिक्खु भूप तणा ।
गुण सघन गाया परम पाया हुवा सुहाया हियैं घणा ॥ १ ॥
तंत्र जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक भंज ए मंत्र मनोहरू ।
सुख सद्म पद्म सुकरण जय जय नमो भिक्खु मुनि वरू ॥ २ ॥

दुहा

बरष तैयालीस विचरिया आछी कायक जोय।
चारित्र पाल्यौ चूप सूं हुष हियै अति होय ॥ १ ॥
अधिको बल इन्द्रयां तणो निरमल देह निरोग।
भिक्खु सूरत अति भली अरु तीखो उपयोग ॥ २ ॥
सतर चौमासा स्वाम ना ताद अधिक विशाल।
सांभलज्यो भवियण सहू, चरम सहित चौमाल ॥ ३ ॥
आठ चौमासा आगै किया, असल नहि अणगार।
सतरा सूं साठ लगैं वरत्यौ शुद्ध व्यवहार ॥ ४ ॥
किहां किहां चौमासा किया जूजुआ नाम सुजाण।
सखेपे निरणय सहू, आंक उगमण आण ॥ ५ ॥

ढाल ६२

[सीता आवै रे धर राग—ए देशी]

शहर कंटालै घट चौमासा सतरै इकवीसे सोय।
पचीसैं अड़तीसै गुणपचासैं अठावनै अवलोय।
भिक्खु भजलै रे धर भाव ॥ १ ॥
बारू एक चौमासो बगड़ी, बरस अठारै विचार।
राजनगर बीसैं शुद्ध रीते किन्यौ घणो उपकार ॥ २ ॥
दोय चौमासा किया दीपता, पवर कंटालये पिछांण।
चौबीसे अठावीसैं चारू जन्म भूमि मिन जांण ॥ ३ ॥
बगड़ी तीन चौमासा चारू सतवीसैं सुविशेष।
तीसे अरु छतीसैं त्यां ग्रन्थ दीक्ष्या महोत्सव देख ॥ ४ ॥
गढ़ रिणतभंवर किकारी तलेटी नगर माधोपुर म्हाल।
दोय चौमासा किया दीपता, इकतीसैं अड़ताल ॥ ५ ॥
दोय चौमासा किया दीपता, प्रगट शहर पींपार।
बतीसैं पैतालीसैं वर्षे, कियौ घणौ उपगार ॥ ६ ॥
एक चौमासो शहर बाकिर में बध पैतीसे विचार।
सतीसैं पाबु सुखदाई, भिक्खु गुण भंडार ॥ ७ ॥
सोजत शहरै कियौ स्वामजी चारू एक चौमास।
वर उपगार तेपनैं धम वृद्धि हेम चरण तिण वास ॥ ८ ॥
श्री जी दुवारै तीन चौमासा तसु धुर वरष तयाल।
पवर पचासे छपनैं पूरण वर उपगार विशाल ॥ ९ ॥

पुर मैं दोय चौमासा प्रगट, स्वाम किया सुविहांण।
सैंतालीसै वर्ष सतावनें जुओ छोड़ायौ जांण ॥ १० ॥
शहर सीरवै पांच चौमासा, छावीसै बतीसै छांण।
वर्ष इकताल अरु छयाल वलि चौपनें जांण ॥ ११ ॥
सात चौमासा पाली शहरे, तेवीसे तेतीसै धार।
चालीसै चमालै बावनें पचावनें गुणसाठ ॥ १२ ॥
सात चौमासा खैरवा में उगणीसे बावीसे सार।
गुणतीसै गुणाल बयाल एकावनें साठै किया सधार ॥ १३ ॥
पनरै गांम चौमासा प्रगट, स्वाम किया स्वीकार।
ज्ञान दिवाकर गण घर भाखी मेघ्यौ भ्रम अन्धार ॥ १४ ॥
श्री वर्द्धमान तणौ शासण सखरौ दीपायौ स्वाम।
बहु जीवां नें प्रतिबोधि मैं पोंहता परभव ठांम ॥ १५ ॥
सुख कारण तारण भव सागर विघन विदारण वीर।
नरक निवारण जनम सुधारण सखरा स्वाम सधीर ॥ १६ ॥
समता रमता क्षमता रमता ममता अमता न्हाल।
समता क्षमता शमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥
आप उजागर गुणमणि आगर, सायर स्वाम सुजांण।
वयण सुधासागर धर्म जागर, नागरनाथ निधान ॥ १८ ॥
मरम विहंडन दुरमति खंडन मांहि मंडन मुनिराज।
कुमति निकंदन मन आनंदन पूज भवो दधि पाज ॥ १९ ॥
सुमती करण अघहरण स्वामजी शिव वधू वरण सनूर।
भव दधि तरण करण सुख सम्पति चरण करण चित्त चूर ॥ २० ॥
परम धरम भज भरम करम तज, दरम गरम उम साज।
शिव पद अकरम आप आराधण, स्वी भिक्खु ऋषराज ॥ २१ ॥
वर वायक पद ध्यायक वाद नायक नाथ निहाल।
बोधि प्रदायक धरम सहायक दायक स्वाम दयाल ॥ २२ ॥
ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा पट पीहरा तज सार।
हियै स्वाम अमोलक हीरा तोड़ जंजीरा तार ॥ २३ ॥
जप तप मैं तरवारे भटकी पाखण्ड पटकी पैल।
समय सुलटकी मुण मैं गटकी मटकी मन की मैल ॥ २४ ॥
ऐसा भिक्खु आप भौसागर, अवतरिया इण आर।
स्वाम जिसा चौथे आरे पिण विरला संत विचार ॥ २५ ॥

जन्म किस्याण कंटालयी जांणो बरियारी चरम किस्यांण।
द्रव्य दीस्या महोछव काढ़ी मैं जोड़ै ए भिक्षु जांण ॥ २६ ॥
स्वाम भिक्षु हिवड़े समरियां हियो तन मन हुलसाय।
सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचारयां विमल कमल विकसाय ॥ २७ ॥
भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्षु, परभव कियौ पयांण।
तिथि चउदश धरती धूजी अति, न्याय जांणै बुद्धिवांण ॥ २८ ॥
तीन प्रकार धरती धूजै ठणांग तीजै ठांण।
भेद जूजुआ भौ जिन भाख्या समझै सतर सयांण ॥ २९ ॥
घर मैं वर्ष पचीस आसरै, आठ भेप मैं तास।
पछै सजम ले परभव पौंहता चमालीस मैं वास ॥ ३० ॥
सर्व आउ सततर बरष आसरै साध्यौ भिक्षु स्वाम।
जीव घणा समझाविया रै, कीधौ उत्तम काम ॥ ३१ ॥
साध साधवी स्वाम छतां आसरै, एक सौ चार बोहि।
देसव्रत दीधौ बहु मै सखरी रीत सुबोध ॥ ३२ ॥
अडसी सहंस आसरै कीधी युक्ति न्याय सूं जोड़।
मुरधर मेवाड ढूढार हाडोती विचरया शिरमणि मौड़ ॥ ३३ ॥
राम नाम ज्यूं रटै स्वाम नें मुझ मन अधिक निहोर।
हंसा मानसरोवर हरष, चित्त जिम चन्द चकोर ॥ ३४ ॥
चातक मोर पपईया घन जिम गरजी ध्यान गगन।
राग विलासी राग अलापै मुझ भिक्षु न मन ॥ ३५ ॥
पतिवरता समरै जिम पिउ नै गोप्यां रै मन कान्ह।
तंबोली रा पान तणी पर म्हनै स्वाम नौं ध्यान ॥ ३६ ॥
आशा पूरण आप तणा गुण कह्या कठा लग जाय।
सागर जल गागर किम मावै किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥
श्री वीर तणै पट स्वाम सुधर्मा भिक्षु पट भारीमाल।
रायचंद भूप तीजै पाटै, दाख्यौ आगंद दयाल ॥ ३८ ॥
मात तणा गुण हूं किम विसरूं मात तणो आधार।
स्मरण मात तणो नित्य समरूं मात दयाल उदार ॥ ३९ ॥
नांम आपरो घट भीतर मुझ, ज्यूं आपरो जाप।
तुझ नांम दुःख दोहग दूरा, कटे पाप संताप ॥ ४० ॥
मन वंछित निपजै तुझ स्मरण, साध्यां सती सौम।
भजन तुम्हारो भव भव भंजन हुय अनोपम हीम ॥ ४१ ॥

मंत्राक्षर जिम स्मरण मोटो, परख्यो म्हैं तन मन ।
इहभव परभव में हितकारो भिक्खु तणो भजन ॥४२॥
नमो नमो भिक्खु आप निरमल मोक्ष तणा दातार ।
स्मरण स्वाम तणो शुद्ध साध्यां शिव सुख पामें सार ॥४३॥
हुंस घणा दिन सूं मुझ हुंती आज फली मन आश ।
भिक्खु जश रसायण मांमें ग्रंथ रच्यो सुविलास ॥४४॥
विस्तार रच्यो भिक्खु मुनिवर नो, सुणियो तिम अनुसार ।
भिक्खु दृष्टान्त हेम लिखाया देखी ते अधिकार ॥४५॥
वेणीरामजी हेम कृत वर भिक्खु चरित सुपेख ।
इत्यादिक अवलोकी अधिको ग्रंथ रच्यो सुविशेष ॥४६॥
अधिको ओछो जे कोई आयो, विरुद्ध भाख्यो हुवै कोय ।
सिद्ध अरिहंत देव री साखे मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥४७॥
संवत उगणीसे आठे आसोज एकम सुदि सार ।
शुक्रवार ए जोड़ रची बीदासर शहर मझार ॥४८॥
तेसठमी ढाले स्वामी समरथा कर्म काटण रे काम ।
कर जोड़ी ऋष जीत कहै नित्य लेऊं तुम्हारो नाम ॥४९॥

कलश

अविचल संत महंत महा मुनि संत भिक्खु आप तणा ।
गुण सघन गाया परम पाया, हद सुहाया हिये घणा ॥ १ ॥
तंत्र जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक मंत्र ए मंत्र मनोहरू ।
सुख सद्म पद्म सुकाम जय यश, नमो भिक्खु मुनि वरू ॥ २ ॥

५

लघु भिक्खु जश रसायण

[चतुर्थाचार्य जीतमलजी स्वामी कृत]

नंदीसूत्र विषे कह्या, ते अनुसारे ताम।
धुर परिपाटी असुध में प्रम्मे चरण प्रणाम ॥ १४ ॥
पछै सुध दिख्या ग्रही सुध परिपाटी पट्ट।
एहवो न्याय अथाय छै, बहुश्रुत घटै सुघट्ट ॥ १५ ॥
नदी स्थिरावली विषे, दूसगणी अभिधान।
अंत नाम ए आखीयो पाछै न कह्यो जान ॥ १६ ॥
कल्पसूत्र में पिण कह्यौ दूसगणि नो नाम।
थया हुवै ए बच्च जिम, ते पिण जाणे केवली ताम ॥ १७ ॥
तथा बच्च पिण वे थया दूसगणि पिण दोय।
ते पिण जाणे केवली निहचै खबर न कोय ॥ १८ ॥
कल्पसूत्र में इम कह्यौ, दूसगणि पट ताहि।
क्षमाश्रमण स्थिरगुप्त छे, वच्छस गोत्र पाहि ॥ १९ ॥
कुमार धर्म थया पछै, पछै देवऋद्धि नाम।
पछै नाम नहीं आखिया कल्प विषे पिण ताम ॥ २० ॥
कल्प विषै शाखा घणी, आखी छै त्यां माहि।
चरणधार केई सुद्ध हुवै ते पिण जाणे केवली ताहि ॥ २१ ॥

ढाल १

[सीता सती सुत जनमीया—ए देशी]

वीर निर्वाण थकी रह्यो प्रवर पूर्व नो ज्ञान।
एक सहंस्र वर्सां लगै, सतक वीस में जान ॥ १ ॥
संवत पनरैसै तवा वर इकतीसै माय।
भसमग्रह उतर्या पछै, लूंको प्रगट्यौ ताय ॥ २ ॥
धूमकेतु बेठो तदा वर्ष वर्षां पहुल्म वीस।
तास स्थिति वर तीन सौ, ऊपर पुन तेतीस ॥ ३ ॥
भसमग्रह स्थिति बे सहस्र वर्ष नीं उतरीयां सूं ताहि।
उदै उदै पुजा निर्ग्रंथ नी कल्पसूत्र में थाय ॥ ४ ॥
बंकचुलीया में कह्यो प्रभु सिव नी पेथ।
ये सौ एकावन वर्षां लगी विसुद्ध परूपणा विशेष ॥ ५ ॥
ता पाछै उतसूत्र नी परूपणा अधिकाय।
वर सोलसौ ऊपरै, गिनार्णू लग ताय ॥ ६ ॥

तिहां दुष्ट वाणीया मानस्यै, हिंसा धर्म दिखाय।
बहु मन मणी कुपंथ में, न्हांखेसी इमकाय ॥ ७ ॥
बे सौ एकाणव वर्ष लगैं सुध परूपणा प्यार।
सोलेसैं निनाणु बच ए, असुद्ध असुद्ध अधिक अवधार ॥ ८ ॥
ए उगणीसौ मेऊ थयां सय सूत्र जे रासि।
धूमकेतु तब बैसिस्यै स्थिति त्रिण सय तेतीस वासि ॥ ६ ॥
ए वर्ष तेवीसैं तेवीस जे, तठा पछै अधिकाय।
उदय संघ में सूत्र तणी बलधूरीया में थाय ॥ १० ॥
वय तेवीसौ तेवीस ए, किसा वय लग थाय।
तेह तणो निर्णय कहु, सांभलजो चित ल्याय ॥ ११ ॥
च्यार सो सित्तर वर्ष लगैं मवीवर्द्धन नो सोय।
संवत वरत्यो तठा पछै, वीर विक्रम नों जोय ॥ १२ ॥
मठारैं सय तेपनें थया वर्ष तेवीसौ तेवीस।
धूमकेतु तब उतर्यो, सम पुजा अति बीस ॥ १३ ॥
द्वादश मुनि था तेपनें स्वाम भिक्खू रैं जोय।
तब हेम हुवा मुनि तेरमा, पछै न घटीयो कोय ॥ १४ ॥
बेसौ एकाणु वर्षा लगैं सुध परूपणा किम न्याय।
सहस्र वर्ष पूर्वधर रह्या ते तौ सुध केवाय ॥ १५ ॥
विसमोग सुहस्त थी मसीतचूरणे न्हाल।
उतसूत्र ताम परंपरा पूर्वधर विण काल ॥ १६ ॥
छ सौ नव वर्षा पछै, दिगंबर मत देख।
इम पूर्व ज्ञानी थकां विरुद्ध पण दोष ॥ १७ ॥
इम बैसौ एकाणु लगैं अति उतसूत्र न थाय।
पाछै उत्सूत्र तणी परूपणा अधिकाय ॥ १८ ॥
सोलैसै निनाणु वर्ष ते अति उत्सूत्र कुहेतु।
ए उगणीसै मेऊं थयां बेठो ग्रह धूमकेतु ॥ १६ ॥
पनरसैं इकतीसैं समे, लुंको प्रगट्यो न्हाल।
भस्मग्रह तब उतर्यो धूमकेतु वय थाय ॥ २० ॥
लुंका नां प्रतिबोधिया सुध ववहार जणाय।
धूमकेतु वस बाधीया ते पिण ढीला थाय ॥ २१ ॥
सतरैसे नवकै समें कुपथी भीखत्या ताहि।
संकड़ाइ माहै ते रह्या सम्यक्त दीसै माहि ॥ २२ ॥

समत अठारै सत्तरोत्तरै पचांग केवे सुजाण।
वय वृद्ध धूमकेतु थया, प्रगटया भीक्खू भाण ॥ २३॥
मंगल धूमकेतु थया लूंको प्रगटयो धाम।
उतरते मंगल सघा प्रगटया भिक्खू स्वाम ॥ २४॥
तेर सत सूं भीक्खया, धूमकेतु थो विचार।
तिणसूं तेपनां लग बहु वध्यो न धर्म विस्तार ॥ २५॥
अंत तेपने उतर्यो धूमकेतु अपयोग।
ता पाछै वाध्यो बहु, च्यारु सघ प्रयोग ॥ २६॥
अठारैसै साठै समे, एकवीस मुनि योग।
भवा सतावीस मेलने पोहता भीक्खू परलोग ॥ २७॥
समत अठारे अठंतरे, संत पैंतीस सुचाल।
भवा एकतालीस मेलनें परभव भारीमाल ॥ २८॥
उगणीसै आठै समै सतसठ मुनिराय।
एकसौ चमालीस भवामेल मैं परभव मे ऋषराय ॥ २९॥
भीक्खु मैं वरतारे थया, सत सती सुखकार।
एकसौ च्यार रै आसरै दीख्या दीधी सार ॥ ३० ॥
मुनी भवा बैयासी थया भारीमाल वरतार।
थया वेसी पैंतालीस रायऋषी छतां सार ॥ ३१ ॥
इम दिन दिन दीरौ दीपतो च्यार तीर्थ सुखकार।
कंकुभीया री वारता जिणरी दीसै उच्चार ॥ ३२ ॥
प्रथम ढाल मैं पीठका, गुर सूं वात प्रकासी।
सुण भवा आचार सूं, जयजश आनन्द थासी ॥ ३३ ॥

दुहा

हिव उत्पत्ति भीक्खू तणी, गुर तेती अवलोय।
संक्षेपे कहियै अछै, सांभलज्यो सहु कोय ॥ १ ॥
किण स्थानक मुनि जनमीया द्रव्य दिख्या किण ठाम।
सुण भद्रा मार्ई किहां सुपन कथी अभिराम ॥ २ ॥
किम वरता द्रव्य गुरु कनै आहार तोडयो किण ग्राम।
किम बहुजन प्रतिबोधीया, च्यार तीर्थ गुणधाम ॥ ३ ॥
किम मर्यादा किम करी संलेषणा किम अंत।
किम किम संथारो कियो सहु संक्षेप कहंत ॥ ४ ॥

ढाल २

(राजग्रही नगर भली ए—ए देशी)

भिक्खु प्रगट्या भरत में भणिधारी मुनिराय।
अतिशय धारी ओपता जबर दिशा अधिकाय।
सुगण जन सांभलो रे ॥ १ ॥

बान बर्या दिक ऊमरै, दीया विविध दृष्टांत।
जीमिन आंशा सिरि धरी दीपायो प्रभु पंथ ॥ २ ॥

आगम निरखद सोधीया, ऊंडी बुद्धि उत्पात।
मार्यवली भिक्खु भरत माह भला सुविख्यात ॥ ३ ॥

संमत सतरै बयांसीये शहर कंटालये सार।
सीह सुपनै सुत जनमीया, आसाढ सुध अधिकार ॥ ४ ॥

समय एक परण्या तिहां काल किता सुविचार।
दीख आदर्यो भिखु भणा, दिख्या री दिसधार ॥ ५ ॥

अनुमत माता मां दीधे, सुपनें देख्यो सीह।
द्रव्य गुरु कहै ए गूंजसी मृगपति जेम अबीह ॥ ६ ॥

संमत् अठारै आठै समैं, द्रव्य गुरु आख्या रुघनाथ।
दिख्या मोहछव दीपता बगडी शहर विख्यात ॥ ७ ॥

बहु सिद्धांत वांचीकरी ज्ञान कीयो तिण वार।
पाले बहु चोपां तणी पिण द्रव्य गुरु सूं अति प्यार ॥ ८ ॥

पूछ्यां सुध उत्तर नहीं इह अवसर र मांय।
बात सुणी रुघनाथजी कहै भिक्खु नें बोलाय ॥ ९ ॥

श्रावक रायनगर तणा, वदणा छोडी ताहि।
थे जाइ संका मेट द्यो बुधिवंत विण मिटै नांहि ॥ १० ॥

सुण भिक्खु आया तिहां भारीमालजी जांण।
टोकरजी हरनाथजी वलि साथै वीरभाण ॥ ११ ॥

श्रावक कहै भिक्खु भणी आधाकर्मी आदि।
थान दोष री थापनै, म्हे किम सरधां साध ॥ १२ ॥

द्रव्य गुरु री पख राखवा निज बुद्धि करनें ताम।
थां समझाया तेहनें वलि श्रावक कहै आम ॥ १३ ॥

संका तो मुझ नां मिटी, पिण थारी परतीत।
तिण कारण वंदना करां भाव वैरागी अतीत ॥ १४ ॥

इह अवसर भिक्षु तणें तनु में प्रगट्यो ताप।
सीयो दुःसह अति घणो, तब मन चिंते आप॥ १५॥
म्हे साचां मैं मूळ कीया प्रत्यक्ष मोटो पाप।
आउ भावे इण अवसर, तो कुण गति मैं मिलाप॥ १६॥
द्रव्य गुरु काम आवें नहीं मिटीयां वेदन मोय।
सुध मारग धारूं सही काण न राखूं कोय॥ १७॥
अभिग्रह एहवो आदर्यो तुरत मिट्यो तब ताव।
वार वार सूत्र वांचीया सघरो बाप्यो साव॥ १८॥
सुद्ध हाबे नाह श्रद्धा असल नहीं आचार।
पर जिन वचन विलोकतां मूला ए भेषधार॥ १९॥
तांम श्रावकां नै तदा बोल्या भिक्षु वाय।
थे साचा मुझ आपणी म्हे मूळ छां ताय॥ २०॥
सुण श्रावक हरख्या सही आप तणी परतीत।
जिसी हुंती ते तुरत ही भाख विशाखी सुरीत॥ २१॥
इम संवत अठार पनरोतरै, राजनगर मैं रंग।
सूत्र न्याय निणय कीयो सखरी रीत सुचंग॥ २२॥
हिव चउमासो उतरयां मरुधर देश ममार।
सोजत मैं आवी मिल्या द्रव्य गुरु सूं तिण वार॥ २३॥
द्रव्य गुरु नै इह विध कहै, मूला मग सार।
सुध सरधा आइ नहीं असल नहीं आचार॥ २४॥
सावज करणी पाप री निरवद पुन री होय।
पिण एकण करणी मझै, पुन्य पाप नहीं दोय॥ २५॥
असजती में दान द, जिन कह्यो एकांत पाप।
शतक आठ म भगवती स्थिर चित्त सेती थाप॥ २६॥
असंजती रो जीवणो बंछणा सावज जोग।
सावज अनुकम्पा कही देख रे दे उपीयोग॥ २७॥
आधाकर्मी भोगवो थानक नित पिंड आहार।
मोल लीया वस्त्रादि जे अहोनिश जही भगाड॥ २८॥
इत्यादिक बहु वारता दाखी विविध प्रकार।
द्रव्य गुरु सुण मांनी नहीं कोष चडपा तिणवार॥ २९॥
पर भिक्खू मन चिंतवे, करिवो स्वयम प्रकार।
हिवड़ां न दीसैं समझता समभावि धर प्यार॥ ३ ॥

थोम कर्म के आसरे, किया अनेक उपाय।
केलवायक में सयमायवा द्रव्य गुरु में पिण साहि ॥ ३१ ॥
चले मगधी माहि आवीया बोल्या भिक्षु बाय।
सुध सरधा आचार में थारी आंण उमाह ॥ ३२ ॥
तब द्रव्य गुरु मांनी नहीं मन में कीयो विचार।
ए तो न दीसै समजता हिवै कर्क आत्मा नीं उधार ॥ ३३ ॥
इम मन पाछी धारनैं भिक्षु बुधि भंडार।
तर्कै तोडी नीकल्या माया स्थानक रै बार ॥ ३४ ॥
सेवग पुर में फिर गयो, बोल्यो एहवी वाण।
आगा दीधी भिक्षु भणी तो सघ तणी छै आण ॥ ३५ ॥
करसी कुबुधिज केलवी सेज्या न मिल्यां सोय।
आफेई आसी उरहा थानक में अवलोय ॥ ३६ ॥
पुर मैं जागा नां मिली भिक्षु कीयो विहार।
बगडी बाहिर आवीया बाउल बाजी तिवार ॥ ३७ ॥
जैतसिहजी री जिहां छतरी अधिक उदार।
आमीनैं बैठा तिहां सुणीयो ग्राहर मम्मार ॥ ३८ ॥
दुजी ढाल प्रगटपणैं स्वाम तणी सुखदाय।
धार्‍ई मस्तका सांभल्यां जयजश हरप सवाय ॥ ३९ ॥

दुहा

द्रव्य गुरु सांभलीयो तदा, लोक बहु ले लार।
आया छत्र्यां नें विष भीक्षु कनें तिवार ॥ १ ॥
द्रव्य गुरु में भिक्षु तिहां बैठा छत्र्यां माहि।
माहोमा बाता करै, ते सुणज्यो चितल्याय ॥ २ ॥

ढाल ३

[हांरा मेवासी नन्ही सो मरुन्लेतीरा—ए देशी]

हां रे, भीखन तब द्रव्य गुरु बोल्या ताहणीरा हो।
जी भिक्खू द्रव्य सुण मुझ वायोरा २। सुण बातजी।
हां रे भीखन तोनै म्है, दीधी छै दीप्यारा।
हो जी, भिक्खू घर मुझ दिप्यारा २, । सुण वार जी ॥ १ ॥
हां जी दुखम पचम मारो रा, हो अधिर ममागैरा २।
हां थारे दढ सजम सु पेमीया हो भिक्खू र निर्मलो बेमोरा २ ॥ २ धत ॥

पतनी

तब भीक्षु बोल्या ताहणी म्है जिम मानां तुम वायो।
मुझ आर्थन कीनी मिरणी, तेज्यां जिम बचनां मो सगी ॥ ३ ॥

द्रव्य गुरु भीखु र ताहि, बहु चरचा हुई माह्यो माहि।
यहां संक्षेप मात्रज भाषी भलि द्रव्य गुरु इह विधि भाषी॥१९॥

ढाल तेहिज

हरि, शुद्ध चारित्र निरतीचारो रा हो, दुकर कारोरा २। हरि।
जो दोय घड़ी निरदोषीरा होसी २ चारित्र पाल चोपीरा २॥ २०॥
हां इम सुध तन मन सु भावे हो २, तो केवल पावेरा २॥ २१॥

पतली

हां, इम बोल्या है विना विचार, भीखु सांभल नै तिणवार।
पाछो उत्तर देवे एम तुम्हें सांभलजो धर प्रेम॥ २२॥

कलश

इम वचन सुन मट सुघट, सुघमट प्रगट भिक्षु उच्चरे।
भविकां जु वे सुध चरण निमल अमल करि केवल वरे॥ २३॥
वे घड़ी तल्क बक्र काय भाशा स्थंय सममावे रहे।
थिर चित्त अधिक पवित्त भति हित चितधी केवल लहे॥ २४॥
सौधम जंबु मुनि रह्या छद्मस्थ बहु वर्षे सही।
सुध निरतीचार वे घड़ी, त्यां चरण पाल्यो क नहीं॥ २५॥
तसु पट्ट प्रभव सिज्जंभवादिक, पूर्व ज्ञान अथाहही।
सुध लेख सुद्ध चरित्त त्यां पिण बे घड़ी पाल्यो नहीं॥ २६॥
मुनि तेर सहस्त्र मैं तीनसय फुन रह्या जे छद्मस्थ ही सुभ लेख।
सुद्ध चरित्त त्यां पिण बे घड़ी पाल्यो नहीं॥ २७॥
मुनि गौतमादिक सत्तसय छदमस्थ जे बहु काल ही।
सुभ लेस सुद्ध चरित्त त्यां पिण वे घड़ी पाल्यो नहीं॥ २८॥
फुन वप द्वादश तेर पप महावीर प्रभू छद्मस्थ ही।
सुभ लेस सुद्ध चरित्त त्यां पिण वे घड़ी पाल्यो नहीं॥ २९॥

सोरठा

ए चर्म सरीरी जेह रे, केवल उत्पति काल थी।
बहु पूर्व कालेह रे, स्यू दोय घड़ी पाल्यो नथी॥ १॥

दुहा

इत्यादिक हुई घणी चरचा माहोमाहि।
समजाया समजे नहीं कीया अनेक उपाय॥ ११॥

ढाल तेहिज

हरि मुणगणन वरनू सुं, किणो विचारो रा हो जी स्वामी २।
भीखु सारोरा जग पारी जी हा रे सु० बुद्ध भीखु जी मारी रा हो स्वामी २।
अधिक उजवालरा २। ज॥ ३२॥

हरि, भिक्षु चितव्यो मन मांहिरा। हो हो स्वाम २, ए तो समभ्या नांहीरा २।
हरि, निज काका गुरू तामीरा हो २ जैमलजी नामीरा। अ० ॥ ३३ ॥
हरि, ते समजावै समीपीरा हो २, ते सरल मतीकोरा २।
हरि, इम चितव मन मांहीरा हो २, आया चलाईरा २ ॥ ३४ ॥
हरि, जैमलजी रै उदारीरा हो २ ध्यमा बैसारीरा २।
हरि, सलूछिण भिक्षु रै कारी रा हो ते पिण हुवा त्यारी रा २ ॥ ३५ ॥
हरि, द्रव्य गुरु सुणनें तामीरा हो २, मांग्या परिणामीरा २।
हरि, बुद्धिवंत तुझ गुण माहीरा हो २, त्यानें लेसी ताहीरा २ ॥ ३६ ॥
हरि, वीजानें न लेवै लारीरा हो २, हुसी निराधारीरा २।
हरि, इम ए दुजीया होसीरा हो २ थानें सहु रोसीरा २ ॥ ३७ ॥
हरि, थारै बहु परिवारीरा होजी मुनि २, मतीम विचारीरा २।
हरि, ये छो बधा रा मायोरा हो २, मति विचारौ बालोरा २ ॥ ३८ ॥
हरि, तुझ मुनि जो सुं तामीरा हो २ भीक्खुरी होसी नामीरा २।
हरि टोली भिक्षु री वाजेसीरा हो २, थांरो नाम न रेहसीरा २ ॥ ३९ ॥
हरि, फकीरवालो दृष्टं होइरा हो २ ए दृष्टांत जोईरा २।
हरि, इत्यादिक वच करि तांमीरा हो २ मांग्या परिणामीरा २ ॥ ४० ॥
हरि, बोल्या जैमलजी वायीरा हो २ सुणो भिक्षु ताहीरा हो २।
हरि, गला जितो हूं फसीयोरा हो २, न बर्डु बच असीयोरा २ ॥ ४१ ॥
हरि, ये संजम सुध पालोरा हो मु० २ आतम उजवालीरा २।
हरि, पंडितां रै अवलोयो रा हो २, जाणी करते सोमीरा २ ॥ ४२ ॥
हरि, जैमलजी रा उदारो रा हो २, पट अणगारीरा २।
हरि मन माहि गाढी धारीरा हो २, हुवा भिक्षु लारीरा २ ॥ ४३ ॥
हरि, जैमलजी रा पट संचोरा हो २ द्रव्य गुरू रा पंचोरा २।
हरि, अन्य गणना बे बारीरा हो २, तेरै थया त्यारीरा २ ॥ ४४ ॥
शहर जोधाणैं समेरोरा हो २ थया श्रावक तेरोरा २।
हरि, सामायक पोसह धारोरा हो २ बैठा बजारीरा २ ॥ ४५ ॥
हरि पतैचन्द दीवाणीरा होजी सचिव २ सिमी सिघाणी २।
हरि, देखी पूछे तिवारोरा हो क्यूं कैरा बाजारोरा २ ॥ ४६ ॥
हरि थानक मांहे सीधारा हो २ पोसा क्यूंनी कीधारा २।
हरि श्रावक कहै तिवारोरा हो २ मुज गुरू सारोरा २ ॥ ४७ ॥
हरि तज थानक नीसरीयारा हो २, भिक्षु गुण दरीयारा २।
हरि, ताम दीवाणजी दृष्टीरा हो २ उत्पत्ति पूछीरा २ ॥ ४८ ॥

हरि, श्रावक बोल्या साच्याजीरा हो २, घें मह मातीरा २।
हरि, थिरता हुइ अद सुमजोरा हो २, थिर चित पुमजोरा २॥४९॥
हरि, कहै दीवान उवास्रा हो २, थिरता अवारूंरा २।
हरि, श्रावकां ताम कह्यौ सुणायोरा, होजी भवि आधार अतायोरा॥५०॥
हांजी आधाकर्मी आदोरा हो २ तजिया विचारीयोरा २।
हांजी छवगणर्न निस पढोरा होजी। दोषण संबोरा २॥५१॥
हांजी इत्यादिक आचारोरा हो २ आप्यौ उदारोरा २।
हांजी सांभल सिमी हरप्यौरा हो २, भिक्षु गुण परख्यौरा २॥५२॥
हांजी ओकीज मुनी नों आचारो हा २ सुभ मग्ग सारोरा २।
हांजी करै प्रसंस सवायोरा हो २ मन हरपायो रा॥५३॥
हांजी संत भिराक सुमेरोरा हो म० २, श्रावक कहै तेरोरा २।
हांजी किता श्रावक ये सारोरा हो २ अधिक उदारो रा २॥५४॥
हांजी म्हें भिक्षु ऋषि केरारा हो २, श्रावक तेरारा २।
हांजी सिवी बोल्यौ तिवारीरा हो २ जोग मिल्यौ ए मारोरा २॥५५॥
सेवग, उमो म्यांहीरा हो २ तुके बोल्यौ स्याहीरा॥५६॥

सेवगोक्त दूहौ

आप आपरो गिलौ करै, ते आप आपरौ मंत।
सुणज्यो रे शहर का लोकां ए तेरापंथी तत॥५७॥

ढाल तेहिज

हांजी, तेरै श्रावक तेरै संतोरा हो २ तेरापन्थी संतोरा २।
हांजी अग विस्तारीयो नामोरा हो २ तेरापथी नामोरा २॥५८॥
हांजी ताम भीखू इम कैहवैरा हो जी स्वा २ समकित बेवैरा २।
हांजी हे प्रभुजी म्हे तेरारा होजी २, अवर अनेरारा २॥५९॥
हांजी सुमत गुप्त मठ संचोरा हो २, पालै व्रत पंचोरा २।
हांजी, ए तेरै पालै चित सतीग होजी २ सोही तेरापंथी रा २॥६०॥

छन्द

गुण बिण भेप कूं मूंम न मानत जीव अजीव का किया निवेरा।
पुन्य पाप कूं भिन भिन जानत आस्रव कम कूं सत उरेरा।
आवता कर्मां नै सवर रोकत निर्जरा कर्मां कूं देत बिखेरा।
बंध तो जीव कू बांधिया राखत मोक्षता सुख तो मोक्ष में डेरा।
इसो घट प्रकाश किया, मत जीवरा मेल्या मिथ्यात अंधेरा।
भिक्षु ज्ञान उद्योत किया एतो है पथ प्रभु तेरा ही तेरा॥६१॥

तीन सौ तेसठ पाखण्ड जगत में थी जिन धर्म सूं सब अनेरा।
प्रथम तिणी केई साध कहावत त्यां पिण पकड़्या त्यांराइज केड़ा॥
ताहि कुं दूर तजे ते संत विधि सूं उपदेश दिया घणेरा।
जिन आगम, शोध प्रमाण किया, जब पाखण्ड पंथ में पड़्या बिखेरा॥
व्रत अव्रत दान दया बताकर सावद्य निरवद्य करत निवेरा।
श्री जिन आगन्या मांहि धर्म बतावत ए तो है पथ प्रभु तेरा ही तेरा २॥१२॥

ढाल तेहिज

इणी ढाल तीजी ए तीपीरा हो २ जय जश कीपीरा ॥ अ० ६२ ॥

दुहा

भिक्षु भारीमालजी आदि संत सुविचार।
भयो भरण जैसा भणी सतक्षिण होय गया त्यार ॥ १ ॥
समत् अठार सतरोत्तरै, पर्वाग लेय पिछाण।
आषाढ सुदि पूनम दिने बाद भरण कल्याण ॥ २ ॥
अरिहंत नी लेई आगन्या सहर केलवा माहि।
संजम धारयो स्वामजी सिद्ध साखे सुखदाय ॥ ३ ॥

ढाल ४

[सुण चिरती नारसी—ए देशी]

चिरपासजी फतैचन्दो दोनूं बाप बेटा सुखकंदो।
थीमलजी रा टोला रा नाणी भिक्षु साथ भरम गुणखाणी।
सुण सुखकारी भिक्षु प्रतिबोध्या बहु नरनारी।
सुण सुखकारी भिक्षु थया भोआगर भारी ॥ १ ॥
आचार्य भिक्षु ऋषिरायो बले टोकरजी सुखदायो।
हरनाथजी ज्ञान गंभीरा हद भारीमाल गुण हीरा ॥ २ ॥
संत तेरा में छायो रह्या दृढ चित सहु मुनिरायो।
शेष सात नीसरीया ते जिम बादल जिम बीखरीया ॥ ३ ॥
भिक्खु दान दया दिपावै बहु नरनारी समझावै।
व्रत अव्रत जेयी बतावै, हलुकर्मी सुण हरखावै ॥ ४ ॥
मुरधर देश मझारो स्वामी भाख्यो करे उपगारो।
मारवा देश मेवाड़ो बहु प्रतिबोध्या नरनारो ॥ ५ ॥
श्रद्धा नै आचारो व्रत अव्रत अमर विचारो।
बली अनुकम्पा नी सुरंगी स्वामी जोड करी अति चंगी ॥ ६ ॥

धुर गुणठाणा नीं करणी निरवद्य आज्ञा में उचरणी।
जिन आज्ञा ऊपर वाणी स्वामी जोड़ां करी सुपहाणी ॥ ७ ॥
च्यार निक्षेपा नीं आखी पोतीयाबंध ऊपर आखी।
कालवादी ऊपर सीधी सूत्र साख देइ जोड़ां कीधी ॥ ८ ॥
पर्यायवादी पिछाणो वले इन्द्रियवादी जाणो।
वले एकल में ओलखायो बहु जोड़ां करी मुनिरायो ॥ ९ ॥
वले टीकम डोसी कहिवाइ तिणरी श्रद्धा में ओलखाई।
मकरत्य मीं जोड़ सुरंगी चारु सूत्र साख दे चंगी ॥ १० ॥
वले विनीत ने अविनीतो तिण ऊपर जोड़ां पवित्तो।
टालोकर ने ओलखायो तृण रास मांहे बहु न्यायो ॥ ११ ॥
वले जोड़्या सखर बखाणो चारु वैराग रस गुणखाणो।
आसरै अड़तीस हजारो स्वामी ग्रंथ जोड़्या सुपकारो ॥ १२ ॥
सूत्रां नी हुंडी सीधी वले पोत्याबंध ऊपर कीधी।
अवर ही बोल अनेको वले मेल्या न्याय विशेषो ॥ १३ ॥
उत्पतिया बुद्धि सुं उचारी स्वामी दृष्टांत दीधा भारी।
हलुकर्मी सुण हरषावै चित चिमत्कार अति पावै ॥ १४ ॥
वले सत सती बहु कीधा, घणा श्रावक श्राविका सीधा।
विचरया मुरधर न मेवाड़े वले हाड़ोती देश ढूंढाड़े ॥ १५ ॥
धुर तांइ थली में आया प्रयोजने ऋषिराया।
बहु विचरया मरुधर मेवाड़ी दोय चोमासा देश ढूंढाड़े ॥ १६ ॥
ओजागर भिक्खु आपो स्थिर च्यार तीर्थ में स्थापो।
पूर्वधारी जेहवा, ए तो स्वाम भीखणजी एहवा ॥ १७ ॥
ज्ञानादिक अती घन धारी ज्यांरी करणी री बलिहारी।
परभव चिंता पूरी ज्यांरी कीर्ति जग में रूडी ॥ १८ ॥
क्षमावंत गुणखांनो स्वामी अधिक अवसर ना जानो।
सिंह तणी पर सूरा मुख मेलै न्यायम रूड़ा ॥ १९ ॥
वले वैराग रस मांहि भीना, संवेग करी रहत भीना।
नाम सुणी पापी धड़के, जन हलुकर्मी सुण हरषै ॥ २० ॥
शील सिरोमणी साचा जगधारी भिक्खु आचा।
दयावंत इन्द्रयां दमता सत दश निर्जंचन रमता ॥ २१ ॥
एहवा भिक्खु ऋषिरायो त्यांरा गुण पूरा गाया न जावो।
संक्षेप मात्र बताया, गुण अनघ अघग अधिकाया ॥ २२ ॥

वलि बांधी बहु मर्यादी आसी आणी अति अहलादो।
धुर बत्तीसे धारी अंत गुणसठे स्थिपत उगारी।
वर सुखकारी, भिक्षु बांधी मर्यादा भारी ॥ २३ ॥
गणपति नामें दिख्या, करणा शिष्य शिष्यणी कर दिख्या।
दिख्या देने सूंपणा आणी लिपत गुणसठे भिक्षु मीं वाणी ॥ २४ ॥
शेषे काल चौमासो रहिवै गणपति आग्य हुलासो।
किण ही क्षेत्र रे माहि, गणि आणा विण रहिवो नाहिं ॥ २५ ॥
आचार्य नी इच्छा आवे गुरुभाई चेला ने सुमावे।
सूंपे टोला रो भारो तिणरी आण में रहिवो तिवारो ॥ २६ ॥
सहु संत सत्यां में ताह्यो, रहिणो एकण री आज्ञा माह्यो।
एह रीत परंपरा बांधी माग चाले कठा नांई सांधी ॥ २७ ॥
कर्म जोग इक बे भिण आवी, गण सूं नीकल करे विवादो।
तिणने सुध सरधवी नाहि, न गिणवो च्यार तीर्थ र माहि ॥ २८ ॥
च्यार तीर्थ रो तेही निंदक जाणवो जेही।
चोथ पूगे एहवा में कोई, से पिण जिण आज्ञा बारे होई ॥ २९ ॥
नीकल नवी दिख्या ले कोई, तिणनें साधु न सरधणो सोई।
तिणरी बात न मांनणी लिगारी, आरे कीधी दीसें अनंत संसारी ॥ ३० ॥
कर्म जोगे नीकलिया बारो तिणनें टोला तणा हिमकारी।
हुंता अणहुंता बांगो, अवगुण बोलण रा पचखाणो ॥ ३१ ॥
शिथल होई मांगे सूस कोई, तसु हलुकर्मी न मांनें सोई।
उण सरीषो शिथल मोन थायो ते चेला माहि न गिणायो ॥ ३२ ॥
इसही पचासै आणो अवगुण बोला रा पचखाणी।
नीकल नवी दिख्या ले कुमाणो तो पिण अवगुण बोलण रा त्यागो। ३३ ॥
न्हे नवी दिख्या लीधी समझायो आगला सूंसा री नहीं अटकावो।
यूं पिण बोलण रा पचखाणो स्थिपत पचासै भिक्षु वाणी ॥ ३४ ॥
पच्च किया आख्या गण माही तिके बाहिर से आवणा नाहीं।
एक निशि उपरंत आणो खेत्रां में रहिवारा पचखाणो ॥ ३५ ॥
स्थिपत पैंतालीसै अमोलो, श्रद्धा आचार कल्पसूत्र बोलो।
पूर तणा बुधिवंत संतो करै जिम करणो पर पंतो ॥ ३६ ॥
पचासै गुणसठै आणो बले सैंतीसै रास में थाणो।
दोष देखे तो तुरत कहिणो घणा दिवस रावे नहीं रहिणो ॥ ३७ ॥
आचार्य री आज्ञा बिण ताह्यो, एक निशि उपरंत गाम माह्यो।
मुनि सज्जा ने मेली न रैहणो पचासा स्थिपत माहि ए वैणो ॥ ३८ ॥

आहार पाणी वहिरीनें स्वामी, संभोगी में बांटी देणी तामी।
मात आम्यो आपी अधिक लेवे अदत्त लागे प्रतीत न रेवे ॥ ३९ ॥
देखो विप्या महाजन नें ताह्यो स्वामी छेहड़े वचन फुरमायो।
तिम पाना में लिखियो माही, सुवनीत भरयो दिल मांही ॥ ४० ॥
इत्यादिक मर्यादो स्वामी बांधी भर अहिसाबी।
बहु वर्षां लग तामो, स्वामी सासण वच्छ्रवण कामो ॥ ४१ ॥
चोथी ढाल मम्हारी भिक्खु वर्णक अधिक उदारी।
सुण पायो दास पसायो, गणि जयजश हरष सवायो ॥ ४२ ॥

दुहा

सतरा सूं साठ लगे अधिक कीयो उपगार।
जीव घणा समझावीया सपरा तीर्थ च्यार ॥ १ ॥
भिक्खु रा गुण आगला, भारीमाल सुध स्हाज।
महाजश बत्तीस में थाप्यौ पद युवराज ॥ २ ॥
चित अनुकूल मुनि चालता प्रकृति भद्र पुन्यवान।
गज रहित गिरवा गुणी विनयवान अमृवान ॥ ३ ॥
घन गम्भीरत्व सा वचन चार तास बखाण।
बीर तणा गुण आगले, गोतम जिम भगवान ॥ ४ ॥
प्रेम हजारो तासु गुण अधिक चातुरी आण।
अतिसैधारी ओपता, स्थिर पद स्थापे स्याण ॥ ५ ॥
परम प्रीत भिक्खु थकी अत सीम अवधार।
सेवा करी सांवे मने, भारीमाल भर प्यार ॥ ६ ॥
अठतीसे दिक्ष्या ग्रही खेतसीजी भर खंत।
भक्तिवंत भारी घणा क्षमावंत जशवंत ॥ ७ ॥
बरचामाहीं विमल चित्त उपगारी अधिकाय।
चरण चमालीसे चतुर, बेणीराम मुनिराय ॥ ८ ॥
बर संवेग तणुं सही ज्ञान ध्यान सूं प्रेम।
उत्पातिया अति चरण चित, बुद्धि दीपनें हेम ॥ ९ ॥
सतावने संजम लीयो, भिक्खु बुद्धि अमंद।
पट लायक परख्यो प्रगट, हस्तमुपी मुपचंद ॥ १० ॥
अधिक गुणी ए आदि दे, अड़तालीस अणगार।
अज्जा छसन मासरे, स्वाम तणा परिवार ॥ ११ ॥

अष्टवीस मुनि आसरै, समणी गुणचालीस।
गण माही मात्रा रह्या, शेष नीकल्या वीस॥ १२॥
वीस रह्या गण बारणे, रूपचंद त्यां माय।
स्वाम थाप संजम ग्रही अणसण दीधो ठाय॥ १३॥
पांचू इन्दवखा परवरी, आणे थपीया माहि।
चरम चौमासे आवीया शहर सिरियारी माहि॥ १४॥

ढाल ५

(धन-धन भिक्षु स्वाम दीपाई दान दया—ए देशी)

श्रावण मास मझार, दस्तकारण तनु में।
विहार आवे पुर बार, गिणत नहीं कछु मन में।
कछु मन में जी कुण बहुजन में पुर माहि गोचरी प्रगट पणें।
धिन धिन भिक्षु स्वाम भाव आराम घणें॥ १॥
श्रावण पूनम स्वाम, गोचरी आप गया।
भाद्रव में अभिराम, अधिक चित शांति भया।
चित शांति भयाजीवर ध्यान रह्या, मुनि लीम परम गाथेष रह्या।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, मरम पंडित उमह्या॥ २॥
भिक्षु टक हुवै अनाम, पजूषण माहि मला।
चउथ चांदणी जाण, अयण मांधी बिमला।
भावे बिमलजी अती ही अमला, वच संत चेतसी नें निमला।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, ममक गुण उमय मिला॥ ३॥
प सयरा शिष्य सुविनीत चरण नीं सहाज दीयो।
टोकरजी बर रीत भक्ति करि सुजश लीयो।
सुजश लीयो जी तनु मन ठरीयो भारीमाल परम मरम वरीयो।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, ज्ञान गुण नीं वरीयो॥ ४॥
यां तीना रा सहाज धणी समभाव पणें।
पाल्यो संजम पाज हरष आनंद घणें।
आनंद घणें जी भिक्षु संत तणें, कहि इकधार रह्या सुमणें।
धिन धिन भिक्षु स्वाम सुजश तसु जगत भणें॥ ५॥
सुणतां तीन तीन दीप आपै सखरी।
रहिबो थे समलीन, गणि सिर आण धरी।
आण धरी मुनजीं अबरी भारीमाल तणी शिर भार धरी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, अमल वाणी उच्चरी॥ ६॥

चायु निकट पिछाण, निसल आराम कीधी।
छिवं संलेषण चाण सुणी भविषण सीधी।
भविषण सीधी की तप अति मीधी उपवासा पंचमी तप पूछी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम सुमति नी समूधी ॥ १५ ॥

छठ पारणैवार, अल्प औषधि आहार।
वमन हुवौ तिणवार, साम भिक्षु सारं।
भिक्षु सारं की तिण दिन भार, पचखांण करै तिण दिन आहारं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, हीयै अति हुलीमारं ॥ १६ ॥

सातम आठम वाण अस्न अन्न आचरीयौ।
तुरत कीया पचखांण, कहै सतजुगि वरियौ।
सतजुग वरियौजी गुण रस भरीयौ इम तुरत स्याग किम उच्चरीयौ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम जगत जस विस्तरीयौ ॥ १७ ॥

नवमी स्याग करंत पतसी पांच कही।
अल्प आहार मुज हस्त, तणौ सीमैज सही।
सीमैज सही जी इम कहै उंमही तसु वचनमान अन्न अस्प ग्रही।
सुविनीत सणोमन रायण ही
धिन धिन भिक्षु स्वाम कीर्ति जग छाय रही ॥ १८ ॥

दसमीं स्याग करंत, भरत बड़ शिष्य न्हाखी।
दस मोठ आसरै हस्त लीयै चासल चाखी।
चासल चाखी जी अब में टाली उपरत स्याग कीधा भाखी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सभी सिवसौं तासी ॥ १९ ॥

ग्यारस अमल आगार, कीयौ इम उपवासं।
छिण मुख आहार मजाण वयण इम प्रकासं।
प्रकासं जन विस्वास अणसण थी अति चित हुलासं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम अमल सिवपद आसं ॥ २० ॥

बारस बैठो कीच स्वामीजी सममावै।
हाट रहांमली पकी पकी हाटे आवै।
हाटे आवै जी तसु मैं तावै, वर पका मुनि जन गुण गावै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, पको अणसण ठावै ॥ २१ ॥

ताम लीयौ विश्राम, भरत ऋषिराय करै।
पुद्गल पडीया हीण स्वाम सुण हरष धरै।
हरष धरै जी इम बच उचरै, सीसाजी शिष्य भारीमाल सिरै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम तास शुभ होड करै ॥ २२ ॥

घटवे उमा आण, सुणी नारीमालं।
वले पेतसी माधि, मुनि आम्या चालं।
माया चाल अनूप गुण मालं, वच वदे स्वाम अति सुविसालं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, पीव शिव पट सालं ॥ २३ ॥
करिखौ मुझ सथार, एम पभणे स्वामी।
नमोथुणं गुण धामं, सिद्ध अरिहंत नामी।
अरिहंत नामी सिवपद कामी ऊर्ध्वं स्वर वच स्थिर चित धामी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, परम संपति पामी ॥ २४ ॥
जाव जीव लग मोय त्याग तिहुं आहार तणा।
श्रावक श्राविका संत सुणे जन वृन्द घणा।
जन वृन्द घणाजी गुण करत जना अणसण भाख्यौ भिक्षु सुगुणा।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, काज सारै अपणा ॥ २५ ॥

सवैयौ

शिष्य भारीमाल कहै धार, क्यूं नी राख्यौ अमल आगार।
स्वामी कहै भाख्यौ संथार, किसी करणी देही नी धार ॥ २६ ॥

ढाल तेइिज

तेरस में जनवृन्द, वर्थ करिवा आवै।
सूंस आपणी करै, स्वाम ना गुण गावै।
गुण गावै जी अति हुलसावै आधार माहिज जन नहीं मावै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, विमल भावन भावै ॥ २७ ॥
सवा पोहर उनमान, दिवस चढीयां जाणी।
मिज कर सेठी आप स्वाम पीधौ पाणी।
पीधौ पाणी अति गुण खाणी आसरै मुहुर्त पाछे जाणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, वद इह विधि वाणी ॥ २८ ॥
आवै संत सुजाण, मुनि स्हामा जावो।
वलि आवै छै आज्या वदै इह विधि वायौ।
इह विधि वायौ जन सुण ताह्यौ, सुणतां अति वर बहु मुनिरायौ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम परम वच फुरमायौ ॥ २९ ॥
जन कहै स्वामी तणा जोग मुनि मैं वसीया।
एक मुहुर्त आसरै, साधु आया तिसीया।
आया तिसिया जी वे गुण रसीया, वंदणा करनै मन हुलसीया।
धिन धिन भिक्षु स्वाम कुरित पोहग न्हसीया ॥ ३० ॥

मैणीरामजी संत बड़ा जग विख्यातं।
चले कुशालजी साथ वंद सिर करि नातं।
करि नातं जी अति रलियातं तसु स्वाम दीयो मस्तक हाथ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम अमल जश अखियातं ॥ ११ ॥

दोय आंगुली थकी सैन करिनै आणी।
सुखसाता पूछत, कथी वस्तु पहिछाणी।
पहिछाणी जी उत्तम आणी सावचेत इसा मुनि गुण खाणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, महाकीर्ति माणी ॥ १२ ॥

साधु आया देख, अधिक ही गुणगातं।
दोय मुहूर्त आसरै, आयो समणी साथ।
समणी साधं वंदै आयं, जन कहै अवधि उपनों ख्यातं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, कही अचरज बात ॥ १३ ॥

अटकल सूं आख्यात तथा बुद्धि थी धाखी।
तथा अवधि उपनों तिको सर्वज्ञ साखी।
सर्वज्ञ साखी जी अनूप आखी प्रगट तिण छानै नहीं राखी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम बात अचरज भाखी ॥ १४ ॥

स्वामी सूता भणी हुई थे बहु वारं।
पूछ्यो बैठा करां, भख्यो तब हुंकारं।
हुंकारं कहिवि तिण वारं, बैठा कर मुनि बैठा सारं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सासण रा सिणगारं ॥ १५ ॥

करै संत गुणग्राम आप महा उपगारी।
बड़ा बड़ा पावन, हृदयमा बहु भारी।
बहु भारी जी कलि जन तारी फूल बाग यथा दिल मैं धारी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, जस भग मे तारी।
परम कीर्ति प्यारी।
आप जग जशधारी
धिन धिन भिक्षु स्वाम, वदै हम अणगारी ॥ १६ ॥

परखी मांडी सींख मूर पाले भाखी।
जन कहै स्वाम विचार, गया घटवे चाखी।
घटवे चाखी जी प्रत्यक्ष भाखी अलका ए अति अघमवाखी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम पूरण कीर्ति पाखी ॥ १७ ॥

मांडी तेरै थंड, तणी थीथी त्यारी।
महोत्सव कीधा अधिक कथ लौकिक भारी।
लौकिक भारीजी आज्ञा धारी आसरै पंच सय कहै खरी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सब पौहर संथारी ॥ १८ ॥

समत अठैरै साठै, मद्दव सारी।
परभव पोहता पूज्य तेरस मंगलकारी।
मंगलकारी श्री कांई सिरीयारी मारीमाल पाठ बैठा भारी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम जाऊं सब बलिहारी ॥ ३९ ॥
घर मैं वर्ष पचीस आसरै अठ वासं।
भेषधार्यां मैं रह्या पछै सुध व्रत फासं।
सुध व्रत फासं मुनि गुण रासं वय तयांलीस वाको वासं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, प्रगट जग विश्वासं ॥ ४० ॥
आसरै सितंतर वर्ष आयु पाम्यौ स्वामी।
परभव कीयो पयाण, धर्म मूर्त्ति धामी।
मूर्त्ति धामी श्री मति हित कामी पदधार परम संपति पामी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, निमल जग मैं नामी ॥ ४१ ॥
भिक्षु तणें प्रसाद, जीव बहुला तरीया।
सांप्रति काले तिरै, स्वाम वच सिर धरीया।
सिर धरिया श्री जन उद्धरीया तिरस्यैं अनागति गुण वरीया।
धिन धिन भिक्षु स्वाम तास उत्तम किरीया ॥ ४२ ॥
भिक्षु भवदधि पाज, भाव भाखा तरणी।
ज्ञान क्रिया किरि युक्त, कहा कहियै करणी।
कहीयै करणीवी वर उच्चरणी, संक्षेप मात्र विध मैं वरणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम मूर्त्ति तसु मन्नहरणी ॥ ४३ ॥
उगणीसै तेवीस माघ सुदि तिथ तिजं।
गुरुवारे ए जोड़, करी भिक्षु कीर्जं।
भिक्षु कीर्जं तसु जय कीर्जं, मारीमाल रायचंद रमणीजं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सही जय जश रीझं ॥ ४४ ॥

●